

वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट

अंक संख्या 24



भारतीय रिज़र्व बैंक
दिसंबर 2021

© भारतीय रिज़र्व बैंक

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस सामग्री के उद्धरण की अनुमति है, बशर्ते स्रोत को दर्शाया जाए।

यह प्रकाशन इंटरनेट <http://www.rbi.org.in> पर भी उपलब्ध है।

इस रिपोर्ट के फीडबैक fsu@rbi.org.in को भेजें।

वित्तीय स्थिरता इकाई, भारतीय रिज़र्व बैंक, मुंबई 400001 द्वारा प्रकाशित तथा ऐकम्पे पैक्स और प्रिंट(1)प्रा.लि., ए विंग, गाला नं.73, विरवानी इंड्रस्ट्रियल इस्टेट, गोरेगांव ईस्ट, मुंबई – 400063 द्वारा अभिकल्पित एवं मुद्रित।

प्राक्कथन

हमें वैश्विक महामारी के साथ जीवन यापन करते हुए लगभग दो वर्ष होने जा रहे हैं। मानव जीवन के कई पहलुओं में आमूल-चूल परिवर्तन हुए हैं। संसार में जान और माल की दुखद क्षति हुई है, किंतु हमने बहुत कुछ सीखा भी है और स्वयं को ढाला भी है। कभी आशा और कभी निराशा के बीच इस दौर में मनुष्य की अपराजेय जिजीविषा की जीत हुई है और निःसंदेह रूप से मानवता ने स्वास्थ्य और आर्थिक खुशहाली को बेहतर बनाने की दिशा में प्रयास किए हैं।

पूरे संसार में वैश्विक महामारी की लहरों के बावजूद सरकार, केंद्रीय बैंकों तथा वित्तीय विनियामकों की ओर से अभूतपूर्व नीतियों के माध्यम से जिस तरह से प्रतिरोध किया गया, उसकी वजह से आर्थिक गतिविधियां सुचारू बनी रही हैं। आपूर्ति और माल ढुलाई में कमी से अचानक उत्पन्न हुई बाधाओं, नौकरियों समाप्त होने तथा कारोबार के नष्ट होने से भी चुनौतियां उत्पन्न हुई हैं। वित्तीय बाजारों और संस्थाओं पर वैश्विक महामारी का कुप्रभाव नियंत्रित रहा है, किंतु सामान्य स्थिति की बहाली बाधित रही है और विभिन्न क्षेत्रों एवं खंडों में यह बहाली असमान रही है।

भारत में अप्रैल-मई 2021 में आई वैश्विक महामारी की विनाशकारी दूसरी लहर, जिसने 2020-21 के उत्तरार्ध में अपने पैर जमा रही आर्थिक बहाली को अवरुद्ध किया, के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था पुनः मजबूती और आघात सहनीयता को प्राप्त कर रही है। टीकाकरण की व्यापकता और इसके पैमाने में विस्तार होने से उपभोक्ता विश्वास तथा कारोबारी आशावाद में सुधार हो रहा है। संभावनाओं में निरंतर सुधार हो रहा है, हालांकि वैश्विक गतिविधियों तथा हालिया ऑमिक्रॉन से इस पर विपरीत असर पड़ रहा है। बहाली की मजबूती निजी निवेश तथा तेजी से बढ़ते निजी उपभोग, जो वैश्विक महामारी पूर्व के स्तर पर बना हुआ है, पर निर्भर होगी। मुद्रास्फीति चिंताजनक बनी हुई है क्योंकि यह लागत बढ़ने के दबावों के कारण उत्पन्न हुई है। हालांकि, खाद्य और ऊर्जा की कीमतों को नियंत्रित रखने के लिए आपूर्ति पक्ष के मजबूती से उठाए गए कदमों से इन जोखिमों को कम करने की दिशा में कार्य हुआ है।

जैसा कि वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट के इस अंक में स्पष्ट किया गया है, भारत में वित्तीय संस्थाएं वैश्विक महामारी के बीच आघातसह बनी रही हैं और वित्तीय बाजारों में स्थिरता विद्यमान रही है, जिन्हें नीतिगत और विनियामकीय समर्थन से सहारा मिला। बैंकों के तुलन-पत्र मजबूत बने हुए हैं और भावी आघातों का असर कम करने के लिए पूंजीगत और चल निधि बफर का सहारा लिया जा रहा है, जिसे इस रिपोर्ट में प्रस्तुत किए गए दबाव परीक्षणों में दर्शाया गया है। अपने कामकाज के लिए प्रौद्योगिकी पर अत्यधिक निर्भर रहने वाले वित्तीय बाजारों के परिदृश्य में आधारभूत संरचना की मजबूती, आंकड़ों की सुरक्षा तथा नियमों और प्रक्रियाओं की मजबूती सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। बारंबार होने वाले और गंभीर रूप से प्रभावित करने में सक्षम साइबर हमलों के मद्देनजर ऐसा किया जाना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

मजबूत, सुचारू ढंग से कार्यशील और प्रतिक्रियात्मक वित्तीय क्षेत्र आधुनिक समाज की वृद्धि और विकास की नींव को मजबूती प्रदान करता है। वैश्विक महामारी प्रेरित उतार-चढ़ाव के दौर, प्रसार-प्रभावों तथा बढ़ी हुई अनिश्चितता के चुनौतीपूर्ण होने के बावजूद भारतीय वित्तीय प्रणाली अच्छी तरह कार्यशील रही है और अर्थव्यवस्था की निधीयन की जरूरतों को पूरा करने के लिए पूर्ण रूप से तैयार है। वित्तीय संस्थाओं द्वारा लिखतों के संयुक्त रूपों के माध्यम से पूंजी जुटाने और चलनिधि बफर तैयार करने की प्रक्रिया तीव्र गति से चल रही है और इसे बनाए रखने की आवश्यकता है। भारतीय रिजर्व बैंक समष्टिगत आर्थिक और वित्तीय स्थिरता के साथ मजबूत, वहनीय और समावेशी संवृद्धि को सहारा प्रदान करने वाली मजबूत और सक्षम वित्तीय प्रणाली को सुनिश्चित करने के अपने प्रयास के लिए कृतसंकल्प और प्रतिबद्ध है।

(शक्तिकान्त दास)

गवर्नर

29 दिसंबर 2021

विषय-सूची

	पृष्ठ सं.
प्राक्कथन	
चयनित संक्षिप्ताक्षरों की सूची	i-iv
विहगावलोकन	1
अध्याय I : समष्टि-वित्तीय जोखिम	3
वैश्विक परिदृश्य	4
समष्टि वित्तीय घटनाक्रम और भावी परिदृश्य	4
अन्य वैश्विक समष्टि वित्तीय घटनाक्रम	9
पूंजी प्रवाह और विनिमय दर में उतार-चढ़ाव	12
परिवर्तनशील लंदन अंतर बैंक प्रस्तावित दर (लाइबोर)	13
पण्य बाजार	14
निजी क्रिप्टोकॉरेंसी जोखिम	16
घरेलू समष्टि वित्तीय जोखिम	17
लोक वित्त	18
सरकारी प्रतिभूतियों और निश्चित आय डेरिवेटिव बाजारों में विकास	20
कॉर्पोरेट क्षेत्र	23
बाह्य क्षेत्र एवं विदेशी मुद्रा व्युत्पन्नी बाजार की गतिविधियां	25
घरेलू इक्विटी बाजार	27
म्यूचुअल फंड	29
बैंकिंग स्थिरता सूचक	30
बैंक ऋण	31
थोक बैंक ऋण	32
एमएसएमई क्षेत्र को बैंक ऋण	34
बैंकों की जमा प्रोफाइल	36
संकल्प विश्लेषण	37
माइक्रोफाइनेंस खंड	39
गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियाँ (एनबीएफसी)	40
उपभोक्ता क्रेडिट	43
आवास बाजार	46
प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण	46
अध्याय II : वित्तीय संस्थान: सुदृढ़ता और आघात सहनीयता	48
अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक (एससीबी)	48
आस्ति गुणवत्ता	50
क्षेत्रवार आस्ति गुणवत्ता	51
बड़े उधारकर्ताओं की क्रेडिट गुणवत्ता	53
पूंजी पर्याप्तता	54
आमदनी और लाभप्रदता	54
आघात सहनीयता – मैक्रो दबाव परीक्षण	55
संवेदनशीलता विश्लेषण	59
बॉटम-अप दबाव परीक्षण: डेरिवेटिव पोर्टफोलियो	64

	पृष्ठ सं.
अनुसूचित प्राथमिक (शहरी) सहकारी बैंक	65
दबाव परीक्षण	67
एनबीएफसी	67
दबाव परीक्षण – क्रेडिट जोखिम	69
दबाव परीक्षण – चलनिधि जोखिम	70
अंतरसंबद्धता	71
वित्तीय प्रणाली का नेटवर्क	71
संक्रमण विश्लेषण	77
अध्याय III : वित्तीय क्षेत्र में विनियामकीय पहल	80
वैश्विक विनियामकीय प्रगति और आकलन	80
महामारी से सबक	80
मुद्रा बाजार निधि (एमएमएफ) की प्रणालीगत आघात-सहनीयता	81
महामारी के दौरान किए गए उपाय: वित्तीय स्थिरता प्रभाव	82
अन्य अंतरराष्ट्रीय विनियामकीय प्रगति	82
घरेलू विनियामकीय प्रगति	84
विनियामकों/प्राधिकरणों की ओर से पहल	84
ऋण एक्सपोजरों का हस्तांतरण	84
मानक आस्तियों का प्रतिभूतिकरण	84
विदेशी बैंक शाखाओं के व्युत्पन्न लेनदेन के लिए ऋण जोखिम न्यूनीकरण (सीआरएम)	85
गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों के लिए पैमाना-आधारित विनियमन	85
बैंकों द्वारा चालू खाते खोलना	85
खुदरा प्रत्यक्ष योजना	86
ग्राहक सुरक्षा	86
एकीकृत लोकपाल योजना, 2021	86
सीसीआईएल की चूक निधि (डीएफ)	86
फिनटेक	87
प्रवर्तन	87
म्यूचुअल फंड योजनाओं के लिए सिंगल मूल्य निर्धारण फ्रेमवर्क	88
अन्य प्रगति	89
निक्षेप बीमा	89
कॉर्पोरेट दिवाला समाधान प्रक्रिया	90
म्यूचुअल फंड	91
पण्य डेरिवेटिव	91
कॉर्पोरेट बॉन्ड बाजार	92
क्रेडिट रेटिंग	93
बीमा	94
पेंशन निधि	94
अनुबंध 1: प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण	96
अनुबंध 2: कार्यप्रणालियाँ	101
अनुबंध 3: महत्वपूर्ण विनियामकीय उपाय	116

बॉक्सों की सूची

1.1	एकीकृत कीमत नीलामी पद्धति का एक आकलन	20
1.2	अस्थिरता की मियादी संरचना	22
2.1	बैंकिंग क्षेत्र में प्रणालीगत जोखिम	58
3.1	भारत में फिनटेक विनियमन - विकासमान परिदृश्य	88

चार्ट की सूची

1.1	वैश्विक क्रय प्रबंधक सूचकांक (पीएमआई)	4
1.2	वैश्विक व्यापार दाबमापी	5
1.3	बाल्टिक शुष्क सूचकांक	5
1.4	वैश्विक आर्थिक आश्चर्य सूचकांक	6
1.5	सिटी (सीआईटीआई) ईएम एशिया का वित्तीय परिस्थिति सूचकांक	8
1.6	प्रमुख वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं की वित्तीय परिस्थितियां	8
1.7	ई और ईएमई की मुद्राओं में परिवर्तन	8
1.8	प्रमुख उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में 2-वर्षीय प्रतिफल	9
1.9	प्रमुख उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में 10-वर्षीय प्रतिफल	9
1.10	जी-7 सरकारी कर्ज और निर्गमन में केंद्रीय बैंकों का हिस्सा	10
1.11	2 वर्ष और 10 वर्ष के सुचारू किये गये अमेरिकी खजाना और ओआईएस स्प्रेड	10
1.12	मीयादी संरचना- यूएसडी स्वैपशन की 3 वर्ष की अस्थिरता दर	10
1.13	ईबीए बैंकों के चुनिंदा देयता वर्गों के लिए विकास अनुमान	11
1.14	यूएस और यूरो क्षेत्र के चुनिंदा म्यूचुअल फंड परिसंपत्तियां	11
1.15	सरकारी कर्ज और निर्गमन में ई देशी गैर-बैंकों का हिस्सा	11
1.16	उभरते बाजार बांड प्रवाह और पोर्टफोलियो प्रतिलाभ	12
1.17	माध्य परस्पर लेन-देन की मुद्रा स्वैप आधार: चुनिंदा ईएमई	12
1.18	उभरते बाजारों में पोर्टफोलियो प्रवाह	13
1.19	निवेशकों की जोखिम धारणा	13
1.20	ब्रेंट क्रूड स्पॉट और फ्यूचर्स - कीमत रुझान	14
1.21	चुनिंदा स्ट्राइक कीमतों पर ब्रेंट ऑप्शन्स के लिए दैनिक ट्रेडिंग वॉल्यूम	15
1.22	ब्लूमबर्ग पण्य तथा धातु सूचकांक	15
1.23	एफएओ मासिक खाद्य कीमत सूचकांक	15
1.24	पण्य से जुड़ी हुई निवेश निधियों में निवेश	15
1.25	केंद्र सरकार के चुकौती दायित्व - दिनांकित प्रतिभूतियां	18
1.26	केंद्र सरकार की प्राथमिक और द्वितीयक बाजार प्रतिफल	19
1.27	अंत-मार्च 2021 और दिसंबर 2021 (13 दिसंबर 2021 तक) के बीच प्रतिफल वक्र में परिवर्तन	19
1.28	जी-सेक और ओआईएस का कुल कारोबार	20
1.29	एकदिवसीय जी-सेक धारिताओं में बाजार जोखिम	21
1.30	सूचीबद्ध गैर-वित्तीय निजी कंपनियों की बिक्री - वृद्धि	23

	पृष्ठ सं.
1.31 प्रचालन लाभ मार्जिन – सूचीबद्ध गैर-वित्तीय निजी कंपनियां	23
1.32 प्रचालन लाभ मार्जिन – उधारकर्ता आकार वार सूचीबद्ध निजी विनिर्माण कंपनियां	24
1.33 सूचीबद्ध गैर-वित्तीय निजी कंपनियों की लिवरेज, अचल आस्तियां एवं नकदी धारिता	24
1.34 भारत का भुगतान संतुलन	25
1.35 विदेशी संविभाग निवेश	25
1.36 यूएसडी-आईएनआर और 3-माह की अवधि के लिए ऐतिहासिक एवं निहित अस्थिरता	26
1.37 अमेरिकी डॉलर की तुलना में मुद्राएं	26
1.38 डेलिवरेबल और नॉन डेलिवरेबल दैनिक फारवार्ड्स ट्रेड टर्नओवर	27
1.39 ऑफशोर बकाया फॉर्वाड्स	27
1.40 एमआईएफओआर-ओआईएस स्प्रेड	27
1.41 आईएनआर स्वैपशन	27
1.42 इक्विटी नकदी खंड में निवेश में प्रवृत्ति	28
1.43 10-वर्षीय औसत की तुलना में 1-वर्षीय फॉरवर्ड पी/ई अनुपात	28
1.44 इक्विटी बाजारों में खुदरा भागीदारी (मूल्य द्वारा स्वामित्व)	29
1.45 असीमित अवधि वाली कर्ज और इक्विटी फंड की एएमयू	29
1.46 जी-सेक/टी-बिल में / सीबीएलओ और स्प्रेड उत्पादों में एमएफ का निवेश	29
1.47 कर्ज योजनाओं का निवेशक प्रोफाइल	29
1.48 इक्विटी योजनाओं का निवेशक प्रोफाइल	30
1.49 मुद्रा बाजार निधि में अतिरिक्त प्रतिलाभ	30
1.50 म्यूचुअल फंड की कॉरपोरेट बॉण्ड धारिताएं	30
1.51 3-वर्षीय एए गैर-वित्तीय गैर-पीएसयू कॉरपोरेट वाईटीएम	30
1.52 बैंकिंग स्थिरता मैप	31
1.53 ऋण वृद्धि – एससीबी	31
1.54 पीएसयू से इतर गैर-वित्तीय बाध्यताधारियों के एक्सपोजर का वितरण	33
1.55 दीर्घावधिक ऋण साख	33
1.56 ईसीएलजीएस गारंटी	34
1.57 बैंक समूह-वार ईसीएलजीएस गारंटी	35
1.58 जमाराशियों का रन-ऑफ प्रोफाइल	36
1.59 पीवीबी की जमा प्रोफाइल	37
1.60 बैंक समूहों द्वारा एसएलआर को बनाए रखना	37
1.61 विशिष्ट ऋणदाता कोहार्ट के लिए दिवालियापन की शुरुआत में देरी	38
1.62 माइक्रोफाइनेंस पोर्टफोलियों में वृद्धि	39
1.63 माइक्रोफाइनेंस खंड – हानि	40
1.64 एनबीएफसी/एचएफसी को बैंक क्रेडिट	41
1.65 निजी एनबीएफसी के सीपी निर्गम	41
1.66 उत्पाद श्रेणी के अनुसार इन्क्वायरी वॉल्यूम	43
1.67 ऋणदाता श्रेणी के अनुसार इन्क्वायरी वॉल्यूम	43

	पृष्ठ सं.	
1.68	क्रेडिट सक्रिय उपभोक्ताओं में वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष)	43
1.69	जोखिम टियर के अनुसार इन्क्वायरी वॉल्यूम	44
1.70	ऋणदाता श्रेणी के अनुसार अनुमोदन दरें (प्रतिशत)	45
1.71	ऋणदाता श्रेणी में बकाया शेषराशियों में वृद्धि	45
1.72	आवास विक्री, लोकार्पण और अविक्रीत माल-सूची	46
1.73	अविक्रीत माल-सूची और माल-सूची आधिक्य	46
2.1	एससीबी के जमा और ऋण प्रोफाइल	49
2.2	क्षेत्रवार और ऋण प्रकारवार एससीबी द्वारा नए ऋण	50
2.3	चुनिंदा परिसंपत्ति गुणवत्ता संकेतक	51
2.4	क्षेत्रवार परिसंपत्ति गुणवत्ता संकेतक	52
2.5	बड़े उधारकर्ताओं के चुनिंदा परिसंपत्ति गुणवत्ता संकेतक	53
2.6	पूंजी पर्याप्तता	54
2.7	एससीबी के चुनिंदा कार्य निष्पादन संकेतक	54
2.8	छ 2: 2021-22 और छ 1 : 2022-23 के लिए समष्टि आर्थिक परिदृश्य मूल्यांकन	56
2.9	एससीबी के जीएनपीए अनुपातों का अनुमान	56
2.10	सीआरएआर पूर्वानुमान	57
2.11	सीईटी1 पूंजी अनुपात का अनुमान	57
2.12	ऋण जोखिम - आघात और परिणाम	59
2.13	ऋण संकेंद्रण जोखिम: वैयक्तिक उधारकर्ता – एक्स्पोज़र	60
2.14	ऋण संकेंद्रण जोखिम: समूह उधारकर्ता – एक्स्पोज़र	60
2.15	ऋण संकेंद्रण जोखिम: वैयक्तिक उधारकर्ता – दबावग्रस्त अग्रिम	61
2.16	व्यापार बही पोर्टफोलियो: बैंक समूहवार	61
2.17	मार्च 2021 से प्रतिफल कर्व और सभी अवधियों के प्रतिफलों में परिवर्तन	62
2.18	एचटीएम पोर्टफोलियो - संरचना	63
2.19	एचटीएम पोर्टफोलियो- 30 सितंबर, 2021 को अप्राप्त लाभ	63
2.20	इक्विटी मूल्य जोखिम	64
2.21	चलनिधि जोखिम: आघात और परिणाम	64
2.22	कुल डेरिवेटिव पोर्टफोलियो का एमटीएम, चुनिंदा बैंक - सितंबर 2021	65
2.23	चुनिंदा बैंकों के व्युत्पन्नी (डेरिवेटिव्स) पोर्टफोलियो पर आघात का प्रभाव	65
2.24	शहरी सहकारी बैंकों के क्रेडिट प्रोफाइल और आस्ति गुणवत्ता संकेतक	66
2.25	यूसीबी का दबाव परीक्षण	67
2.26	ऋण का क्षेत्रीय परिणियोजन	67
2.27	सकल अग्रिमों में विभिन्न एनबीएफसी श्रेणियों की हिस्सेदारी	68
2.28	पी 2 पी एनबीएफसी की प्रोफाइल	68
2.29	लाभप्रदता और पूंजी पर्याप्तता	68
2.30	एनबीएफसी का क्षेत्रीय जीएनपीए	69
2.31	एनबीएफसी के निधियों के स्रोत	69

	पृष्ठ सं.	
2.32	एनबीएफसी द्वारा उधार	69
2.33	एनबीएफसी में ऋण जोखिम – प्रणाली स्तर	70
2.34	वित्तीय प्रणाली में संस्थाओं के बीच द्विपक्षीय एक्सपोजर	71
2.35	वित्तीय प्रणाली का नेटवर्क प्लॉट- सितंबर 2021	72
2.36	संस्थाओं द्वारा निवल प्राप्तियाँ (+ve) / देयताएं (-ve)	72
2.37	अंतर-बैंक बाजार	72
2.38	अंतर बैंक बाजार में विभिन्न बैंक समूह- सितंबर 2021	73
2.39	निधि आधारित अंतर बैंक बाजार की संरचना	73
2.40	भारतीय बैंकिंग प्रणाली की नेटवर्क संरचना (एससीबी + एसएफबी + एसयूसीबी)- सितंबर 2021	74
2.41	बैंकिंग प्रणाली (एससीबी) की संबद्धता सांख्यिकी	74
2.42	वित्तीय प्रणाली से एएमसी – एमएफ की सकल प्राप्तियाँ	75
2.43	वित्तीय प्रणाली से बीमा कंपनियों की सकल प्राप्तियाँ	75
2.44	एआईएफआई की वित्तीय प्रणाली को सकल देयता	76
2.45	एनबीएफसी की वित्तीय प्रणाली को सकल देयता	76
2.46	एचएफसी का वित्तीय प्रणाली को सकल देय	77
2.47	समष्टि आर्थिक आघातों का संक्रामक प्रभाव (शोधन क्षमता संक्रमण)	79
3.1	तीन वैश्विक केंद्रीय प्रतिपक्षों द्वारा अनुरक्षित समग्र चलनिधि बफर का विश्लेषण	81
3.2	बैंकिंग लोकपाल कार्यालयों में शिकायतों की श्रेणी	86
3.3	घरेलू और अंतरराष्ट्रीय पण्य फ्यूचर्स सूचकांक	91
3.4	पण्य डेरिवेटिव में चयनित खंडवार सूचकांकों में गतिविधियां	91
3.5	विनिमय बाजार में पण्य डेरिवेटिव का टर्नओवर	92
3.6	प्राथमिक बाजार के माध्यम से जुटाई गयी निधियाँ	92
3.7	सीपी और एनसीडी के निर्गमन	92
3.8	सीपी और एनसीडी का रेटिंग वार निर्गमन	93
3.9	कॉर्पोरेट बॉन्ड के श्रेणीवार जारीकर्ता और अभिदाताओं	93
3.10	रेटिंग एक्शन के अनुसार सूचीबद्ध कंपनियों के ऋण निर्गम	93
3.11	रेटिंग डाउनग्रेड का वितरण – क्षेत्रवार	94
3.12	जीवन बीमा- पहले वर्ष प्रीमियम में वृद्धि	94
3.13	जीवन बीमा- कुल प्रीमियम में वृद्धि	94
3.14	क्षेत्रवार एनपीएस और एपीवाई अभिदाता	94
3.15	क्षेत्रवार एनपीएस और एपीवाई एयूएम	95

सारणियों की सूची

1.1	2021-2023 के लिए संवृद्धि के अनुमान	6
1.2	सामान्य सरकारी राजकोषीय शेष, 2019-26 : समग्र शेष	9
1.3	ईएमडी की गैर-बैंक संस्थाओं में सीमापार बैंकिंग प्रवाह	12
1.4	आरएफआर द्वारा प्रतिशत डीवी01 योगदान – मुद्रावार	13
1.5	यूएस द्वारा रिपोर्ट किया गया- आरएफआर से जुड़ी ब्याज दर डेरिवेटिव्स	14
1.6	चुनिंदा उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में सीपीआई मुद्रास्फीति	14
1.7	राजकोषीय संकेतक - केंद्र सरकार	18
1.8	केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा बाजार उधारी	18
1.9	दिनांकित सरकारी प्रतिभूतियों और एसडीएल की वृद्धिशील धारिताएं: 2021-22 की दूसरी छमाही	19
1.10	दिनांकित जी-सेक और एसडीएल - निवेशक प्रोफाइल	19
1.11	बैंक समूह-वार वृद्धिशील एचटीएम धारिता: 2021-22 की पहली छमाही	19
1.12	भारत में अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग प्रवाह	26
1.13	मूल्यांकन मैट्रिक्स	28
1.14	एससीबी द्वारा दिए जानेवाले वृद्धिशील ऋण की क्षेत्र-वार हिस्सेदारी	31
1.15	पीएसयू को दिए जानेवाले थोक ऋण में वृद्धि	32
1.16	निधियों का समग्र संग्रहण	32
1.17	पीएसयू से इतर गैर-वित्तीय कंपनियों को दिए गए थोक ऋण में वृद्धि	32
1.18	दिसंबर 19 से सितंबर-21 के बीच पीएसयू से इतर गैर-वित्तीय बाध्यताधारियों के थोक पोर्टफोलियो से संबंधित एसएमए परिवर्तन का मैट्रिक्स	33
1.19	जून-21 से सितंबर-21 के बीच पीएसयू से इतर गैर-वित्तीय बाध्यताधारियों के थोक पोर्टफोलियो से संबंधित एसएमए परिवर्तन का मैट्रिक्स	33
1.20	एमएसएमई क्षेत्र को दिए गए बैंक ऋण	34
1.21	ईसीएलजीएस गारंटी संवितरण	34
1.22	बैंक समूह-वार एमएसएमई पोर्टफोलियो का पुनर्गठन	35
1.23	बैंक समूह-वार एमएसएमई पोर्टफोलियो का एसएमए संवितरण	35
1.24	उधारकर्ता परिवर्तन मैट्रिक्स	36
1.25	सितंबर 2019 और सितंबर 2021 के बीच हल किए गए मामलों के चयनित नमूनों के विभिन्न चरणों में वसूली दर और विलंब	38
1.26	थोक मानक और संदिग्ध परिसंपत्ति में एक वर्षीय परिवर्तन दर	38
1.27	पीएसबी और पीवीबी का संयुक्त एनपीए संयोजन	39
1.28	चयनित एनबीएफसी की परिसंपत्ति वृद्धि – एक खंडवार अवलोकन	40
1.29	चुनिंदा एनबीएफसी द्वारा सकल सीपी निर्गम	42
1.30	चुनिंदा एनबीएफसी के निर्गमों की भारित औसत परिपक्वता	42
1.31	चुनिंदा एनबीएफसी की समग्र देयता में बकाया सीपी का हिस्सा	42
1.32	अंतर्माह सीपी संबंधित बहिर्वाह	42
1.33	जोखिम टियर और ऋणदाता श्रेणी के अनुसार उपभोक्ता संवितरण	44
1.34	जोखिम टियर के अनुसार पीएसबी उदगम	44

	पृष्ठ सं.	
1.35	सभी उत्पाद श्रेणियों के समग्र उपभोक्ता क्रेडिट में चूक के स्तर	44
1.36	जोखिम श्रेणियों के लिए स्कोर अंतरण (प्रतिशत)	45
2.1	प्रणालीगत स्तर सीआरएआर में गिरावट	61
2.2	एएफएस पोर्टफोलियो का अवधि-वार पीवी01 वितरण	62
2.3	ओओआई – प्रतिभूति कारोबार में लाभ/(हानि)	62
2.4	एचएफटी पोर्टफोलियो का अवधि वार पीवी 01 वितरण	63
2.5	ब्याज दर जोखिम - बैंक समूह – आघात और प्रभाव	63
2.6	एनबीएफसी में चलनिधि जोखिम	70
2.7	बैंक विफलता से हुआ संक्रामक घाटा – सितम्बर 2021	78
2.8	एनबीएफसी विफलता से हुआ संक्रामक घाटा – सितम्बर 2021	78
2.9	एचएफसी विफलता से हुई संक्रामक हानियां – सितम्बर 2021	78
3.1	चुनिन्दा सीसीपी के एसआईटीजी अनुपात	87
3.2	निपटाए गए दावे और दावों की वसूली	89
3.3	निक्षेप बीमा प्रीमियम	89
3.4	निक्षेप बीमा निधि (डीआईएफ)	89
3.5	कॉर्पोरेट दिवाला समाधान प्रक्रिया	90
3.6	30 सितंबर, 2021 की स्थिति के अनुसार, हितधारक-वार शुरू की गई सीआईआरपी के परिणाम	90
3.7	एसआईपी में वृद्धि (वित्तीय वर्ष: 2021-22)	91
3.8	खंडवार सकल टर्नओवर (फ्यूचर्स + आप्शन्स)	92

चयनित संक्षिप्ताक्षरों की सूची

एएफएस	बिक्री के लिए उपलब्ध	सीडी	जमा प्रमाणपत्र
€एसटीआर	यूरो अल्पावधि दर	सीईटी -1	सामान्य इक्विटी टियर-1
ईसी	गुमनामी वर्धित क्रिप्टोकॉरेसी	सीएफटी	आतंकवाद वित्तपोषण का मुकाबला करना
ईई	उन्नत अर्थव्यवस्थाएँ	सीजीएफडी	केंद्र का सकल राजकोषीय घाटा
एआर	कृत्रिम बुद्धिमत्ता	सीआईआरपी	कार्पोरेट शोधन-अक्षमता समाधान प्रक्रिया
एआईएफआई	अखिल भारतीय वित्तीय संस्थाएं	सीएमई	शिकागो मर्केन्टाइल एक्सचेंज
एमसी-एमएफ	आस्ति प्रबंध कंपनी/म्यूचुअल फंड	सीएमआर	सिबिल एमएसएमई रैंक
एमएफआई	भारतीय पारस्परिक निधि संघ	सीओपी	कॉन्फरेन्स ऑफ पार्टिज
एमएल	घन-शोधन निवारण	सीपीआई	उपभोक्ता मूल्य सूचकांक
एपीआई	एप्लीकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफेस	सीपीएमआई	भुगतान और बाजार अवसररचना संबंधी समिति
एपीवाई	अटल पेंशन योजना	सीपी	वाणिज्यिक पत्र
एआरसी	आस्ति पुनर्निर्माण कंपनी	सीआरएआर	जोखिम भारित आस्तियों की तुलना में पूंजी अनुपात
एआरआर	वैकल्पिक संदर्भ दर	सीआरए	क्रेडिट रेटिंग एजेंसी
एयूएम	प्रबंधनाधीन आस्तियां	सीआरआईएलसी	केंद्रीय बृहत ऋण सूचना भंडार
बीसीबीएस	बैंकिंग पर्यवेक्षण पर बासेल समिति	सीआरएम	ऋण जोखिम न्यूनीकरण
बीआईएफआर	औद्योगिक और वित्तीय पुनर्निर्माण बोर्ड	सीआरआर	आरक्षित नकदी निधि अनुपात
बीआईएस	बैंक फॉर इंटरनेशनल सेटलमेंट	डीईएफआई	विकेंद्रीकृत वित्त
बीओपी	भुगतान संतुलन	डीआईसीजीसी	निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंटी निगम
बीएससी	बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज	डीआईएफ	निक्षेप बीमा निधि
बीएसआई	बैंकिंग स्थिरता संकेतक	डीआईआई	घरेलू संस्थागत निवेशक
सीएबी	चालू खाता अधिशेष	डीपीडी	दिनों का बकाया
सीएसए	चालू खाता बचत खाता	ईबीए	यूरोपीय बैंकिंग प्राधिकरण
सीबी	केंद्रीय बैंक	ईसीबी	यूरोपीय केंद्रीय बैंक
सीबीएलओ	संपार्श्विकीकृत उधार लेन-देन संबंधी दायित्व	ईसीएलजीएस	आपातकालीन क्रेडिट लाइन गारंटी योजना
सीसी	नगद ऋण	ईएमडीई	उभरते बाजार और विकासशील अर्थव्यवस्थाएँ
सीसीबी	क्रॉस करेंसी बेसिस	ईएमई	उभरते बाजार अर्थव्यवस्थाएँ
सीसीआईएल	भारतीय समाशोधन निगम लिमिटेड		
सीसीपी	केंद्रीय प्रतिपक्षकार		

ईएसजी	पर्यावरणीय, सामाजिक और अभिशासन	आईओएससीओ	अंतरराष्ट्रीय प्रतिभूति आयोग संगठन
ईएसआरबी	यूरोपीय प्रणालीगत जोखिम बोर्ड	आईआरएसी	आय निर्धारण और आस्ति वर्गीकरण
ईएक्सआईएम	भारतीय निर्यात आयात बैंक	आईआरडी	ब्याज दर डेरिवेटिव
एफएओ	खाद्य और कृषि संगठन	आईआरडीएआई	भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण
एफएटीएफ	वित्तीय कार्रवाई कार्यबल	आईएसडीए	इंटरनेशनल स्वेप्स एंड डेरिवेटिव एसोसिएशन
एफबी	विदेशी बैंक	एलएबी	स्थानीय क्षेत्र बैंक
एफसी	वित्तीय लेनदार	एलबी	बड़े उधारकर्ता
एफडीआई	विदेशी प्रत्यक्ष निवेश	एलसीएच	लंदन क्लियरिंग हाउस
एफआईएमएमडीए	भारतीय नियत आय मुद्रा बाजार और व्युत्पन्नी संघ	एलईएफ	बड़े जोखिम फ्रेमवर्क
एफपीआई	विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक	एलआईबीओआर	लंदन अंतर बैंक प्रस्तावित दर
एफआरबी	अस्थायी दर बॉन्ड	एमसीएक्स	मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज ऑफ इंडिया लिमिटेड
एफएसबी	वित्तीय स्थिरता बोर्ड	एमईएस	सीमांत आशानुरूप कमी
एफएसडीसी	वित्तीय स्थिरता और विकास परिषद	एमएफ	म्यूचुअल फंड
एफएसआर	वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट	एमएचपी	न्यूनतम धारित अवधि
एफएक्स	विदेशी मुद्रा	एमआईएफओआर	मुंबई अंतर बैंक फॉरवर्ड प्रस्तावित दर
जीबीआई	वैश्विक बॉण्ड सूचकांक	एमएल	मशीन लर्निंग
जीडीपी	सकल घरेलू उत्पाद	एमएमएफ	मुद्रा बाजार निधियां
जीईएसआई	वैश्विक आर्थिक अप्रत्याशित सूचकांक	एमएमएमएफ	मुद्रा बाजार म्यूचुअल फंड
जीएनपीए	सकल अनर्जक आस्तियां	एमआरआर	न्यूनतम प्रतिधारण आवश्यकता
जी-सेक	सरकारी प्रतिभूतियाँ	एमएसएफ	सीमांत स्थायी सुविधा
एचएफसी	आवास वित्त कंपनियां	एमएसएमई	सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम
एचएफटी	व्यापार के लिए धारित	एमटीएम	बाजार भाव पर दर्शाना
एचक्यूएलए	उच्च गुणवत्ता वाली चलनिधि आस्तियां	नाबार्ड	राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक
एचटीएम	परिपक्वता तक धारित	एनएआरसीएल	राष्ट्रीय आस्ति पुनर्गठन कंपनी लिमिटेड
आईएआईएस	अंतरराष्ट्रीय बीमा पर्यवेक्षक संघ	एनबीएफसी	गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी
आईबीबीआई	भारतीय दिवाला और शोधन अक्षमता बोर्ड	एनबीएफसी-बीएल	एनबीएफसी-बेस लेयर
आईबीसी	दिवाला और शोधन कोड	एनबीएफसी-डी	एनबीएफसी - जमा लेनेवाली
आईसीएक्स	भारतीय पण्य बाजार	एनबीएफसी-आईसीसी	एनबीएफसी-निवेश और ऋण कंपनी
आईएफएससीए	अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण		
आईएमएफ	अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष		

एनबीएफसी-आईडीएफ	एनबीएफसी-इंफ्रास्ट्रक्चर डेट फंड	ओआईएस	ओवरनाइट इंडेक्स स्वैप
एनबीएफसी-आईएफसी	एनबीएफसी-इंफ्रास्ट्रक्चर वित्त कंपनी	ओओआई	अन्य परिचालनगत आय
एनबीएफसी-एमएफआई	एनबीएफसी –सूक्ष्म वित्त संस्थाएं	ओटीसी	काउंटर पर
एनबीएफसी-एमएल	एनबीएफसी-मिडिल लेयर	पीएटी	कर पश्चात लाभ
एनबीएफसी-एनडी	एनबीएफसी-नॉन डिपॉजिट टेकिंग	पीसीए	प्रिंसिपल कंपोनेन्ट एनालिसिस
एनबीएफसी-पी2पी	एनबीएफसी – पीयर 2 पीयर	पीसीआर	प्रावधान कवरेज अनुपात
एनबीएफसी-यूएल	एनबीएफसी – अपर लेयर	पीडी	प्राथमिक व्यापारी
एनबीएफआई	गैर बैंकिंग वित्तीय मध्यस्थता	पीएफआरडीए	पेंशन निधि विनियामक और विकास प्राधिकरण
एनसीडीईएक्स	नेशनल कमोडिटी एंड डेरिवेटिव एक्सचेंज लि.	पीएफ	पेंशन निधियां
एनसीडी	गैर-परिवर्तनीय डिबेंचर	पीएसबी	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक
एनसीजीटीसी	राष्ट्रीय ऋण गारंटी ट्रस्टी कंपनी लिमिटेड	पीवीबी	निजी क्षेत्र के बैंक
एनसीएलटी	राष्ट्रीय कंपनी विधि न्यायाधिकरण	क्यूई	मात्रात्मक सुलभता
एनडीएफ	नॉन-डेलिवरेबल फॉरवर्ड	क्यूआईबी	अर्हताप्राप्त संस्थागत क्रेता
एनडीएसआई	जमा न लेने वाले प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण	क्यूआईपी	अर्हता प्राप्त संस्थागत स्थानन
एनडीटीएल	निवल मांग और मीयादी देयताएं	आरबीआईएच	भारतीय रिजर्व बैंक नवोन्मेष हब
एनईएसएल	राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस सेवाएं लिमिटेड	आरडीजी	रिटेल डाइरेक्ट गिल्ट
एनएफबी	गैर-निधि आधारित	आरएफ	समाधान ढांचा
एनजीएफएस	वित्तीय प्रणाली हरितकरण के लिए केंद्रीय बैंकों तथा पर्यवेक्षकों का नेटवर्क	आरएफआर	जोखिम मुक्त दर
एनएचबी	राष्ट्रीय आवास बैंक	आरओए	परिसंपत्तियों पर प्रतिलाभ
एनआईएम	निवल ब्याज मार्जिन	आरओई	इक्विटी पर प्रतिलाभ
एनएनपीए	निवल अनर्जक आस्तियां	आरआरबी	क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक
एनपीए	अनर्जक आस्तियां	आरएस	विनियामकीय सैंडबॉक्स
एनपीएस	राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली	एसएआरओएन	स्विस् एवरेज रेट ओवरनाइट
एनएसई	राष्ट्रीय शेयर बाजार	एससीबी	अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक
एनएसयूसीबी	गैर-अनुसूचित शहरी सहकारी बैंक	एसडी	मानक विचलन
ओडी	ओवरड्राफ्ट	एसडीएल	राज्य विकास ऋण
ओईसीडी	आर्थिक सहयोग और विकास संगठन	सेबी	भारतीय प्रतिभूति विनियम बोर्ड
ओईएफ	ओपेन इंडेड फंड	एसएफबी	लघु वित्त बैंक
		सिडबी	भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक
		एसआईपी	सुनियोजित निवेश योजना
		एसआईटीजी	लक्षित निजी निवेश
		एसएलआर	सांविधिक चलनिधि अनुपात

चयनित संक्षिप्तशुकरुं की सूची

एसएमए	विशेष उल्लेख खाता	टीआरईडीएस	ट्रेड रिसीवेबल्स एंड डिस्काउंटिंग सिस्टम
एसओएफआर	सेक्यूरिटी ओवर नाइट फ़ाईनेंसिंग रेट		
एसओएनआईए	स्टर्लिंग ओवरनाइट इंडेक्स एवरेज	यूसीबी	शहरी सहकारी बैंक
एसपीडी	एकल प्राथमिक विक्रेता	यूपीआई	एकीकृत भुगतान इंटरफेस
एसपीई	विशेष प्रयोजन संस्था	वीआरआरआर	परिवर्तनीय दर रिवर्स रिपो
एसआरएफ	निपटान आरक्षित निधि	डब्ल्यूएलआर	भारित औसत उधार दर
एसआरआई	प्रणालीगत जोखिम संकेतक	डब्ल्यूटीओ	विश्व व्यापार संगठन
एसआरएस	प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण	वाईटीएम	परिपक्वता प्रतिफल
एसयूसीबी	अनुसूचित शहरी सहकारी बैंक		
टीओएनए	टोकियो ओवरनाइट एवरेज रेट		

विहगावलोकन

वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट (एफएसआर) वर्ष में दो बार प्रकाशित की जाती है और इसमें वित्तीय क्षेत्र के सभी विनियामकों का योगदान शामिल किया जाता है। इस प्रकार से, इसमें वित्तीय स्थिरता के प्रति जोखिम से संबंधित वित्तीय स्थिरता और विकास परिषद (एफएसडीसी-एससी) की उप-समिति का सामूहिक आकलन दर्शाया जाता है।

समष्टिगत वित्तीय जोखिम

2021 के उत्तरार्द्ध में वैश्विक बहाली की गति मंद हुई है। इस मंदी पर संसार के कई हिस्सों में संक्रमण के पुनः फैलने, आपूर्ति बाधित होने एवं अड़चनों, लगातार स्फीतिकारी दबाव तथा सभी प्रणालीगत उन्नत अर्थव्यवस्थाओं (ईई) के साथ ही कुछ उभरते बाजारों वाली अर्थव्यवस्थाओं (ईएमई) के केंद्रीय बैंकों के मौद्रिक नीतिगत रुझानों और कार्रवाइयों में किए गए परिवर्तनों का प्रभाव पड़ा। घरेलू मुद्रास्फीति के उच्च स्तर के साथ ही वैश्विक वित्तीय परिस्थितियों के कठोर होने का उभरते बाजारों वाली अर्थव्यवस्थाओं (ईएमई) की मुद्राओं की तुलना में अमेरिकी डॉलर के मूल्य में काफी वृद्धि हुई है। इन अर्थव्यवस्थाओं की मुद्राएं ऊर्जा की कीमतें निरंतर बढ़ने से भी कमजोर हुई हैं। उभरते बाजारों वाली अर्थव्यवस्थाओं (ईएमई) के बॉण्ड बाजारों में पूंजी प्रवाह में कमी और बहिर्वाह के संकेत दिखाई दे रहे हैं, जबकि इक्विटी प्रवाह अस्थिर हो गया है। नीतिगत सामान्यीकरण की प्रक्रिया में ब्याज दरों के पुनर्निर्धारण के कारण बैंकों के मध्य पोर्टफोलियो में विवेकसम्मत परिवर्तन हो सकते हैं, साथ ही बैंकिंग क्षेत्र की देयताओं को भी पुनर्समायोजित किया जा सकता है। हाल ही के समय में वैश्विक आर्थिक संभावनाओं पर ओमिक्रोन का बुरा असर भी हुआ है।

घरेलू अर्थव्यवस्था और बाजार

घरेलू स्तर पर, जुलाई 2021 तक वैश्विक महामारी की दूसरी लहर के कमजोर पड़ने के स्पष्ट संकेत दिखाई दिए। स्थानीय पाबंदियों को कम कर दिया गया है और संवृद्धि की रफ्तार बढ़ गई है। टीकाकरण में हुई प्रगति से इसे सहायता मिली। अप्रैल-अक्तूबर 2021 के दौरान केंद्र सरकार के घाटे संबंधी सभी मानदंडों में वैश्विक महामारी से पूर्व की तुलना में सुधार हुआ है। उधारियों का कार्यक्रम सुचारू रूप से चला है। भारतीय कॉर्पोरेट क्षेत्र ने वैश्विक महामारी के माध्यम से मजबूती और आघात

सहनीयता हासिल किया है और सूची-बद्ध गैर-वित्तीय निजी कंपनियों में सुधार का संकेत है। बैंक ऋण-वृद्धि में धीमी गति से बहाली के संकेत मिल रहे हैं, जिसकी अगुआई खुदरा खंड ने की है। हालांकि, कमतर रेटिंग वाले कॉर्पोरेटों को होने वाले ऋण प्रवाह में बाधाएं बनी हुई हैं। लघु, सूक्ष्म और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) की ही तरह सूक्ष्म वित्त खंड में भी दबाव के संकेत नजर आ रहे हैं।

वित्तीय संस्थाओं की मजबूती और आघात सहनीयता

अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (एससीबी) ने अपनी पूंजी को थामे रखा। सितंबर 2021 में उनकी जोखिम-भारित आस्तियों की तुलना में पूंजी अनुपात (सीआरएआर) 16.6 प्रतिशत हो गया और उनकी आस्तियों के प्रतिलाभ (आरओए) तथा इक्विटी के प्रतिलाभ (आरओई) घनात्मक बने रहे। सकल अनर्जक आस्तियों (जीएनपीए) एवं निवल अनर्जक आस्तियों (एनएनपीए) के घटकर क्रमशः 6.9 प्रतिशत और 2.3 प्रतिशत रह जाने के साथ बैंकों की आस्ति गुणवत्ता में सुधार हुआ, किंतु उनके स्लिपेज अनुपात में सितंबर में वृद्धि हुई। प्रावधानीकरण व्याप्ति अनुपात (पीसीआर) मार्च 2021 के 67.6 प्रतिशत से बढ़कर सितंबर 2021 में 68.1 प्रतिशत हो गया।

ऋण जोखिम संबंधी समष्टिगत-दबाव परीक्षणों से पता चलता है कि अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (एससीबी) के सकल अनर्जक आस्तियों का अनुपात आधार रेखा परिदृश्य के अंतर्गत सितंबर 2021 के 6.9 प्रतिशत से बढ़कर सितंबर 2022 में 8.1 प्रतिशत और अत्यधिक दबाव परिदृश्य के अंतर्गत 9.5 प्रतिशत हो सकता है। दबाव परीक्षणों से पता चला है कि अत्यधिक दबाव परिदृश्य के अंतर्गत भी बैंक न्यूनतम पूंजी आवश्यकताओं को पूरा कर पाने की स्थिति में होंगे।

सितंबर 2021 में शहरी सहकारी बैंकों (यूसीबी) का जोखिम-भारित आस्तियों की तुलना में पूंजी अनुपात (सीआरएआर) 12.9 प्रतिशत रहा, जबकि गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) का जोखिम-भारित आस्तियों की तुलना में पूंजी अनुपात (सीआरएआर) 26.3 प्रतिशत रहा।

नेटवर्क विश्लेषण से पता चलता है कि वित्तीय प्रणाली के घटकों के बीच कुल बकाया द्विपक्षीय एक्सपोजर में 2020-21 की

पहली छमाही में तेजी रही है। इस तेजी में अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों का द्विपक्षीय एक्सपोजर सर्वाधिक रहा, तथापि यह वैश्विक महामारी-पूर्व के स्तर से अभी भी नीचे है। अंतर-खंड एक्सपोजर की दृष्टि से प्रणाली को निधि उपलब्ध कराने में आस्ति प्रबंधन कंपनियों/म्यूचुअल फंडों और उसके बाद बीमा कंपनियों का प्रमुख स्थान रहा, जबकि गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां (एनबीएफसी) निधियों की सबसे बड़ी प्राप्तकर्ता रहीं, इनके बाद आवास वित्त कंपनियों (एचएफसी) का स्थान रहा। विशिष्ट परिस्थितियों में किए गए संक्रामकता विश्लेषण से पता चलता है कि संक्रामकता उत्पन्न करने की सर्वाधिक क्षमता वाले पांच बैंकों की विफलता के कारण हानियों में मार्च 2021 की तुलना में सितंबर 2021 में वृद्धि हुई, किंतु यह किसी अन्य बैंक की विफलता के रूप में परिणत नहीं होगी।

विनियामकीय पहल तथा वित्तीय क्षेत्र की अन्य गतिविधियां

वैश्विक महामारी के बावजूद वैश्विक विनियामकीय माहौल का उद्भव तथा उसमें बेहतरी जारी है। वित्तीय विनियामक वैश्विक

महामारी से मिली सीख पर सूक्ष्मता से ध्यान दे रहे हैं, नीतिगत सहायता उपायों को वापस लेने के कुप्रभावों का विश्लेषण कर रहे हैं और वित्तीय प्रणाली की आघात सहनीयता बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। घरेलू मोर्चे पर, सरकार और वित्तीय क्षेत्र के विनियामक वहनीय बहाली हासिल करने तथा वित्तीय प्रणाली की आघातसहनीयता बढ़ाने के लिए अपने प्रयास जारी रखे हुए हैं।

प्रणालीगत जोखिम का आकलन

रिजर्व बैंक के नवीनतम प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण (एसआरएस) में वित्तीय प्रणाली पर पड़ने वाले जोखिम की सभी व्यापक श्रेणियों – वैश्विक, समष्टिगत आर्थिक, वित्तीय बाजार, संस्थागत तथा सामान्य – को परिमाण की दृष्टि से 'मध्यम' आंका गया, किंतु वैश्विक और वित्तीय बाजारों से उत्पन्न होने वाले जोखिम को शेष की तुलना में अधिक माना गया है। पण्य मूल्यों, घरेलू मुद्रास्फीति, इक्विटी मूल्य के उतार-चढ़ाव, आस्ति गुणवत्ता में गिरावट, ऋण-वृद्धि तथा साइबर बाधाओं को प्रमुख जोखिम माना गया है।

अध्याय I समष्टि-वित्तीय जोखिम

वैश्विक बहाली पर कोविड-19 के ओमिक्रॉन रूप के उद्भव का साया मंडरा रहा है। स्फीतिकारी दबाव बना हुआ है और प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं के मौद्रिक नीति पथ एक दूसरे से अलग होते जा रहे हैं। घरेलू स्तर पर देखें तो वैश्विक महामारी की दूसरी लहर से जूझने के बाद, बहाली पूर्व स्थिति पर आ रही है। कॉर्पोरेट क्षेत्र ने आघात सहनीयता दिखाई है और बैंक-ऋण संवृद्धि में धीमी गति से बहाली के संकेत नजर आ रहे हैं, जिसमें खुदरा क्षेत्र आगे है। हालांकि, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) तथा सूक्ष्म वित्त क्षेत्र पर दबाव स्पष्ट नजर आ रहा है।

प्रस्तावना

1.1 नवंबर 2021 के अंत में कोविड-19 के ओमिक्रॉन रूप के उद्भव ने सभी वित्तीय बाजारों पर असर डालने वाली चिंता पैदा कर दी, जिसके कारण डाउजोन्स में सर्वाधिक गिरावट 'ब्लैक फ्राइडे' के रूप में दर्ज हुई। इस गिरावट का असर पूरी दुनिया पर हुआ। बॉन्डों के प्रतिफल और कच्चे तेल की अंतरराष्ट्रीय कीमतों में उतार-चढ़ाव देखा गया और अमेरिकी डॉलर में हाल में आई मजबूती उगमगा गई। यात्रा संबंधी नई पाबंदियों तथा क्वारंटीन एवं सामाजिक दूरी बनाने संबंधी आचार नियम जारी किए गए हैं। वर्तमान टीकों का विषाणु के नए उत्परिवर्तन पर पड़ने वाले असर को निर्धारित करने के लिए देश अधिक सतर्क हो गए हैं।

1.2 ओमिक्रॉन के पूर्व ही वैश्विक संवृद्धि और व्यापार में मंदी शुरू हो गई थी। आपूर्ति संबंधी बाधाएं और अड़चनें, सामान दुलाई प्रणाली अवरुद्ध होने, पोतवहन प्रभारों और बंदरगाहों के अवरुद्ध होने के साथ ही प्रमुख मध्यस्थों और कार्मिकों की कमी जैसी महत्वपूर्ण विपरीत परिस्थितियां इसका कारण रहीं। इन कारकों के साथ-साथ पण्यों की बढ़ी हुई कीमतों ने सभी भौगोलिक क्षेत्रों में स्फीतिकारी दबाव को निरंतर बनाए रखा जिसने वैश्विक आर्थिक संभावनाओं के लिए गंभीर जोखिम उत्पन्न किया। मौद्रिक नीतिगत दरें बढ़ाने या तीव्रगति से सामान्यीकरण में अधिक संख्या में उभरते बाजारों वाली अर्थव्यवस्थाओं (ईएमई) के उनके प्रतिपक्षकारों के साथ उन्नत अर्थव्यवस्थाओं (एई) के केंद्रीय बैंकों के शामिल होने के कारण वैश्विक वित्तीय परिस्थितियां तंग हुई हैं और अस्थिरता उत्पन्न हुई है। अधिकांश उभरते बाजारों वाली अर्थव्यवस्थाओं में पूंजी

प्रवाह की कमी ने इन देशों में मुद्राओं के मूल्यहास को तीव्र कर दिया है। इनमें से बहुत से देश वैश्विक महामारी के कारण उत्पन्न हुई सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) और रोजगार में कमी से जूझ रहे हैं। इससे उबरने में इनमें से कुछ देश वैश्विक महामारी-पूर्व के स्तर को प्राप्त भी कर लें, फिर पूर्व स्थिति प्राप्त करने में वर्षों का समय लगेगा। वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में आनुक्रमिक मौसमी समायोजित वार्षिक आधार पर 2021 की तीसरी तिमाही में पूरे एक प्रतिशतता बिंदु की गिरावट के अनुमान के साथ समग्ररूप से वैश्विक मांग में कमी आई है। समग्रतः, बहुपक्षीय एजेंसियों द्वारा वैश्विक संवृद्धि के अनुमानों में कमी किए जाने के साथ निकट भविष्य की संभावनाएं धूमिल बनी हुई हैं।

1.3 आगे की बात करें तो, ऐसा एक महत्वपूर्ण कारक है जो समष्टिगत आर्थिक और वित्तीय परिदृश्य को अवश्य बदलेगा, वह है - जलवायु परिवर्तन का प्रभाव और उसे कम करने के लिए पक्षकारों के सम्मेलन- अर्थात् संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन के 26वें सम्मेलन में पर्यावरण की आघात सहनीयता की दिशा की गई नीतिगत प्रतिबद्धताएं। यूनाइटेड किंगडम में आई बाढ़; संयुक्त अमेरिका, कनाडा और आस्ट्रेलिया में चलने वाली ऊष्ण हवाएं और जंगलों में लगने वाली आग, ब्राजील में पड़ने वाले सूखा तथा भारत के विभिन्न हिस्सों में चक्रवातों की बढ़ी हुई बारंबाता तथा गैर-मौसमी बारिश जैसी हाल की प्राकृतिक आपदाओं के तीव्र होने से इन आश्वासनों पर कार्रवाई की प्राथमिकता बढ़ गई है। विश्व बैंक का अनुमान है कि पिछले दो दशकों में दक्षिण एशिया के 750 मिलियन से अधिक लोग एक या अधिक जलवायु-संबंधी आपदा से प्रभावित हुए हैं जिसमें 150 बिलियन यूएस डालर से अधिक का नुकसान हुआ है।

¹ विश्व बैंक (2021), "शिफ्टिंग गियर्स : डिजिटलइजेशन एंड सर्विस-लेड डेवलपमेंट", अक्तूबर।

बदलती जलवायु के कारण इससे भी अधिक बड़ी आपदाओं 1 की आशंका बनी हुई है। साथ ही, हरित ऊर्जा की ओर कदम बढ़ाने तथा कार्बन उत्सर्जन को नियंत्रित करने के प्रयासों का कारखानों के उत्पादन, वैश्विक आपूर्ति शृंखलाओं, मुद्रास्फीति की परिस्थितियों तथा समग्ररूप से आर्थिक गतिविधियों पर परिवर्तनकारी प्रभाव पड़ेगा। जलवायु परिवर्तन से निपटने के प्रयासों में मध्यावधिक सामंजस्य बैठाने की आवश्यकता पड़ सकती है, विशेषकर ऐसे विकासशील देशों के मामलों में जो वहन करने योग्य वित्तपोषण और प्रौद्योगिकी की उपलब्धता की विकट चुनौती का सामना कर रहे हैं। इस संदर्भ में, वित्तीय प्रणाली को हरित बनाने का वैश्विक नेटवर्क (एनजीएफएस), जिसमें अप्रैल 2021 में शामिल होने के बाद से भारत सक्रिय रूप से प्रतिभागी रहा है, जलवायु संबंधी जोखिमों का भविष्य की दृष्टि से विश्लेषण के माध्यम से अध्ययन कर रहा है ताकि उनके मौद्रिक और वित्तीय प्रभावों की गणना की जा सके।

1.4 इस पृष्ठभूमि के साथ, इस अध्याय में वैश्विक गतिविधियों से उत्पन्न होने वाले समष्टिगत वित्तीय जोखिमों और घरेलू अर्थव्यवस्था पर उनके प्रसार-प्रभावों का, विशेषरूप से कॉर्पोरेट एवं एमएसएमई क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, आकलन प्रस्तुत किया गया है। अध्याय के अंत में नवंबर 2021 में किए गए रिज़र्व बैंक के नवीनतम प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण की मुख्य बातों को दर्शाया गया है।

1.1. वैश्विक पृष्ठभूमि

1.1.1 समष्टिगत वित्तीय गतिविधियां और संभावनाएं

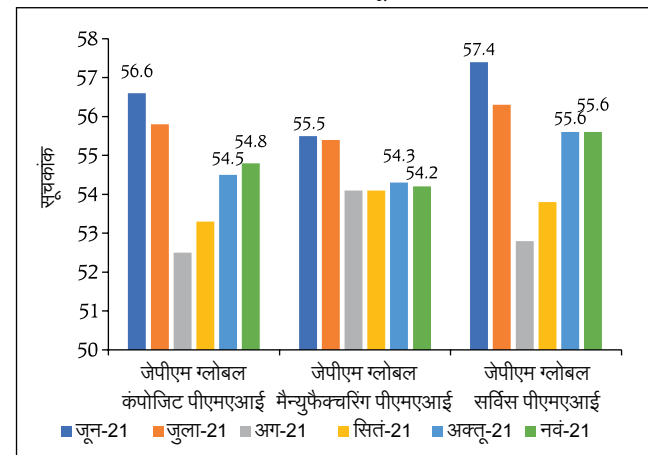
1.5 वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट के जुलाई 2021 अंक के बाद से 2021 के पूर्वार्द्ध में वैश्विक बहाली में आई उमंग की गति में मंदी शुरू हो गई है। विश्व के कई हिस्सों में संक्रमण के पुनः बढ़ने, आपूर्ति की बाधाओं और अड़चनों तथा निरंतर बने रहने वाले स्फीतिकारी दबावों, जो अपने स्वरूप को बदलते रहते हैं, इसके कारक रहे। टीकाकरण की अपेक्षाकृत अधिक दर वाले देशों, जो वैश्विक संवृद्धि के संचालक के रूप में उभरते प्रतीत हो रहे थे, में भी मंदी का असर हुआ। हालांकि, कई उभरते बाजारों वाली अर्थव्यवस्थाओं में टीके उपलब्धता एक बाधा बनी हुई है और उनका उत्पादन तथा रोजगार वैश्विक महामारी-पूर्व के स्तर से भी नीचे है। मुद्रास्फीति के अवांछित स्तरों पर बने रहने के कारण कई उभरते बाजारों वाली अर्थव्यवस्थाओं ने सामान्यीकरण और मौद्रिक नीति को कठोर बनाने की दिशा में

समय से पहले पहल की। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में भी कीमतों पर बने हुए निरंतर दबाव ने कुछ उन्नत अर्थव्यवस्थाओं को नीतिगत दरें बढ़ाने और/या सामान्यीकरण को तीव्र करने के बारे में विचार करने के लिए प्रेरित किया है।

1.6 समष्टिगत आर्थिक निष्पादन के बिखरने और नीतिगत राहों में अधिक अंतरों के रूप में परिणत होने से इस अनिश्चित वैश्विक वातावरण में वैश्विक प्रसार-प्रभावों का वित्तीय बाजार, आस्ति मूल्य और पूंजी प्रवाह पर प्रतिकूल असर पड़ा और उनसे जुड़े समष्टिगत वित्तीय जोखिम भी उभरे। तथापि, समष्टिगत आर्थिक परिस्थितियों के हाल के कुछ उच्च बारंबारता वाले सूचक वित्तीय गतिविधियों से प्राप्त पूर्व-चेतावनियों के बावजूद पिछड़े प्रतीत होते हैं।

1.7 वैश्विक समेकित क्रय प्रबंधक सूचकांक (पीएमआई) जुलाई 2020 से बढ़कर विस्तार क्षेत्र में पहुंच गया है। नवंबर 2021 में यह तीव्र होकर चार-माह के शीर्ष स्तर पर पहुंच गया है। सेवा क्षेत्र की गतिविधियों में सितंबर 2021 से निरंतर वृद्धि हो रही है, जिससे बढ़ी हुई कीमतों तथा आपूर्ति में निरंतर कमी के कारण विनिर्माण क्षेत्र में आई मामूली गिरावट का असर न के बराबर रहा। समग्ररूप से, वित्तीय और कारोबारी सेवाएं वैश्विक महामारी के असर से उबरती प्रतीत होती हैं, जबकि उपभोक्ता सेवाएं कमजोर हुई हैं और विनिर्माण को आपूर्ति में कमी का सामना करना पड़ रहा है (चार्ट 1.1)। वैश्विक खुदरा ई-वाणिज्य

चार्ट 1.1: वैश्विक क्रय प्रबंधक सूचकांक (पीएमआई)



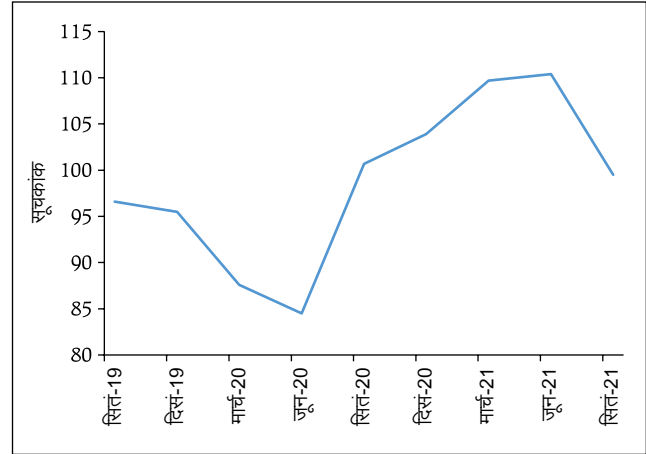
स्रोत : ब्लूमबर्ग।

बिक्री अधिक मांग के कारण तेजी से बढ़ रही है और वर्ष 2021 की समाप्ति तक इसमें अमेरिकी डॉलर के रूप में² 14.3 प्रतिशत की वृद्धि होने का अनुमान है। टीकाकरण में प्रगति के साथ वैश्विक उपभोक्ता विश्वास बढ़ा है, जिसके तहत 41 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने किराना सामानों पर, 33 प्रतिशत ने फैशन पर और 30 प्रतिशत ने स्वास्थ्य एवं सौंदर्य³ पर व्यय में वृद्धि का संकेत दिया है।

1.8 विश्व के पण्य व्यापार की मात्रा, जिसमें 2021 की दूसरी तिमाही में वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि बढ़कर 22.4 प्रतिशत हो गई थी, उसमें वर्ष की दूसरी छमाही में गिरावट आई है। यह गिरावट विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के वस्तु व्यापार दाब-मापक पर नवंबर 2021 में दर्ज हुई है, जो अगस्त 2021 में दर्ज 110.4 पठनांक की तुलना में तीव्र गिरावट के साथ 99.5 रह गया (चार्ट 1.2)। दाबमापक के पठनांक में यह कमी आयात मांग में गिरावट और आटोमोबाइल तथा अर्द्ध-चालकों जैसे व्यापक रूप से व्यापार की जाने वाली वस्तुओं के बाधित उत्पादन एवं आपूर्ति के मिश्रित रूप को दर्शाती है। थोक शुष्क पण्यों के पोतवहन प्रभारों को मापने वाले बाल्टिक शुष्क सूचकांक ने अपने उच्चतम अंक को एक दशक से भी अधिक समय के बाद अक्टूबर 2021 में पार किया, किंतु चौथी तिमाही के शेष महीनों में इसमें अचानक गिरावट आई (चार्ट 1.3)। विश्व व्यापार संगठन के अनुसार 2021 की चौथी तिमाही तक पण्यों के व्यापार की मात्रा में 6.6 प्रतिशत तक कमी होने का अनुमान है। वैश्विक व्यापार की मात्रा में 2021 में 9.7 प्रतिशत की और 2022 में 6.7 प्रतिशत की वृद्धि होने का अनुमान है⁴।

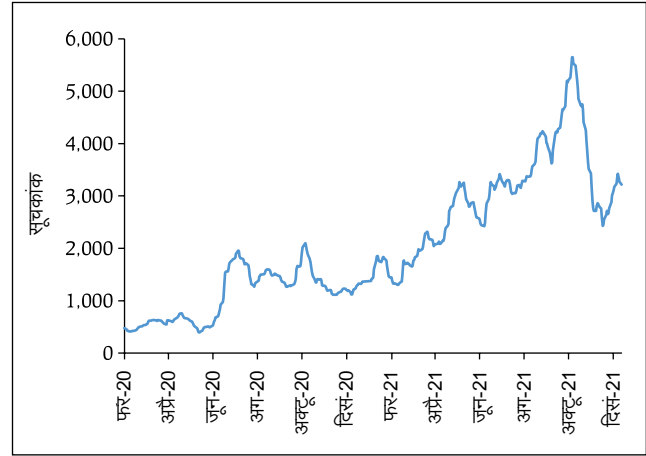
1.9 संवृद्धि में हो रही मंदी और निरंतर स्फीतिकारी दबावों के चलते वैश्विक बहाली का जोखिम कम हो जाने के बावजूद इस क्षेत्र में बहुत से नए जोखिम उत्पन्न हुए हैं। विकेंद्रीकृत वित्त (डीईएफआई), जिसे क्रिप्टो बाजार में मध्यस्थता का नया रूप माना जा रहा है, को अंतरराष्ट्रीय निपटान बैंक (बीआईएस) द्वारा हाल ही में शक्ति के केंद्रीकरण के खतरे के रूप में चिह्नित किया है। विकेंद्रीकृत वित्त के व्यापक प्रचलन में आने से लिवरेज का उच्च स्तर, चलनिधि में अंतर, निहित अंतः जुड़ाव तथा बैंकों जैसे आघात को झेल जाने वाले कारकों की अनुपस्थिति

चार्ट 1.2 : वैश्विक व्यापार दाबमापक



स्रोत: विश्व व्यापार संगठन

चार्ट 1.3: बाल्टिक शुष्क सूचकांक



स्रोत: ब्लूमबर्ग।

² इनसाइटडर इन्स्टेलीजेंस - "ग्लोबल ईकॉमर्स अपडेट", 2021.

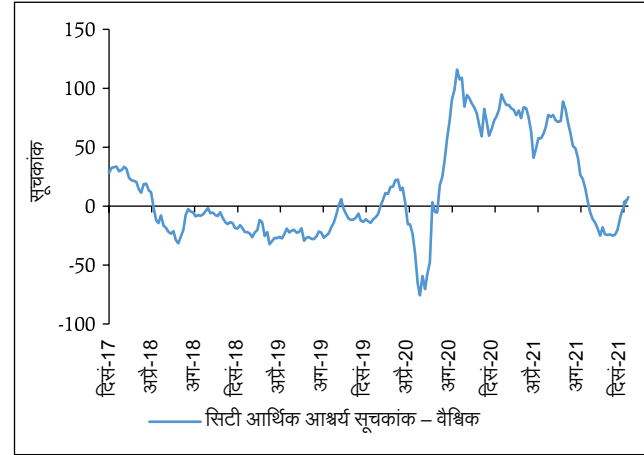
³ पीडब्लूसी - "ग्लोबल कन्ज्यूमर इनसाइट पल्स सर्वे", दिसंबर 2021.

⁴ आईएमएफ (2021), "वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक", अक्टूबर।

जैसी कमी के कारण वित्तीय स्थिरता कम आ सकती है। एक अन्य जोखिम निजी बाजारों की तीव्र वृद्धि और उनकी मजबूती से उत्पन्न हो रहा है। इसमें आस्ति प्रबंधकों द्वारा संस्थागत निवेशकों से निधियां जुटाई जाती हैं। ये विशिष्ट स्वरूप से निजी इक्विटी या वेंचर कैपिटल फर्म होती हैं, जिनका विस्तार ऋण केंद्रों के रूप में हा गया है। प्रतिफलों की तलाश में निजी बाजारों के जोखिम लेने के ढंग उन्हें अनुकूल परिस्थिति के अनुसार होते हैं और इस कारण से जोखिमों का प्रसार अन्य क्षेत्रों में बढ़ जाता है। ओपन-एंडेड बॉण्ड फंडों में हो रही तीव्र वृद्धि एक अन्य जोखिम है, जो वित्तीय बाजारों पर दबाव को अधिक बढ़ा देता है। ऐसा विशेषरूप से फायर सेल डायनेमिक्स के द्वारा होता है, जैसा कि मार्च 2020 में बॉण्ड बाजारों की उथल-पुथल तथा उसके बाद के खंड में देखा गया था। उभरते बाजारों वाली अर्थव्यवस्थाओं में, विशेषरूप से एशिया में, विदेशी मुद्रा व्युत्पन्नी बाजारों में तीव्र वृद्धि हुई जिसके साथ-साथ अमेरिकी डॉलर के मुकाबले उभरते बाजारों वाली अर्थव्यवस्थाओं की मुद्राओं में विदेशीमुद्रा व्युत्पन्नियों में अधिक व्यापार हुआ, जो 2013 से दोगुना से भी अधिक है। चूंकि, जोखिम कम करने (हेजिंग) के लिखत विशिष्ट रूप से अल्पावधिक होते हैं, दीर्घावधिक डॉलर आस्तियों तथा अल्पावधिक हेजिंग लिखतों के बीच परिपक्वता का अंतर स्वतः उत्पन्न हो जाता है, जिसके कारण बाजार में दबाव उत्पन्न होने की स्थिति में निवेशकों को रोल-ओवर जोखिम तथा डॉलर निधीयन की कमी का सामना करना पड़ता है। ये गतिविधियां ऐसी स्थिति में अत्यधिक अनिश्चितता वाले अंतरराष्ट्रीय वातावरण पर प्रतिकूल असर डालती हैं, जब अंतरराष्ट्रीय वातावरण पर प्रणालीगत दृष्टि से महत्वपूर्ण केंद्रीय बैंकों द्वारा नीतिगत सामान्यीकरण की गति से संबंधित अनिश्चितताओं, बढ़े हुए भू-राजनैतिक तनावों और वैश्विक महामारी की अवस्था, जो सर्वोपरि है, के बादल मंडरा रहे हों। इन परिवर्तनों को प्रतिबिंबित करते हुए वैश्विक आर्थिक आश्चर्य सूचकांक (जीईएसआई), जो प्राप्त होने वाले आंकड़ों और अर्थशास्त्रियों के पूर्वानुमानों की तुलनात्मक स्थिति को दर्शाता है, 2021 की तीसरी तिमाही में ऋणात्मक हो गया था, और नवंबर 2021 के अंत में जाकर ही इसमें सुधार हुआ (चार्ट 1.4)।

1.10 अक्टूबर 2021 में, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने वैश्विक अर्थव्यवस्था से संबंधित अपनी संभावनाओं को संशोधित किया, जो अप्रैल 2021 के अनुमानों की तुलना में कमी को दर्शाता है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष का अनुमान था कि

चार्ट 1.4: वैश्विक आर्थिक आश्चर्य सूचकांक



स्रोत : ब्लूमबर्ग।

सारणी 1.1: 2021-2023 के लिए संवृद्धि के अनुमान

(प्रतिशत)

	2020	2021*	2022*	2023*
आईएमएफ				
उन्नत अर्थव्यवस्थाएं	-4.5	5.2	4.5	2.2
उभरते बाजारों वाली विकासशील अर्थव्यवस्थाएं	-2.1	6.4	5.1	4.6
विश्व	-3.1	5.9	4.9	3.6
ओईसीडी				
विश्व	-3.4	5.6	4.5	3.2

टिप्पणी*: अनुमान।

स्रोत: आईएमएफ वैश्विक आर्थिक संभावना डाटाबेस (अक्टूबर 2021), ओईसीडी आर्थिक संभावना, खंड 2021 अंक 2 (दिसंबर)।

वैश्विक उत्पादन के 2022 में 4.9 प्रतिशत तक कम होने के पूर्व 2021 में इसमें 5.9 प्रतिशत की वृद्धि होगी (सारणी 1.1)। अनुमानों में उन्नत अर्थव्यवस्थाओं और विकासशील देशों से संबंधित वृद्धि पथ में बढ़ते अंतर को चिह्नित किया गया है। यह अंतर व्यापक रूप से टीकाकरण के प्रसार और नीतिगत सहारे में अंतराल होने के कारण देखा गया। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने ओमिक्रॉन रूप⁵ के उद्भव के कारण अपने अनुमानों में और अधिक कमी किए जाने की संभावनाओं का संकेत दिया था।

1.11 हाल ही में, अर्थात् दिसंबर 2021 में आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी) ने वैश्विक बहाली की गति में कमी होने और इसके निरंतर रूप से असंतुलित होने का संकेत दिया है। उसका मानना है कि श्रमिकों की कमी और आपूर्ति की अड़चनों के कारण अधिक मजबूत और अपेक्षाकृत लंबे समय तक बने रहने वाले स्फोटिकारी दबाव इसके चक्र में प्रारंभिक अवस्था में असामान्य रूप से उभरे हैं। तदनुसार, आर्थिक सहयोग और विकास संगठन का अनुमान है कि वैश्विक बहाली जारी रहेगी किंतु समय के साथ इसमें कमी होगी। 2021 के लिए वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में वृद्धि के अनुमानों को सितंबर 2021 के अनुमानों में 10 आधारभूत अंकों की कमी के साथ 5.6 प्रतिशत किया गया है, जबकि, 2022 में यह कम होकर 4.5 प्रतिशत और 2023 में 3.2 प्रतिशत रहने का अनुमान है (सारणी 1.1)। आर्थिक सहयोग और विकास संगठन का अनुमान है कि वैश्विक उत्पाद में 2021 की चौथी तिमाही में 3.8 प्रतिशत (वर्ष-दर-वर्ष) वृद्धि होगी।

1.12 जुलाई 2021 की वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट जारी किए जाने के बाद के महीनों में विश्व के अनेक हिस्सों में संक्रमण के पुनः बढ़ने, बहाली पथों में अंतर होने और परिणामी मौद्रिक रुख तथा कार्रवाइयों के बीच, ओमिक्रॉन के उद्भव तक वैश्विक वित्तीय बाजारों ने आघात सहनीयता को प्रदर्शित किया है। कई देशों में स्टॉक सूचकांकों के नई ऊंचाइयों पर पहुंचने के साथ इक्विटी बाजारों में जोखिम लेने की क्षमता पुनः लौटी है। आप्शन मूल्यों के बढ़े स्तर पर रहने और आसन्न गिरावट के बारे में निवेशकों में निराशा का संकेत होने के बावजूद निरंतर हासिल की गई कमाई और अपेक्षित कमाई के बल पर इक्विटी में उछाल देखा गया। आपूर्ति शृंखला में निरंतर बाधाओं और पण्य मूल्यों के बढ़े स्तर के कारण अगस्त में और सितंबर के प्रारंभ में स्टॉक मूल्यों में गिरावट आई थी, जो बाद में सामान्य हुई। निवेश श्रेणी के

स्प्रेड और अधिक समय तक अपेक्षाकृत कम रेटिंग वाले उच्च प्रतिफल वाले बॉण्डों के भी ऐतिहासिक स्तर के नीचे रहने के साथ कॉर्पोरेट और बॉण्ड बाजारों में भी उमंग बनी रही। जुलाई-सितंबर तिमाही में कॉर्पोरेट परिणामों के मजबूत रहने से कॉर्पोरेट बॉण्डों के वैश्विक महामारी-पूर्व के स्तर से भी अधिक स्तर पर जारी होने की शुरुआत हुई, जिसमें अपेक्षाकृत कम रेटिंग वाले बॉण्डों की संख्या सर्वाधिक रही। इन्हें निजी बाजारों सहित आसान वित्तीय परिस्थितियों से सहारा मिला। विकेंद्रीकृत वित्त के प्रोफाइल के मजबूत होने और अतिरिक्त गति के कारण क्रिप्टो आस्तियों की जोखिम क्षमता में वृद्धि की गई।

1.13 इसके विपरीत, गिल्ट बॉण्ड बाजारों में काफी उतार-चढ़ाव देखा गया और चलनिधि में कमी के दौर भी रहे। मौद्रिक नीति के शीघ्र ही सामान्यीकरण की तरफ बढ़ती निश्चितता के कारण बाजार के रुख में अनिश्चितता रही। केंद्रीय बैंक के अग्रगामी मार्गदर्शन से संबद्ध नहीं रहने के कारण विभिन्न देशों में प्रतिफल वक्रों की आकृति में व्यापक भिन्नता उत्पन्न हुई। नवंबर में, मुद्रास्फूर्ति के अंकों में चिंताजनक वृद्धि होने के बावजूद जब प्रणालीगत केंद्रीय बैंकों ने सामान्यीकरण के शुरुआत की पुष्टि की, गिल्ट बाजार अस्थिर होने लगे, केंद्रीय बैंक से सूचना प्राप्त होने के पहले ब्याज दर बढ़ने लगे। ओवरनाइट इंडेक्स स्वैप (ओआईएस) में इसे प्रमुखता से देखा गया गया, जो यह दर्शाता है कि समष्टिगत आर्थिक संभावनाओं के बारे में सरकारी बॉण्ड बाजारों तथा केंद्रीय बैंकों की धारणाओं में व्यापक अंतर है। केंद्रीय बैंकों के अपेक्षाकृत कम समायोजनकारी कदम से बाजार के मत की पुष्टि प्रतीत हुई और अल्पावधिक प्रतिफलों में दीर्घावधिक प्रतिफलों की तुलना में अधिक वृद्धि हुई जिससे विश्व भर में प्रतिफल वक्र सपाट हुए। दीर्घावधिक प्रतिफलों में अगस्त और अक्टूबर के बीच उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई। यह वृद्धि कच्चे तेल की कीमतों के अनुरूप रही जो मांग में कमी और बाद वाले (मांग) की तुलना में पहले की ब्याज दर में वृद्धि के बारे में समान रुख को दर्शाता है। पहले जारी किए गए राहत उपायों को वापस लिए जाने के कारण निश्चितता बाधित हुई जिससे अक्टूबर से निवेशक रुख और लिवरेज के कारण प्रतिफल में वृद्धि हुई। इसके अलावा चलनिधि में विस्तार होने के बावजूद पॉजिशन में तेजी से परिवर्तन होने लगे। वास्तविक प्रतिफल अधिक गर्त में पहुंचकर ऋणात्मक हो गए।

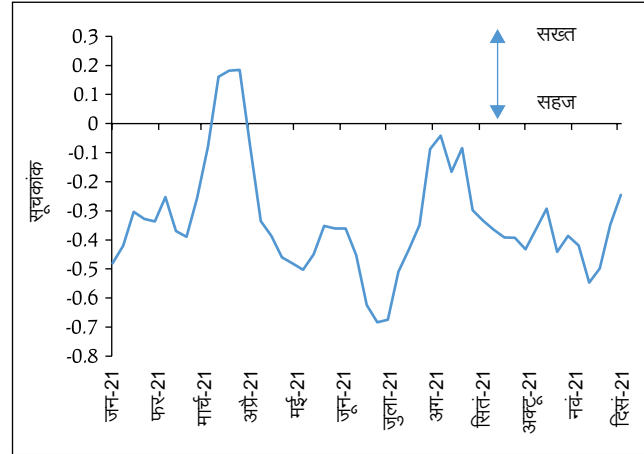
⁵ सुश्री क्रिस्टेलिना जोर्जिवा, प्रबंध निदेशक, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के 4 दिसंबर 2021 के 'रायटर्स नैक्स्ट' सम्मेलन, में की गई टिप्पणी।

1.14 उभरते बाजारों वाली अर्थव्यवस्थाएं कठिन वैश्विक वित्तीय परिस्थितियों तथा उच्च घरेलू मुद्रास्फीति के कारण कमजोर हुईं। इसके अनुरूप विनिमय दरों में निरंतर गिरावट का दबाव बना रहा। उनमें से बहुत सी अर्थव्यवस्थाओं में क्षीण बहाली के साथ ही उच्च मुद्रास्फीति भी बनी रही। ओमिक्रॉन के आगमन से अधिकांश उभरते बाजारों वाली अर्थव्यवस्थाओं में घरेलू वित्तीय परिस्थितियां काफी तंग हुईं। अमेरिकी डॉलर में उभरते बाजारों वाली अर्थव्यवस्थाओं की मुद्राओं, जो कच्चे तेल की कीमतें लगातार बढ़ने से भी कमजोर हुईं, की तुलना में काफी मूल्यवृद्धि हुई। इक्विटी पोर्टफोलियो प्रवाह समाप्त हो गया और बहिर्वाह होने लगा। उभरते बाजारों वाली अर्थव्यवस्थाओं के बॉण्ड बाजारों में प्रवाह का देश-विशिष्ट ढंग देखा गया। जिन देशों ने मुद्रास्फीति के दबाव से नीतिगत दरों को बढ़ाया, उनके स्थानीय बॉण्ड प्रतिफल बढ़े, जिससे उनकी वित्तीय स्थिति और अधिक तंग हुई तथा कॉर्पोरेट बॉण्ड स्प्रेड का विस्तार हुआ।

1.15 ओमिक्रॉन ने इसे बदल दिया। इक्विटी बाजारों के पूर्व की लाभ की स्थिति समाप्त हो गई और कई देशों में यह हानि की अवस्था में पहुंच गए। कॉर्पोरेट बॉण्ड स्प्रेड का विस्तार हुआ। गिल्ट प्रतिफल अस्थिर हुआ, किंतु आशंका की तुलना में हल्के लक्षणों वाले नए रूप के प्रकट रूप से फैलने के कारण दिसंबर में इसमें गिरावट आई। उभरते बाजारों वाली अर्थव्यवस्थाओं की मुद्राओं के मूल्यहास का विस्तार हुआ और प्रतिफलों में कमी आई, जिसके कारण वित्तीय स्थिति और अधिक तंग हुई। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं की वित्तीय परिस्थितियां भी तंग हुईं। अमेरिका और यूरो क्षेत्र में भी लगभग समान स्थिति उत्पन्न हुई। ओमिक्रॉन के कारण निवेश के लिए सुरक्षित स्थानों की तलाश शुरू होने से अमेरिकी डॉलर में उन्नत अर्थव्यवस्थाओं और उभरते बाजारों वाली अर्थव्यवस्थाओं की मुद्राओं की तुलना में तीव्र मूल्यवृद्धि हुई (चार्ट 1.5 – 1.7)।

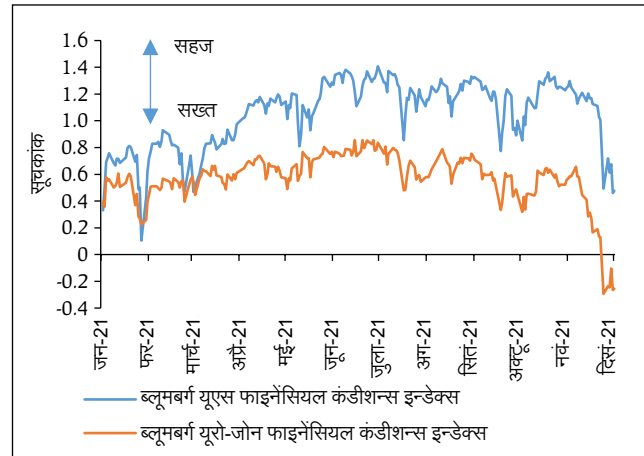
1.16 प्रमुख उन्नत अर्थव्यवस्थाओं, विशेषरूप से अमेरिका और यूके, के अल्पावधिक से मध्यावधिक प्रतिफलों में मंदडिया रुख के विपरीत जर्मनी के अल्पावधिक प्रतिफल सपाट रहे, जो कुछ हद तक यूरो जोन की कमजोर आर्थिक संभावनाओं तथा

चार्ट 1.5 : सिटी ईएम एशिया वित्तीय परिस्थिति सूचकांक



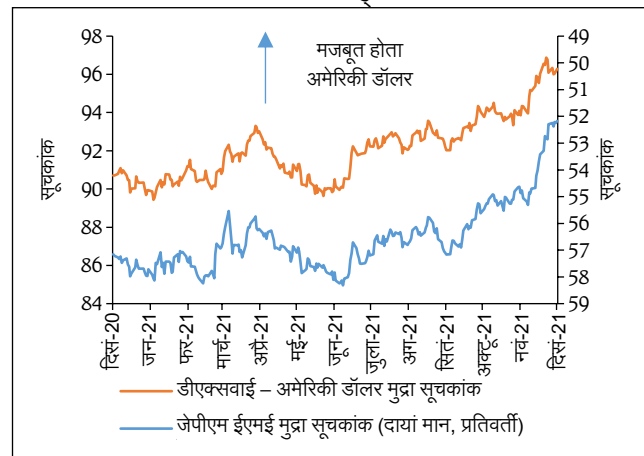
स्रोत : ब्लूमबर्ग।

चार्ट 1.6 : प्रमुख वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं की वित्तीय परिस्थितियां



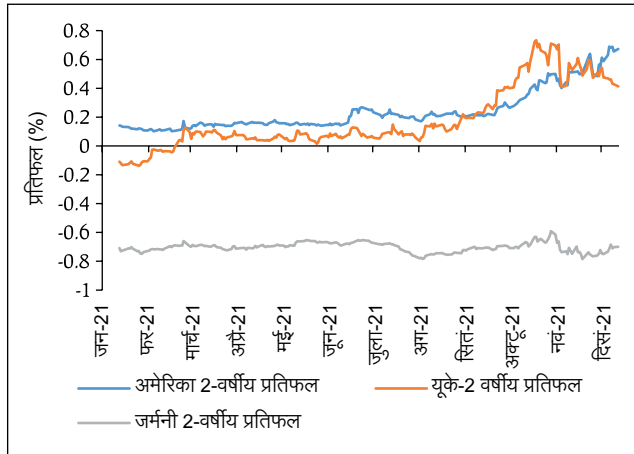
स्रोत : ब्लूमबर्ग।

चार्ट 1.7: आई और ईएमई मुद्राओं में परिवर्तन



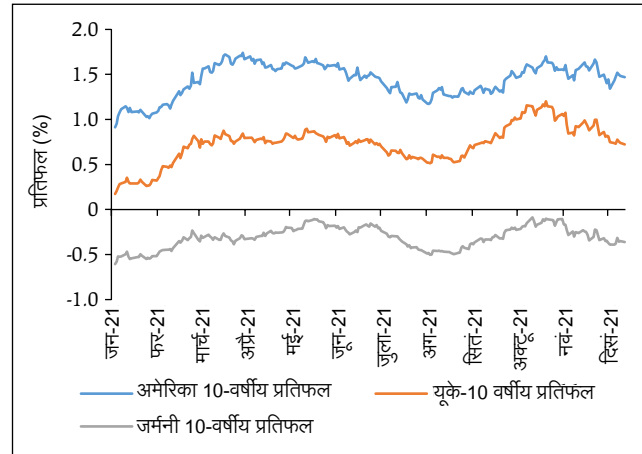
स्रोत : रिफिनिटिव।

चार्ट 1.8: प्रमुख उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में 2-वर्षीय प्रतिफल



स्रोत : ब्लूमबर्ग।

चार्ट 1.9 : प्रमुख उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में 10-वर्षीय प्रतिफल



स्रोत : ब्लूमबर्ग।

यूरोपीय केंद्रीय बैंक (ईसीबी) के वर्तमान समायोजनकारी रुझान के बने रहने को दर्शाता है। दीर्घावधि में भी जर्मनी के प्रतिफलों में कमी आई, जो अधिक हाल के समय में अमेरिका और यूके के प्रतिफल में भी देखा गया (चार्ट 1.8-1.9)।

1.1.2 अन्य वैश्विक समष्टिगत आर्थिक गतिविधियां

1.17 वैश्विक समष्टिगत वित्तीय परिवेश में अधिकांश बड़ी उभरते बाजारों वाली अर्थव्यवस्थाओं एवं उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में भी बड़े पैमाने में नीतिगत परिवर्तन देखे गए।

(ए) लोक ऋण

1.18 वैश्विक महामारी के प्रति प्रतिक्रिया स्वरूप पूरे विश्व में सरकारी ऋण के स्तर में तीव्र वृद्धि हुई, जिसके अंतर्गत जीवन और आजीविका को सहारा देने के राजकोषीय प्रोत्साहनों का काफी बड़ा हिस्सा था (सारणी 1.2)। सरकारी वित्त पर इसका असर लंबे समय तक बने रहने की संभावना है। मध्यावधिक राजकोषीय निरंतरता और भविष्य के संकटों से निपटने के लिए नीतिगत क्षमता पर इसका प्रभाव पड़ेगा।

सारणी 1.2: सामान्य सरकारी राजकोषीय शेष, 2019-26 : समग्र शेष

(per cent of GDP)

	वास्तविक		अनुमान						
	2019	2020	2021	2022	2023	2024	2025	2026	
विश्व	-3.6	-10.2	-7.9	-5.2	-4.2	-3.8	-3.6	-3.5	-3.5
उन्नत जी-20	-3.6	-11.7	-9.6	-5.4	-4.0	-3.6	-3.5	-3.5	-3.5
यूरो क्षेत्र	-0.6	-7.2	-7.7	-3.4	-2.4	-2.0	-1.7	-1.6	-1.6
फ्रांस	-3.1	-9.2	-8.9	-4.7	-3.9	-3.6	-3.4	-3.4	-3.4
जर्मनी	1.5	-4.3	-6.8	-1.8	-0.4	0.0	0.5	0.5	0.5
इटली	-1.6	-9.5	-10.2	-4.7	-3.5	-2.9	-2.6	-2.4	-2.4
जापान	-3.1	-10.3	-9.0	-3.9	-2.1	-2.1	-2.1	-2.1	-2.2
यूनाइटेड किंगडम	-2.3	-12.5	-11.9	-5.6	-3.6	-3.2	-3.1	-2.9	-2.9
संयुक्त अमेरिका	-5.7	-14.9	-10.8	-6.9	-5.7	-5.2	-5.3	-5.3	-5.3
अन्य	-0.2	-5.2	-4.2	-2.3	-1.4	-1.0	-0.7	-0.6	-0.6
ईएमई	-4.7	-9.6	-6.6	-5.8	-5.2	-4.8	-4.4	-4.1	-4.1
उभरते जी-20	-5.4	-10.3	-7.0	-6.3	-5.7	-5.2	-4.8	-4.4	-4.4
एशिया	-5.9	-10.8	-7.9	-7.0	-6.2	-5.7	-5.2	-4.8	-4.8
चीन	-6.3	-11.2	-7.5	-6.8	-6.2	-5.6	-5.0	-4.5	-4.5
भारत	-7.4	-12.8	-11.3	-9.7	-8.8	-8.3	-8.1	-7.8	-7.8
निम्न आय वाले विकासशील देश	-3.9	-5.2	-5.4	-5.0	-4.5	-4.3	-4.1	-3.9	-3.9
वैश्विक उत्पादन (प्रतिशत)	2.8	-3.1	5.9	4.9	3.6	3.4	3.3	3.3	3.3

टिप्पणी: समग्र राजकोषीय शेष से तात्पर्य सरकार के निवल ऋण दिए जाने (+)/निवल उधारियां (-) से है।

स्रोत: आईएमएफ फिस्कल मॉनिटर, अक्तूबर 2021.

1.19 केंद्रीय बैंकों द्वारा मात्रात्मक सुलभता(क्यूई) के माध्यम से कर्ज पत्र की नई आपूर्ति का एक बड़ा हिस्सा अवशोषित किया गया था। यहां तक कि राजकोषीय स्थिति में खिंचाव के बावजूद जैसे ही केंद्रीय बैंक चलनिधि स्पिगोट्स को बंद कर देते हैं, वैश्विक कर्ज बाजारों द्वारा अशांत संक्रमण का सामना करने की संभावना बढ़ जाती है।

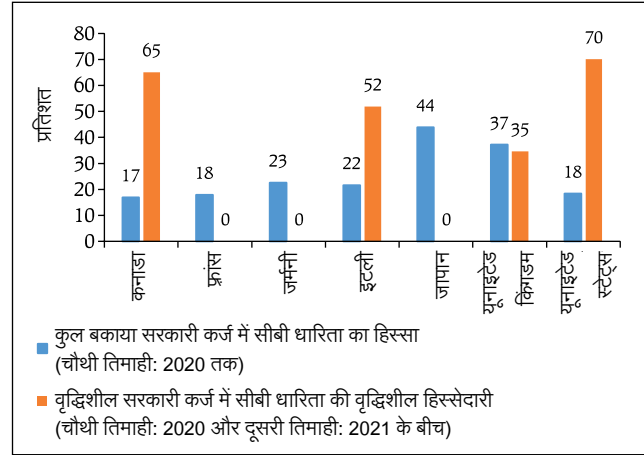
1.20 कई उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के मामले में, केंद्रीय बैंकों की सरकारी कर्ज की कुल धारिता महत्वपूर्ण है; यहां तक कि 2021 में भी उन्होंने नए निर्गमन के एक महत्वपूर्ण हिस्से को अवशोषित करना जारी रखा है। (चार्ट 1.10). इसलिए, जैसे ही केंद्रीय बैंक कर्ज बाजारों में अपने असाधारण हस्तक्षेपों को हटाने के लिए तैयार होते हैं, चलनिधि और ब्याज दरों पर प्रभाव के बारे में प्रत्याशाएं मंद पड़ जाती हैं और प्रतिफलों में सुधार होता दिखाई है (चार्ट 1.11)।

1.21 जोखिम-मुक्त राष्ट्रिक दर के बारे में अनिश्चितता ने भी निधीयन बाजारों में अस्थिरता पैदा कर दी है, जैसा कि 3 साल की अंतर्निहित दर के साथ यूएसडी अदला-बदली के लिए अस्थिरता की अवधि संरचना में ऊपर की ओर बदलाव में परिलक्षित होता है। (चार्ट 1.12)

ख. बैंक तुलन-पत्रों में जोखिम

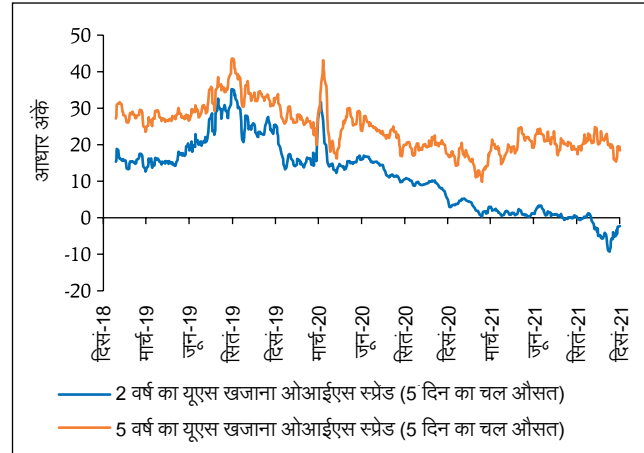
1.22 जैसा कि कई देशों में नीति सामान्यीकरण शुरू होता है, ब्याज दरों के पुनर्निर्धारण से देशी बैंकों के बीच संविभागों में विवेकाधीन बदलाव के साथ-साथ बैंकिंग क्षेत्र की देयताओं का पुनर्मूल्यांकन हो सकता है। इस संदर्भ में, यूरोपीय बैंकों की देयता रणनीतियों में एक उल्लेखनीय समायोजन देखा गया है, जिसमें बैंकों द्वारा मीयादी निधीयन निर्गमन (अल्पावधि और दीर्घावधि दोनों) की मांग बढ़ रही है और केंद्रीय बैंक की चलनिधि

चार्ट 1.10: जी-7 सरकारी कर्ज और निर्गमन में केंद्रीय बैंकों का हिस्सा



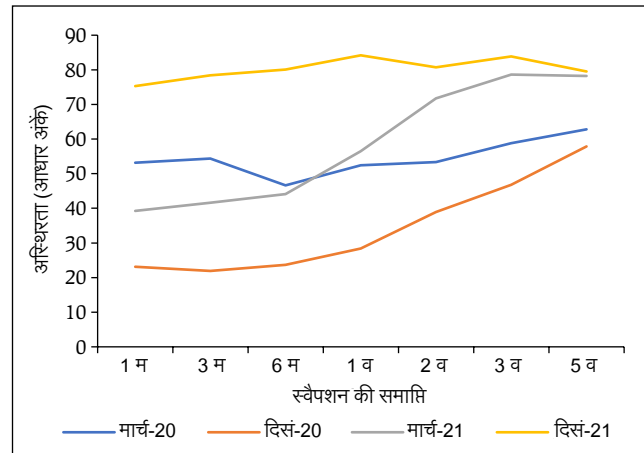
स्रोत: आईएमएफ

चार्ट 1.11: 2 वर्ष और 10 वर्ष के सुचारु किये गये अमेरिकी खजाना और ओआईएस स्प्रेड



स्रोत: ब्लूमबर्ग।

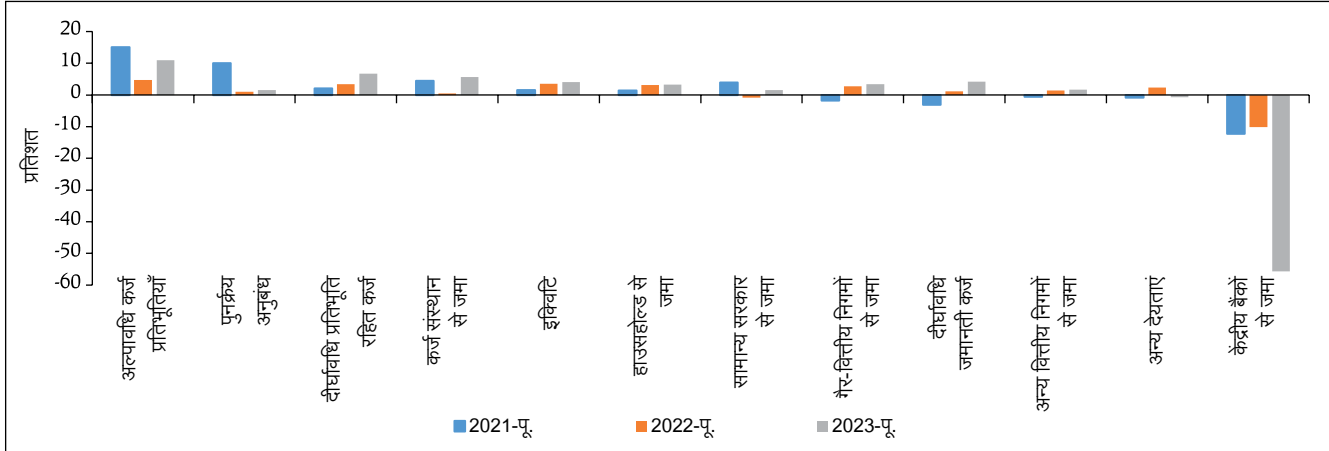
चार्ट 1.12: मीयादी संरचना- यूएसडी स्वैपशन की 3 वर्ष की अस्थिरता दर



नोट: 10 दिसंबर 2021 तक

स्रोत: ब्लूमबर्ग

चार्ट 1.13: ईबीए बैंकों के चुनिंदा देयता वर्गों के लिए विकास अनुमान



नोट: पू- पूर्वानुमान
स्रोत: यूरोपीय बैंक प्राधिकारी (ईबीए)

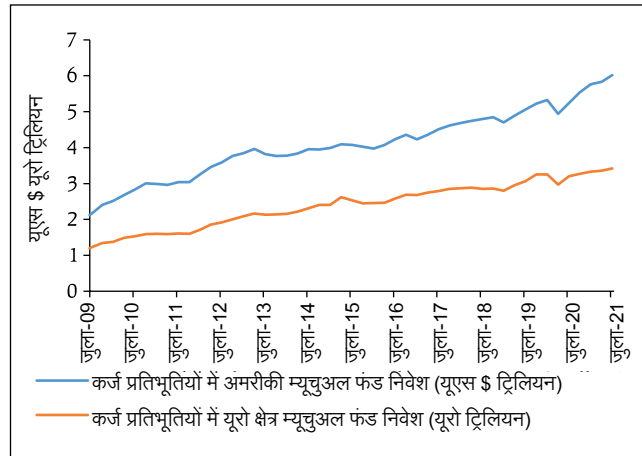
देयता वित्तपोषण के स्रोत के रूप में तेजी से गिर रही है (चार्ट 1.13)।

ग. गैर-बैंकिंग वित्तीय क्षेत्र में जोखिम

1.23 केंद्रीय बैंकों द्वारा अभूतपूर्व क्यूई और परिणामी चलनिधि के अंतर्वेशन से म्यूचुअल फंड के तुलन-पत्रों, विशेष रूप से बॉन्ड / मुद्रा बाजार निधियों का बड़ा विस्तार हुआ है (चार्ट 1.14)। अस्थिरता के समय ऐसे निधियों से परिसंपत्ति बाजार की चलनिधि में प्रभाव-विस्तार तेज हो जाता है। कम ब्याज दरों के परिणामस्वरूप कुछ प्रमुख बाजारों में इक्विटी कीमतों (सीमांत व्यापारों) पर लीवरेज्ड शर्तों का विस्तार हुआ है। चलनिधि जोखिम कुछ बॉन्ड निधियों के लिए एक चिंता का विषय बना हुआ है, विशेष रूप से वे जो परिसंपत्ति वर्गों में निवेश करने पर निवेशकों को उच्च मोचन आवृत्ति प्रदान करते हैं, दबाव⁶ के समय में अतरल हो जाते हैं।

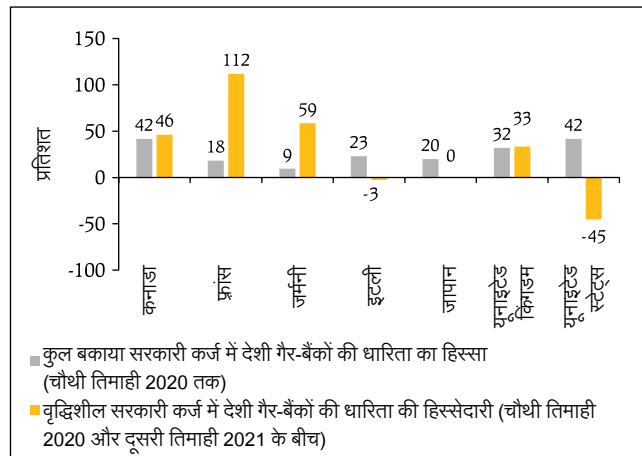
1.24 इसके अलावा, कई उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में देशी गैर-बैंक सरकारी कर्ज में प्रमुख निवेशक हैं (चार्ट 1.15)। सरकारी कर्ज अभिदान में उनकी बढ़ती हुई हिस्सेदारी महत्वपूर्ण बनी हुई है। क्यूई के समापन के संदर्भ में, केंद्रीय बैंकों के तुलन-पत्रों को छोटा करने के किसी भी संतुलित किए जाने के प्रयास से ब्याज दरों के स्तर में अचानक पुनः तबदीली हो सकती है।

चार्ट 1.14: यूएस और यूरो क्षेत्र के चुनिंदा म्यूचुअल फंड परिसंपत्तियां



स्रोत: एफआरईडी, सेंट लुइस और ईसीबी के फेडरल रिजर्व बैंक

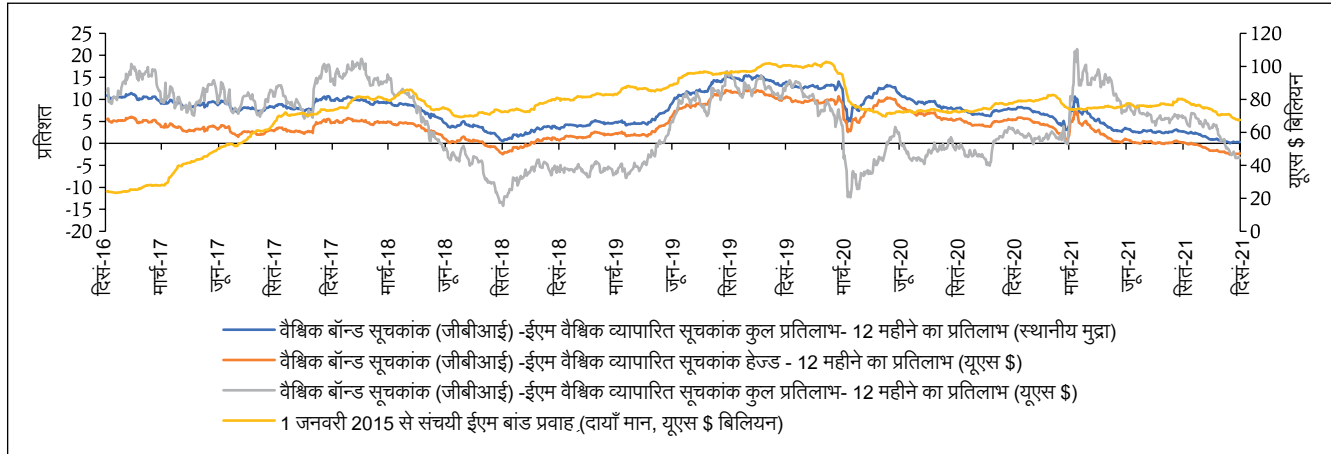
चार्ट 1.15: सरकारी कर्ज और निर्गमन में एई देशी गैर-बैंकों का हिस्सा



स्रोत: आईएमएफ

⁶ यूरोपीय प्रतिभूति और बाजार प्राधिकरण (ईएसएमए) 2021, "बाजार गतिविधियों पर रुझान, जोखिम और कमजोरियों पर रिपोर्ट", सितंबर

चार्ट 1.16: उभरते बाज़ार बांड प्रवाह और पोर्टफोलियो प्रतिलाभ



नोट: ये जानकारी ऐसे स्रोतों से ली गई है जिसे भरोसेमंद माना जा सकता है, किंतु जे पी मॉर्गन इसकी संपूर्णता या सटीकता का वादा नहीं करता है। इस सूचकांक का इस्तेमाल अनुमति प्राप्त करके किया गया है। जेपी मॉर्गन से लिखित पूर्व अनुमोदन के बिना इसे कापी, इस्तेमाल या वितरण नहीं किया जाए। सौजन्य जे पी मॉर्गन चैस एंड कं., समस्त अधिकार 2021
 स्रोत: अंतर्राष्ट्रीय वित्त संस्थान (आईआईएफ) और जे पी मॉर्गन

1.1.3 पूंजी प्रवाह और विनिमय दर अस्थिरता

1.25 अत्यधिक अनिश्चितता वाले अंतर्राष्ट्रीय परिवेश में, विशेष रूप से ईएमई बांड निवेशकों की जोखिम वहन-क्षमता में उतार-चढ़ाव और प्रवाह के लिए अतिसंवेदनशील होते हैं और इसलिए पूंजी प्रवाह के उलटफेर में उछाल आता है; अचानक रुक जाता है; उलटा हो जाता है। उभरती बाज़ार अर्थव्यवस्थाओं (ईएमई) के लिए बांड प्रवाह आम तौर पर महामारी की शुरुआत के साथ पोर्टफोलियो रिटर्न के अनुरूप चले गए हैं; हालांकि, उभरते हुए वैश्विक ब्याज दर परिवेश का आकलन करने के लिए निवेशकों के संघर्ष के कारण वे सपाट हो गए हैं। (चार्ट 1.16)

1.26 महामारी के दौरान उभरती बाज़ार एवं विकासशील अर्थव्यवस्थाओं (ईएमडीई) की गैर-बैंक संस्थाओं में सीमापार बैंकिंग प्रवाह अपेक्षाकृत स्थिर रहा (सारणी 1.3)। ईएमई पारस्परिक मुद्रा आधारित (सीसीबी) अदलाबदली, जिसमें महामारी के मद्देनजर तेजी से गिरावट आई थी, तब से बढ़ गया है, जिसका अर्थ है कि सीसीबी अदलाबदली मार्ग के माध्यम से अमेरिकी डॉलर की मांग भी सामान्य हो गई है (चार्ट 1.17)। जबकि प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं (ब्राजील और मैक्सिको जैसे ईएमई सहित) के साथ फेडरल रिजर्व की मुद्रा स्वैप लाइनों का एक स्थिर प्रभाव पड़ा, ईएमई के बीच नकारात्मक सीसीबी स्वैप दरें दूसरी तिमाही:2021 तक बनी रहीं।

1.27 हाल के वर्षों में, ईएमई में जाने वाले इक्विटी और बांड प्रवाह आम तौर पर साथ-साथ आगे बढ़े हैं। हालांकि, महामारी

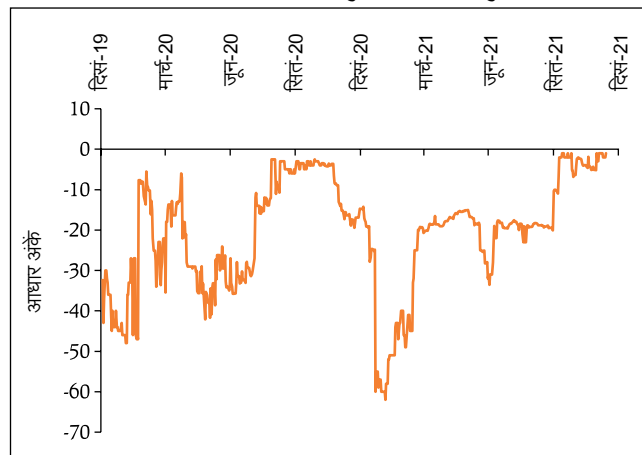
सारणी 1.3 : ईएमडीई की गैर-बैंक संस्थाओं में सीमापार बैंकिंग प्रवाह

(यूएसडी बिलियन)

तिमाही	गैर-बैंक क्षेत्र		अनुमान	
	दावे	देयताएं	दावे	देयताएं
ति4-2019	2,123.1	1,327.2	1,590.6	941.8
ति1-2020	2,101.6	1,369.3	1,569.8	943.8
ति2-2020	2,127.0	1,346.0	1,585.9	945.9
ति3-2020	2,149.8	1,367.7	1,625.3	960.1
ति4-2020	2,227.9	1,419.2	1,672.7	1,011.5
ति1-2021	2,221.1	1,408.8	1,677.7	987.3
ति2-2021	2,246.5	1,462.6	1,684.4	1,030.9

स्रोत: बीआईएस.

चार्ट 1.17: माध्य परस्पर लेन-देन की मुद्रा स्वैप आधार: चुनिन्दा ईएमई



स्रोत: रेफिनिटिव

⁷ अर्थव्यवस्थाओं में चीन, हंगरी, मलेशिया, मैक्सिको, पोलैंड, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, थाईलैंड और तुर्की शामिल हैं।

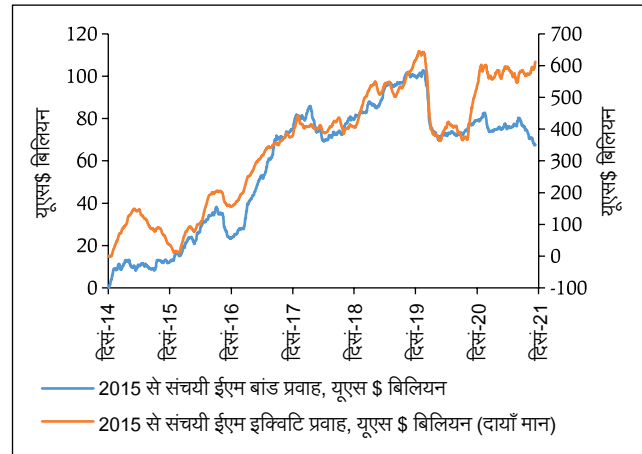
के प्रकोप के बाद से, ईएमई में इक्विटी प्रवाह काफी सुदृढ़ रहा है क्योंकि कोर्पोरेट्स की आमदनी में तेजी थी (चार्ट 1.18)। लेकिन, संपर्क-प्रधान सेवा क्षेत्रों में धीमी गति से सुधार, वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं के कारण व्यवधान और अंत में चीनी अर्थव्यवस्था के लिए अनिश्चित संभावनाओं के बारे में चिंताएँ उभर रही हैं। परिणामस्वरूप, जबकि एस एंड पी 500 (वीआईएक्स) की ऑप्शनगत अस्थिरता सीमा के भीतर रही है, एक सामान्य बाजार-आधारित संकेतक जो तेज गिरावट के प्रति सुरक्षा की लागत को प्रदर्शित करता है, अर्थात्, सीबीओई का झुकाव महामारी के बाद के अपने निम्न स्तर से हट गया है (चार्ट 1.19)

1.1.4 परिवर्तनशील लंदन अंतर बैंक प्रस्तावित दर (लाइबोर)

1.28 दिसंबर 2021 के अंत के बाद स्टर्लिंग, यूरो, स्विस फ्रैंक और जापानी येन लिबोर निर्धारण और यूएस डॉलर लिबोर 1-सप्ताह और 2-महीने निर्धारण के आसन्न संक्रमण ने वैकल्पिक जोखिम-मुक्त दरों वाले उत्पादों के बेंचमार्किंग की ओर बढ़ने, दरों (एआरआर) और एआरआर से जुड़े ब्याज दर व्युत्पन्न (आईआरडी) खंडों के विकास को ज़रूरी बना दिया है। औसत मासिक आईएसडीए-क्लारस⁸ जोखिम-मुक्त दरें (आरएफआर) दत्तक ग्रहण संकेतक, जो ट्रैक करता है कि कैसे बहुत अधिक वैश्विक व्यापारिक गतिविधि (डीवी01⁹ द्वारा मापी गई) समाशोधित काउंटर पर (ओटीसी) में संचालित की जाती है और विनिमय-व्यापारित आईआरडी छह प्रमुख मुद्राओं में एआरआर को संदर्भित करता है, 2021 की तीसरी तिमाही में 17.4 प्रतिशत को छू गई जो कि पिछली तिमाही से 11.0 प्रतिशत ऊपर है। एआरआर बेंचमार्किंग अपनाने में सभी मुद्राओं में असमान प्रगति रही है, साथ ही यूरो से जुड़े आईआरडी पिछड़ रहे हैं (सारणी 1.4)।

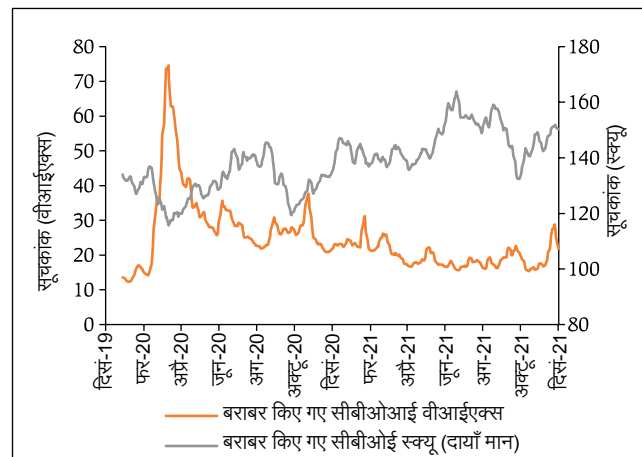
1.29 अमेरिकी नियामकों को ओटीसी व्युत्पन्न पर प्रस्तुत किए गए डाटा के अनुसार महत्वपूर्ण एआरआर अपनाने वाली मुद्राओं में भी लंबी अवधि के लिए आईआरडी में एआरआर इंडेक्स को अपनाना धीमा रहा है (सारणी 1.5)। फिर भी, 2021 की तीसरी

चार्ट 1.18: उभरते बाजारों में पोर्टफोलियो प्रवाह



स्रोत: आईआईएफ

चार्ट 1.19: निवेशकों की जोखिम धारणा



स्रोत : ब्लूमबर्ग ।

सारणी 1.4: आरएफआर द्वारा प्रतिशत डीवी01 योगदान – मुद्रावार

(प्रतिशत)

महीना	आरएफआर यूएसडी	आरएफआर ईयूआर	आरएफआर जीबीपी	आरएफआर जेपीवाई	आरएफआर एयूडी	आरएफआर सीएफएफ
जन-21	5.7	0.8	45.9	3.5	3.1	7.7
फर-21	5.0	1.0	45.8	3.5	5.2	8.8
मार्च-21	4.6	1.3	44.9	2.4	5.1	6.3
अप्रैल-21	7.4	1.7	51.0	3.9	6.0	16.7
मई-21	6.8	1.5	54.9	6.8	2.7	13.7
जून-21	6.0	1.8	61.0	6.9	5.1	13.7
जुला-21	7.4	2.1	58.8	23.4	17.1	34.1
अग-21	12.5	2.4	63.3	49.5	14.5	50.4
सित-21	15.2	2.3	64.8	54.2	18.5	43.4
अक्टू-21	15.8	9.2	75.3	63.4	19.7	53.8

स्रोत: आईएसडीए क्लारस आरएफआर अभिग्रहण संकेतक

⁸ आईएसडीए – इंटरनेशनल स्वैप्स एंड डेरिवेटिव्स असोशिएशन

⁹ डीवी01 बॉन्ड पोर्टफोलियो के जोखिम को मापता है (यानी, प्रतिफल में एक आधार बिंदु परिवर्तन के जवाब में कीमत परिवर्तन)

तिमाही में दूसरी तिमाही के सापेक्ष स्थिति में सुधार हुआ है। चूंकि ब्याज दर और मुद्रा एक्सपोजर की वास्तविक क्षेत्र की बचाव-व्यवस्था काफी हद तक एक चलनिधि और गतिमान दीर्घकालिक व्युपन्न खंड पर निर्भर करते हैं, इस संबंध में विशेष रूप से यूरो के लिए धीमी प्रगति, जोखिम के कुशलतापूर्वक हस्तांतरण को प्रभावित कर सकती है।

1.1.5 पण्य बाजारें

1.30 हाल के महीनों में मुद्रास्फीति संबंधी दबावों में उल्लेखनीय रूप से वृद्धि हुई है, विशेष रूप से एई में, जो ऊर्जा कीमतों में वर्ष-दर-वर्ष 30 प्रतिशत तक की वृद्धि से प्रेरित है (सारणी 1.6)। यहां तक कि खाद्य कीमतें भी अपनी दीर्घकालिक विकास दर से काफी ऊपर बनी हुई हैं।

1.31 वैश्विक पण्य बाजारों ने 2021 की दूसरी छमाही के दौरान अपनी वृद्धि जारी रखी, ओमिक्रॉन के उद्भव से पहले चीन में विकास से उत्पन्न मूल्य सुधारों के पैच के कारण नवंबर 2021 के उत्तरार्ध में तेज सुधार हुआ। कुछ गिरावटों ने दिसंबर की शुरुआत में फिर से लौटना शुरू कर दिया है। संभावनाएं अनिश्चित प्रतीत होती हैं क्योंकि आपूर्ति की बाधाओं सुधार बहुत धीमा है, जिससे वैश्विक चलनिधि और मौद्रिक नीति व्यवस्थाएँ पुनः नपे-तुले अंदाज में आना शुरू कर देती हैं ताकि स्थिति को सामान्य बनाया जा सके और इस प्रकार मांग में तेजी आने लगती है।

1.32 ओमीक्रोन से पहले मांग में कमी और गतिशीलता में वृद्धि के कारण अधिक देशों ने अपनी सीमाओं¹⁰ को फिर से खोल दिया था जिससे कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि हो रही थी (चार्ट 1.20)। जबकि अक्टूबर 2021 के बाद से कॉल-ऑप्शंस ट्रेडिंग की मात्रा पर हावी थे। हाल ही में ओमीक्रोन के उद्भव के कारण निकट के समय में तेल की कीमतों के बारे में दृष्टिकोण के

सारणी 1.5 : यूएस द्वारा रिपोर्ट किया गया- आरएफआर से जुड़ी ब्याज दर डेरिवेटिव्स (यूएसडी बिलियन)

तिमाही	ति3 2021		वाईटीडी ति3 2021	
	अनुमानित व्यापार (यूएस\$ बिलियन)	व्यापार गणना	अनुमानित व्यापार (यूएस\$ बिलियन)	व्यापार गणना
एसओएफआर	2,121.3	20,351	3,815.5	32,190
1 वर्ष तक	595.9	966	1,338.2	1,850
1 से 5 वर्ष	882.1	8,437	1,535.5	14,456
5 वर्ष अधिक	643.3	10,948	941.7	15,884
एसओएनआईए	4,867.4	26,200	12,059.8	61,217
1 वर्ष तक	3,510.9	2,766	8,667.5	6,735
1 से 5 वर्ष	815.0	8,810	2,010.5	19,921
5 वर्ष अधिक	541.4	14,624	1,381.8	34,561
एसएआरओएन	81.9	1,222	100.6	1,460
1 वर्ष तक	29.7	70	38.7	97
1 से 5 वर्ष	40.6	672	46.7	770
5 वर्ष अधिक	11.6	480	15.1	593
टीओएनए	204.4	2,729	349.1	3,203
1 वर्ष तक	65.9	213	187.3	437
1 से 5 वर्ष	73.8	856	93.7	1,021
5 वर्ष अधिक	64.6	1,660	68.1	1,745
एसटीआर	184.2	857	320.5	1,586
1 वर्ष तक	145.0	211	247.1	355
1 से 5 वर्ष	26.5	282	47.4	538
5 वर्ष अधिक	12.7	364	26.1	693

एसओएफआर- सेक्युरड ओवरनाइट फायनेंसिंग रेट (यूएस)

एसओएनआईए- स्टर्लिंग एवरेज रेट ओवरनाइट (स्विट्ज़रलैंड)

टीओएनए – टोक्यो ओवरनाइट एवरेज रेट (जापान)

एसटीआर- यूरो शॉर्ट-टर्म रेट (यूरो एरिया)

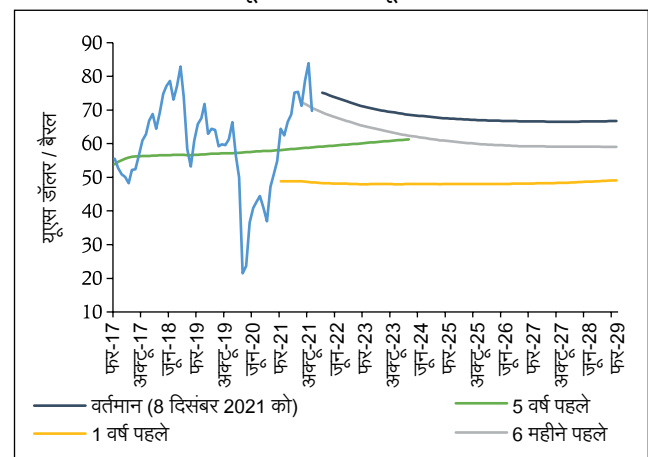
स्रोत: आईएसडीए क्लारस तिमाही आरएफआर अभिग्रहण रिपोर्ट

सारणी 1.6 : चुनिंदा उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में सीपीआई मुद्रास्फीति (प्रतिशत)

	कुल	ऊर्जा	खाद्य
अमरीका	6.2	30.0	5.4
यूनाइटेड किंगडम	3.8	22.4	1.3
जर्मनी	4.5	18.7	4.5
ओईसीडी – कुल	5.2	24.2	4.5

स्रोत: आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी)

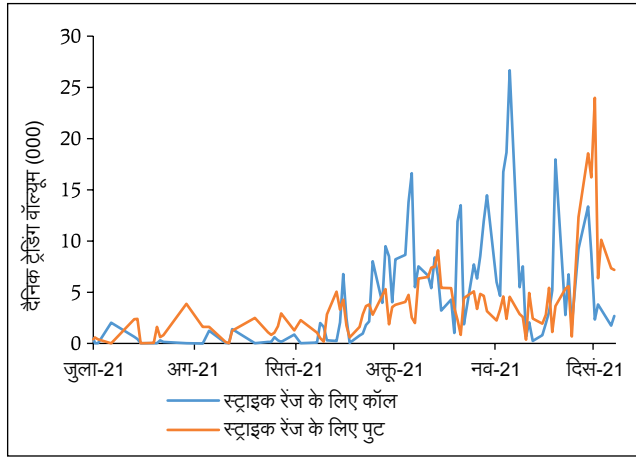
चार्ट 1.20 : ब्रेट क्रूड स्पॉट और फ्यूचर्स - कीमत रुझान



स्रोत : ब्लूमबर्ग।

¹⁰ अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (आईईए) 2021- "तेल बाजार रिपोर्ट" नवंबर

चार्ट 1.21 चुनिन्दा स्ट्राइक कीमतों पर ब्रेंट ऑप्शन्स के लिए दैनिक ट्रेडिंग वॉल्यूम

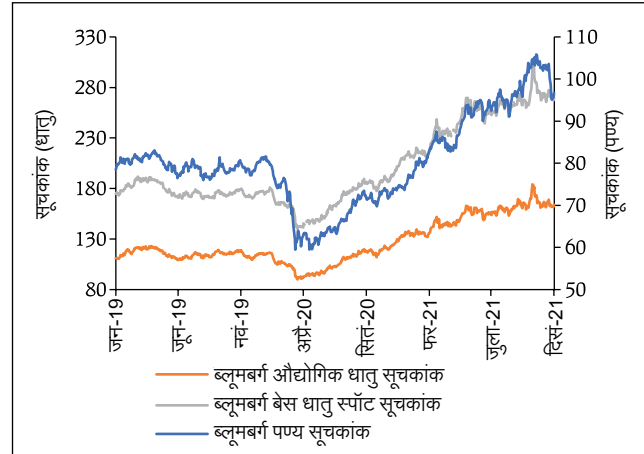


स्रोत : ब्लूमबर्ग।

संबंध में मंदी के मनोभाव दिखाई देने लगे हैं। (चार्ट 1.21) विश्व बैंक को उम्मीद है कि गैर-ऊर्जा पण्यों की कीमतें, आपूर्ति की बाधाएं कम होने के कारण अपने मौजूदा उच्च स्तर से कम हो जाएंगी। हालांकि, डीकार्बोनाइजेशन में वैश्विक निवेश के कारण औद्योगिक और बेस धातुओं की मांग में तेजी आने की संभावना है (चार्ट 1.22)। खाद्य पदार्थों के उत्पादन में गिरावट, आपूर्ति पक्ष में व्यवधान और बढ़ती इनपुट लागत से मुद्रास्फीति के दबाव को बल मिला। दुग्ध पदार्थों, अनाज, खाद्य तेल और चीनी की कीमतें बढ़ाने के कारण खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) का खाद्य मूल्य सूचकांक में नवंबर 2021 (वर्ष-दर-वर्ष) में 27.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई (चार्ट 1.23)।

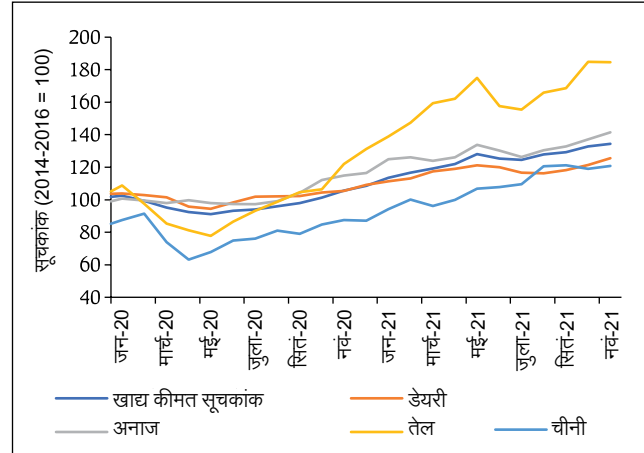
1.33 पण्यों की कीमतों में तेजी को बढ़ावा देने और उसे बनाए रखने में निवेश निधियों की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण होती जा रही है क्योंकि इन निधियों की प्रबंधन के अंतर्गत आस्तियां(एयूएम) महत्वपूर्ण हैं (चार्ट 1.24)। पूरे यूरोप और अमेरिका में सक्रिय और निष्क्रिय निवेशों को ध्यान में रखते हुए अक्टूबर 2021 में पण्यों में खुदरा और संस्थागत निवेश का अनुमान 710 अरब अमेरिकी डॉलर है। इस तरह के निवेश अपूर्ण मूल्य निर्धारण बचाव के साथ निवेश जोखिम के विविधीकरण के मकसद से संचालित होते हैं। हाल ही में ऊर्जा क्षेत्र में हुई वृद्धि को देखते हुए, इन निवेश निधियों द्वारा लक्षित वस्तुओं में कृषि उत्पादों से लेकर कीमती धातुएं तक शामिल हैं।

चार्ट 1.22 ब्लूमबर्ग पण्य तथा धातु सूचकांक



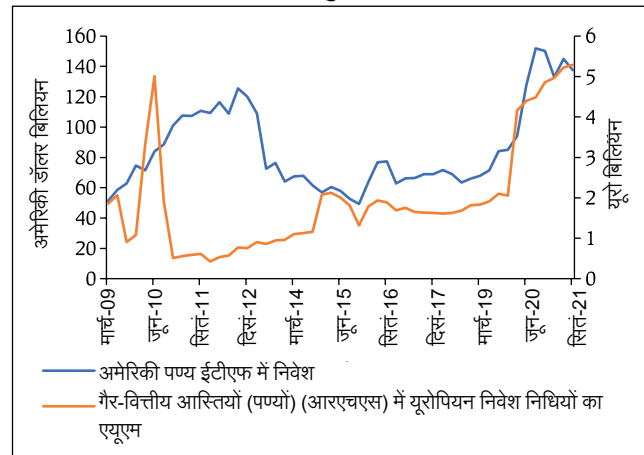
स्रोत : ब्लूमबर्ग।

चार्ट 1.23 एफएओ मासिक खाद्य कीमत सूचकांक



स्रोत : खाद्य और कृषि संगठन, संयुक्त राष्ट्र

चार्ट 1.24 : पण्य से जुड़ी हुई निवेश निधियों में निवेश



स्रोत : एफआरईडी, सेंट लूइस फेडरल रिजर्व बैंक तथा ईसीबी

¹¹ सिटी रिसर्च (2021), 'कमोडिटी स्ट्रेटेजी', नवंबर

1.1.6 निजी क्रिप्टोकॉरेंसी जोखिम

1.34 दुनिया भर में निजी क्रिप्टोकॉरेंसी के प्रसार ने नियामकों और सरकारों को संबंधित जोखिमों के प्रति संवेदनशील बनाया है। निजी क्रिप्टोकॉरेंसी ग्राहक सुरक्षा और एंटी-मनी लॉन्ड्रिंग (एएमएल) / आतंकवाद के वित्तपोषण (सीएफटी) का मुकाबला करने के लिए तत्काल जोखिम पैदा करती है। उनकी अत्यधिक सट्टा प्रकृति को देखते हुए, वे धोखाधड़ी और अत्यधिक मूल्य अस्थिरता के लिए भी प्रवण हैं। दीर्घकालिक चिंताएं पूंजी प्रवाह प्रबंधन, वित्तीय और समष्टि-आर्थिक स्थिरता, मौद्रिक नीति संचरण और मुद्रा प्रतिस्थापन से संबंधित हैं।

1.35 वित्तीय कार्रवाई कार्य बल (एफएटीएफ) के अनुसार, वर्चुअल आस्ति इकोसिस्टम ने एनोनिमिटी-एन्हांस्ड क्रिप्टोकॉरेंसी (ईसी), मिक्सर और टंबलर, विकेंद्रीकृत प्लेटफॉर्म और एक्सचेंज, प्राइवैसी वॉलेट और अन्य प्रकार के उत्पादों और सेवाओं का उदय देखा है जो कम पारदर्शिता पैदा करते हैं या उसे घटा देते हैं और वित्तीय प्रवाहों को अधिक रहस्यमय बना देते हैं। वर्चुअल-टू-वर्चुअल लेयरिंग योजनाओं के बढ़ते उपयोग सहित, ऐसे नए अनुचित वित्तपोषण के प्रकार उभर रहे हैं, जो लेनदेनों को तुलनात्मक रूप से आसान, सस्ते और अज्ञात तरीके से अनुचित बनाने का प्रयास करते हैं।

1.36 शीर्ष 100 क्रिप्टोकॉरेंसी का कुल बाजार पूंजीकरण 2.8 ट्रिलियन¹³ अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया है। ऐसी उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाएं (ईएमई), जो पूंजी नियंत्रण के अधीन होती हैं, उनमें निवासियों तक क्रिप्टो आस्तियों की मुक्त पहुंच उनके पूंजी विनियमन ढांचे को कमजोर कर सकती है।

1.37 संक्षेप में, भले ही वैश्विक वृद्धि और व्यापार की गति कम हो गई हो, वैश्विक वित्तीय बाजार आघात-सहनीय बने हुए हैं, यद्यपि ओमिक्रोन के चलते अत्यधिक अनिश्चितता देखने को मिली है। हालांकि इक्विटी बाजारों को सबसे ज्यादा नुकसान हुआ, लेकिन उन्होंने घाटे को कम किया है। तथापि, तेज सुधार का जोखिम उंचा बना हुआ है। ओमिक्रोन के बाद कॉर्पोरेट बॉण्ड स्प्रेड में विस्तार हुआ है, लेकिन मांग मजबूत बनी हुई है, खासकर स्पेक्ट्रम के निचले रेटेड एंड में, चूंकि केंद्रीय बैंक

अपनी असाधारण चलनिधि सहायता को नियंत्रित करते रहते हैं, सरकारी बॉण्ड बाजारों में लंबी परिपक्वताओं की तुलना में अल्पकालिक प्रतिफल के अधिक तेजी से बढ़ने और प्रतिफल वक्र को सपाट बना देने की उम्मीद बनी रहती है। यदि बाजारों के दृष्टिकोण और केंद्रीय बैंकों के आगे के मार्गदर्शन के बीच विचलन, अंतर लीवरेज पोजीशन को खत्म करने के लिए बाध्य करता है, तो चलनिधि और अव्यवस्थित व्यापार के पैच का अच्छी तरह से सामना किया जा सकता है। बॉण्ड प्रतिफल में वृद्धि और मुद्रा मूल्यहास के कारण उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं के लिए वित्तीय स्थितियां सख्त होती जा रही हैं। आर्थिक गतिविधियों में भारी सुस्ती के साथ ही ऊंचे मुद्रास्फीति दबाव, सीमित राजकोषीय गुंजाइश और महामारी की निर्मम जकड़न की पृष्ठभूमि के बीच, मौद्रिक नीति संचालन को जटिल बना रहे हैं।

1.38 विकेंद्रीकृत वित्त (डीएफआई) की तीव्र वृद्धि मुख्य रूप से वास्तविक अर्थव्यवस्था की बजाय क्रिप्टो आस्तियों में सट्टेबाजी तथा निवेश और अंतरपणन (आर्बिट्राज) को गति देती है। धन शोधन निवारण और अपने ग्राहक को जानें (एएमएल / केवाईसी) प्रावधानों के सीमित प्रयोग के साथ ही अज्ञात लेनदेन, विकेंद्रीकृत वित्त को अवैध गतिविधियों और बाजार में हेरफेर हेतु सुगम्य बनाते हैं और वित्तीय स्थिरता को लेकर चिंताएं उत्पन्न होती हैं।

1.39 ओपन एंडेड निधियों (ओईएफ) से बॉण्ड बाजारों में चलनिधि बढ़ रही है, लेकिन इससे वित्तीय स्थिरता पर भी प्रभाव पड़ता है। इसलिए, उनके चलनिधि बफर को किसी प्रतिचक्रिय ऐड-ऑन द्वारा विस्तारित किया जा सकता है। इसके अलावा, ओईएफ को सामूहिक रूप से मोचन शर्तों में ले जाया जा सकता है जो उनके संविभाग की चलनिधि प्रोफाइल के साथ अधिक निकटता से जुड़े हुए हैं। चलनिधि दबाव को कम करने के लिए वित्तीय मध्यस्थों द्वारा समर्थित वस्तु के रूप में मोचन, आघात-सहनीयता बढ़ाने में एक वैकल्पिक दृष्टिकोण हो सकता है। समष्टि विवेकपूर्ण साधन पर्याप्त रूप से कड़े होने चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि चलनिधि की बेमेल स्थिति को

¹² एफएटीएफ (2021), "वर्चुअल आस्ति और वर्चुअल आस्ति सेवा प्रदाता के लिए जोखिम-आधारित दृष्टिकोण हेतु मार्गदर्शन", अक्टूबर।

¹³ coinmarketcap.com के अनुसार, 15 नवंबर 2021 को शाम 4 बजे, आईएसटी को एक्सेस किया गया।

पर्याप्त रूप से संभाला जा सकता है और बाह्यता उत्पन्न नहीं हो रही है। ये साधन ओईएफ में प्रणालीगत जोखिमों की पहचान करने और उन्हें प्रबंधित करने में सक्षम होने चाहिए। दबाव के प्रकरण के दौरान ये साधन "प्रयोग करने योग्य" होने चाहिए।

1.40 निजी बाजार वास्तविक अर्थव्यवस्था के लिए एक महत्वपूर्ण वित्तपोषण चैनल बन गए हैं, खासकर एशिया में जहां उनकी प्रमुख गतिविधि जोखिम पूंजी है। ऐसा प्रतीत होता है कि निजी बाजार जोखिम लेने में अपेक्षाकृत अधिक पहल करते हैं। इस संदर्भ में, निजी क्रेडिट में शामिल निधि की मौद्रिक नीति संबंधी कार्रवाइयों और उसके रुख के प्रति अत्यधिक संवेदनशीलता है।

1.41 बैंक से इतर सक्रिय लोग डॉलर के वित्तपोषण का दबाव पैदा कर रहे हैं जिससे विदेशी मुद्रा (एफएक्स) बाजारों के प्रति पारंपरिक नीतिगत दृष्टिकोणों में एक प्रकार का अंतराल दिखाई देता है। ये गैर-बैंक निवेशक, परंपरागत रूप से बैंकों की तुलना में, कम कड़े एफएक्स चलनिधि विनियमन और जोखिम प्रबंधन नियमों के अधीन रहे हैं, और इससे वित्तीय प्राधिकरणों को उनकी वित्तपोषण आवश्यकताओं की निगरानी करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इस स्तर पर, प्रणालीगत जोखिम बनाने या प्रचारित करने में गैर-बैंक निवेशकों की भूमिका को बेहतर ढंग से समझना महत्वपूर्ण है ताकि समय के साथ-साथ वित्तीय जोखिम लेने को सुगम बनाने के लिए नीतिगत कार्रवाई की जा सके। इस संदर्भ में, विदेशी मुद्रा बाजारों में संस्थागत निवेशकों और परिसंपत्ति प्रबंधकों द्वारा बनाई गई डॉलर की फंडिंग समस्याओं के मूल कारणों को शामिल करने वाले निरीक्षण के लिए एक समेकित दृष्टिकोण कारगर हो सकता है। जोखिम आधारित पर्यवेक्षण मुद्रा जोखिम की लचीली हेजिंग की अनुमति दे सकता है ताकि दबाव के समय में अल्पकालिक डॉलर की मांग में स्वैप को कम किया जा सके और साथ ही लंबी अवधि की हेजिंग को प्रोत्साहित किया जा सके।

1.42 अंत में, जबकि दुनिया जलवायु परिवर्तन का मुकाबला करने और पर्यावरणीय उत्थानशीलता/लचीलेपन को बढ़ाने के

लिए तैयार है, इस संक्रांति का समर्थन करने के लिए पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन (ईएसजी) बाजारों पर ध्यान देने की जरूरत है। यहां, देशों के मध्य तुलना और मजबूत मेट्रिक्स के लिए एक विश्वसनीय और मानकीकृत वर्गीकरण के साथ सटीक ईएसजी जानकारी महत्वपूर्ण है।

1.2 घरेलू समष्टि वित्तीय जोखिम

1.43 भारत में महामारी की दूसरी लहर ने जुलाई 2021 तक कम होने के स्पष्ट संकेत दिखाए थे। स्थानीय प्रतिबंधों में ढील दी गई और टीकाकरण में प्रगति की सहायता से संवृद्धि का इंजन फिर से घूमना शुरू हो गया। दैनिक नए संक्रमणों की संख्या, जो मई 2021 के मध्य में 4 लाख से अधिक मामलों के साथ अपने चरम पर थी, जुलाई की शुरुआत में 60 हजार से कम और दिसंबर 2021¹⁴ की शुरुआत में 10 हजार से कम हो गई। टीकाकरण की गति को काफी बढ़ा दिया गया और एक ही दिन में दिए गए दस मिलियन शॉट्स के 14 उदाहरण के साथ, 28 दिसंबर, 2021¹⁵ तक कुल मिलाकर 1.42 बिलियन लोगों का टीकाकरण किया गया। लगभग 60 प्रतिशत वयस्क आबादी के पूरी तरह से टीकाकरण के साथ, 80-90 प्रतिशत कवरेज प्राप्त कर सामूहिक इम्यूनिटी के बराबर¹⁶ जनसंख्या के लक्षित स्तर को प्राप्त करने की दिशा में तेजी से प्रगति की जा रही है।

1.44 जुलाई 2021 एफएसआर जारी होने के बाद की अवधि में, भारतीय अर्थव्यवस्था का विस्तार जुलाई-सितंबर 2021 में वर्ष-दर-वर्ष (वर्ष-दर-वर्ष) 8.4 प्रतिशत हो गया जो महामारी के बाद पहली बार पूर्व-महामारी के स्तर (जुलाई-सितंबर 2019) से अधिक जीडीपी के स्तर तक चला गया। आर्थिक गतिविधि के हाल के उच्च आवृत्ति संकेतक 2021-22 की तीसरी तिमाही में इस वेग में कुछ कमी का संकेत देते हैं। सुधार की गति सभी क्षेत्रों में असमान बनी हुई है, मुद्रास्फीति में वृद्धि दोहराए जाने वाले आपूर्ति आघात के कारण हो रही है और वैश्विक जोखिमों के साथ परिदृश्य धुंधला पड़ता दिखाई दे रहा है। ओमीक्रोन, निकट भविष्य की संभावनाओं को धूमिल करता दिखाई देता है।

¹⁴ स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार।

¹⁵ ब्लूमबर्ग

¹⁶ राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान (एनआईडीएम) 2021, "तीसरी लहर की तैयारी: बच्चों की भेद्यता और सुधार", अगस्ता

1.2.1 लोक वित्त

1.45 अप्रैल-अक्टूबर 2021 के दौरान, केंद्र के घाटे से संबंधित सभी संकेतकों (सकल राजकोषीय घाटा; प्राथमिक घाटा; राजस्व घाटा) ने वर्ष-दर-वर्ष सुधार के साथ-साथ अपने पूर्व-महामारी स्तरों से भी सुधार प्रदर्शित किया। सभी प्रमुख मदों में मजबूत वृद्धि के साथ सकल कर राजस्व में उछाल आया है, जिसमें प्रत्यक्ष कर प्रमुख है। कुल व्यय में 9.9 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जिसमें उल्लेखनीय विशेषता पूंजीगत परिव्यय में 28.3 प्रतिशत का विस्तार है जो सड़कों और राजमार्गों के कारण रही (तालिका 1.7)।

1.46 दिसंबर 2021 में प्रस्तुत अनुदान की दूसरी अनुपूरक मांग के साथ, सकल घरेलू उत्पाद के 6.8 प्रतिशत के बजटीय राजकोषीय घाटे पर दबाव आ सकता है। यह नोट करना महत्वपूर्ण है कि अनुदान की अनुपूरक मांग में एअर इंडिया से संबंधित उच्च लागत चुकौती दायित्वों को पूरा करने के रूप में वित्तीय समेकन का एक महत्वपूर्ण घटक शामिल है। सकल सरकारी उधारी का आकार ऐसी गति से आगे बढ़ा है जिससे यह पता चलता है कि बजट अनुमानों का पालन किया जा सकेगा (सारणी 1.8)।

1.47 तथापि, केंद्र सरकार का चुकौती दायित्व (सकल और निवल उधारी के बीच का अंतर) एक महत्वपूर्ण अपट्रेंड को इंगित करता है, जिसका अर्थ है कि राजकोषीय समेकन के बावजूद सकल उधारी के ऊंचे रहने की संभावना है (चार्ट 1.25)।

सारणी 1.7 राजकोषीय संकेतक - केंद्र सरकार

(₹ करोड़ में जहां पर कहा नहीं गया हो)

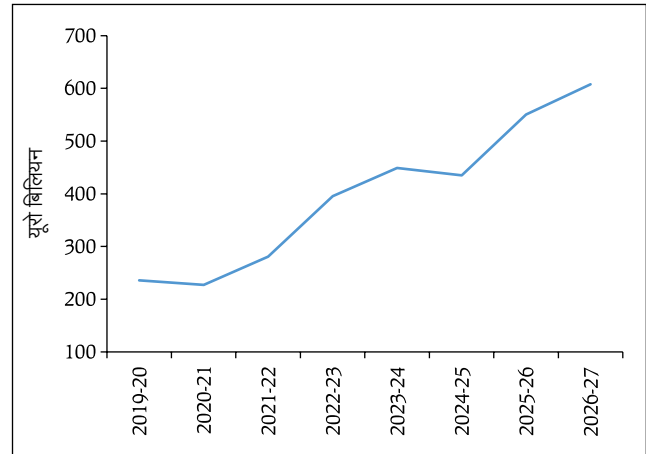
	Apr-Oct 2020	Apr-Oct 2021	% change (y-o-y)
सकल कर राजस्व	8,75,591	13,64,101	55.79
जिसमें प्रत्यक्ष कर राजस्व*	3,86,025	6,59,066	70.73
जिसमें प्रत्यक्ष कर राजस्व#	4,45,673	6,46,283	45.01
कर राजस्व (निवल)	5,75,697	10,53,135	82.93
कुल व्यय	16,61,454	18,26,725	9.95
जिसमें पूंजीगत व्यय	1,97,355	2,53,270	28.33
राजकोषीय घाटा	9,53,154	5,47,026	-42.61
राजस्व घाटा	7,72,196	3,13,478	-59.40
प्राथमिक घाटा	6,19,698	1,47,289	-76.23

* सिक्योरिटीज ट्रांज़ेक्शन टैक्स, फ्रिज बेनिफिट टैक्स, वेल्थ टैक्स आदि शामिल हैं।

केंद्रीय जीएसटी, एकीकृत जीएसटी, सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क, सेवा कर शामिल है।

स्रोत: लेखा महानियंत्रक (सीजीए), वित्त मंत्रालय।

चार्ट 1.25: केंद्र सरकार के चुकौती दायित्व - दिनांकित प्रतिभूतियां



स्रोत: आरबीआई (मार्च 2022 के बाद चुकौती दायित्वों के लिए 10 दिसंबर, 2021 को केंद्र सरकार की बकाया दिनांकित प्रतिभूतियां)

सारणी 1.8: केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा बाजार उधारी

(₹ करोड़ में अंकित मूल्य)

मद	सकल				निवल		
	2019-20	2020-21	2021-22		2020-21	2021-22* Budget	2021-22 (Till Nov 26)
			Budget	(Till Nov 26)			
भारत सरकार	7,10,000	13,70,324	12,05,500	8,70,357	11,43,114	9,67,708	6,55,800
राज्य सरकारें	6,34,521	7,98,816	NA	4,06,246	6,51,777	NA	2,97,259

स्रोत: आरबीआई

1.48 वर्ष 2021-22 की पहली छमाही के दौरान अनुसूचित व्यणज्यिक बैंकों (एससीबी) द्वारा सरकारी प्रतिभूतियों (जी-सेक) और राज्य विकास ऋण (एसडीएलस) के अधिग्रहण में तेज बढ़ोतरी हुई और जी-सेक और एसडीएल के निवल निर्गमन में उनकी वृद्धिशील धारिता का अंश क्रमशः 39 प्रतिशत और 68 प्रतिशत रही। इस अवधि के दौरान रिजर्व बैंक की दिनांकित जी-सेक धारिता भी बढ़ी जो निवल निर्गमन का 27 प्रतिशत रही। (सारणी 1.9 - 1.10)।

1.49 वृद्धिशील सरकारी उधार की तिमाही भारत औसत लागत में बढ़ोतरी बाजार की बेंचमार्क प्रतिफल में उतार-चढ़ाव के अनुरूप हुई है (चार्ट 1.26)। वित्तीय वर्ष के आरंभ की तुलना में दिसंबर (13 दिसंबर 2021 की स्थिति के अनुसार) में 5-15 वर्षीय अवधि वाले जी-सेक वर्गों में प्रतिफल नरम रहा (चार्ट 1.27)। जी-सेक और एसडीएल दोनों के लिए परिपक्वता तक धारित (एचटीएम) खंड के अंतरणों में बढ़ोतरी हुई है जो ब्याज दरों पर एक सामान्य मंदी का नजरिया और सक्रिय ब्याज दर जोखिम में गिरावट को दर्शाता है (सारणी 1.11)। आगे, अन्य परिचालन आय को गति देने के लिए परिसंपत्तियों के पुनर्मूल्यांकन के माध्यम से व्यापार लाभ पर बैंकों की निर्भरता घटने की संभावना है।

सारणी 1.9: दिनांकित सरकारी प्रतिभूतियों और एसडीएल की वृद्धिशील धारिताएं: 2021-22 की दूसरी छमाही

	जी-सेक	एसडीएल
एससीबी	2,30,585	1,85,441
बीमा कंपनियां	59,082	-23,235
भविष्य निधि	-28,446	-94,811
भा.रि.बैंक	1,61,179	5,454

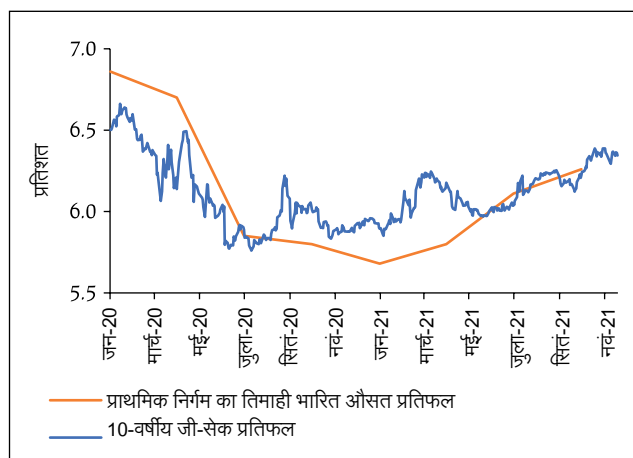
स्रोत: भा.रि.बैंक

सारणी 1.10: दिनांकित जी-सेक और एसडीएल - निवेशक प्रोफाइल

	एससीबी की घरेलू आस्तियों के अनुपात के रूप में जी-सेक	एससीबी की घरेलू आस्तियों के अनुपात के रूप में एसडीएल	एससीबी की घरेलू आस्तियों के अनुपात के रूप में कुल एसएलआर प्रतिभूतियां	कुल बकाया जी-सेक के अनुपात के रूप में आरबीआई की धारिता
मार्च-2008	19.2	3.8	23.0	7.8
मार्च-2015	16.5	5.0	21.6	13.5
मार्च-2020	15.1	6.7	21.8	15.1
मार्च-2021	15.5	7.0	22.5	16.2
सितं-2021	16.1	7.7	23.8	17.0

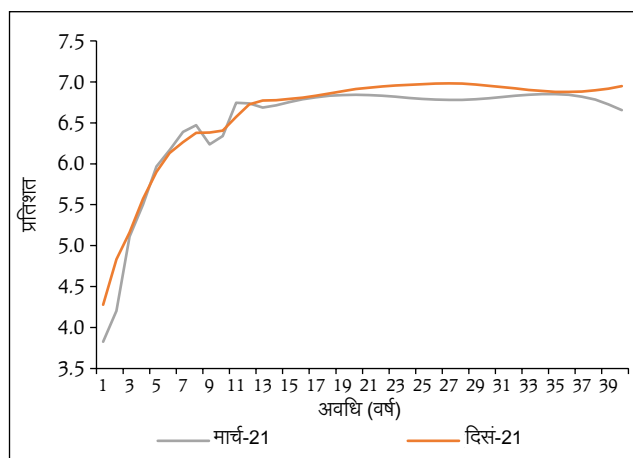
स्रोत: भा.रि.बैंक

चार्ट 1.26 : केंद्र सरकार की प्राथमिक और द्वितीयक बाजार प्रतिफल



स्रोत: रेफनिटीव, 'लोक ऋण प्रबंधन - तिमाही समीक्षा, सितंबर 2021', वित्त मंत्रालय और आरबीआई स्टाफ गणना

चार्ट 1.27: अंत-मार्च 2021 और दिसंबर 2021 (13 दिसंबर 2021 तक) के बीच प्रतिफल वक्र में परिवर्तन



स्रोत: फिन्डा

सारणी 1.11: बैंक समूह-वार वृद्धिशील एचटीएम धारिता: 2021-22 की पहली छमाही

	G-Secs	SDLs	Others	Total
सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक (पीएसबी)	17,403	64,885	-24,101	58,187
निजी क्षेत्र के बैंक (पीवीबी)	50,436	6,394	10,334	67,163
विदेशी बैंक (एफबी)	5,478	580	-	6,058
सभी एससीबी	73,317	71,858	-13,768	1,31,407

टिप्पणी: 46 एससीबी के आधार पर जो बैंकिंग प्रणाली की कुल आस्तित्व का लगभग 98 प्रतिशत हिस्सा है।

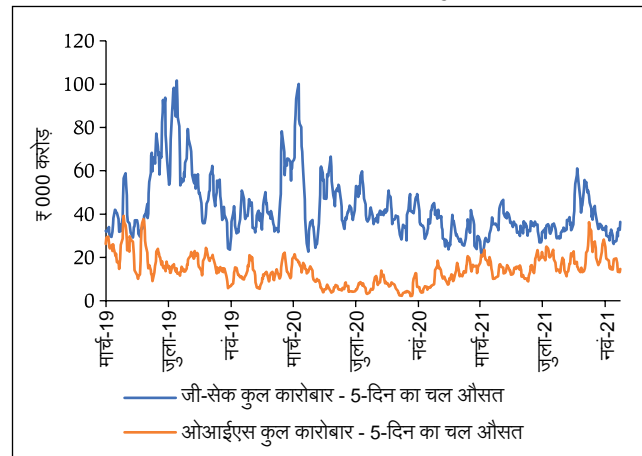
स्रोत: अलग-अलग बैंकों द्वारा भा.रि.बैंक को प्रस्तुत रिपोर्टें।

1.2.2 सरकारी प्रतिभूतियाँ और नियत आय डेरिवेटिव बाज़ार

1.50 महामारी के दौरान घरेलू नियत आय बाज़ारों की आघात सहनीयता बनी रही है और हाल के महीनों में इनमें मात्रात्मक वृद्धि हुई है। सरकारी प्रतिभूति बाज़ार और एकदिवसीय सूचकांकित स्वैप (ओआईएस) बाज़ार के कारोबार इन दोनों क्षेत्रों की गतिविधियों में एक सामान्य बढ़ोतरी को दर्शाते हैं (चार्ट 1.28)। यह सामान्य वृद्धि तथा 10-वर्षीय परिपक्वता अवधि वाले वर्ग, जिसमें सबसे अधिक सौदा किया जाता है, की प्रत्यक्ष अस्थिरता में कमी एक साथ हुई है, हालांकि प्रतिफल वक्र के अंत में एक छोटी अवधि के दौरान रिज़र्व बैंक द्वारा परिवर्तनीय दर रिवर्स रेपो (वीआरआरआर) नीलामियों के माध्यम से चलनिधि को पुनः संतुलित करने के कारण अस्थिरता में थोड़ी वृद्धि हुई थी।

1.51 जुलाई 2021 में निश्चित अवधियों की बेंचमार्क प्रतिभूतियों और अस्थायी दर बॉण्ड (एफआरबी) जारी करने की नीलामी पद्धति को एकीकृत कीमत नीलामी पद्धति में परिवर्तित किया गया था। नीलामी पद्धति में इस बदलाव से बोली की कीमतों का अंतर कम हुआ है और इससे बेहतर कीमत प्राप्त हुई है (बॉक्स 1.1)।

चार्ट 1.28: जी-सेक और ओआईएस का कुल कारोबार



स्रोत: सीसीआईएल।

बॉक्स 1.1: एकीकृत कीमत नीलामी पद्धति का एक आकलन

2-वर्षीय, 3-वर्षीय, 5-वर्षीय, 10-वर्षीय, 14-वर्षीय अवधि की बेंचमार्क प्रतिभूतियाँ और एफआरबी जारी करने की नीलामी पद्धति को एकीकृत कीमत नीलामी पद्धति में परिवर्तित करने के प्रभाव का दो मापदंडों के अनुसार मूल्यांकन किया गया था: (ए) नीलामी हामीदारों, अर्थात्, प्राथमिक व्यापारियों (पीडी) की भागीदारी; और (ख) अन्य बोलीदाताओं की भागीदारी।

अप्रैल 2020 - सितंबर 2021 के दौरान अवधि विशेष की प्राथमिक नीलामियों के संबंध में गैर-बैंक पीडी की नीलामी बोलियाँ और नए पीवीबी की बोली लगाने की प्रकृति के मामले में नीलामी पद्धति में परिवर्तन का इन दोनों निवेशक वर्गों के लिए सफलता अनुपात पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण लाभकारी प्रभाव पड़ा हुआ प्रतीत होता है (तालिका 1)।

सफलता अनुपात के अलावा, बोली की भारित औसत कीमत और स्वीकृत बोलियों के लिए भारित औसत कीमत के बीच के अंतर से बोली की तीव्रता का अंदाजा लगाया जा सकता है। नीलामी पद्धति में बदलाव ने बोली के अंतर को सामान्यतः छोटा कर दिया है (तालिका 2)। यदि इसे एकीकृत कीमत निर्धारण के कारण अतिरिक्त निवेशक रुचि में अत्यधिक बढ़ोतरी के पिछले परिणाम के साथ जोड़कर देखा जाए तो इसका आशय यह है कि संशोधित नीलामी पद्धति के अंतर्गत सरकार को बेहतर कीमत प्राप्त हुए हैं।

सारणी 1: बोली पद्धति और बोली लगाने की प्रवृत्ति

घर	पीडी सफलता अनुपात	नए पीवीबी सफलता अनुपात
स्थिर	0.115199	0.269432
एसीयू_सीओएमएम_कट_ऑफ	(4.324)***	(5.422)***
वाईएलडी_सीएचजी_पीआरईवी_एयूसी	0.000184	-0.002425
वाईएलडी_सीएचजी_पीआरईवी_डीएवाई	(0.214)	(-1.510)
परिपक्वता_एयूसी_पेपर	-0.000688	0.002726
डीआईएससीआर_एयूसी_डीयूएमएमवाई	(-0.502)	(1.065)
आर-वर्गीकृत समायोजित आर-वर्गीकृत	0.003674	0.001191
	(1.075)	(0.187)
	0.006553	0.005462
	(3.518)***	(1.578)
	-0.049638	-0.092788
	(-2.084)**	(-2.089)**
	0.098065	0.051365
	0.073555***	0.025587*

नोट: *** महत्वपूर्ण 1% पर; ** महत्वपूर्ण 5% पर; * महत्वपूर्ण 10% पर; कोष्ठक में दिए गए मान मानक त्रुटि को दर्शाते हैं।

एसीयू_सीओएमएम_कट_ऑफ: संबंधित प्रतिभूतियों के लिए हामीदारी कमीशन; वाईएलडी_सीएचजी_पीआरईवी_एयूसी: अगली नीलामी के पिछले कारोबारी दिवस की बंदी और नीलामी के पहले की बंदी के बीच 10-वर्षीय बेंचमार्क प्रतिफल में अंतर (आधार अंकों में); वाईएलडी_सीएचजी_पीआरईवी_डीएवाई: नीलामी के दिन आरंभिक और पिछले दिन बंदी के बीच 10-वर्षीय बेंचमार्क प्रतिफल में अंतर (आधार अंकों में); परिपक्वता_एयूसी_पेपर: नीलम हो रहे पेपर की परिपक्वता और निपटान की तारीख के बीच वर्षों की संख्या में अंतर; और डीआईएससीआर_एयूसी_डीयूएमएमवाई: कल्पित मान 1 देकर विभेदकारी विधि और 0 देकर एकीकृत कीमत पद्धति के तहत नीलामी की गई।

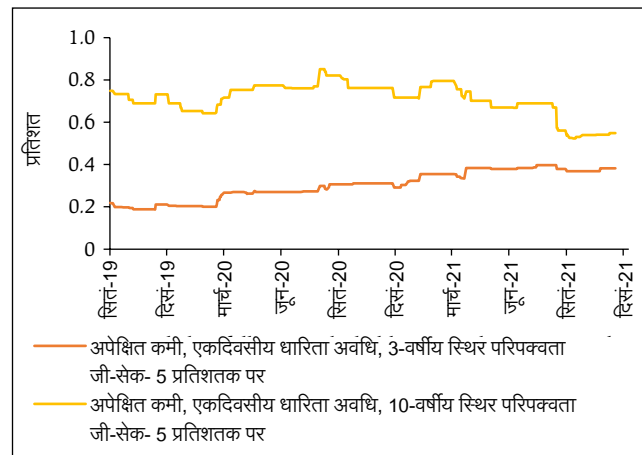
स्रोत: आरबीआई स्टाफ की गणना

(क्रमशः...)

सारणी 2: नीलामी पद्धति और बोली में आक्रामकता				
आश्रित चर : स्प्रेड पद्धति : लीस्ट स्क्वेर प्रतिदर्श: 1 190 शामिल प्रेक्षण: 190				
चर	गुणांक	मानक त्रुटि	टी-सांख्यिकीय	प्रायिकता
सी	0.1819	0.0421	4.316	0.0000
वाईएलडी_सीएचजी_पीआरईवी_एयूसी	-0.0019	0.0033	-0.586	0.5581
वाईएलडी_सीएचजी_पीआरईवी_डीएवाई	0.0138	0.0082	1.695	0.0917
एसीयू_सीओएमएम_कट_ऑफ	0.0020	0.0020	0.996	0.3204
परिपक्वता_एयूसी_पेपर	0.0254	0.0044	5.698	0.0000
एकीकृत_एयूसी_डीयूएमएमवाई	-0.2772	0.0559	-4.956	0.0000
आर-स्क्वेर	0.263		माध्य आश्रित वीएआर	0.362
समायोजित आर-स्क्वेर	0.243		एस. डी. आश्रित वीएआर	0.322
एस.ई. का रिग्रेशन	0.280		अकैके इंफो क्रियेशन	0.324
सम स्क्वेर्ड रेसिडुअल	14.442		श्वर्ज क्रियेशन	0.426
संभाव्यता लॉग	-24.794		हन्नान - क्वीनन क्रियेशन	0.366
एफ-सांख्यिकीय	13.141		डरबिन-वॉटसन स्टैट	1.888
प्रायिकता (एफ-सांख्यिकीय)	0.000			
नोट: एकीकृत_एयूसी_डीयूएमएमवाई: कल्पित मान 1 देकर एकीकृत कीमत नीलामी और 0 देकर विभेदकारी विधि के तहत नीलामी की गई। स्रोत: आरबीआई स्टाफ की गणना				

1.52 अलग-अलग अवधि वाली सरकारी प्रतिभूतियों के प्रतिफल वक्र (चार्ट 1.29) के अस्थिरता प्रोफाइल के विश्लेषण से रोचक परिणाम सामने आते हैं (बॉक्स 1.2)। विश्लेषण से यह प्रदर्शित होता है कि मीयाद संरचना की अस्थिरता के उत्पन्न होने के तीन प्रमुख कारक हैं: (ए) विभिन्न अवधियों में एक साथ एक ही दिशा में प्रतिफल में उतार-चढ़ाव; बी) मीयाद वक्र की ढाल; और (सी) अवधि विशेष वाली सरकारी प्रतिभूतियों के मामले में विशेष प्रकृति के जोखिम। इन कारकों में एक मानक विचलन (1-एसडी) का आघात प्रतिफल वक्र को सपाट कर देता है। ओआईएस स्वैप वक्र में अंतर्निहित ब्याज दर अपेक्षाओं के प्रभाव का के कारणों (कॉज़ैलिटी) का परीक्षण ओआईएस पर पीछे से सरकारी प्रतिभूति के प्रभाव को इंगित करता है। हालांकि ब्याज दर संबंधी अपेक्षाएं सरकारी प्रतिभूतियों के वक्र को शुरू में प्रभावित करती हैं, इसके बाद के बदलाव ओआईएस वक्र पर एक पश्च प्रभाव को दर्शाते हैं, जो बाज़ार में सहभागियों के हेजिंग व्यवहार के माध्यम से दो वक्रों के बीच पारस्परिक संबंध की ओर इशारा करते हैं।

चार्ट 1.29: एकदिवसीय जी-सेक धारिताओं में बाजार जोखिम



स्रोत: ब्लूमबर्ग तथा आरबीआई स्टाफ गणना।

बॉक्स 1.2 – अस्थिरता की मियादी संरचना

प्रतिफल वक्र के संचालकों की पहचान करने के उद्देश्य से तथा प्रतिफल वक्र के बनने पर ब्याज दर अपेक्षाओं के प्रभाव की परस्पर क्रिया को समझने के लिए जैसा कि ओआईएस स्वैप वक्र में निहित है, मियादी संरचना की अंतर्निहित अस्थिरता¹⁷ की व्याख्या के लिए अप्रकट मियादी संरचना अस्थिरता संचालकों की पहचान करने के लिए एक प्रमुख घटक विश्लेषण (पीसीए) किया गया है। चूंकि 2019 में चलनिधि प्रबंधन परिचालन निभावकारी प्रकार का हो गया इसलिए जनवरी 2019 से नवंबर 2021 तक का आंकड़ा लेकर इस परिवर्तन का भी विश्लेषण किया गया है।

परिणामों से जी-सेक वक्र¹⁸ और ओआईएस वक्र¹⁹ में उभयनिष्ठ कारकों का पता चलता है (तालिका 1)। पहला प्रमुख घटक (पीसी-1) जो अब तक का सबसे प्रमुख घटक है, मियादी संरचना में अस्थिरता की 94 प्रतिशत से 96 प्रतिशत तक व्याख्या करता है। अंतर्निहित वक्र चाहे कोई भी हो, पहले तीन घटक व्यावहारिक रूप से मियादी संरचना की सम्पूर्ण अस्थिरता के कारक होते हैं। सभी अवधियों में पीसी-1 में धनात्मक फैक्टर लोडिंग रहा, जिसका अर्थ है कि इस घटक को सभी अवधियों में एक ही दिशा में एक साथ प्रतिफल उतार-चढ़ाव से उत्पन्न जोखिम की व्याख्या करता हुआ माना जा सकता है। दूसरे घटक (पीसी-2) में पहली तीन अवधियों (6 महीने तक) के लिए ओआईएस खंड में धनात्मक फैक्टर लोडिंग और बाकी अवधि के लिए ऋणात्मक गुणांक रहा। जी-सेक के सभी प्रतिफल वक्र के लिए, पीसी-2 की पहली चार अवधियों (1 वर्ष तक) में ऋणात्मक लोडिंग रहा जबकि शेष अवधियों में धनात्मक लोडिंग रहा। अतः दोनों वक्रों के लिए, पीसी-2 को मियादी संरचना की ढलान दर्शाने वाले के रूप में देखा जा सकता है। तीसरा घटक सामान्यतया विशेष प्रकृति की, अवधि विशिष्ट जोखिमों को परिभाषित करने वाला प्रतीत होता है।

जी-सेक वक्र में पीसी-1 पर एक मानक विचलन (1 एसडी) के आघात के फलस्वरूप 1-वर्षीय अवधि में प्रतिफल में 113 आधार अंक की वृद्धि और 10-वर्षीय प्रतिफल में 46 आधार अंक (बीपीएस) की वृद्धि होती है, जिसका आशय आघात पड़ने के पश्चात प्रतिफल वक्र का 66 आधार अंक की मंदी के साथ सपाट होना है। उसी प्रकार, जी-सेक वक्र में पीसी-1 पर एक मानक विचलन (1 एसडी) के आघात के फलस्वरूप (पीसी- 1 और पीसी-2 पारस्परिक रूप से ऑर्थोगोनल होने के नाते, इस तरह के आघात स्वतंत्र रूप से हो सकते हैं) 1-वर्षीय अवधि में प्रतिफल में 2 आधार अंक की बढ़ोतरी और 10-वर्षीय में 14 आधार अंक (बीपीएस) की कमी होती है, जिसका आशय आघात पड़ने पर 16 आधार अंक तेजी के साथ प्रतिफल वक्र का सपाट होना है। इस प्रकार स्पष्ट है कि ब्याज दर आघात परिदृश्यों में प्रतिफल वक्र सपाट हो जाता है।

सारणी 1: प्रमुख घटक प्रसरण विश्लेषण

(सभी संख्या प्रतिशत में)

	ओआईएस वक्र (एकदिवसीय – 5 वर्षीय)	जी-सेक वक्र (एकदिवसीय - 15 वर्षीय)
पीसी-1	94.27	96.00
पीसी-1 + PC-2	99.73	98.44
पीसी-1 + पीसी-2 + पीसी-3	99.94	99.50

स्रोत: फिन्डा और स्टाफ गणना।

ग्रेंजर कारण (कॉज़ैलिटी) परीक्षण के परिणामों से संकेत मिलता है कि जी-सेक वक्र के पीसी-1 पर ओआईएस वक्र के पीसी-1 का प्रभाव ओआईएस वक्र से जी-सेक वक्र तक चलने वाले एक ही अंतराल पर एकदिशात्मक कारण (कॉज़ैलिटी) दिखाता है, लेकिन जैसे ही अंतराल की संख्या बढ़ जाती है कारण (कॉज़ैलिटी) द्वि-दिशात्मक हो जाता है, जिसका अर्थ है कि जी-सेक संचालकों का ओआईएस संचालकों पर पश्च प्रभाव रहा (सारणी 2)। यह हेजिंग के माध्यम से दो वक्रों के बीच परस्पर क्रिया को दर्शाता है।

पीसी-2 श्रृंखला स्थिर है, जो यह दर्शाता है समकालीन चलनिधि और ब्याज दर व्यवस्थाओं का बहुत कम प्रभाव पड़ता है (सारणी 3)।

सारणी 2: जी-सेक और ओआईएस वक्र में उतार-चढ़ाव के मध्य परस्पर क्रिया का विश्लेषण

युग्मन: ग्रेंजर कारण (कॉज़ैलिटी) परीक्षण प्रतिदर्श: 1/01/2019 11/16/2021 अंतराल : 1			
निराकरणिय परिकल्पना:	प्रेषण	एफ-सांख्यिकीय	प्रायिकता
पीसी_1_ओआईएस ग्रेंजर कॉज़ नहीं	688	16.8290	5.E-05
जी_सेक_पीसी_1			
जी_सेक_पीसी_1 ग्रेंजर कॉज़ नहीं		0.00942	0.9227
कॉज़ पीसी_1_ओआईएस			

युग्मन: ग्रेंजर कॉज़ैलिटी परीक्षण प्रतिदर्श: 1/01/2019 11/16/2021 अंतराल : 2			
निराकरणिय परिकल्पना:	प्रेषण	एफ-सांख्यिकीय	प्रायिकता
पीसी_1_ओआईएस ग्रेंजर कॉज़ नहीं	686	8.36042	0.0003
जी_सेक_पीसी_1			
जी_सेक_पीसी_1 ग्रेंजर कॉज़ नहीं		5.28576	0.0053
कॉज़ पीसी_1_ओआईएस			

स्रोत: आरबीआई स्टाफ गणना

(क्रमशः...)

¹⁷ इस दृष्टिकोण से गोलब, बी.डब्ल्यू, और तिलमैन, एल.एम का रिस्क मैनेजमेंट – अप्रोचेज फॉर फिक्स्ड इनकम मार्केट जोखिम प्रबंधन के लिए प्रामाणिक संदर्भ बना हुआ है। हालांकि जोखिम प्रबंधक स्पॉट दरों के आधार पर पीसीए वियोजन लागू करते हैं, नीतिगत नजरिए से इस विषय पर अंतर्दृष्टि के लिए यह वर्तमान विश्लेषण समग्र प्रतिफल पर किया जा रहा है।

¹⁸ जी-सेक वक्र के लिए 1-मासिक, 3-मासिक, 6-मासिक, 1-वर्षीय, 2-वर्षीय, 3-वर्षीय और 5-वर्षीय अवधि पर विचार किया गया है।

¹⁹ ओआईएस वक्र के लिए सीसीआईएल ओ/एन रेपो, 1-मासिक, 3-मासिक, 6-मासिक, 1-वर्षीय, 2-वर्षीय, 3-वर्षीय और 5-वर्षीय, 7-वर्षीय, 10-वर्षीय, 12-वर्षीय और 15-वर्षीय अवधि पर विचार किया गया है।

सारणी 3: मियादी ढाल शृंखला का इकाई मूल विश्लेषण					
निराकरणिय परिकल्पना: पीसी-2 के पास इकाई मूल है बहिर्जात: स्थिर बैंडविड्थ: 3 (नेवे-वेस्ट स्वचालित) बर्टलेट केरनेल का उपयोग करते हुए			निराकरणिय परिकल्पना: पीसी-2 के पास इकाई मूल है बहिर्जात: स्थिर अंतराल की लंबाई : 5 (स्वचालित – संशोधित एआईसी पर आधारित, अधि-अंतराल+19)		
	समायोजित टी-सांख्यिकीय	प्रायिकता*		समायोजित टी-सांख्यिकीय	
फिलिप्स-पेरॉन परीक्षण सांख्यिकीय	-3.471716	0.0090	इलियट-रॉथनबर्ग-स्टॉक डीएफ-जीएलएस परीक्षण सांख्यिकीय	-3.042102	
परीक्षण क्रांतिक मान	1% स्तर -3.439599		परीक्षण क्रांतिक मान	1% स्तर -2.568342	
	5% स्तर -2.865512			5% स्तर -1.941286	
	10% स्तर -2.568942			10% स्तर -1.616388	
* मैककीनन (1996) एक पक्षीय पी-मान			* मैककीनन (1996)		
रेसिडुअल प्रसरण (संशुद्धि नहीं)		0.011242			
एचएस संशुद्ध प्रसरण (बर्टलेट केरनेल)		0.012988			
स्रोत: आरबीआई स्टाफ गणना।					

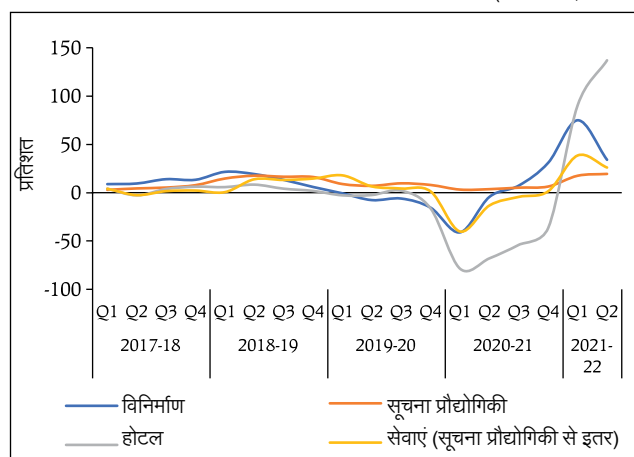
1.2.3 कॉर्पोरेट क्षेत्र

1.53 महामारी के दौरान भारतीय कॉर्पोरेट क्षेत्र ने एक निरंतर और व्यापक-आधार पर विस्तार करते हुए मजबूती और आघात-सहनीयता प्राप्त की। सूचीबद्ध गैर-वित्तीय निजी कंपनियों²⁰ के प्रमुख वित्तीय मापदंडों के विश्लेषण से मांग की स्थिति में सुधार के संकेत प्राप्त होते हैं। 2021-22 की दूसरी तिमाही में विनिर्माण कंपनियों की बिक्री में 34.0 प्रतिशत (वर्ष-दर-वर्ष) की वृद्धि हुई। पूरी महामारी के दौरान सकारात्मक रही सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) कंपनियों की बिक्री में वृद्धि 19.5 प्रतिशत तक पहुंच गयी (चार्ट 1.30)।

1.54 विनिर्माण और आईटी कंपनियों के बढ़ते कारोबार ने उच्च परिचालन लाभ में योगदान दिया, और 2021-22 की दूसरी तिमाही में परिचालन लाभ मार्जिन और निवल लाभ मार्जिन के अनुसार उनकी कीमत निर्धारण क्षमता स्थिर रही (चार्ट 1.31)। तुलन पत्र कर्ज के आधार पर सूचीबद्ध 1,639 निजी विनिर्माण कंपनियों के परिचालन मार्जिन के अलग-अलग विश्लेषण दर्शाते हैं कि कोविड-19 की दूसरी लहर के बाद छोटे

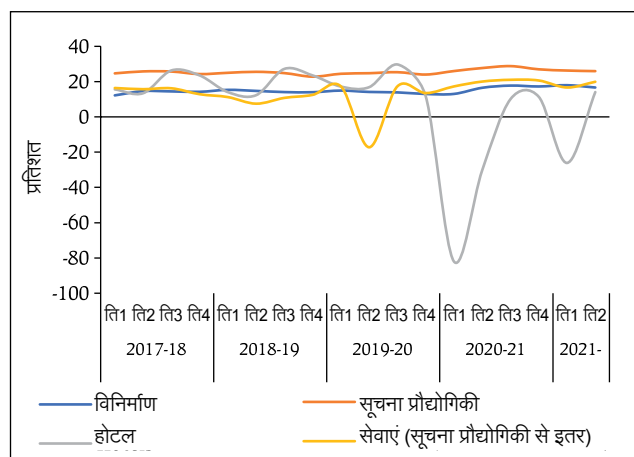
चार्ट 1.30 : सूचीबद्ध गैर-वित्तीय निजी कंपनियों की बिक्री – वृद्धि

(वर्ष-दर-वर्ष, प्रतिशत)



स्रोत: कैपिटलाइन एवं आरबीआई स्टाफ की गणना।

चार्ट 1.31 : प्रचालन लाभ मार्जिन – सूचीबद्ध गैर-वित्तीय निजी कंपनियों



स्रोत : कैपिटलाइन एवं आरबीआई स्टाफ की गणना।

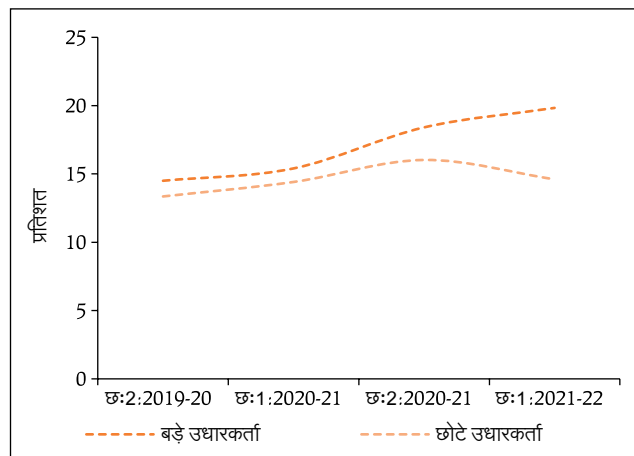
²⁰ वर्ष 2021-22 की दूसरी तिमाही के लिए सूचीबद्ध कंपनियों के प्रतिदर्श में विनिर्माण क्षेत्र की 1687 सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) क्षेत्र की 166, होटल उद्योग की 41 और अन्य सेवा क्षेत्र की 538 कंपनियां शामिल थीं।

उधारकर्ताओं²¹ ने कम परिचालन मार्जिन दर्ज किया (चार्ट 1.32)।

1.55 वर्ष 2021-22 की पहली छमाही के दौरान विनिर्माण कंपनियों की प्रतिधारित कमाई और अल्पावधि उधार उनकी निधियों के स्रोतों के क्रमशः 38 प्रतिशत और 43 प्रतिशत रहे। उनके द्वारा जुटाए गईं निधियों को इनवेंटरी बनाने (16.6 फीसदी) और दीर्घावधि कर्ज को कम करने (13.6 फीसदी) में लगाया गया था। व्यापार से प्राप्य और देय राशियों में बढ़ोतरी हुई और नकदी धारिता में गिरावट आई, जो व्यावसायिक गतिविधि में तेजी की ओर संकेत करता है।

1.56 वर्ष 2020-21 के दौरान सूचीबद्ध विनिर्माण कंपनियों द्वारा बकाया रकम चुकाया जाना (डीलिवरेजिंग)²² 2021-22 की पहली छमाही में रुक गया था, और उनकी नकदी धारिता भी महामारी के दौरान के उच्च स्तर की तुलना में कम हो गई थी (चार्ट 1.33 ए और 1.33 बी)। पूंजीगत व्यय मंद बना रहा, जैसा कि कुल परिसंपत्तियों में से अचल परिसंपत्तियों के हिस्से में गिरावट से परिलक्षित होता है (चार्ट 1.33 सी)।

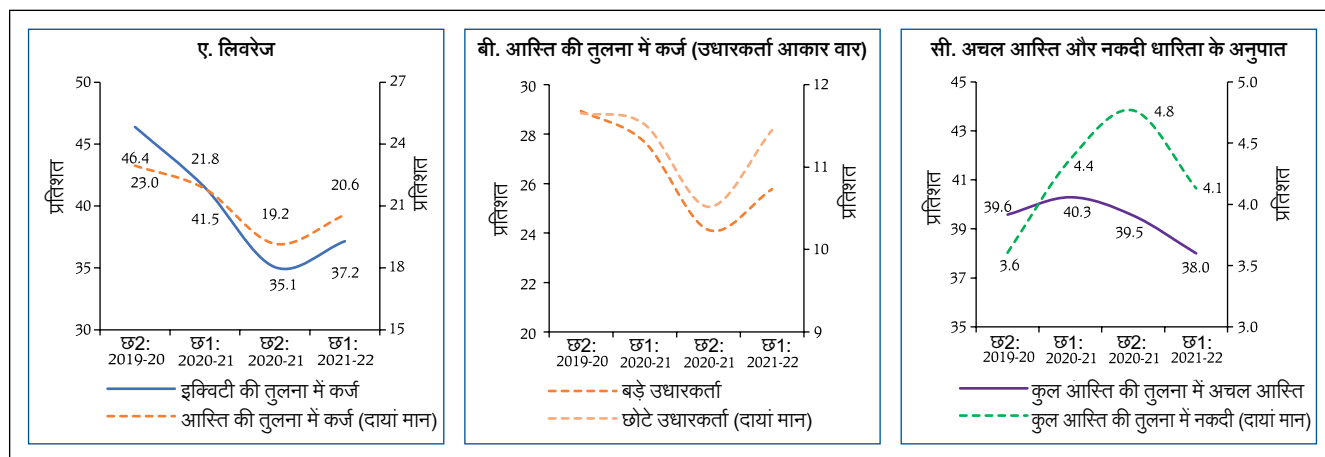
चार्ट 1.32 : प्रचालन लाभ मार्जिन – उधारकर्ता आकार वार सूचीबद्ध निजी विनिर्माण कंपनियां



नोट: 1639 कंपनियों के प्रतिदर्श

स्रोत : कैपिटलाइन एवं आरबीआई स्टाफ की गणना।

चार्ट 1.33 : सूचीबद्ध गैर-वित्तीय निजी कंपनियों की लिवरेज, अचल आस्तियां एवं नकदी धारिता



टिप्पणी : 1639 कंपनियों के प्रतिदर्श।

स्रोत : कैपिटलाइन एवं आरबीआई स्टाफ की गणनाएं।

²¹ छोटे उधारकर्ताओं का तात्पर्य 1,538 सूचीबद्ध निजी विनिर्माण कंपनियों से है जिन्होंने 31 मार्च 2020 तक ₹ 1000 करोड़ तक का उधार लिया है। ₹1000 करोड़ या उससे अधिक उधार लेने वाली शेष 101 विनिर्माण कंपनियों को बड़े उधारकर्ताओं के रूप में माना जाता है।

²² डीलिवरेजिंग को कर्ज इक्विटी अनुपात और कर्ज परिसंपत्ति अनुपात के द्वारा मापा जाता है।

1.2.4 बाह्य क्षेत्र की गतिविधियां और विदेशी मुद्रा डेरिवेटिव बाजार

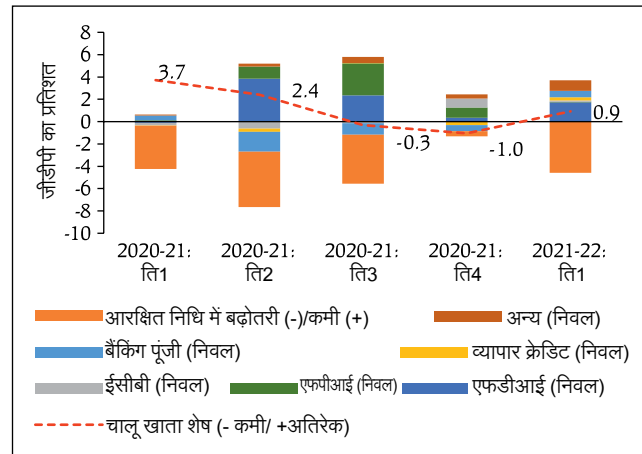
1.57 अनिश्चित और अस्थिर वैश्विक आर्थिक वातावरण में, भारत का बाह्य क्षेत्र महामारी के दौरान स्थिर और अर्थक्षम बना हुआ है। कम होते व्यापार घाटे और निवल सेवा प्राप्तियों में बढ़ोतरी से वर्ष 2021-22 की पहली तिमाही में चालू खाता शेष को पिछली तिमाही में 1.0 प्रतिशत के घाटे और पिछले वर्ष के 3.7 प्रतिशत के अधिशेष के विपरीत जीडीपी के 0.9 प्रतिशत अधिशेष के स्तर पर पहुँच दिया (चार्ट 1.34)। वर्ष 2021-22 की पहली तिमाही के दौरान वित्तीय खाते में, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) और बैंकिंग पूंजी में बड़े अंतर्वाह दर्ज हुए। इन गतिविधियों के कारण 2021-22 की पहली तिमाही में भुगतान संतुलन (बीओपी) के आधार पर विदेशी मुद्रा भंडार में 31.9 बिलियन अमरीकी डालर के बराबर अभिवृद्धि हुई।

1.58 आयात की बढ़ती मांग के कारण बाद के महीनों में व्यापार घाटा बढ़ने के बावजूद, बाह्य वित्तीय आवश्यकताएं सुसमर्थित रहीं। 17 दिसंबर 2021 तक आरक्षित निधि का स्तर 635.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर था।

1.59 वर्ष 2021-22 की पहली छमाही में एफडीआई अंतर्वाह 30.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर रहा, जो 2020-21 की पहली छमाही में 29.2 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक था। दूसरी ओर, तेज नीतिगत सामान्यीकरण की उम्मीदों और हाल ही में ओमाइक्रोन संक्रमण के कारण जोखिम विमुखता में आई तेजी से निवल विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (एफपीआई) की गति मंद हो गई। वर्ष 2021-22 की पहली छमाही के दौरान 7.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर का निवल अंतर्वाह दर्ज होने के बाद, वर्ष 2021-22 की तीसरी तिमाही में अब तक निवल बहिर्वाह हुआ है (चार्ट 1.35 ए और 1.35 बी)।

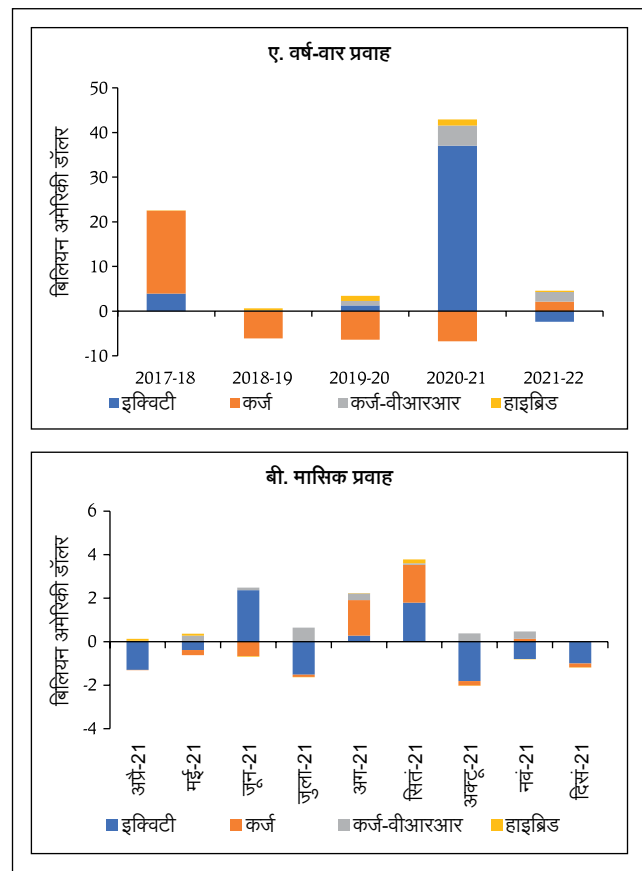
1.60 सीमा पार बैंकिंग प्रवाह के संदर्भ में, विदेशी मूल के बैंकों ने दिसंबर 2019 से जून 2021 के दौरान मुख्य रूप से स्थानीय मुद्रा अभिनियोजन के माध्यम से भारतीय अर्थव्यवस्था में अपने कुल परिव्यय में 3.2 प्रतिशत की बढ़ोतरी की, जबकि विदेशी

चार्ट 1.34 : भारत का भुगतान संतुलन



स्रोत : भारतीय रिज़र्व बैंक।

चार्ट 1.35 : विदेशी संविभाग निवेश



नोट: 10 दिसंबर 2021 तक।

स्रोत: सेबी

सारणी 1.12: भारत में अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग प्रवाह

(बिलियन अमरीकी डॉलर में)

मद	ति2:2021			ति4:2019		
	कुल	अंतरराष्ट्रीय	स्थानीय स्थिति स्थानीय मुद्रा में	कुल	अंतरराष्ट्रीय	स्थानीय स्थिति स्थानीय मुद्रा में
विदेशी बैंक	278.6	136.0	142.7	269.9	145.9	124.0
फ्रांस	27.1	20.2	6.9	20.3	13.9	6.4
जापा	39.3	30.5	8.8	45.1	36.6	8.5
यूनाइटेड किंगडम	72.6	20.5	52.1	64.7	21.0	43.7
अमरीका	74.1	23.8	50.3	65.5	24.3	41.2

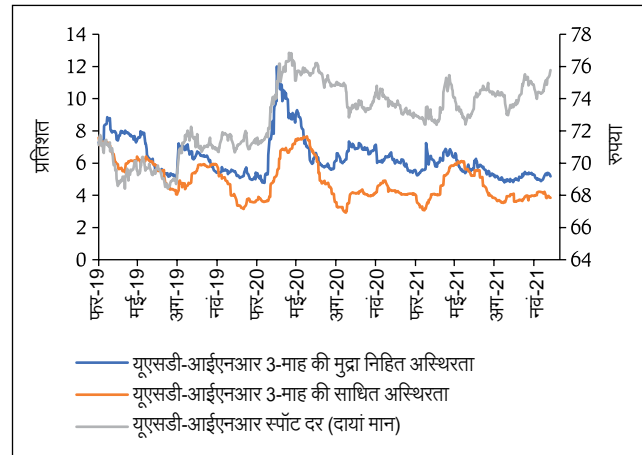
स्रोत : बीआईएस।

मुद्रा मूल्यवर्ग के अभिनियोजन में 6.8 प्रतिशत की गिरावट आयी (सारणी 1.12)।

1.61 बढ़ी हुई वैश्विक अनिश्चितता के बीच, वैश्विक जोखिम अनुमानों में बदलाव के प्रति काफ़ी हद तक प्रतिरक्षित रहते हुए उभरती अर्थव्यवस्थाओं में पूंजी प्रवाह उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में मौद्रिक उपायों से अमरीकी डॉलर-भारतीय रुपया विनिमय दर किनारे स्थिर बनी रही। अंतर्निहित अस्थिरता, जो विनिमय दर के उतार-चढ़ाव पर बाज़ार के भावी दृष्टिकोण को दर्शाती है, और प्रत्यक्ष अस्थिरता भी सीमित दायरे में रही (चार्ट 1.36)। मूल्यांकन में बाज़ार के सापेक्षिक पूर्वाग्रह को दर्शाते हुए ऑप्शन असंतुलन में भी नवंबर 2021 के मध्य तक प्रत्यक्ष रूप से कोई दिशा नहीं दिखाई देती है। इसके बाद, हालांकि, विदेशी पोर्टफ़ोलियो बहिर्वाह, अधिक मजबूत अमेरिकी डॉलर और यूएस फेडरल रिज़र्व द्वारा टेपिरिंग की गति में अनिश्चितता के कारण भारतीय रुपया ने दिसंबर के मध्य तक लगभग नीचे कारोबार किया है। कुल मिलाकर, जून 2021 के अंत (10 दिसंबर 2021 तक) से अमेरिकी डॉलर के मुकाबले भारतीय रुपये में 1.73 प्रतिशत का मूल्यहास हुआ है (चार्ट 1.37)।

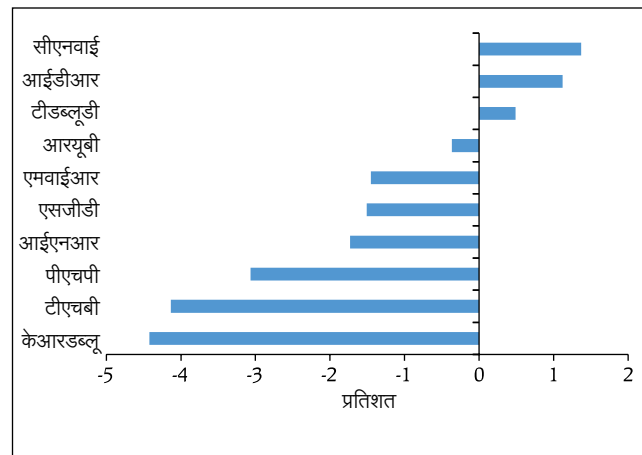
1.62 हाल की अवधि में अप्रदेय अंतर-बैंक अमेरिकी डॉलर-भारतीय रुपया फॉरवर्ड कारोबार की मात्रा में व्यापक रूप से ऑनशोर अंतर-बैंक व्यापार को शामिल किया; अप्रदेय फॉरवर्ड

चार्ट 1.36: यूएसडी-आईएनआर और 3-माह की अवधि के लिए ऐतिहासिक एवं निहित अस्थिरता



स्रोत : ब्लूमबर्ग।

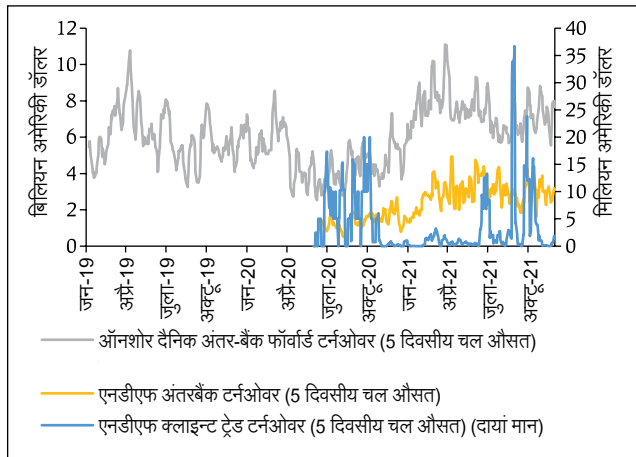
चार्ट 1.37: अमेरिकी डॉलर की तुलना में मुद्राएं



नोट: जून-अंत की तुलना में 10 दिसंबर 2021 के अनुसार

स्रोत: ब्लूमवर्ग

चार्ट 1.38 : डेलिवरेबल और नॉन डेलिवरेबल दैनिक फारवार्ड्स ट्रेड टर्नओवर



स्रोत : आरबीआई एवं सीसीआईएल ।

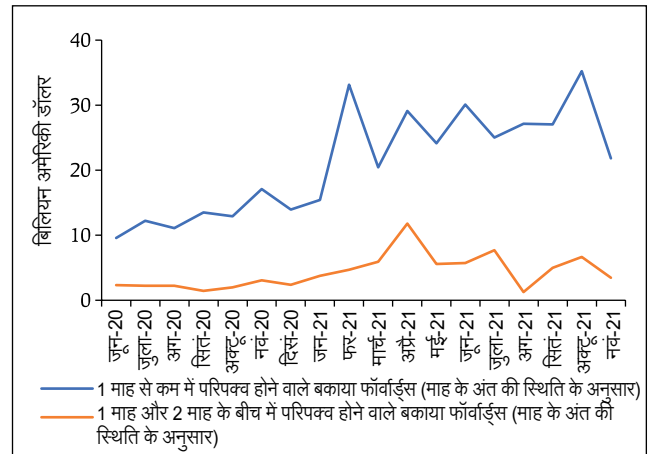
(एनडीएफ) क्लाइंट व्यापार की मात्रा अनियमित लेकिन कम रही (चार्ट 1.38) । 1-माह से कम की अवधि के ऑफ़शोर बकाया फ़ॉरवर्ड में तेजी दिखता है (चार्ट 1.39) ।

1.63 हेजिंग का दबाव ऊंचा बना हुआ है जैसा कि एमआईएफओआर-ओआईएस²³ स्प्रेड में परिलक्षित होता है, यह घरेलू वक्र की तुलना में एक-वर्षीय अवधि में व्यापक बना हुआ है जो यह दर्शाता है कि विदेशी मुद्रा जोखिम को हेज करने के लिए उच्च प्रीमियम का भुगतान करना आवश्यक है (चार्ट 1.40) । हालांकि 3-वर्षीय अवधि के स्प्रेड में कमी आयी है, फ्लोटिंग लेग (3-माह X 3-वर्षीय) के रूप में एमआईएफओआर के साथ भारतीय रुपए का स्वैप करने का ऑप्शन अपने हाल के निचले स्तर से अलग है, जो प्रतिभागियों की 3-वर्षीय एमआईएफओआर दरों के उभरने के बारे में अनिश्चितता को दर्शाता है (चार्ट 1.41) ।

1.2.5 घरेलू इक्विटी बाज़ार

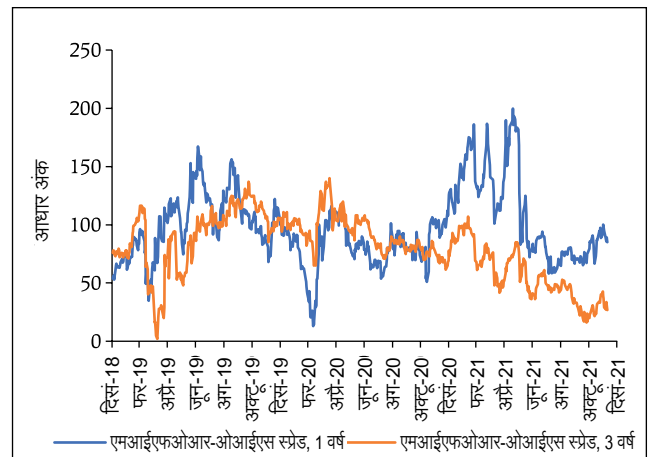
1.64 दुनिया भर के इक्विटी बाज़ारों में तेज उछाल आने के कारण, भारतीय इक्विटी बाज़ार बीच-बीच में सुधारों के साथ तेजी से बढ़ा । अप्रैल-नवंबर 2021 के दौरान नकदी खंड के संस्थागत प्रतिभागियों में, विदेशी पोर्टफ़ोलियो निवेशकों द्वारा निकासी को समायोजित करते हुए घरेलू संस्थागत निवेशक

चार्ट 1.39 : ऑफ़शोर बकाया फॉर्वाड्स



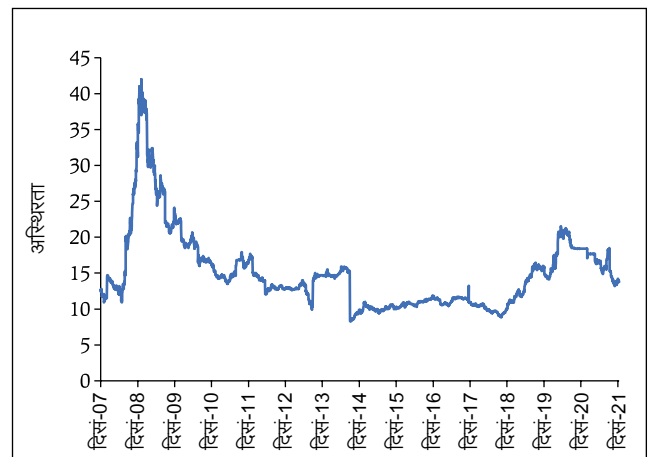
स्रोत : आरबीआई एवं सीसीआईएल ।

चार्ट 1.40 : एमआईएफओआर-ओआईएस स्प्रेड



स्रोत : ब्लूमबर्ग ।

चार्ट 1.41: आईएनआर स्वैपशन

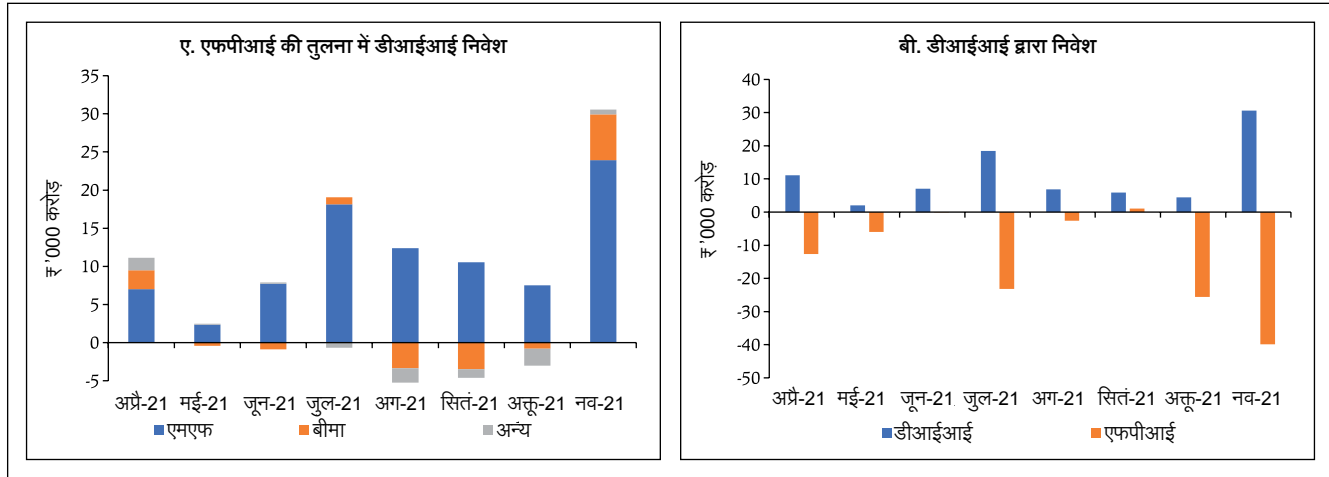


नोट: 3-माह ऑप्शन समाप्ति और 3-वर्ष स्वैप अवधि के लिए

स्रोत: रेफीनीटीव

²³ मुंबई अंतर-बैंक विदेशी मुद्रा प्रस्तावित दर (माइफॉर) और एकदिवसीय सूचकांक स्वैप (ओआईएस) दर के बीच का स्प्रेड ।

चार्ट 1.42: इक्विटी नकदी खंड में निवेश में प्रवृत्ति



स्रोत: सेबी

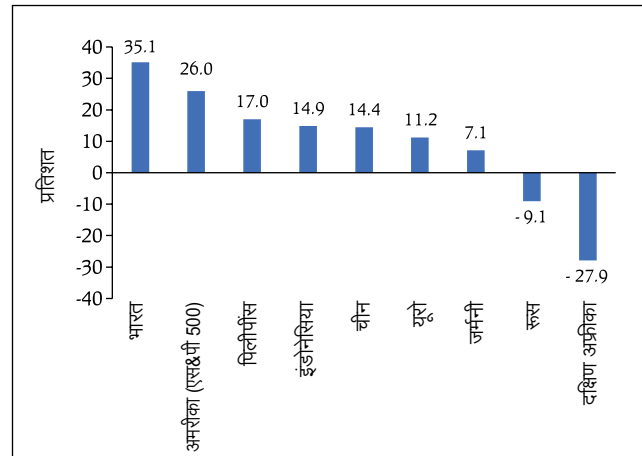
(डीआईआई) निवल खरीदार रहे। म्यूचुअल फंड प्रमुख संचालक थे; बीमा कंपनी इस अवधि के दौरान निवल विक्रेता रहे (चार्ट 1.42 ए और 1.42 बी)।

1.65 मजबूत निवेशक हित ने कीमत-अर्जन (पी/ई) अनुपात को काफ़ी हद तक बढ़ाए रखा। 13 दिसंबर 2021 की स्थिति के अनुसार, भारत का एक-वर्षीय फॉरवर्ड पी/ई अनुपात अपने 10-वर्षीय औसत से 35.1 प्रतिशत अधिक था, और विश्व में सर्वाधिक स्तरों में से एक था (चार्ट 1.43)। अन्य मूल्यांकन मेट्रिक जैसे कीमत-बही मूल्य (पी/बी) अनुपात, जीडीपी अनुपात की तुलना में बाजार पूंजीकरण का अनुपात, और चक्रिय रूप से समायोजित पी/ई अनुपात या शिलर पी/ई भी अपने ऐतिहासिक औसत से ऊपर हैं (सारणी 1.13)। यह वास्तविक अर्थव्यवस्था और इक्विटी बाजारों के बीच किसी असंबद्धता को दर्शाता है।

1.66 असामान्य रूप से उच्च मूल्यांकन के कारण बढ़ती हुई अस्थिरता के साथ, जुलाई 2021 के अंत में 11.8 के निचले स्तर को छूने के बाद सितंबर 2021 से एनएसई वीआईएक्स में तेजी शुरू हुई। 13 दिसंबर 2021 को एनएसई वीआईएक्स 16.6 के स्तर पर था, जो कोविड के पहले के स्तर से थोड़ा अधिक है, हालांकि यह अभी भी अपने 5 साल के औसत 17.8 से कम है।

1.67 इक्विटी बाजार में मौजूदा उछाल की विशेषताओं में से एक विशेषता खुदरा निवेशकों की बढ़ी हुई भागीदारी रही है, नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) में सूचीबद्ध कंपनियों में

चार्ट 1.43: 10-वर्षीय औसत की तुलना में 1-वर्षीय फॉरवर्ड पी/ई अनुपात



स्रोत: ब्लूमबर्ग।

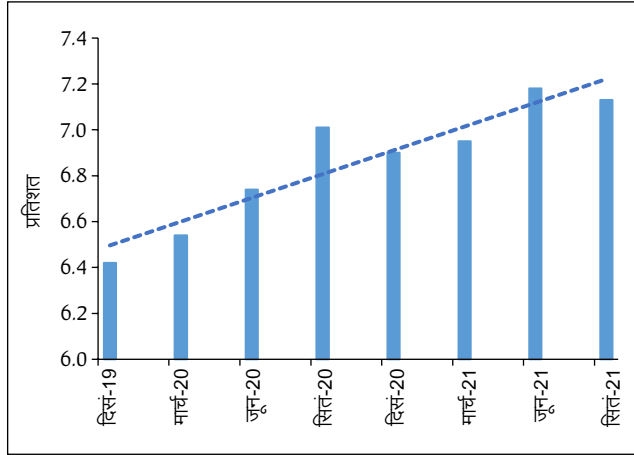
सारणी 1.13: मूल्यांकन मेट्रिक्स

	दीर्घावधि औसत	चालू
कीमत बही (पी/बी) मूल्य अनुपात	3.26	3.58
बाजार पूंजीकरण / जीडीपी अनुपात	75.77	119.16
शिलर कीमत अर्जन (पी/ई) अनुपात	26.93	38.68

नोट: 1. 1998-99 से पी/बी अनुपात के दीर्घकालिक औसत की गणना वार्षिक पी/बी अनुपात के औसत के रूप में की जाती है।
2. 2012-13 से बाजार पूंजीकरण/सकल घरेलू उत्पाद अनुपात के दीर्घकालिक औसत की गणना वार्षिक बाजार पूंजीकरण/सकल घरेलू उत्पाद अनुपात के औसत के रूप में की जाती है। वर्तमान बाजार पूंजीकरण/सकल घरेलू उत्पाद अनुपात 30 सितंबर 2021 से संबद्ध है।
3. 03 अप्रैल 2017 से शिलर पी/ई के दीर्घकालिक औसत की गणना दैनिक मूल्यों के औसत के रूप में की जाती है।

स्रोत: बीएसई और ब्लूमवर्ग

चार्ट 1.44: इक्विटी बाजारों में खुदरा भागीदारी (मूल्य द्वारा स्वामित्व)



स्रोत: प्राइम डाटाबेस

जिनकी हिस्सेदारी दिसंबर 2019 में कीमत के संदर्भ में 6.4 प्रतिशत से बढ़कर सितंबर 2021 में 7.1 प्रतिशत हो गई (चार्ट 1.44)। खुदरा ब्याज में उल्लेखनीय बढ़ोतरी एक्सचेंजों पर बढ़े हुए व्यापार, आईपीओ में और वायदा तथा डेरिवेटिव जैसे अन्य बाजार क्षेत्रों में भागीदारी के रूप में भी दिखाई दे रही थी।

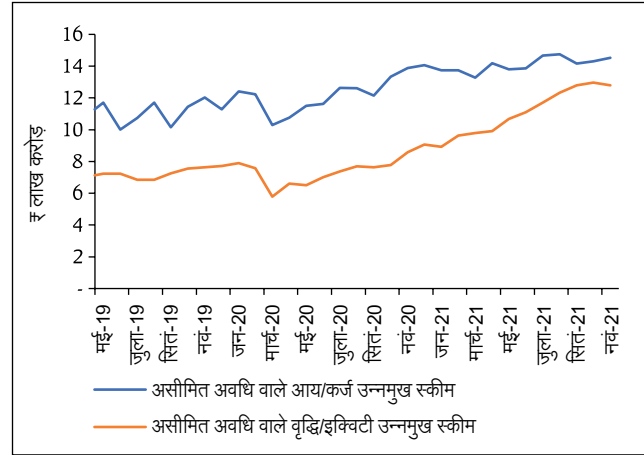
1.2.6 म्यूचुअल फंड

1.68 मार्च 2020 के महामारी के आघात के बाद से असीमित अवधि वाले म्यूचुअल फंड के प्रबंधन के अंतर्गत आस्तियों (एयूएम) में लगातार वृद्धि हुई है। उनके आकार की वजह से वे प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण हैं (चार्ट 1.45)।

1.69 वर्ष 2018 के मध्य में मेसर्स इंफ्रास्ट्रक्चर लीजिंग एंड फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड (आईएल एंड एफएस) की विफलता के बाद की अवधि में डेट म्यूचुअल फंड (एमएफ) द्वारा धारित चल परिसंपत्तियों का अनुपात अपने उच्चतम स्तर पर है (चार्ट 1.46)। इसका असीमित अवधि वाले एमएफ को प्रभावित करने वाले किसी भी प्रणालीगत आघात का द्वितीयक सरकारी-प्रतिभूति खंड पर महत्वपूर्ण प्रभाव हो सकता है, वहीं जबकि विशिष्ट प्रकृति के फंड विशिष्ट आघातों के खिलाफ यह एक बचाव के रूप में कार्य करता है।

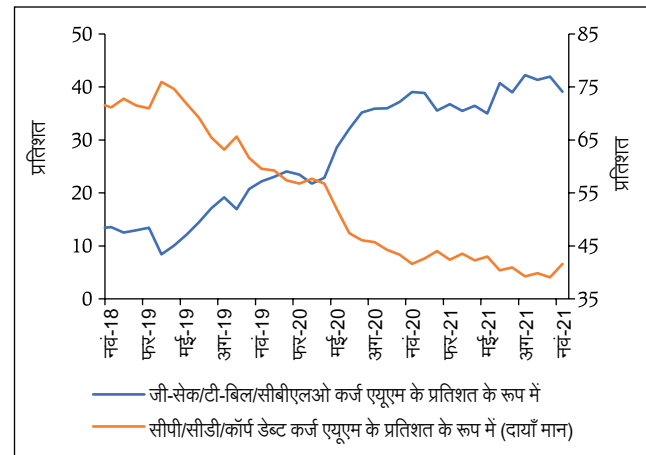
1.70 कर्ज-उन्नमुख योजनाओं के निवेशक प्रोफाइल में निगमित संस्थाओं और उच्च मालियत वाले व्यक्तियों का वर्चस्व रहा (चार्ट 1.47)। कोविड-19 के प्रकोप के बाद निवेश जोखिम के सक्रिय प्रबंधक रहने वाले इन निवेशकों की इक्विटी

चार्ट 1.45: असीमित अवधि वाली कर्ज और इक्विटी फंड की एएमयू



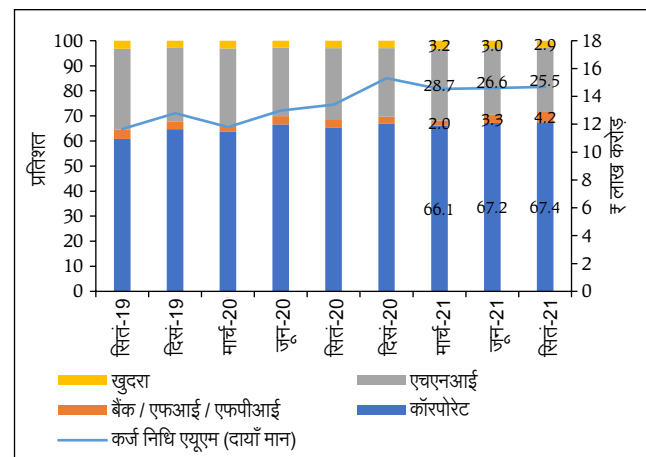
स्रोत: भारतीय पारस्परिक निधि संघ (एएमएफआई)

चार्ट 1.46: जी-सेक/टी-बिल में / सीबीएलओ और स्प्रेड उत्पादों में एमएफ का निवेश



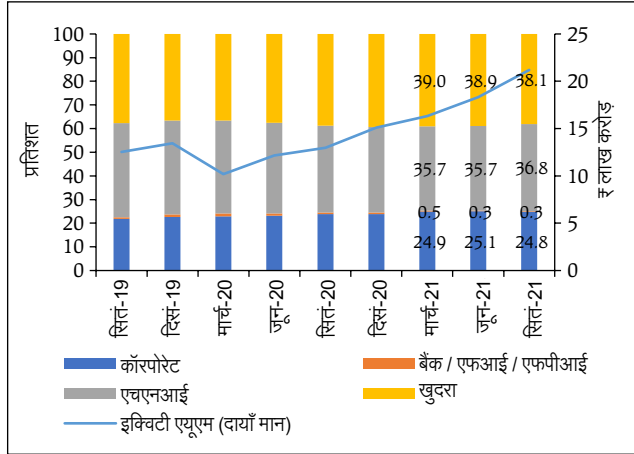
स्रोत: सेबी

चार्ट 1.47: कर्ज योजनाओं का निवेशक प्रोफाइल



स्रोत: एएमएफआई

चार्ट 1.48: इक्विटी योजनाओं का निवेशक प्रोफाइल*



नोट: * हाइब्रिड योजनाएं भी शामिल हैं।
स्रोत: एमएफआई

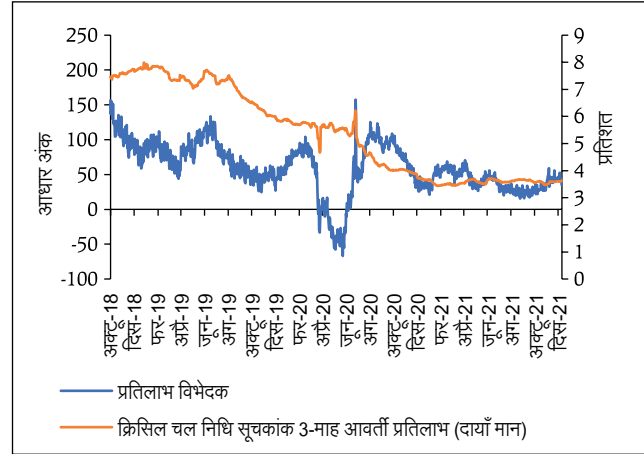
योजनाओं में भागीदारी अतिरिक्त नकदी के अपयोजन के कारण बढ़ी है, क्योंकि तरल निधि के सकल रिटर्न में गिरावट आयी है। दूसरी ओर, दिसंबर 2020 के बाद एमएफ की इक्विटी योजनाओं में खुदरा सहभागिता की हिस्सेदारी घट रही है (चार्ट 1.48-1.49)।

1.71 जहां कर्ज निधियों के सकल कोष में जबकि बढ़ोतरी हुई है, वहीं म्यूचुअल फंडों की कॉरपोरेट बॉन्ड धारिताओं में गिरावट आयी है और रेटिंग मिक्स के अनुसार पोर्टफोलियो संरचना बेहतर रेटेड कॉरपोरेट के पक्ष में चली गयी है (चार्ट 1.50)। इसके अलावा, भारतीय नियत आय मुद्रा बाजार और व्युत्पन्नी संघ (फिम्डा) मूल्यन मॉडल की तुलना में एमएफ बुक में 3-वर्षीय एए बॉन्ड के माध्यिका मूल्यन से पता चलता है कि म्यूचुअल फंड बॉन्ड पोर्टफोलियो को सामान्य तौर पर सीमित रूप में मूल्यन किया जा रहा है (चार्ट 1.51)।

1.2.7 बैंकिंग स्थिरता सूचक

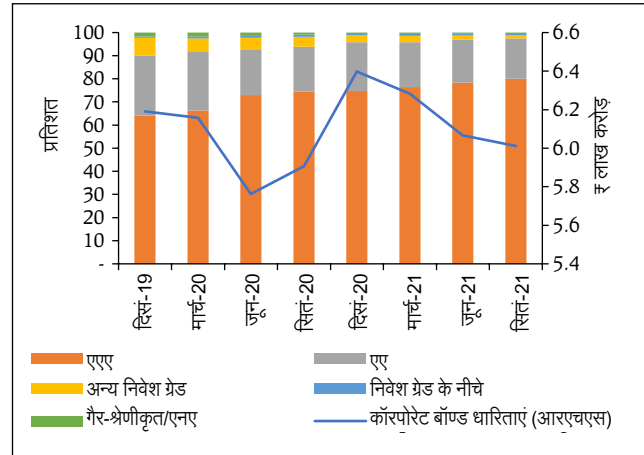
1.72 एससीबी की अंतर्निहित स्थितियों और जोखिम कारकों में बदलाव को इंगित करने वाली बैंकिंग स्थिरता संकेतक (बीएसआई)²⁴ ने सुदृढ़ता, आस्ति गुणवत्ता, चलनिधि और लाभप्रदता में सुधार प्रदर्शित किया। दक्षता मापदंडों में मार्च 2021 की स्थिति के सापेक्ष कमी आयी। विशेष रूप से, बैंकों

चार्ट 1.49: मुद्रा बाजार निधि में अतिरिक्त प्रतिलाभ



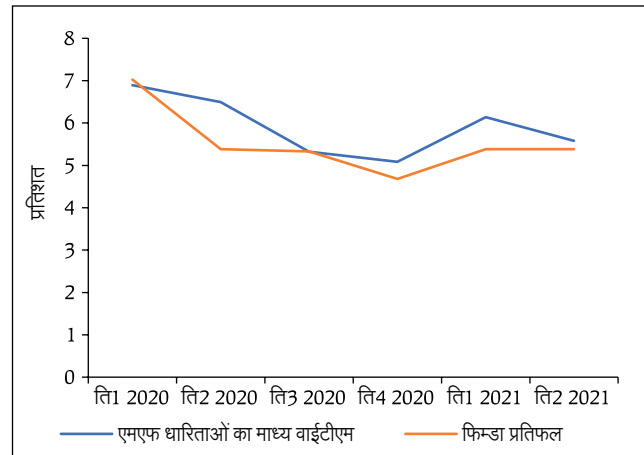
स्रोत: क्रिसिल।

चार्ट 1.50: म्यूचुअल फंड की कॉरपोरेट बॉण्ड धारिताएं



स्रोत: प्राइम डाटाबेसा

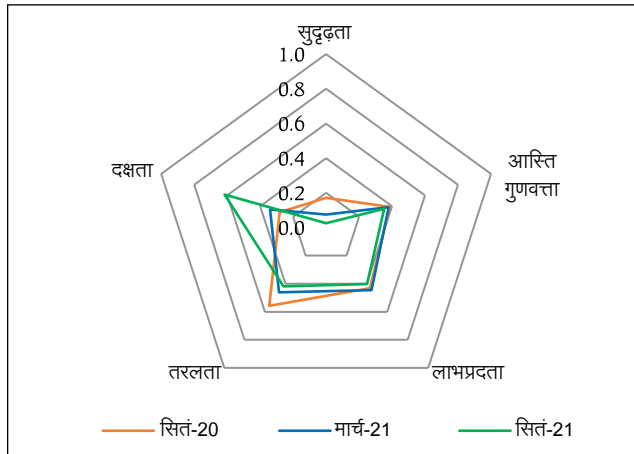
चार्ट 1.51: 3-वर्षीय एए गैर-वित्तीय गैर-पीएसयू कॉरपोरेट वाईटीएम



स्रोत: फिम्डा और प्राइम डाटाबेसा

²⁴ विभिन्न बीएसआई आयामों के तहत उपयोग की जाने वाली विस्तृत पद्धति और मूल संकेतकों के लिए कृपया अनुलग्नक 2 का संदर्भ लें।

चार्ट 1.52: बैंकिंग स्थिरता मैप



टिप्पणी: केन्द्र से दूरी जोखिम वृद्धि को दर्शाती है।
स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां तथा स्टाफ की गणनाएं।

द्वारा जोखिम भारित आस्तियों की तुलना में पूंजी अनुपात (सीआरएआर) के साथ-साथ टियर II की तुलना में टियर I के अनुपात के लिए उच्च स्तर की रिपोर्टिंग के कारण सुदृढ़ता के लिए जोखिम संकेतक सबसे कम था। (चार्ट 1.52)।

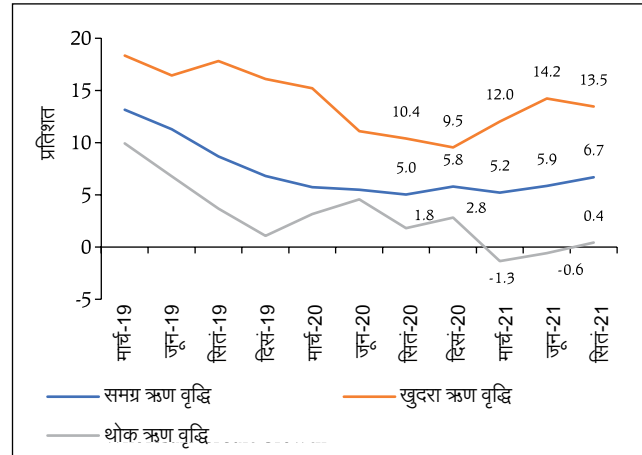
1.2.8 बैंक ऋण

1.73 बैंक ऋण की स्थिति धीरे-धीरे सुधर रही है - एससीबी द्वारा ऋण में वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष) 3 दिसंबर 2021 को बढ़कर 7.1 प्रतिशत हो गई, जबकि एक वर्ष पहले यह 5.4 प्रतिशत और मार्च 2021 में 5.2 प्रतिशत थी। हाल के वर्षों में, थोक ऋण (₹5 करोड़ और अधिक) में वृद्धि पिछड़ रही है (चार्ट 1.53)। दूसरी ओर, रिटेल क्रेडिट²⁵, आम तौर पर दोहरे अंकों की वृद्धि दर्ज कर रहा है, हालांकि संवृद्धि की गति अपने कोविड-पूर्व स्तर से नीचे बनी हुई है। पिछले दो वित्तीय वर्षों के दौरान आवास ऋण और अन्य व्यक्तिगत ऋण ने वृद्धिशील ऋण में 64 प्रतिशत की हिस्सेदारी की है (सारणी 1.14)।

1.74 खुदरा नेतृत्व वाले ऋण विकास मॉडल विपरीत परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं: पहला, उपभोक्ता वित्त पोर्टफोलियो में गड़बड़ियां बढ़ गयी हैं, और दूसरा, ऋण²⁶ क्षेत्र के लिए जो महामारी से पहले की अवधि में उपभोक्ता ऋण वृद्धि का एक नया प्रमुख चालक था उसके प्रवर्तनों²⁷ में गिरावट दिखाई

चार्ट 1.53: ऋण वृद्धि – एससीबी

(वर्ष-दर-वर्ष, प्रतिशत)



टिप्पणी: एससीबी में केवल पीएसबी पीवीबी और एफबी शामिल हैं।
स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां, सीआरआईएलसी और स्टाफ की गणनाएं।

सारणी 1.14 : एससीबी द्वारा दिए जानेवाले वृद्धिशील ऋण की क्षेत्र-वार हिस्सेदारी (प्रतिशत)

	2019-20	2020-21
आर्थिक क्षेत्र		
ए) कृषि	1.8	21.7
बी) उद्योग	4.7	-22.1
सी) ट्रांसपोर्ट आपरेटर्स	-0.4	1.1
डी) पेशेवर और अन्य सेवाएं	8.8	-1.9
ई) वैयक्तिक ऋण	64.1	64.4
जिसमें से, आयात ऋण	30.0	31.2
एफ) व्यापार	17.9	21.8
जी) वित्त	13.0	9.7
एच) अन्य	-10.0	5.6
कुल ऋण	100.0	100.0
सांगठनिक क्षेत्र		
i) सार्वजनिक क्षेत्र	22.7	11.1
ii) निजी कॉर्पोरेट क्षेत्र	-11.7	-18.2
iii) हाउसहोल्ड क्षेत्र - व्यक्ति	84.5	83.1
iv) हाउसहोल्ड क्षेत्र - व्यक्तियों के अलावा अन्य *	1.0	23.4
v) अन्य **	3.5	0.6
कुल ऋण	100.0	100.0

* स्वामित्व से संबंधित मामले, साझेदारी फर्म, हिंदू अविभाजित परिवार (एचयूएफ) सहित
** एमएफआई, हाउसहोल्ड को सेवाएं प्रदान करनेवाले गैर-लाभ संस्थान (एनपीआईएसएच) और एनआरआई और सहकारी क्षेत्र शामिल हैं
स्रोत: आधारभूत सांख्यिकीय विवरणियां, आरबीआई।

²⁵ खुदरा ऋण में बैंकिंग क्षेत्र के सकल ऋण और अग्रिम शामिल होते हैं, जिसमें देनदार का कुल जोखिम ₹5 करोड़ से कम होता है।

²⁶ जिन उपभोक्ताओं के पास उस विशेष महीने के लिए ऋण की उत्पत्ति के समय कोई अंक नहीं है।

²⁷ उपभोक्ता ऋण के ट्रांसयूनियन सिबिल विश्लेषण से पता चलता है कि 90 + दिनों के पिछले बकाया (डीपीडी) का शेष स्तर 2020 की पहली तिमाही में 2.4 प्रतिशत से बढ़कर 2021 की तीसरी तिमाही में 3.01 प्रतिशत हो गया है। प्रतिशत हिस्सेदारी के मामले में एनटीसी उपभोक्ताओं से उत्पत्ति की मात्रा 2020 की पहली तिमाही में 17 प्रतिशत से गिरकर 2021 की तीसरी तिमाही में 14 प्रतिशत हो गई है।

सारणी 1.15: पीएसयू को दिए जानेवाले थोक ऋण में वृद्धि

(वर्ष-दर-वर्ष, प्रतिशत)

	दिसं-19	मार्च-20	जून-20	सितं-20	दिसं-20	मार्च-21	जून-21	सितं-21
पीएसयू								
पीएसबी	12.9	19.4	21.8	15.9	17.5	3.6	5.9	11.6
पीवीबी	21.7	44.3	86.7	96.0	89.1	56.6	32.9	16.7
पीएसबी+ पीवीबी	13.8	21.8	27.8	23.8	25.3	9.7	9.6	12.4
पीएसयू से इतर								
पीएसबी	-9.9	-4.3	-4.1	-5.4	-4.0	-8.2	-10.1	-9.1
पीवीबी	9.4	-0.9	-1.2	-6.1	-7.4	-6.0	-3.4	-0.8
पीएसबी+ पीवीबी	-3.2	-3.0	-3.0	-5.7	-5.3	-7.4	-7.5	-5.8

स्रोत : सीआईआरएलसी एवं आरबीआई स्टाफ की गणनाएं

दे रही है। ऐतिहासिक आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि ईएमई में, गैर-निष्पादित परिसंपत्तियां आमतौर पर एक गंभीर मंदी की शुरुआत के बाद छह से आठ तिमाहियों में चरम पर होती हैं (बीआईएस 2021)।

1.2.9 थोक बैंक ऋण

1.75 बकाया निधिकृत राशि (₹5 करोड़ और अधिक)²⁸ के विश्लेषण से पता चलता है कि सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों (पीएसयू) द्वारा ऋण अवशोषण मजबूत बना हुआ है जबकि गैर-पीएसयू ऋण सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (पीएसबी) और निजी क्षेत्र के बैंकों (पीवीबी) दोनों में शिथिल हो गया है (सारणी 1.15)।

1.76 बाजार लिखतों के माध्यम से कॉर्पोरेट क्षेत्र (गैर-बैंकिंग वित्तीय उधारकर्ताओं सहित) द्वारा फंड जुटाने की गति एक वर्ष पहले की तुलना में पहली छमाही:2021-22 में काफी धीमी हो गई है (सारणी 1.16)। गैर-परिवर्तनीय डिबेंचर (एनसीडी) के माध्यम से उधार की अपेक्षाकृत उच्च मांग चलनिधि की स्थिति के सामान्य होने की प्रत्याशा में उच्च श्रेणी के कॉरपोरेट्स द्वारा कम लागत वाली फंडिंग में लॉक करने के प्रयासों को दर्शाती है।

1.77 निजी क्षेत्र के बैंको (पीवीबी) द्वारा गैर-पीएसयू गैर-वित्तीय कंपनियों को दिया गया ऋण निवेश ग्रेड रेटिंग में सुधार के संकेत दे रहा है, लेकिन पीएसबी द्वारा शीर्ष रेटेड कॉरपोरेट्स के अलावा अन्य को दिए गए उधार के मामले में अभी स्थिति में सुधार बाकी है (सारणी 1.17)।

1.78 कॉरपोरेट्स के प्रति बैंकों के एक्सपोजर की मात्रा के संदर्भ में, ₹1,000 करोड़ और उससे अधिक की श्रेणी में गिरावट देखी गई है, जबकि अपेक्षाकृत छोटे उधारकर्ताओं (₹5 - ₹1000

सारणी 1.16: निधियों का समग्र संग्रहण

(₹ '000 करोड़)

के अधीन बकाया राशि	मार्च-20	सितं-20	मार्च-21	सितं-21
वाणिज्यिक पेपर (सीपी)	346	362	365	371
अपरिवर्तनशील डिबेंचर (एनसीडी) ²⁹	2,712	2,825	3,014	3,085
थोक ऋण ³⁰	5,582	5,410	5,507	5,497
कुल	8,640	8,597	8,886	8,953

स्रोत: एनएसडीएल, प्राइम डेटाबेस एवं सीआईआरएलसी

सारणी 1.17: पीएसयू से इतर गैर-वित्तीय कंपनियों को दिए गए थोक ऋण में वृद्धि

(वर्ष-दर-वर्ष, प्रतिशत)

	पीवीबी				पीएसबी			
	मार्च-20	सितं-20	मार्च-21	सितं-21	मार्च-20	सितं-20	मार्च-21	सितं-21
ए एवं उससे ऊपर	13.64	-2.01	-12.07	3.70	7.22	-6.04	-5.74	7.17
अन्य निवेश श्रेणी	-6.72	-6.69	-2.68	2.74	-2.73	4.46	3.11	-2.92
निवेश श्रेणी से नीचे	5.93	0.47	-7.91	-11.01	-13.67	-9.59	-9.11	-17.41
गैर-श्रेणीबद्ध/एनए	-7.91	-9.94	-6.38	-3.14	-12.08	-12.08	-13.74	-12.72
कुल	-1.28	-5.68	-6.81	-1.33	-7.88	-6.60	-6.96	-8.78

स्रोत: प्राइम डेटाबेस, सीआईआरएलसी और आरबीआई स्टाफ की गणनाएं

²⁸ "कंपनियों" श्रेणी का समावेश जो थोक दायित्वों के लिए बकाया कुल वित्त पोषित राशि का लगभग 86 प्रतिशत है।

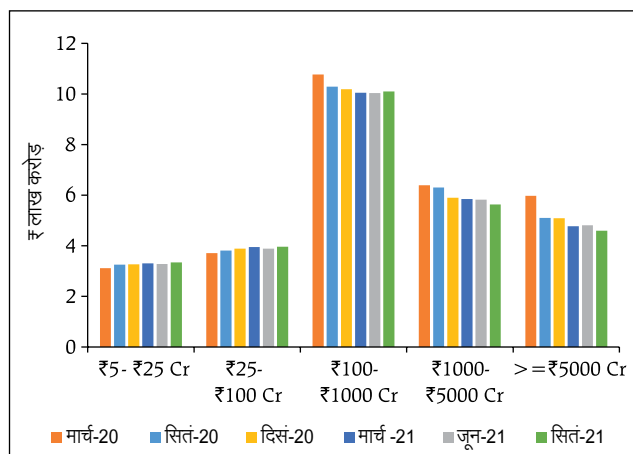
²⁹ अप्रैल 2013 से आगे 365 दिनों से ऊपर की अवधि और पुट/कॉल ऑप्शन के साथ निजी डेट प्लेसमेंट शामिल।

³⁰ सीआरआईएलसी डेटा के आधार पर पीएसबी, पीवीबी और एफबी के लिए संयुक्त रूप से थोक क्रेडिट नंबर हैं।

करोड़ परिमाण के बीच ऋण सहित) ने ऋण की प्रवृत्ति को बनाए रखा (चार्ट 1.54)।

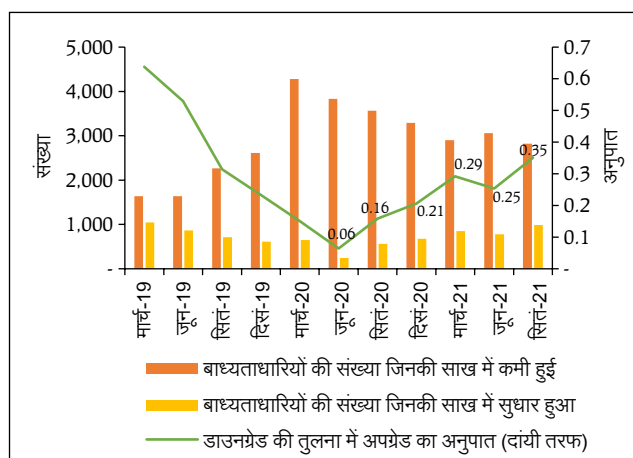
1.79 कोविड-पूर्व अवधि (दिसंबर 2019) और सितंबर 2021 के बीच थोक निष्पादक एक्सपोजर (गैर-पीएसयू गैर-वित्तीय कंपनियों) के स्थिर नमूने³¹ की आस्ति गुणवत्ता में परिवर्तन के परीक्षण सभी विशेष उल्लेख खाते (एसएमए) श्रेणियों में प्रतिकूल स्थिति-परिवर्तन को दर्शाता है। जून और सितंबर 2021 के बीच एक अपेक्षाकृत नए परिवर्तन से पता चलता है कि प्रतिकूल परिवर्तन काफी धीमा हो गया है (सारणी 1.18-1.19)। तथापि, कुल मिलाकर पहली छमाही:2021-22 (चार्ट 1.55) में रेटिंग उन्नयन की गति कम हो गई है।

चार्ट 1.54: पीएसयू से इतर गैर-वित्तीय बाध्यताधारियों के एक्सपोजर का वितरण



स्रोत : सीआरआईएलसी और आरबीआई स्टाफ की गणनाएं।

चार्ट 1.55 दीर्घावधिक ऋण साख-निर्धारण



स्रोत: प्राइम डेटाबेस।

सारणी: 1.18 दिसंबर 19 से सितंबर-21 के बीच पीएसयू से इतर गैर-वित्तीय बाध्यताधारियों के थोक पोर्टफोलियो से संबंधित एसएमए परिवर्तन का मैट्रिक्स

श्रेणी	दिसंबर 2019 की स्थिति के अनुसार बकाया (₹ करोड़)	सितंबर 2021						
		दिसंबर 2019 के दौरान एक्सपोजर में वृद्धि (प्रतिशत में)	विभिन्न समूहों में आस्तियों का प्रतिशत					एनपीए
			0 डीपीडी	एसएमए-0	एसएमए-1	एसएमए-2	एनपीए	
0 डीपीडी	18,89,192	0.35	92.9	2.9	0.8	0.6	2.8	
एसएमए-0	1,63,602	-7.51	71.9	13.2	3.8	3.7	7.5	
एसएमए-1	60,775	-3.58	50.1	13.7	9.6	3.8	22.7	
एसएमए-2	55,110	-13.37	32.0	4.9	6.8	21.8	34.5	
कुल योग	21,68,679	-0.71	88.9	3.9	1.4	1.4	4.4	

टिप्पणी : डीपीडी- पिछले दिनों देय। स्रोत: सीआईआरएलसी और आरबीआई स्टाफ की गणनाएं।

सारणी 1.19: जून-21 से सितंबर-21 के बीच पीएसयू से इतर गैर-वित्तीय बाध्यताधारियों के थोक पोर्टफोलियो से संबंधित एसएमए परिवर्तन का मैट्रिक्स

श्रेणी	जून-2021 की स्थिति के अनुसार बकाया (₹ करोड़)	सितंबर 2021						
		जून-2021 के दौरान एक्सपोजर में वृद्धि (प्रतिशत में)	विभिन्न समूहों में आस्तियों का प्रतिशत					एनपीए
			0 डीपीडी	एसएमए-0	एसएमए-1	एसएमए-2	एनपीए	
0 डीपीडी	20,15,944	-0.03	96.7	2.1	0.4	0.2	0.6	
एसएमए-0	1,49,982	-1.47	69.7	22.2	6.1	1.4	0.6	
एसएमए-1	50,356	-2.61	43.1	20.2	17.5	10.4	8.8	
एसएमए-2	52,454	-3.03	39.0	4.3	10.4	35.6	10.7	
कुल योग	22,68,736	-0.25	92.5	3.9	1.3	1.3	1.0	

स्रोत: सीआईआरएलसी और आरबीआई स्टाफ की गणनाएं।

³¹ सीआरआईएलसी में कॉरपोरेट्स को बकाया राशि का 62 प्रतिशत शामिल है।

1.2.10 एमएसएमई क्षेत्र को ऋण प्रवाह

1.80 मार्च 2021 की तुलना में सितंबर 2021 के अंत तक एमएसएमई खंड में ऋण (वर्ष-दर-वर्ष) धीमा हो गया। विशेष रूप से प्रमुख बैंक समूहों में ₹25 करोड़ से कम मात्रा वाले ऋणों में काफी गिरावट हुई थी (सारणी 1.20)।

1.81 आपातकालीन क्रेडिट लाइन गारंटी योजना (ईसीएलजीएस)³² के तहत, 12 नवंबर 2021 तक ₹2.82 लाख करोड़ ऋण स्वीकृत किए गए थे, जिनमें से ₹2.28 लाख करोड़ का संवितरण (एससीबी द्वारा ₹1.94 लाख करोड़, जो उक्त अवधि के दौरान वृद्धिशील ऋण का 20.6 प्रतिशत हिस्सा था) किया गया था। ईसीएलजीएस 1.0 और 2.0 के तहत आहरण का अंश जारी की गई कुल गारंटियों के 96 प्रतिशत से अधिक है (चार्ट 1.56)।

1.82 विस्तृत संवितरण डेटा के विश्लेषण से पता चलता है कि ₹1 करोड़ तक मूल्य की गारंटी का अंश कुल गारंटियों का 51 प्रतिशत है। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों को कुल गारंटियों की छियासठ प्रतिशत गारंटियां जारी की गई हैं (सारणी 1.21)।

सारणी 1.20: एमएसएमई क्षेत्र को दिए गए बैंक ऋण

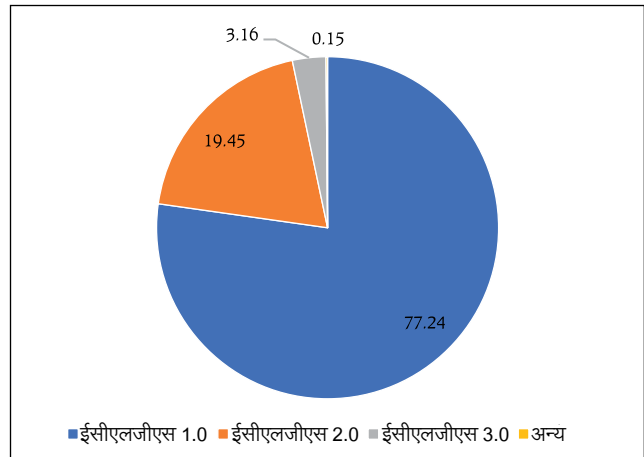
(वर्ष-दर-वर्ष, प्रतिशत)

	पीएसबी		पीवीबी		पीएसबी+पीवीबी	
	मार्च-21	सित-21	मार्च-21	सित-21	मार्च-21	सित-21
एक्सपोजर < 25 करोड़	8.08	0.20	8.04	0.38	8.06	0.28
एमएसएमई का समग्र एक्सपोजर	0.89	1.01	9.23	2.98	4.50	1.90

स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां और स्टाफ की गणनाएं।

चार्ट 1.56: ईसीएलजीएस गारंटी

(प्रतिशत शेयर)



टिप्पणी: अन्य में विस्तार, ईसीएलजीएस 2.0 विस्तार, ईसीएलजीएस 3.0 विस्तार और ईसीएलजीएस 4.0 शामिल हैं।

स्रोत: नेशनल क्रेडिट गारंटी ट्रस्टी कंपनी लिमिटेड (एनसीजीटीसी)।

सारणी 1.21: ईसीएलजीएस गारंटी संवितरण

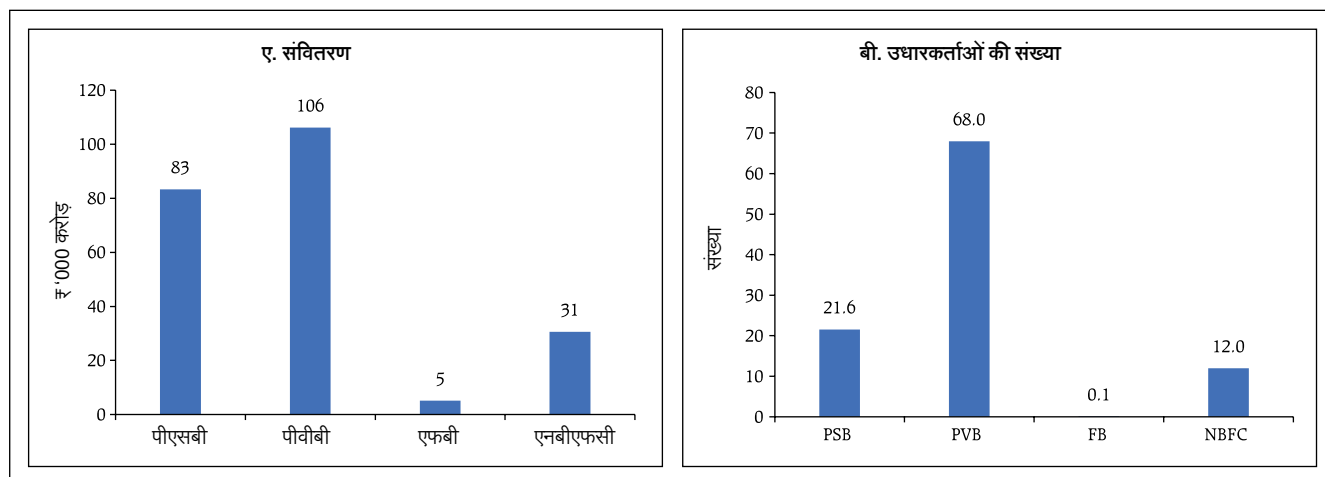
	लाभार्थियों की संख्या	गारंटी राशि (₹ करोड़)	% गारंटी राशि
स्लैब वार			
1 करोड़ से नीचे	1,15,57,518	133.955	50.9
1-5 करोड़	32,222	66.598	25.3
5-50 करोड़	4,915	55.781	21.2
50-500 करोड़	86	6,299	2.4
लाभार्थियों के प्रकार			
सूक्ष्म	1,02,96,333	65.771	25.0
लघु	4,98,509	66,3450	25.2
मध्यम	2,60,757	42,041	16.0
अन्य व्यावसायिक उद्यम	5,37,069	88,829	33.8

टिप्पणी: डेटा 12 नवंबर 2021 तक की स्थिति के अनुसार।

स्रोत: एनसीजीटीसी

³² आपातकालीन क्रेडिट लाइन गारंटी योजना (ईसीएलजीएस), एक सरकारी पहल, 20 मई 2020 को शुरू की गई जो चुनिंदा उधारकर्ताओं को एनसीजीटीसी से 100 प्रतिशत गारंटी कवरेज प्रदान करती है। यह मूल रूप से उन एमएसएमई/व्यावसायिक उद्यमों के लिए तैयार किया गया था, जिनके सभी ऋण देने वाले संस्थानों में निधि-आधारित ऋण बकाया ₹25 करोड़ तक था। योजना प्रारंभ होने के बाद से निम्नलिखित घटकों के माध्यम से विभिन्न पुनरावृत्तियों से गुजरी है: ईसीएलजीएस 1.0, ईसीएलजीएस 1.0 (विस्तार), ईसीएलजीएस 2.0, ईसीएलजीएस 2.0 (विस्तार), ईसीएलजीएस 3.0, ईसीएलजीएस 3.0 (विस्तार) और ईसीएलजीएस 4.0। ईसीएलजीएस की वैधता 31 मार्च 2022 तक या योजना के तहत 4.5 लाख करोड़ रुपये की गारंटी जारी होने और संवितरण करने की अनुमति 30 जून 2022 तक दी गई है।

चार्ट 1.57 : बैंक समूह-वार ईसीएलजीएस गारंटी



टिप्पणी: डेटा 12 नवंबर 2021 तक की स्थिति के अनुसार।

स्रोत: एनसीजीटीसी।

1.83 बड़ी संख्या में लाभार्थियों को लाभ-पहुंचाने के लिए निजी क्षेत्र के बैंकों में ईसीएलजीएस योजना का उपयोग करने के प्रति पीएसबी की तुलना में अधिक रुझान देखा गया (चार्ट 1.57 ए और 1.57 बी)।

1.84 05 मई 2021 के रिजर्व बैंक के दिशानिर्देशों के तहत पुनर्संरचना के लिए पात्र उधारकर्ता और जिन्होंने चार वर्षों के समग्र कार्यकाल के ईसीएलजीएस 1.0 के तहत ऋण प्राप्त किया था, उन्हें पांच साल की अवधि के ईसीएलजीएस ऋण प्राप्त करने की अनुमति है (अर्थात्, पहले केवल 24 महीनों के दौरान केवल ब्याज की चुकौती और उसके बाद 36 महीनों में मूलधन तथा ब्याज की चुकौती)। 12 नवंबर 2021 की स्थिति के अनुसार इस श्रेणी के तहत अपेक्षाकृत छोटी राशि (₹752 करोड़) की पुनर्संरचना की गई थी। हालांकि, रिजर्व बैंक की मई 2021 की योजना के तहत स्वीकार्य एमएसएमई ऋणों की समग्र पुनर्संरचना में महत्वपूर्ण वृद्धि देखी गई (सारणी 1.22)। इसके अलावा, पीएसबी और निजी क्षेत्र के बैंकों (पीवीबी) का एमएसएमई पोर्टफोलियो मार्च 2021 की तुलना में सितंबर 2021 में एनपीए और एसएमए-2 श्रेणियों में ऋणों के संचय को दर्शाता है (सारणी 1.23)। इसके अलावा, निम्न और मध्यम

सारणी 1.22: बैंक समूह-वार एमएसएमई पोर्टफोलियो का पुनर्गठन

(₹ करोड़)

	कुल पुनर्गठित पोर्टफोलियो	
	पीएसबी	पीवीबी
पुनर्गठित - जनवरी 2019 योजना	26,190	2,174
पुनर्गठित - फरवरी 2020 योजना	5,860	1,364
पुनर्गठित - अगस्त 2020 योजना	24,816	11,027
पुनर्गठित - मई 2021 योजना	23,861	18,887

स्रोत : आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां और स्टाफ की गणनाएं।

सारणी 1.23: बैंक समूह-वार एमएसएमई पोर्टफोलियो का एसएमए संवितरण

(प्रतिशत)

	पीएसबी					पीवीबी				
	पिछले दिनों देय 0 दिन	एसएमए-0	एसएमए-1	एसएमए-2	एनपीए	पिछले दिनों देय 0 दिन	एसएमए-0	एसएमए-1	एसएमए-2	एनपीए
मार्च-21	61.2	10.2	8.4	3.4	16.8	89.4	3.8	2.4	0.8	3.6
जून-21	60.9	10.9	4.6	4.8	18.8	86.0	5.9	2.8	1.7	3.6
सितं-21	66.6	7.6	3.4	3.9	18.5	87.9	5.5	1.7	2.1	2.8

स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां और स्टाफ की गणनाएं।

जोखिम वाले एमएसएमई उधारकर्ताओं का उच्च जोखिम वाली श्रेणी में रूपांतरण भी ध्यान देने की बात है (सारणी 1.24)।

1.2.11 बैंक की जमा प्रोफाइल

1.85 सितंबर 2019 से जमाराशियों का रन-ऑफ प्रोफाइल दर्शाता है कि स्थिर जमाराशियों (अर्थात, कम रन-ऑफ प्रोफाइल वाली जमाराशियों) में वृद्धि अस्थिर जमाओं की तुलना में पिछड़ गई है (चार्ट 1.58)। 18 प्रतिशत से अधिक सीआरएआर वाले निजी क्षेत्र के बैंकों ने अस्थिर जमाओं में

सारणी 1.24: उधारकर्ता परिवर्तन मैट्रिक्स (सितंबर 2020 – सितंबर 2021)

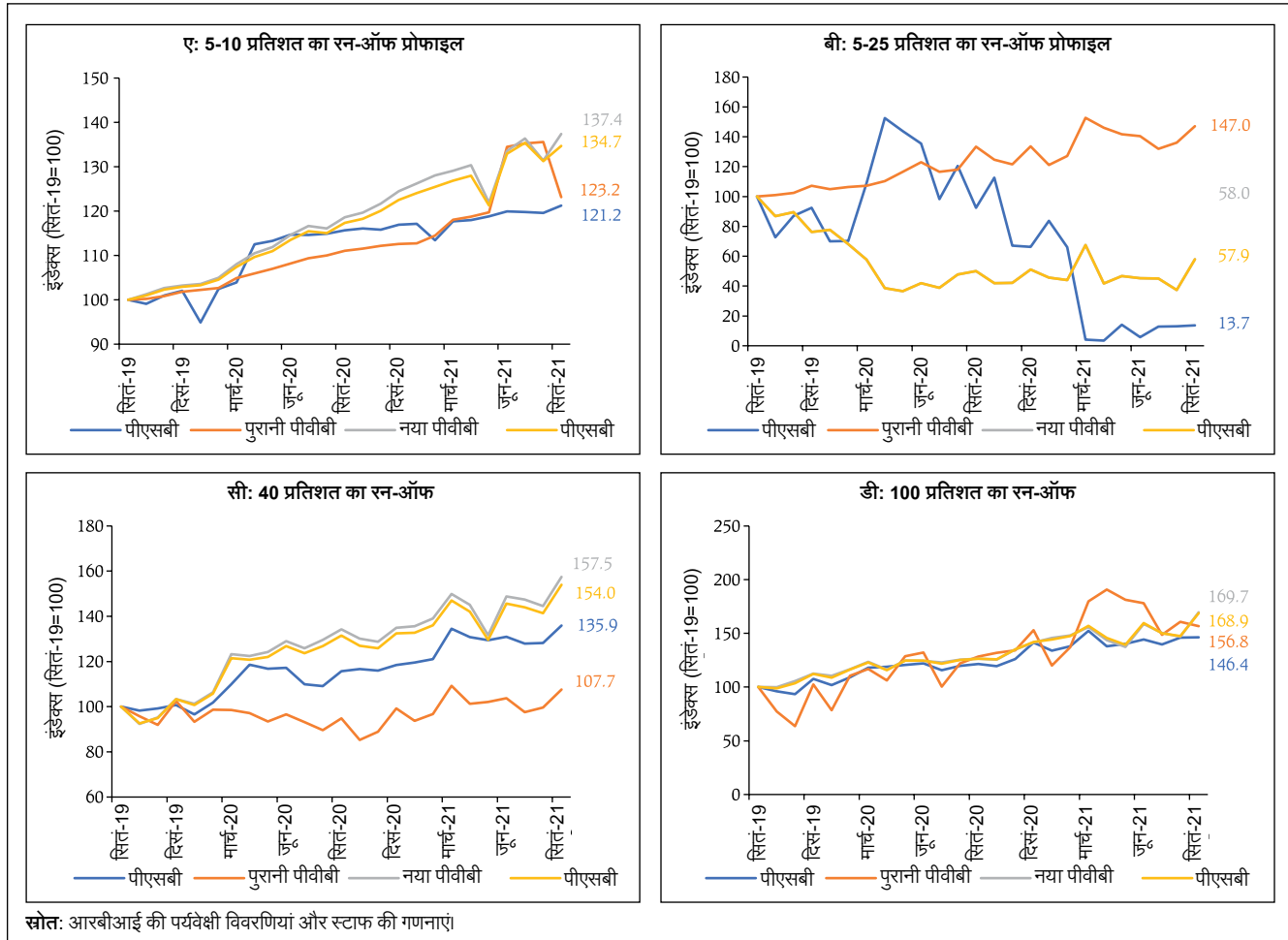
(प्रतिशत)

सितंबर - 20 तक सीएमआर ³³	सितंबर - 21 तक सीएमआर		
	सीएमआर 1-3	सीएमआर 4-6	सीएमआर 7-10
सीएमआर 1-3	67	23	10
सीएमआर 4-6	11	57	32
सीएमआर 7-10	1	10	89

टिप्पणी: निम्न जोखिम (सीएमआर 1-3), मध्यम जोखिम (सीएमआर 4-6), उच्च जोखिम (सीएमआर 7-10)

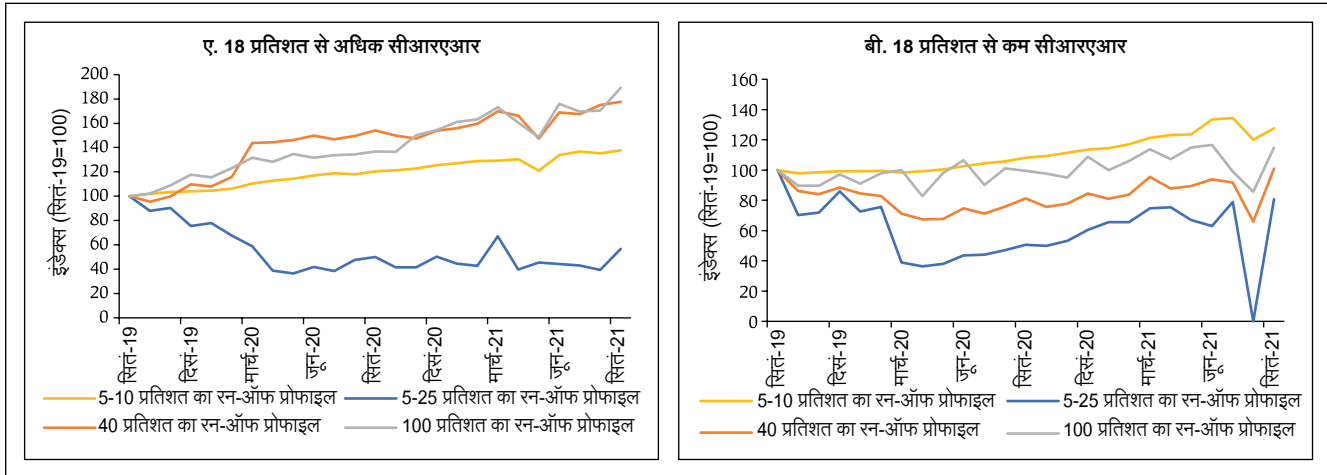
स्रोत: ट्रांसयूनियन सिबिल

चार्ट 1.58: जमाराशियों का रन-ऑफ प्रोफाइल



³³ सिबिल एमएसएमई रैंक (सीएमआर) एमएसएमई को 1 से 10 के पैमाने पर ऋण प्रोफाइल, ऋण गतिविधि और फर्मोग्राफिक्स के आधार पर एक ग्रेड दिया गया है, सीएमआर -1 सबसे कम जोखिम वाला एमएसएमई है और सीएमआर -10 सबसे जोखिम भरा एमएसएमई है।

चार्ट 1.59: पीवीबी की जमा प्रोफाइल



स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां और स्टाफ की गणनाएं।

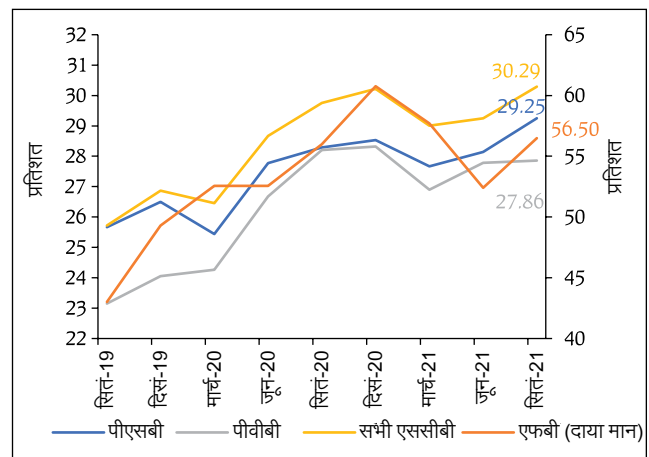
उच्च वृद्धि प्रदर्शित की (चार्ट 1.59)। कॉर्पोरेट्स द्वारा जमाराशियों में खुदरा जमा की तुलना में तेजी से वृद्धि हुई, जो कॉर्पोरेट्स में निवेश के प्रति ललक में कमी का लक्षण है। परिचालन जमा (अर्थात्, समाशोधन, संरक्षण और नकद प्रबंधन गतिविधियों द्वारा उत्पन्न, जो कि अनुकूल रन-ऑफ दरों के साथ एक जमा क्षेपी है) पीएसबी और नए निजी क्षेत्र के (पीवीबी) में संकुचित होकर और सितंबर 2019 की आधारभूत संख्या से काफी नीचे चली गई, क्योंकि पूरी अवधि के दौरान प्रणाली में चलनिधि भारी मात्रा में अधिशेष में बनी हुई है। अस्थिर जमाराशियों में वृद्धि से जुड़ी एक घटना समग्र बैंकिंग प्रणाली में सरकारी प्रतिभूतियों और अन्य उच्च गुणवत्ता वाली चल परिसंपत्ति (एचक्यूएलए) का उल्लेखनीय रूप से इकट्ठा होना है (चार्ट 1.60)।

1.2.12 समाधान विश्लेषण

1.86 दिवाला और शोधन अक्षमता कोड (आईबीसी), 2016 भारत में दिवाला समाधान की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण सुधार का प्रतिनिधित्व करता है। सितंबर 2019 और सितंबर 2021 के बीच दिवाला और शोधन अक्षमता कोड, 2016 के तहत समाधान किए गए 60 कॉर्पोरेट देनदारों के विश्लेषण से पता

चार्ट 1.60: बैंक समूहों द्वारा एसएलआर को बनाए रखना

(एनडीटीएल के प्रतिशत के अनुसार)



स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियां और स्टाफ गणना ।

चलता है कि (ए) नमूना औसत वसूली दर 24.7 प्रतिशत थी और (बी) पुराने खराब ऋण बैंकों की बैलेंस शीट पर बने रहते हैं, एक्सपोजर या उधारकर्ता के प्रकार से निरपेक्ष स्थिति यह है कि, बैंक द्वारा वसूल की जाने वाली राशि कम है (सारणी 1.25)। इसका तात्पर्य यह है कि एनपीए पहचान और कॉर्पोरेट दिवाला समाधान प्रक्रिया (सीआईआरपी) प्रारंभ होने के बीच माध्यमिक अंतराल में कमी के कारण अंतिम वसूली पर उसका एक स्पष्ट प्रभाव हो सकता है।

1.87 आईबीसी³⁴ के तहत दिवालियेपन के संबंध में प्रक्रिया शुरू करने के संबंध में होनेवाले औसत विलंब का विश्लेषण चूंकि दिवाला कार्यवाही शुरू करने के संबंध में लेनदारों की अन्य श्रेणियों की तुलना में परिसंपत्ति पुनर्निर्माण कंपनियों (एआरसी) द्वारा धारित परिसंपत्ति श्रेणियों के संबंध में उल्लेखनीय विलंब को दर्शाता है (चार्ट 1.61)।

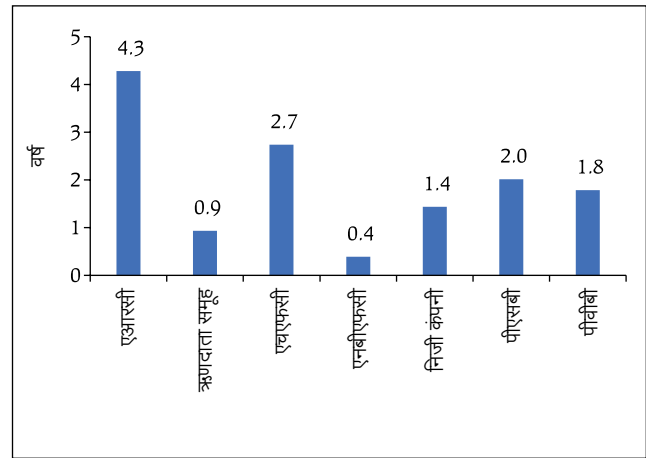
1.88 अवमानक और विभिन्न संदिग्ध श्रेणियों के बड़े ऋणों में एकवर्षीय परिवर्तन की जांच से पता चलता है कि एक बार बैंकिंग परिसंपत्ति में हास होने पर कोई सार्थक वसूली नहीं की जाती है। इसलिए, जिस सीमा तक आय निर्धारण मान्यता और परिसंपत्ति वर्गीकरण (आईआरएसी) मानदंडों के प्रावधान हासित आस्तियों को समाधान के लिए प्रोत्साहित नहीं करते हैं, उस सीमा तक परिसंपत्ति की संभावित वसूली प्रभावित होती है क्योंकि वसूली समय बीतने से साथ तेजी से घट जाती है। इसका पीएसबी और निजी क्षेत्र के बैंकों (पीवीबी) दोनों पर प्रभाव पड़ता है, जो राष्ट्रीय परिसंपत्ति पुनर्निर्माण कंपनी लिमिटेड (एनएआरसीएल) को हस्तांतरित की गई काफी पुरानी परिसंपत्ति के साथ-साथ हानिकारक परिसंपत्तियों को प्रभावित करती है (सारणी 1.26 और 1.27)।

सारणी 1.25: सितंबर 2019 और सितंबर 2021 के बीच हल किए गए मामलों के चयनित नमूनों के विभिन्न चरणों में वसूली दर और विलंब

वसूली दर (प्रतिशत)	नमूने में संख्या	एनपीए पहचान तथा सीआईआरपी के प्रारंभ के बीच मध्य अंतराल (वर्ष)	सीआईआरपी के प्रारंभ और समाधान योजना के अनुमोदन के बीच मध्य अंतराल (वर्ष)
< 10	13	5.3	1.6
10 और 25 के बीच	17	3.3	1.7
25 और 50 के बीच	22	2.9	1.6
50 से अधिकतम	8	0.9	1.6
समग्र	60	3.3	1.7

स्रोत : आईबीबीआई, सीआरआईएलसी और आरबीआई स्टाफ गणना ।

चार्ट 1.61: विशिष्ट ऋणदाता समूहों के लिए दिवालियापन से संबंधित कार्रवाई प्रारंभ करने में विलंब



स्रोत : नेशनल ई-गवर्नेंस सर्विसेज लिमिटेड (एनईएसएल) और आरबीआई स्टाफ गणना ।

सारणी 1.26 : थोक अवमानक और संदिग्ध परिसंपत्तियों में एक वर्षीय परिवर्तन दर

(प्रतिशत)

	थोक अवमानक परिसंपत्ति			थोक संदिग्ध परिसंपत्ति		
	मार्च-18	मार्च-19	मार्च-20	मार्च-18	मार्च-19	मार्च-20
मानक	2.30	2.53	1.63	2.86	3.34	0.42
गैर-सीडीआर मानक	0.13	0.55	0.07	0.06	0.42	0.14
अवमानक	0.99	1.20	1.03	0.01	0.00	0.61
अवमानक पुनर्गठित	0.04	0.01	0.00	0.06	0.03	0.00
संदिग्ध	88.71	78.86	76.45	86.54	73.40	81.41
संदिग्ध पुनर्गठित	1.32	0.25	1.27	2.39	2.90	1.54
हानि	6.52	16.59	19.55	8.07	19.92	15.89

स्रोत : सीआरआईएलसी और आरबीआई स्टाफ गणना ।

³⁴ 01 जनवरी 2018 से 27 फरवरी 2020 के बीच दिवाला कार्यवाही शुरू करने पर नेशनल ई-गवर्नेंस सर्विसेज लिमिटेड द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों के आधार पर।

सारणी -1.27 पीएसबी और पीवीबी का संयुक्त एनपीए संयोजन*

(कुल एनपीए में प्रतिशत शेयर)

	मार्च-20	जून-20	सितं-20	दिसं-20	मार्च-21	जून-21	सितं-21
अवमानक	12.7	11.8	8.4	4.6	12.8	10.6	11.0
अवमानक पुनर्गठित	0.6	0.4	0.3	0.1	0.3	0.7	1.2
संदिग्ध (1 वर्ष तक)	12.7	13.7	14.4	15.4	14.2	12.3	9.0
संदिग्ध (1 -3 वर्ष)	25.1	22.9	20.0	21.0	21.2	21.5	20.5
संदिग्ध (3 वर्ष से अधिक)	14.3	14.5	17.3	16.0	16.7	18.2	19.1
संदिग्ध पुनर्गठित	10.2	9.6	10.5	9.9	8.9	9.5	9.4
हानि	24.3	27.2	29.2	33.0	25.9	27.2	29.7

टिप्पणी*: निजी गैर-वित्तीय थोक बाध्यताधारी ।

स्रोत: सीआरआईएलसी और आरबीआई स्टाफ गणनाएं ।

1.89 इन विश्लेषणों के परिणाम निम्नलिखित मुद्दों को सामने लाते हैं: (ए) परिसंपत्ति के समाधान में देरी के कारण हुई लागतों को समाहित करने के लिए हानि के प्रारंभिक चरणों में अतिरिक्त प्रावधानीकरण की आवश्यकता; (बी) विलंब से बचने के लिए समाधान के सभी माध्यमों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है ताकि इस वजह से परिसंपत्ति के मूल्य के क्षरण को रोका जा सके; (सी) अंतिम वसूली पर संपार्श्विकीकरण के प्रभाव सहित वास्तविक वसूली संबंधी आंकड़ों के आलोक में प्रावधानीकरण मानदंडों की समीक्षा करने की आवश्यकता ; और (डी) हालांकि आईबीसी के अध्याय III ए के तहत एक पहले से तैयार समाधान प्रक्रिया छोटी परिसंपत्तियों के समाधान में तेजी लाने के लिए एक ऐतिहासिक घटना है, तथापि जोखिमपूर्ण अंतिम वसूली की कीमत पर अव्यवहार्य इकाइयों के आस्थगन के जोखिम से बचाव की आवश्यकता है।

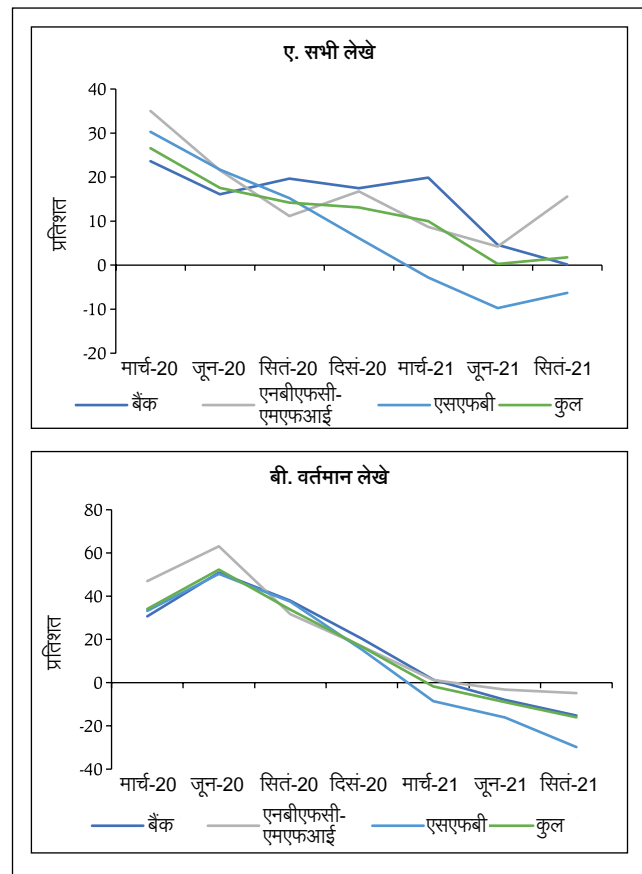
1.2.13 माइक्रोफाइनेंस खंड

1.90 माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र में सकल ऋण वृद्धि के स्थिर होने के कुछ संकेत मिल रहे हैं - हालांकि सितंबर 2021 में इस क्षेत्र को बकाया ऋण मार्च 2020 के स्तर से नीचे आ गया। कोविड-19 की शुरुआत में देखे गए मौजूदा उधारकर्ताओं को उधार देने में तेजी कायम नहीं रही और इस खंड में ऋण वृद्धि सकल पोर्टफोलियो का अनुगमन करना शुरू कर दिया है (चार्ट 1.62)।

1.91 महामारी की पहली लहर के बाद 30+ डीपीडी (ऋण की देयता की तारीख के बाद दिवसों की संख्या) और 90+ डीपीडी के अनुसार गणना की गई हानि में वृद्धि हुई और दूसरी लहर के

चार्ट 1.62: माइक्रोफाइनेंस पोर्टफोलियो में वृद्धि

(वर्ष-दर-वर्ष, प्रतिशत)



टिप्पणी: 0-179 पिछली तारीख से देय(डीपीडी) सभी लेखें शामिल ।

स्रोत: ईक्वीफैक्स ।

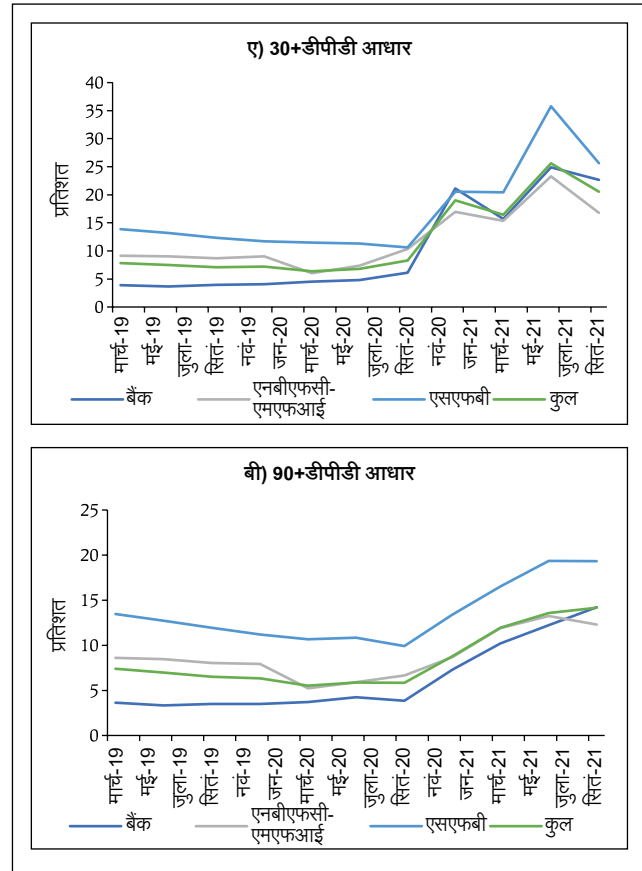
दौरान वह और बढ़ गई (चार्ट 1.63)। हाल ही में पोर्टफोलियो की 30+ डीपीडी आधारित हानि शीर्ष पर पहुंच गई है, तथापि 90+ डीपीडी आधारित हानि में नरमी के संकेत दिखाई देते हैं।

1.2.14 गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी)

1.92 एनबीएफसी क्षेत्र के निष्पादनों में विभिन्नता प्रदर्शित होती है। जबकि एनबीएफसी के सबसे बड़े खंड निवेश और क्रेडिट कंपनियों (आईसीसी) ने कमजोर परिसंपत्ति वृद्धि का प्रदर्शन किया, वहीं पीएसयू एनबीएफसी के वर्चस्व वाले खंड – इन्फ्रास्ट्रक्चर वित्त कंपनियों (आईएफसी) में पहली छमाही:2021-22 में गिरावट आई। एनबीएफसी-एमएफआई, महामारी से प्रभावित एक विशेष श्रेणी, ने असमान वसूली का प्रदर्शन किया (सारणी 1.28)।

1.93 निजी एनबीएफसी/एचएफसी के लिए बैंकिंग क्षेत्र के एक्सपोजर में 2021-22 के दौरान विपरीत उतार-चढ़ाव दिखाई दिया (चार्ट 1.64 ए)। पिछली तिमाही में भारी गिरावट के बाद 2021-22 की दूसरी तिमाही में निजी एनबीएफसी को दिए गए बैंक ऋण में सुधार हुआ। हालांकि, निजी एचएफसी के मामले में, बैंकों के एक्सपोजर की दूसरी छमाही में उछाल के बाद तेजी से गिरना जारी रहा। पीएसयू एनबीएफसी और एचएफसी को बैंक

चार्ट 1.63: माइक्रोफाइनेंस खंड – हानि



स्रोत: ईक्वीफैक्स।

सारणी 1.28: चयनित एनबीएफसी³⁵ की परिसंपत्ति वृद्धि – क्षेत्रवार अवलोकन

(आंकड़े ₹ 000 करोड़ जब तक अन्यथा न कहा जाए)

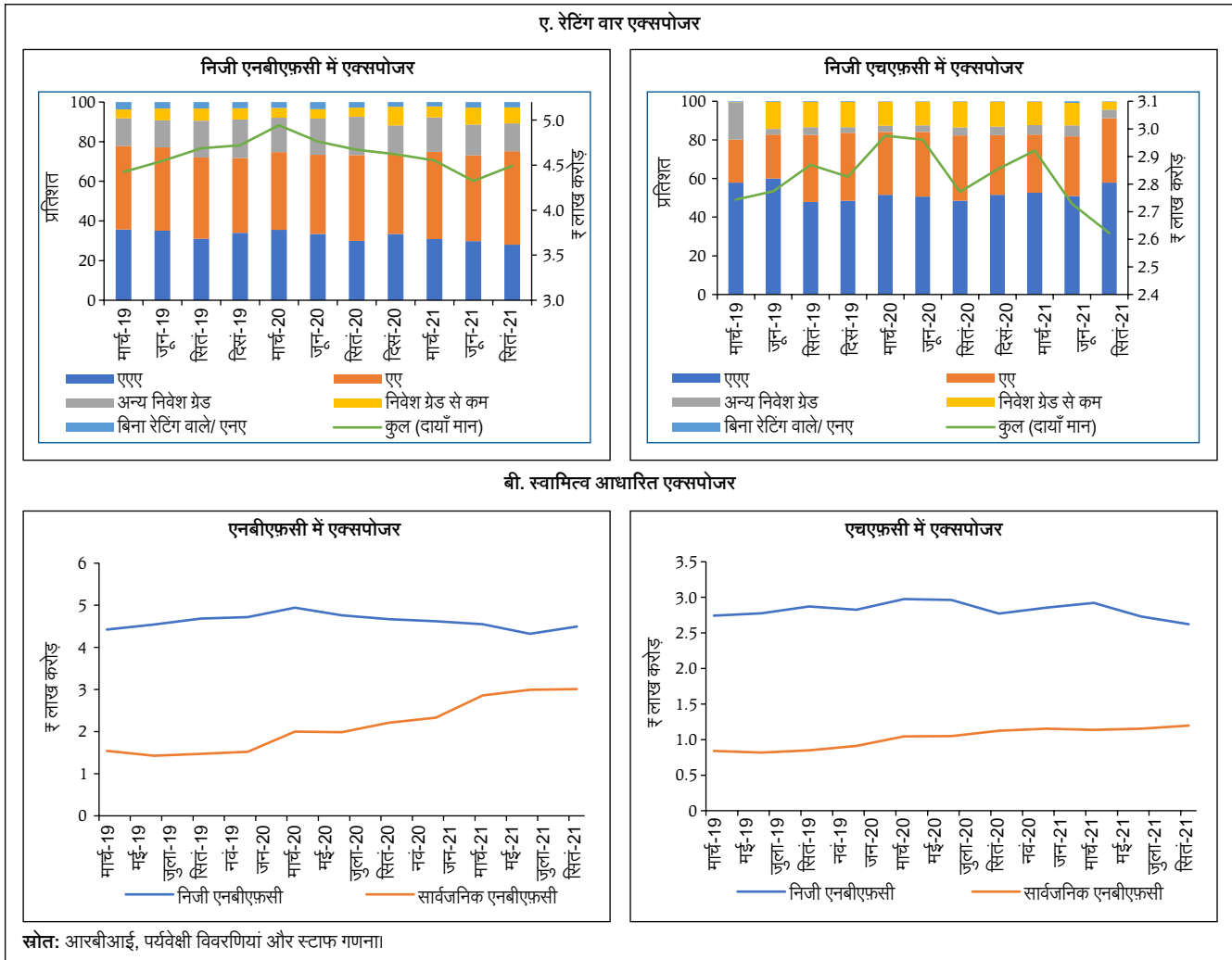
एनबीएफसी श्रेणी	परिसंपत्ति आकार						
	मार्च-20	सितं-20	मार्च-21	मार्च-21 में वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष, प्रतिशत)	जून-21	सितं-21	मार्च-21 से सितं-21 में वृद्धि (प्रतिशत)
एनबीएफसी-निवेश और ऋण कंपनी (331)	1,240.2	1,255.3	1,308.2	5.5	1,296.2	1,319.7	0.9
एनबीएफसी- इन्फ्रास्ट्रक्चर फाइनेंस कंपनी (8)	988.3	1,058.7	1,169.2	18.3	1,176.8	1,204.9	3.1
एनबीएफसी- माइक्रोफाइनेंस कंपनी (20)	36.0	35.0	40.6	13.0	38.5	42.6	4.8
एनबीएफसी- इन्फ्रास्ट्रक्चर डेट फंड (4)	27.4	29.1	30.4	11.0	30.6	31.5	3.5
एनबीएफसी-कारक (4)	3.1	2.7	3.0	-4.4	2.6	2.8	-6.7
कुल योग (367)	2,295.0	2,380.8	2,551.5	11.2	2,544.7	2,601.4	2.0

टिप्पणी : कोष्ठक में दिए गए आंकड़े प्रत्येक श्रेणी में कंपनियों की संख्या दर्शाते हैं।

स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियां और स्टाफ गणनाएं।

³⁵ नमूना एनबीएफसी मार्च 2021 में एनबीएफसी यूनिवर्स की लगभग 79 प्रतिशत परिसंपत्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं।

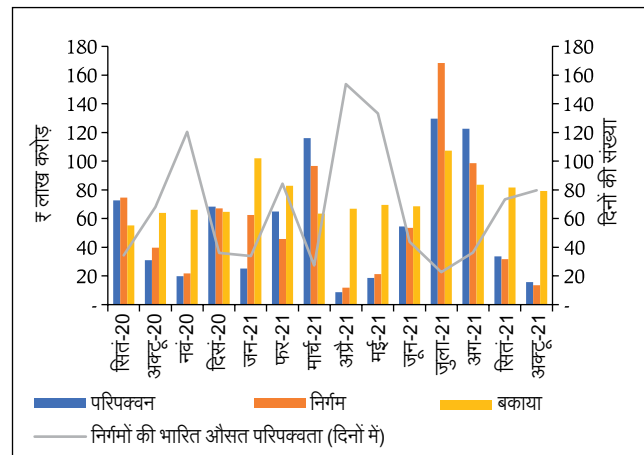
चार्ट 1.64 एनबीएफसी/एचएफसी को बैंक क्रेडिट



ऋण देना भी एनबीएफसी द्वारा ऋण सीमा के अधिक सक्रिय उपयोग को दर्शाता है (चार्ट 1.64बी)।

1.94 मुद्रा बाजार में निजी एनबीएफसी की गतिविधियां, विशेषतः जून-अगस्त 2021 के दौरान, परिपक्वताओं में उल्लेखनीय कमी एवं अधिक सकल निर्गमों से, चरितार्थ हुईं (चार्ट 1.65)। विशेष रूप से छः एनबीएफसी द्वारा निर्गमों का एक

चार्ट 1.65: निजी एनबीएफसी के सीपी निर्गम



स्रोत: प्राइम डेटाबेस और आरबीआई स्टाफ गणना।

सारणी 1.29 : चुनिंदा एनबीएफसी द्वारा सकल सीपी निर्गम

₹ करोड़

	जन-21	फर-21	मार्च-21	अप्रैल-21	मई-21	जून-21	जुला-21	अग-21	सितं-21	अक्तू-21
एनबीएफसी-1	8,200	950	12,500	300	650	4,930	18,890	8,150	1,130	350
एनबीएफसी-2	16,390	7,605	20,410			7,525	54,435	33,515		
एनबीएफसी-3	8,340	3,648	16,361	100	105	5,030	19,545	9,668	500	185
एनबीएफसी-4	600	1,000	2,500			1,025	2,965	1,835	600	
एनबीएफसी-5	3,100	2,925	1,600	1,000	5,800	5,510	5,620	6,410	3,215	4,170
एनबीएफसी-6	1,825	1,200	10,200	550	78	5,925	14,700	3,960		1,700

स्रोत: आरबीआई, पर्यवेक्षी विवरणियां और स्टाफ गणना

सारणी : 1.30 चुनिंदा एनबीएफसी के निर्गमों की भारत औसत परिपक्वता

(दिनों में)

	जन-21	फर-21	मार्च-21	अप्रैल-21	मई-21	जून-21	जुला-21	अग-21	सितं-21	अक्तू-21
एनबीएफसी-1	16	122	11	90	87	18	11	12	85	245
एनबीएफसी-2	13	122	7			7	10	15		
एनबीएफसी-3	7	10	9	100	365	24	9	12	89	91
एनबीएफसी-4	7	7	9			7	7	8	7	
एनबीएफसी-5	35	43	23	7	44	52	41	71	95	42
एनबीएफसी-6	54	67	10	201	364	27	21	89		127

स्रोत: आरबीआई, पर्यवेक्षी विवरणियां और स्टाफ गणना

बड़ा हिस्सा दिया गया (सारणी 1.29)। इस दौरान इनमें से कुछ एनबीएफसी ने अल्पावधि निर्गम भी किए (सारणी 1.30)।

1.95 अल्पावधि सीपी का निर्गम, सीपी बाजार में आए विघ्नों के प्रति एनबीएफसी को भेद्य बनाता है, जो कि 2019 में आईएलएफएस संबंधी घटनाओं में देखा गया था। सीपी निर्गमों के प्रणालीगत प्रभाव का अनुमान लगाने की दृष्टि से दो दृष्टिकोणों को अपनाया जा सकता है। प्रथमतः, इस लिखत में एनबीएफसी की समग्र बाजार गतिविधि की प्रासंगिक अवधि में बकाया सकल निर्गम से तुलना की जा सकती है। दूसरा, संबंधित काल के दौरान सकल बकाया सीपी की तुलना कंपनी की समग्र तुलन पत्रीय देयता से की जा सकती है, जिसमें अधिक हिस्सा होने का तात्पर्य निधियन के इस परिवर्तनशील खंड पर अधिक निर्भरता होना होगा। जुलाई 2021 में, एनबीएफसी 1, 2 और 3 के द्वारा किए गए समग्र निर्गम, कुल समग्र निर्गम का 52 प्रतिशत थे, जो कि इन एनबीएफसी की सीपी बाजार पर अत्यधिक निर्भरता को दर्शाता है। इसके अलावा, जून-अगस्त 2021 के दौरान एक्सपोजर के संचयन में काफी तुल्यकालन देखा गया, जिसने उक्त क्षेत्र को समष्टि रूप में इस खंड की सामान्य कार्यशीलता पर महत्वपूर्ण रूप से निर्भर बनाया। एनबीएफसी 1, 2 और 3 के लिए, जुलाई 2021

में अंतर्माह सीपी एक्सपोजर से तुलन पत्रीय देयताओं का एक बड़ा हिस्सा निर्मित हुआ (सारणी 1.31)।

1.96 ऐसी तीन एनबीएफसी, जिनके लिए निकट माह बकेट की संरचनात्मक चलनिधि उपलब्ध है, के लिए जुलाई 2021 के महीने में एक सप्ताह में सीपी संबंधित अधिकतम सकल बहिर्वाह³⁶ एक माह के लिए प्रत्याशित बहिर्वाहों की तुलना में काफी बड़े थे (सारणी 1.32)। माह के अंत में पर्यवेक्षकों को

सारणी 1.31: चुनिंदा एनबीएफसी की समग्र देयता में बकाया सीपी का हिस्सा

	अधिकतम आंतर्माह सीपी बकाया (जुलाई-21), ₹ करोड़	तुलन पत्र देयता के कुल जोड़ अनुपात के रूप में बकाया सीपी (जून 2021), प्रतिशत
एनबीएफसी-1	9,810	25.9
एनबीएफसी-2	24,980	30.8
एनबीएफसी-3	9,763	24.3

स्रोत : आरबीआई, पर्यवेक्षी विवरणियां और स्टाफ गणना।

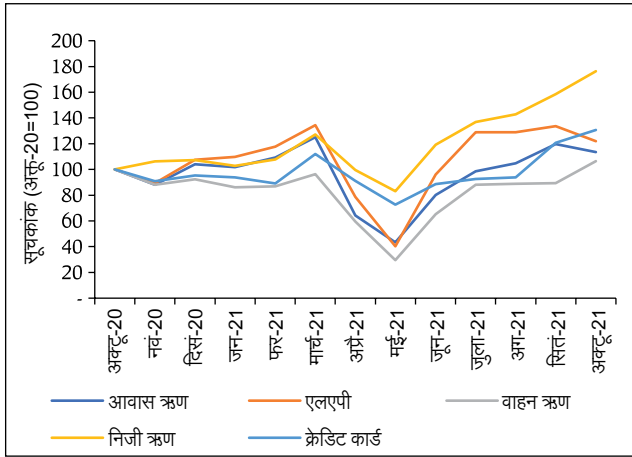
स्रोत 1.32: अंतर्माह सीपी संबंधित बहिर्वाह

	जून 2021 के अनुसार, संरचनात्मक चलनिधि विवरण में प्रत्याशित एक माह के बहिर्वाह के रूप में 0-7 दिनों का वास्तविक आंतर्माह बहिर्वाह
एनबीएफसी-1	178.6
एनबीएफसी-2	197.7
एनबीएफसी-3	167.5

स्रोत: आरबीआई, पर्यवेक्षी विवरणियां और स्टाफ गणना।

³⁶ यहां बहिर्वाह को शुद्ध के बजाय सकल में मापा जाता है क्योंकि आमतौर पर चलनिधि के कारण भेद्यता को शुद्ध के बजाय सकल एक्सपोजर के रूप में मापा जाता है।

चार्ट 1.66 उत्पाद श्रेणी के अनुसार इन्क्वायरी वॉल्यूम



स्रोत: ट्रांसयूनियन सिबिल

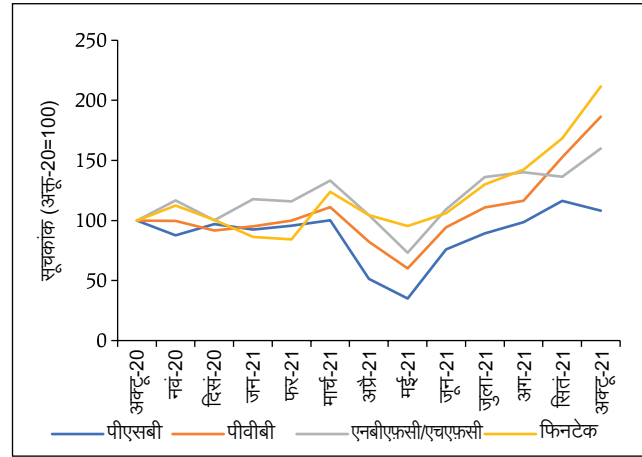
विभिन्न बकेट में संरचनात्मक चलनिधि की स्थिति के संबंध में रिपोर्टिंग के लिए यदि एक्सपोजर को कम किया जाता है तो तुलन पत्र के समक्ष उपस्थित जोखिम भी वास्तविक जोखिम से कम प्रतीत हो सकता है।

1.2.15 उपभोक्ता क्रेडिट

1.97 महामारी की दूसरी लहर में आई गिरावट के चलते, जांच मात्राओं³⁷ में लक्षित उपभोक्ता क्रेडिट की समग्र मांग में बढ़त हुई। यह बढ़त निजी ऋण एवं क्रेडिट कार्ड खंड में आई मांग के कारण हुई, जबकि अन्य उत्पाद श्रेणियों की मांग में स्थिरता देखी गई। पीएसबी को छोड़कर, दूसरी लहर के उपरांत, सभी ऋणदाता श्रेणियों में उधार देने की गतिविधि में त्वरित क्रेडिट वृद्धि के संकेत देखे जा रहे हैं। हालांकि सितंबर 2020 से, क्रेडिट सक्रिय उपभोक्ताओं³⁸ में यह वृद्धि संयत बनी हुई है (चार्ट 1.66-1.68)।

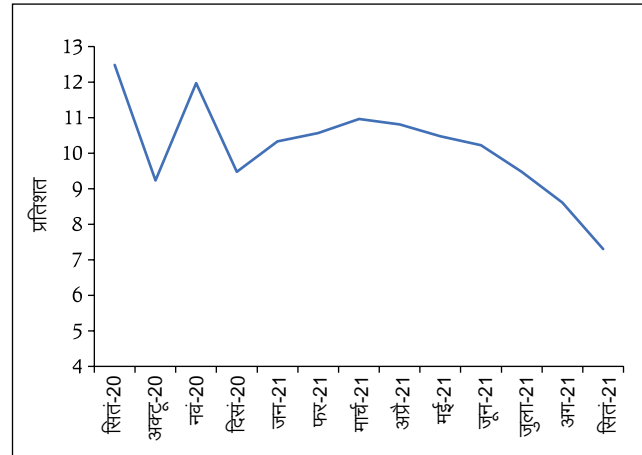
1.98 जोखिम टियर के अनुसार जांच मात्राएं³⁹, सबप्राइम उपभोक्ताओं से क्रेडिट मांग की अत्यधिक वृद्धि को दर्शाती हैं, जो

चार्ट 1.67 ऋणदाता श्रेणी के अनुसार इन्क्वायरी वॉल्यूम



स्रोत: ट्रांसयूनियन सिबिल

चार्ट 1.68 क्रेडिट सक्रिय उपभोक्ताओं में वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष)



स्रोत: ट्रांसयूनियन सिबिल

³⁷ एक क्रेडिट जांच तब बनाई जाती है जब कोई उधारकर्ता ऋण के लिए आवेदन करता है और ऋणदाता को अपना क्रेडिट रिकॉर्ड लेने की अनुमति देता है। जांच, उन पहले ऋण बाजार उपायों में से एक है जिनमें आर्थिक में परिवर्तन होने पर क्रेडिट रिकॉर्ड डाटा के अंतर्गत परिवर्तन होता है।

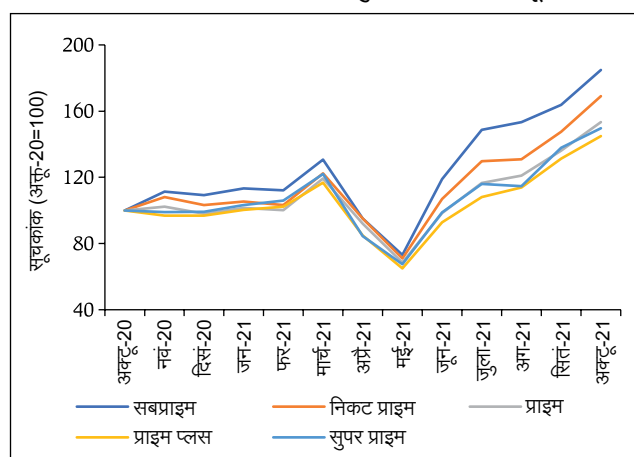
³⁸ कम से कम एक बकाया क्रेडिट खाते वाले उपभोक्ता।

³⁹ सिबिल स्कोर के आधार पर जोखिम-टियरों का वर्गीकरण इस प्रकार है - सुपर प्राइम: 791-900, प्राइम प्लस: 771-790, प्राइम: 731-770, नियर प्राइम: 681-730 और सब-प्राइम: 300-680।

विशेषतः दूसरी लहर के बाद की स्थिति है (चार्ट 1.69)। ऋणकर्ता श्रेणियों में जोखिम का वितरण एनबीएफसी खंड के ग्राहक मिक्स में विशेष सुधार को दर्शाता है (सारणी 1.33)। यद्यपि पीएसबी उपभोक्ता क्रेडिट मिक्स में निम्न प्राइम उधारकर्ताओं के असंगत आकार को दिखाते हैं, इस खंड में उनकी हाल ही के प्रवर्तनों ने खंड से दूर एक पूर्वाग्रह दिखाया है (सारणी 1.34)।

1.99 देय होने के पश्चात 90 दिन अथवा उसके बाद की समयसीमा पर बने पोर्टफोलियो के अनुपात के अनुसार मापी गई उपभोक्ता क्रेडिट की हानि, महामारी के बाद स्थिरता के संकेत दे रही है, लेकिन अन्य ऋणदाता श्रेणियों के सापेक्ष संबंधित पीएसबी के लिए यह हानि उच्च स्तरों पर है (सारणी 1.35)। उत्पाद प्रकार के संदर्भ में चूक का स्तर

चार्ट : 1.69 जोखिम टियर के अनुसार इन्क्वायरी वॉल्यूम



स्रोत: ट्रांसयूनियन सिबिल

सारणी 1.33: जोखिम टियर और ऋणदाता श्रेणी के अनुसार उपभोक्ता संवितरण

(as a per cent of credit active consumers)

स्कोर बैंड	चुनिंदा एनबीएफसी ⁴⁰ (24)		सभी एनबीएफसी		सभी पीएसबी		सभी पीवीबी		उद्योग	
	सितं-20	सितं-21	सितं-20	सितं-21	सितं-20	सितं-21	सितं-20	सितं-21	सितं-20	सितं-21
सबप्राइम	28.2	29.7	31.0	33.8	29.7	32.7	16.3	19.3	27.2	29.9
निकट प्राइम	28.5	21.3	28.7	21.8	27.6	25.1	19.5	16.5	25.5	21.6
प्राइम	28.4	33.1	28.2	31.4	27.7	25.6	33.2	32.5	28.8	28.4
प्राइम प्लस	13.6	14.3	11.0	11.8	11.1	12.1	21.4	21.3	13.6	14.6
सुपर प्राइम	1.4	1.6	1.1	1.3	3.9	4.6	9.7	10.4	5.0	5.6
कुल	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0
प्राइम से कम	56.6	51.1	59.7	55.6	57.3	57.8	35.8	35.9	52.7	51.4

स्रोत : ट्रांसयूनियन सिबिल

सारणी 1.34 जोखिम टियर के अनुसार पीएसबी उदगम

(उदगम मात्राओं के प्रतिशत के रूप में)

जोखिम टियर	ति3 2020	ति3 2021
सबप्राइम	11.2	9.4
निकट प्राइम	20.6	19.0
प्राइम	36.4	40.9
प्राइम प्लस	12.9	15.5
सुपर प्राइम	4.3	6.7
क्रेडिट के लिए नया	14.6	8.5
कुल	100.0	100.0

स्रोत: ट्रांसयूनियन सिबिल

सारणी 1.35 सभी उत्पाद श्रेणियों के समग्र उपभोक्ता क्रेडिट में चूक के स्तर

(प्रतिशत)

	पीएसबी	पीवीबी	एनबीएफसी/ एचएफसी	फिनटेक
सितं-20	5.48	1.56	2.53	1.82
अक्टू-20	5.38	1.55	2.45	1.94
नव-20	5.10	1.93	2.90	2.87
दिसं-20	4.94	2.49	3.39	5.88
जन-21	4.87	2.66	3.76	6.60
फर-21	4.54	2.61	3.43	6.22
मार्च-21	4.89	2.01	3.04	3.14
अप्रैल-21	4.92	2.03	3.95	3.56
मई-21	5.69	2.48	5.09	4.69
जून-21	5.88	2.67	4.59	3.70
जुला-21	5.60	2.80	4.58	4.74
अग-21	5.54	2.66	4.21	4.93
सितं-21	5.03	2.23	3.77	4.56

नोट: (1) 90 दिन पूर्व की बकाया शेषराशि पर आधारित

(2) ट्रांसयूनियन सिबिल की फिनटेक श्रेणी में आरबीआई में पंजीकृत और डिजिटल उधार श्रेणी, समकक्षीय उधार देने वाले मंच के रूप में भी, सक्रिय एनबीएफसी आते हैं।

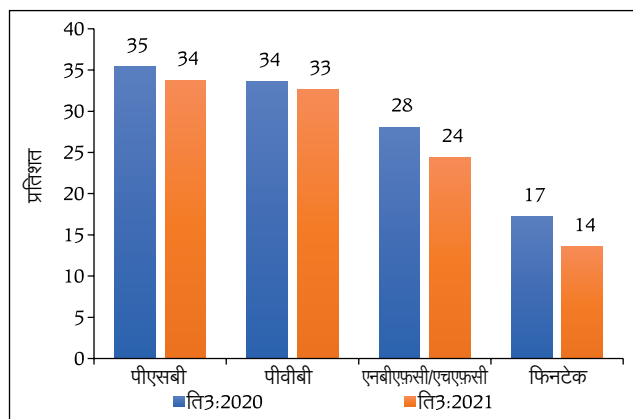
स्रोत: ट्रांसयूनियन सिबिल

⁴⁰ उपभोक्ता वर्ग में विशेष रूप से सक्रिय 24 एनबीएफसी की एक चुनिंदा सूची को अलग किया गया ताकि जोखिम के संभावित संकेंद्रण के मामलों की जांच की जा सके।

सितंबर 2020 के सापेक्ष सितंबर 2021 में उत्पाद श्रेणी स्तरों में सामान्य गिरावट की ओर इशारा करता है, जिसमें क्रेडिट कार्ड खंड एकमात्र अपवाद है। उद्योग में सामान्य उधार मानकों को ऋणदाता श्रेणी के स्तरों पर कड़ा कर दिया गया है, जिससे अनुमोदन देने की दरों में गिरावट आई है (चार्ट 1.70) और बकाया राशियों की वृद्धि में भी कमी आई है (चार्ट 1.71)।

1.100 प्रमुख उत्पाद श्रेणियों के बीच तीन अवधियों में - सितंबर 2019/20; जून 2020/21; और सितंबर 2020/21 - इस तरह के प्रवासन यह प्रकट करते हैं कि जोखिमपूर्ण श्रेणियों में प्रतिकूल प्रवासन, सितंबर 2019/20 के सापेक्ष, उल्लेखनीय बना हुआ है। हालांकि, बेहतर रेटिंग वाली श्रेणियों के संबंध में, इस तरह के प्रवासन स्थिर हो गए हैं या महामारी-पूर्व की अवधि के सापेक्ष बेहतर हैं, जो कि जोखिम श्रेणियों में प्रभाव की विषम प्रकृति को रेखांकित करते हैं (सारणी 1.36)।

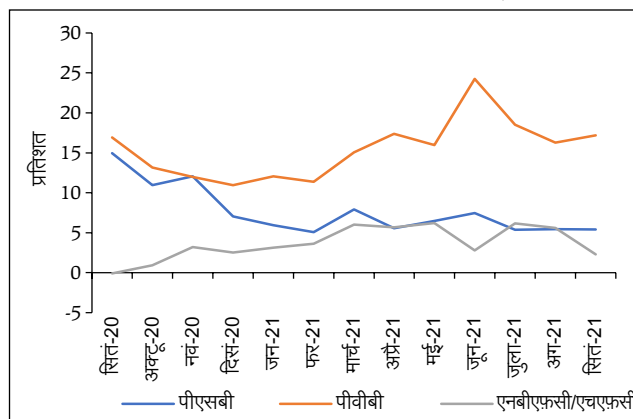
चार्ट 1.70: ऋणदाता श्रेणी के अनुसार अनुमोदन दरें (प्रतिशत)



स्रोत: ट्रांसयूनियन सिबिल

चार्ट 1.71: ऋणदाता श्रेणी में बकाया शेषराशियों में वृद्धि

(वर्ष-दर-वर्ष प्रतिशत)



स्रोत: ट्रांसयूनियन सिबिल

सारणी 1.36 : जोखिम श्रेणियों के लिए स्कोर अंतरण⁴¹ (प्रतिशत)

		सबप्राइम	निकट प्राइम	प्राइम	प्राइम प्लस	सुपर प्राइम	स्कोर टियर अवनति	स्कोर टियर उन्नति
वर्तमान उधारकर्ता- स्कोर उतार-चढ़ाव (सितंबर 2019 से सितंबर 2020)								
जोखिम टियर- सितंबर 2020								
जोखिम टियर- सितं 2019	सबप्राइम	61.1	25.9	10.9	1.7	0.4	0.0	38.9
	निकट प्राइम	19.3	33.9	36.2	8.9	1.7	19.3	46.8
	प्राइम	8.0	17.5	47.9	22.5	4.0	25.6	26.5
	प्राइम प्लस	3.8	9.9	29.5	46.4	10.4	43.2	10.4
	सुपर प्राइम	2.3	7.3	17.7	21.2	51.5	48.5	0.0
वर्तमान उधारकर्ता- स्कोर उतार-चढ़ाव (जून 2020 से जून 2021)								
जोखिम टियर- जून 2021								
जोखिम टियर- जून 2020	सबप्राइम	71.3	17.2	8.9	2.0	0.6	0.0	28.7
	निकट प्राइम	28.3	29.1	31.0	9.5	2.1	28.3	42.6
	प्राइम	12.1	17.0	43.0	23.8	4.2	29.1	28.0
	प्राइम प्लस	6.4	10.7	25.5	46.4	11.0	42.6	11.0
	सुपर प्राइम	3.1	7.6	16.6	21.4	51.4	48.6	0.0
वर्तमान उधारकर्ता- स्कोर उतार-चढ़ाव (सितंबर 2020 से सितंबर 2021)								
जोखिम टियर- सितंबर 2021								
जोखिम टियर- सितं 2020	सबप्राइम	68.0	18.7	10.3	2.4	0.7	0.0	32.0
	निकट प्राइम	25.0	30.0	32.7	10.0	2.3	25.0	45.0
	प्राइम	9.7	16.1	44.1	25.6	4.6	25.8	30.1
	प्राइम प्लस	4.3	9.3	24.8	49.6	11.9	38.4	11.9
	सुपर प्राइम	2.5	6.6	16.8	21.4	52.6	47.4	0.0

स्रोत : ट्रांसयूनियन सिबिल

⁴¹ चार प्रमुख उत्पाद श्रेणियों यथा वाहन ऋण, आवास ऋण, संपत्ति ऋण और निजी ऋण का औसत लिया गया है।

1.2.16 आवास बाजार

1.101 आवासीय बाजार फिर से रफ्तार पकड़ रहा है। लंबे समय तक बनी रही ऋणात्मक संवृद्धि के बाद, 2021-22 की दूसरी तिमाही के दौरान आवास बिक्री में सुधार की हरी झंडी देखी गई। आवास क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा अपनाए गए समर्थन उपायों, कम ब्याज दर के माहौल, इस क्षेत्र में उपभोक्ता विश्वास में हुए सुधारों के चलते और साथ-साथ पिछली चार तिमाहियों के दौरान नए घरों के लोकार्पण की शुरुआत में हुई भारी वृद्धि के कारण, मांग को गति मिली (चार्ट 1.72)। नए लोकार्पण, विशेष रूप से किफायती कम-टिकट वाले खंड में, तेजी से बढ़े और बिक्री के मामले में अधिक कीमत वाले खंड में वृद्धि हुई। नए लोकार्पण के साथ बेचे न गए माल-सूची बढ़ी, लेकिन मजबूत बिक्री ने 2021-22 की दूसरी तिमाही (चार्ट 1.73) के दौरान माल-सूची आधिक्य को नीचे लाने में मदद की।

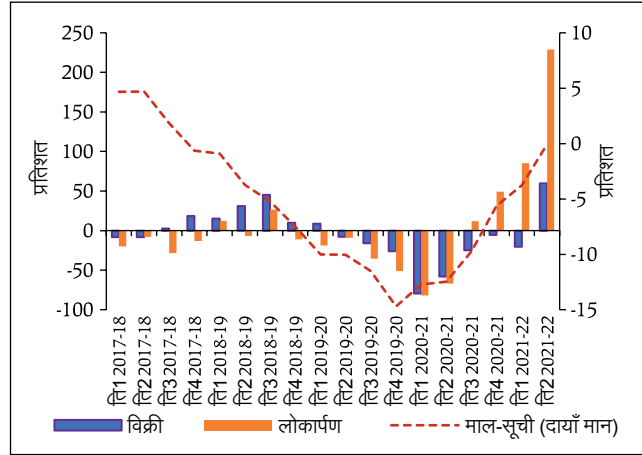
1.2.17 प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण

1.102 प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण (एसआरएस) के नवंबर 2021 के दौर में, उत्तरदाताओं ने वित्तीय प्रणाली - वैश्विक, व्यापक आर्थिक, वित्तीय बाजार, संस्थागत और सामान्य - के लिए सभी व्यापक श्रेणियों के जोखिमों को परिमाण में 'मध्यम' माना लेकिन वैश्विक और वित्तीय बाजार जोखिमों को बाकी जोखिमों की तुलना में अपेक्षाकृत उच्च माना। पांच व्यापक जोखिम श्रेणियों के घटकों में, उत्तरदाताओं ने पण्यों की कीमतों, घरेलू मुद्रास्फीति, इक्विटी मूल्य अस्थिरता, साइबर जोखिम, ऋण वृद्धि और आस्ति गुणवत्ता को प्रमुख जोखिम कारकों के रूप में देखा। वैश्विक संवृद्धि, चालू खाता घाटा, ब्याज दरों, चलनिधि, आतंकवाद और जलवायु परिवर्तन पर जोखिम धारणाओं में वृद्धि हुई, हालांकि वे मध्यम जोखिम श्रेणी में बने रहे।

1.103 आधे से अधिक उत्तरदाताओं ने अगले एक वर्ष में भारतीय बैंकिंग क्षेत्र की संभावनाओं में सुधार की परिकल्पना की है, जिसमें 80 प्रतिशत से अधिक ने अगले तीन महीनों में ऋण मांग में वृद्धि की उम्मीद की है। 43 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अगले तीन महीनों में बैंकिंग प्रणाली की आस्ति गुणवत्ता में मामूली सुधार की उम्मीद की।

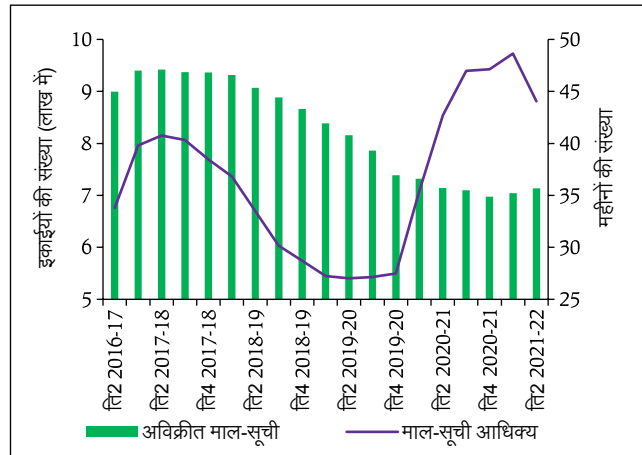
चार्ट 1.72 आवास बिक्री, लोकार्पण और अविक्रीत माल-सूची

(वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि, प्रतिशत में)



स्रोत: प्रोपटाइगर डेटालैब

चार्ट 1.73 अविक्रीत माल-सूची और माल-सूची आधिक्य



स्रोत: प्रोपटाइगर डेटालैब

⁴² जानकारी अनुबंध 1 में दी गई है।

1.104 अधिकांश उत्तरदाताओं ने महसूस किया कि भारतीय अर्थव्यवस्था 1-2 वर्ष की अवधि में कोविड-19 महामारी के परिणामों से पूरी तरह से उबर जाएगी; हालांकि, पर्यटन और आतिथ्य, विमानन, ऑटोमोबाइल, एमएसएमई, स्थावर सम्पदा, खुदरा व्यापार और मनोरंजन जैसे क्षेत्र में, अगले एक वर्ष में कम सुधार का प्रदर्शन कर सकते हैं।

सारांश एवं परिदृश्य

1.105 वैश्विक स्तर पर संप्रभु ऋण बढ़ गया है क्योंकि महामारी के समय अपने देशों को संभालने के लिए सरकारों ने व्यापक राजकोषीय समर्थन प्रदान किया। यदि ओमिक्रोन संस्करण अर्थव्यवस्था को अस्थिर करता है तो इससे राजकोषीय संवहनीयता पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ने और विस्तारित समर्थन देने के लिए उपलब्ध नीतिगत उपाय के मार्ग भी कम हो जाने की संभावना है।

1.106 वैश्विक समष्टि-वित्तीय परिदृश्य अनिश्चित प्रतीत होता है क्योंकि प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण अर्थव्यवस्थाएं अपने मौद्रिक नीति के रुख को, पूर्व में की गई घोषणा की तुलना में, तेजी से सख्त करना शुरू कर देती हैं। आस्ति वर्गों और सीमा-

पार प्रवाहों में इस तरह के उपायों के फैलने से ईएमई में अस्थिरता पैदा होने की संभावना है। जब ईएमई अर्थव्यवस्थाएं नए कोविड-19 संस्करण के परिणामों का सामना कर रही होंगी तब उनके नीतिकर्ताओं को उसी के साथ इस तरह के अधिप्लावन प्रभाव को कम करने के लिए अपनी घरेलू नीति प्रतिक्रियाओं को ठीक करने की चुनौती का सामना करना होगा।

1.107 घरेलू तौर पर, महामारी की दूसरी लहर के द्वारा जिस बहाली में रुकावट आई थी, वह तीव्र टीकाकरण की सहायता से आई स्थानीय प्रतिबंधों में ढील के साथ पुनः प्रारम्भ हो गई। रिज़र्व बैंक के, बड़े चलनिधि अधिशेष को सुनिश्चित करने वाले, चलनिधि परिचालनों के कारण वित्तीय स्थितियाँ सहायक बनी रहीं। बदले में, इसने सरकार के बाजार उधार कार्यक्रम के सुचारु प्रचलन का मार्ग खोला। इसी समय मांग में आए सुधार से सहायता प्राप्त कर औपचारिक क्षेत्र में सुदृढ़ता और आघात-सहनीयता प्राप्त की। बैंक क्रेडिट वृद्धि में उत्तरोत्तर सुधार के संकेत दिख रहे हैं, यद्यपि कम रेट वाले कॉर्पोरेट के लिए क्रेडिट प्रवाह कम बने हुए हैं। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) के साथ-साथ सूक्ष्म वित्त खंड में भी शुरुआती तनाव के संकेत, उनके पोर्टफोलियो की कड़ी निगरानी की दरकार करते हैं।

अध्याय II

वित्तीय संस्थाएं : सुदृढ़ता और आघात सहनीयता

अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (एससीबी) ने लाभप्रदता, आस्तियों की गुणवत्ता और पूंजी पर्याप्तता के स्तर पर अपने कार्यनिष्पादन को बेहतर बनाया है। मैक्रो- दबाव परीक्षण से यह ज्ञात होता है कि बैंक यहां तक कि कठिन से कठिन दबाव की स्थिति में भी न्यूनतम पूंजी की अपेक्षाओं को पूरा करने में सक्षम होंगे। दबाव परीक्षण से यह संकेत मिलता है कि चलनिधि संबंधी आघात पैदा होने की स्थिति में अधिकतर एनबीएफसी पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। नेटवर्क विश्लेषण से यह दर्शाता है कि अंतर- बैंक एक्सपोजर बढ़ाने से संक्रामकता का जोखिम बढ़ेगा।

प्रस्तावना

2.1 वर्ष 2021-22 में अब तक वित्तीय प्रणाली पर महामारी की दूसरी लहर का प्रभाव विनियामकीय तथा अन्य नीतिगत उपायों की मदद से कम कर दिया गया है ताकि पात्र उधारकर्ताओं को सहारा मिल सके, बैंकों की समुत्थानशीलता को पुनर्जीवित किया जा सके और इन सबके साथ-साथ निजी निवेश को तुरंत गतिशील बनाने के लिए क्रेडिट के प्रवाह को संभाला जा सके।

2.2 इस अध्याय में भारत में वित्तीय बिचौली संस्थाओं की मजबूती और समुत्थानशीलता का मूल्यांकन उनकी ऑफसाइट विवरणियों में दिए गए उनके नवीनतम कार्यनिष्पादन का विश्लेषण करके किया गया है। भाग II.1 में अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (एससीबी) के गतिविधि संकेतक, आस्तित्व गुणवत्ता और पूंजी पर्याप्तता का मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है। इस भाग में दबाव परीक्षण संवेदनशीलता विश्लेषण के माध्यम से मैक्रो-इकोनॉमिक आघातों के प्रति उनकी समुत्थानशीलता का भी परीक्षण किया गया है। भाग II.2 और II.3 में क्रमशः शहरी सहकारी बैंकों और एनबीएफसी के हाल के कार्यनिष्पादन का मूल्यांकन दबाव परीक्षण सहित किया गया है। भाग II.4 में भारतीय वित्तीय प्रणाली की नेटवर्क संरचना तथा अंतर-संबद्धता का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है तथा प्रतिकूल परिदृश्यों में संक्रामकता विश्लेषण के परिणाम दिए गए हैं।

II. 1 अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक (एससीबी)^{1 2}

2.3 मार्च 2021 के अंत से सकल जमाराशियों में वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष) धीमी पड़ गई थी जो 03 दिसंबर 2021 तक 9.3 प्रतिशत तक पहुंच गई थी (चार्ट 2.1 ए)। चालू खाता और बचत खाता (सीएएसए) की जमाराशियां, मीयादी जमाराशियों से कहीं अधिक थीं, जिससे यह पता चलता है कि अनिश्चितताओं को देखते हुए सावधानी बरतने का रुख अपनाया गया है (चार्ट 2.1 बी)।

2.4 चालू वित्तीय वर्ष के दौरान अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों में क्रेडिट की वृद्धि धीरे-धीरे आगे बढ़ती रही है (चार्ट 2.1 सी)। वर्ष 2021-22 की पहली छमाही के अंत तक बैंक क्रेडिट में क्रमशः औद्योगिक अग्रिम, वैयक्तिक ऋण तथा सेवा क्षेत्र को दिए गए अग्रिमों का प्रमुख हिस्सा रहा है (चार्ट 2.1 डी)। ऋण में वृद्धि की मुख्य संचालक कृषि क्षेत्र को एवं वैयक्तिक प्रयोजन से दिए गए ऋण³ की बहियां रही हैं। औद्योगिक क्षेत्र को दिया गया ऋण सकारात्मक बन गया था, क्योंकि इसमें निजी क्षेत्र के बैंकों तथा विदेशी बैंकों का पिछले दो वर्ष में योगदान घटने के बाद बढ़ गया था। सेवा क्षेत्र को दिए गए क्रेडिट में क्रमशः सुधार देखा गया किंतु अन्य क्षेत्रों में यह पिछड़ा रहा है, इसकी वजह मुख्यतया यह थी कि इस क्षेत्र के लिए सरकारी क्षेत्र के बैंकों द्वारा दिए जाने वाले अग्रिम कम हो गए थे (चार्ट 2.1 ई)। वैयक्तिक ऋण की श्रेणी में क्रेडिट कार्ड बकाया को छोड़कर अन्य सभी हिस्सों में उच्चतर वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष) हुई थी। आवास ऋण, जो वैयक्तिक ऋण का प्रमुख अंश है उसमें, दो अंकों की वृद्धि कायम रही है (चार्ट 2.1 एफ)।

¹ विश्लेषण मुख्यतः आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियों पर आधारित है, जिसमें एससीबी के केवल घरेलू परिचालन को कवर किया गया है, सिवाय बड़े कर्जदारों के आंकड़ों के मामले के, जो बैंकों के वैश्विक परिचालन पर आधारित हैं। सीआरएआर पूर्वानुमानों के लिए, बैंकिंग क्षेत्र (गैर-आरआरबी) की कुल संपत्ति के लगभग 98 प्रतिशत वाले 46 एससीबी (सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक (पीएसबी), निजी क्षेत्र के बैंक (पीवीबी) और विदेशी बैंक (एफबी) सहित) पर विचार किया गया है।

² अध्याय में किए गए विश्लेषण 15 दिसंबर 2021 तक के उपलब्ध आंकड़ों पर आधारित हैं, जो अंतिम हैं। एससीबी में केवल सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, निजी क्षेत्र के बैंक और विदेशी बैंक शामिल हैं।

³ वैयक्तिक ऋण से आशय वैयक्तिक को दिए जाने वाले ऋण और जिसमें (ए) उपभोक्ता क्रेडिट (बी) शिक्षण ऋण (सी) अचल परिसंपत्तियों (उदाहरण, आवास आदि) के निर्माण/वृद्धि हेतु दिए जाने वाले ऋण और (डी) वित्तीय परिसंपत्तियों (शेयर, डिबेंचर आदि) में निवेश हेतु दिए जाने वाले ऋण।

चार्ट 2.1: एससीबी के जमा और ऋण प्रोफाइल



स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं

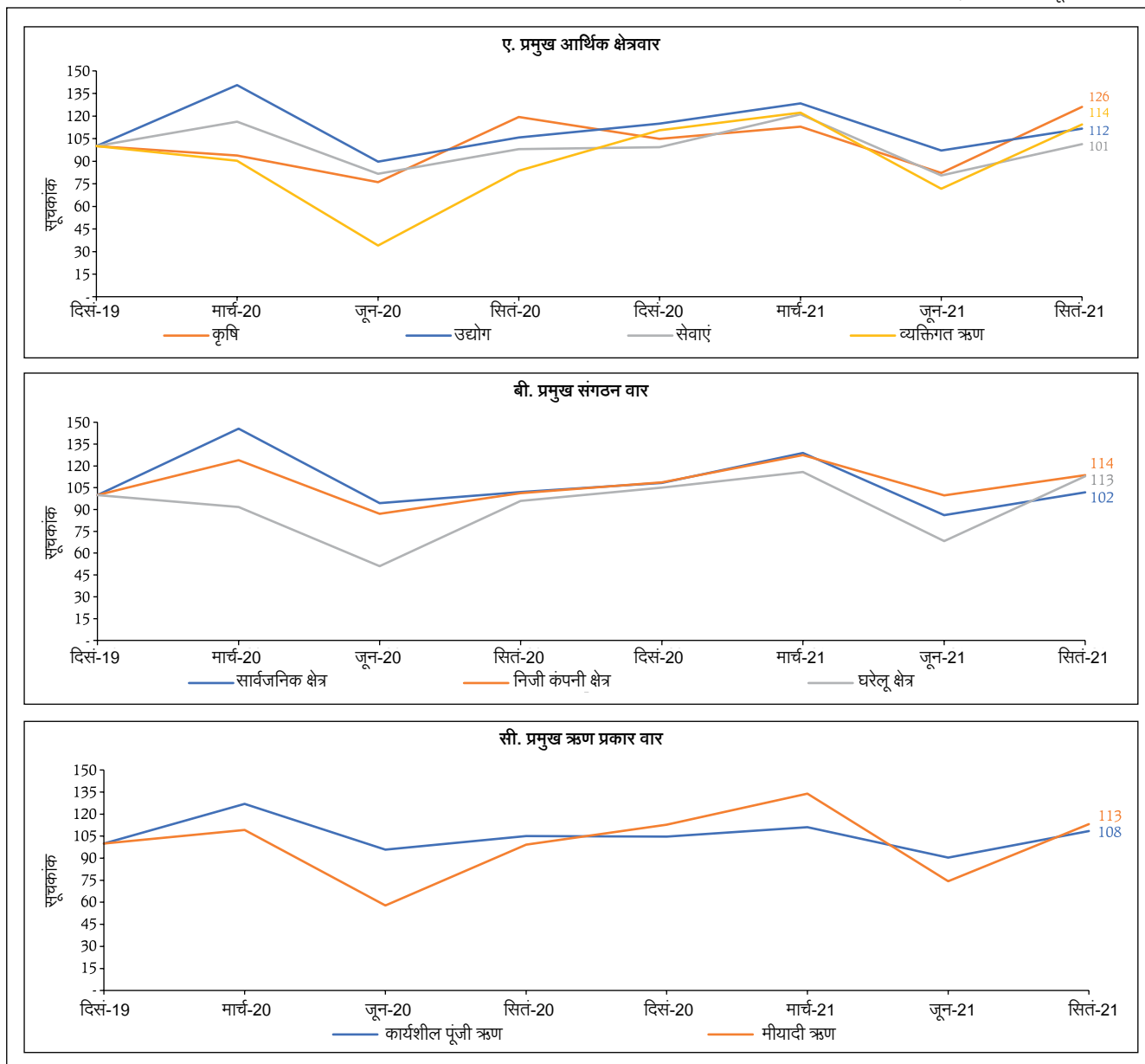
2.5 अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (एससीबी) द्वारा प्रदान किये जा रहे नए ऋणों ने वर्ष 2021-22 की दूसरी तिमाही में सभी क्षेत्रों में गति पकड़ ली थी। सबसे ज़्यादा ऋण, निजी कॉरपोरेट और गृहस्थ क्षेत्र द्वारा कार्यशील पूंजी तथा मीयादी ऋण के रूप में लिए गए थे (चार्ट 2.2 ए, बी और सी)।

II.1.1 आस्ति गुणवत्ता

2.6 अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों का सकल अनर्जन आस्ति (जीएनपीए) अनुपात सितंबर 2021 के अंत में 6.9 प्रतिशत था। साथ ही उनके निवल एनपीए (एनएनपीए) अनुपात वर्ष 2021-22 की पहली छमाही में 10 आधार अंक कम हो गए थे

चार्ट 2.2: क्षेत्रवार और ऋण प्रकारवार एससीबी द्वारा नए ऋण

(दिसंबर 2019 सूचकांक = 100)



नोट: नए ऋण डाटा पीएसबी, पीवीबी, एफबी और एसएफबी से संबंधित है।

स्रोत: मूल सांख्यिकीय विवरणियां-1, आरबीआई एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं

(चार्ट 2.3 ए और बी)। अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों का वार्षिकीकृत स्लीपेज अनुपात बढ़ गया था, जबकि निजी क्षेत्र के बैंकों की आस्ति गुणवत्ता में गिरावट की दर बहुत ज्यादा थी (चार्ट 2.3 सी)। प्रावधानीकरण कवरेज अनुपात (पीसीआर)⁴ मार्च 2021 के 67.6 प्रतिशत से बढ़कर सितंबर 2021 में 68.1 प्रतिशत हो गया था (चार्ट 2.3 डी)।

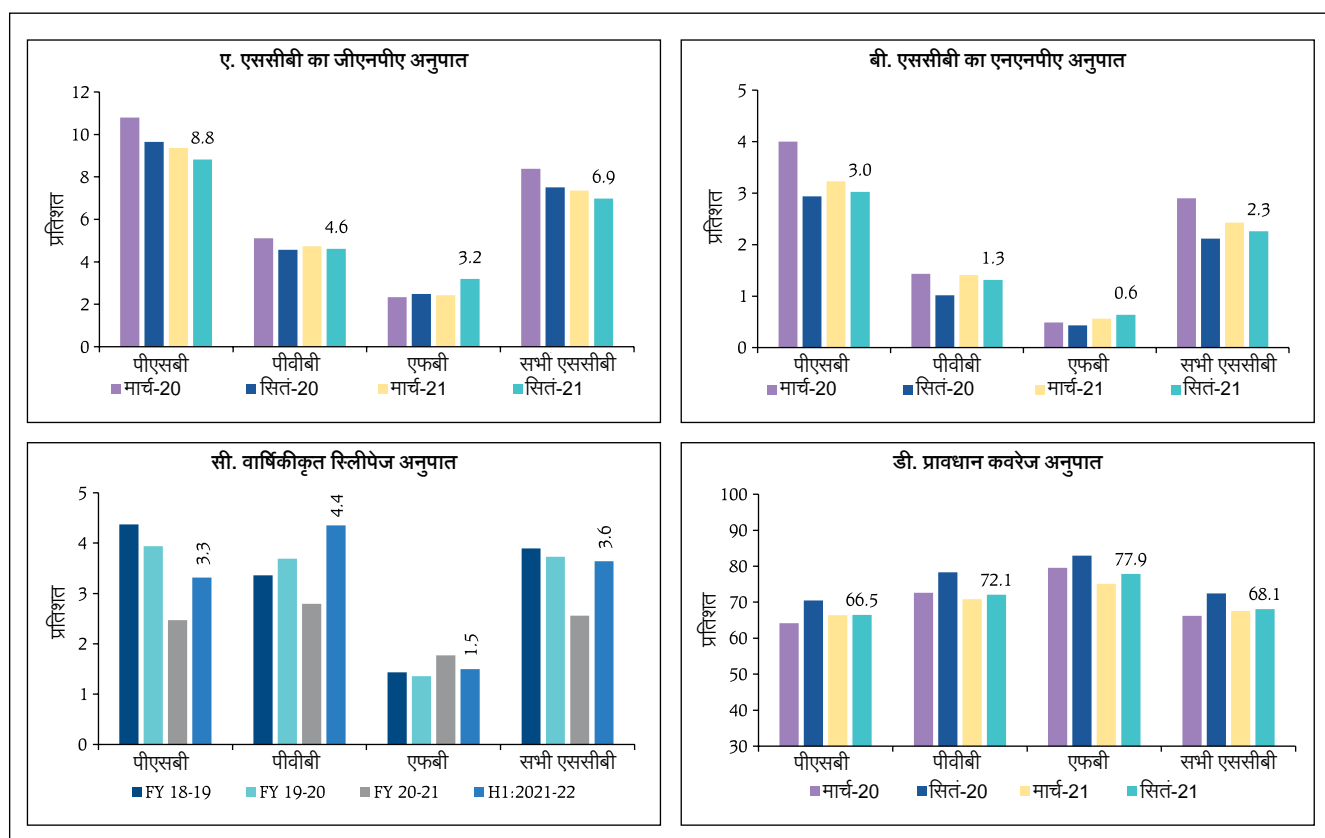
II.1.2 क्षेत्रवार(सेक्टरल) आस्ति गुणवत्ता

2.7 क्षेत्रवार रूप से देखा जाए तो इनका वैयक्तिक ऋणों के लिए जीएनपीए अनुपात छह महीने पूर्व एवं एक वर्ष पूर्व के स्तर से ऊपर बढ़ गया था। यह गिरावट आवास और ऑटो ऋणों के कारण थी (चार्ट 2.4 ए और बी)। औद्योगिक क्षेत्र का जीएनपीए लगातार घट रहा था, हालांकि कुछ उप-क्षेत्रों जैसे- खाद्य प्रसंस्करण, रसायन और इन्फ्रास्ट्रक्चर (बिजली को छोड़कर)

ने अपने मार्च 2021 के स्तर की तुलना में वृद्धि दर्ज की है (चार्ट 2.4 सी)।

2.8 समाधान संरचना (आरएफ) 2.0 के अंतर्गत की गई पुनर्चना कोविड-19 की दूसरी लहर से प्रभावित हुई जो सितंबर 2021 के अंत में कुल अग्रिमों का 1.5 प्रतिशत थी। जिसमें 81.7 प्रतिशत उधारी खाते कवर कर लिए गए थे जिनकी पुनर्चना की गई थी। एमएसएमई और खुदरा ऋणों के मामले में कुल सेक्टरल अग्रिमों के 2.4 प्रतिशत तक के अग्रिमों की पुनर्चना की गई थी और 80.0 प्रतिशत उधारी खाते कवर किए गए थे जिनकी पुनर्चना की गई थी। कुल पुनर्चना किस सीमा तक की गई, इस संबंध में सही तस्वीर आरएफ 2.0 के कार्यान्वयन जो 31 दिसंबर 2021 को समाप्त हो रही है, के बाद पता चल सकेगी (चार्ट 2.4 डी)।

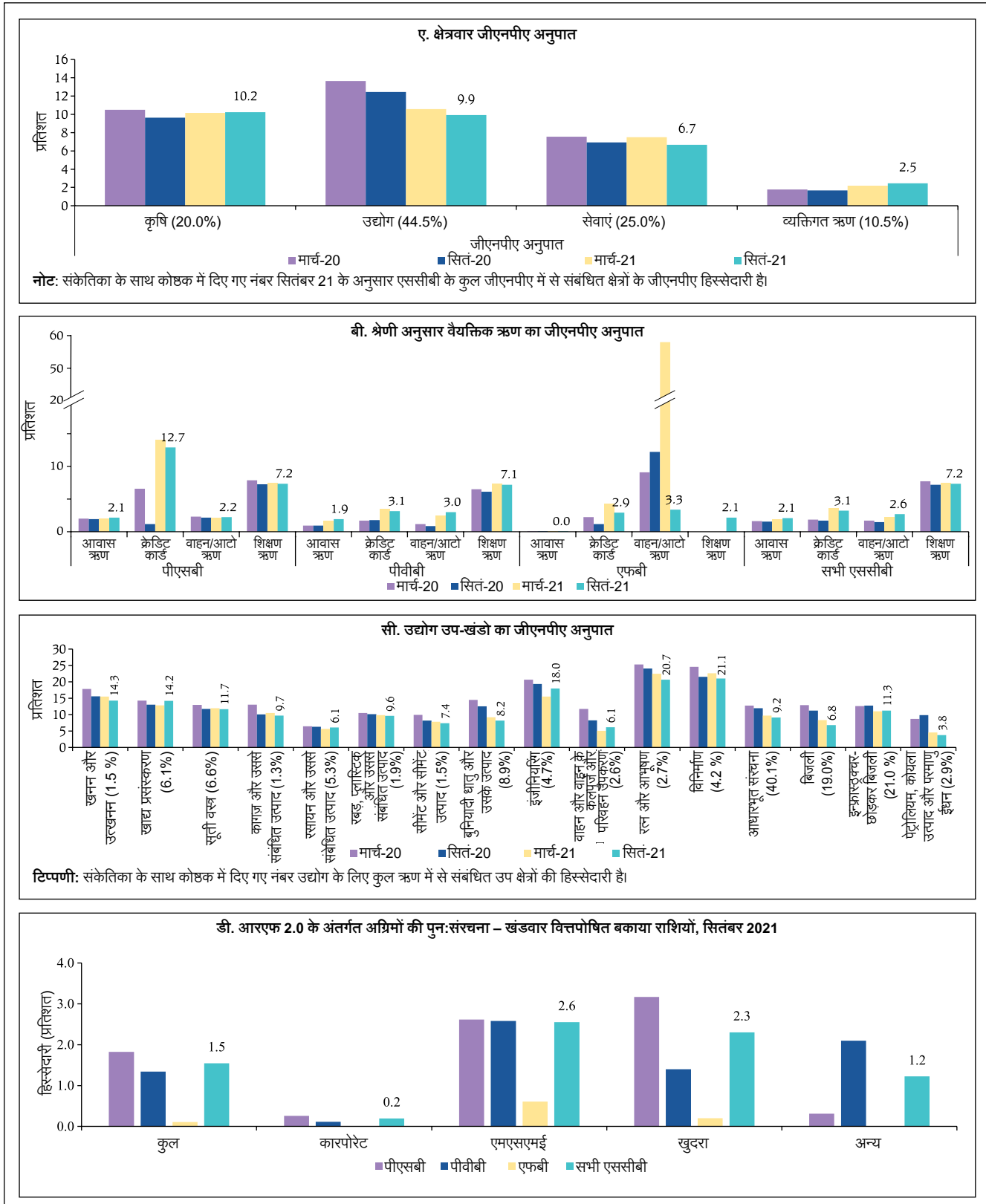
चार्ट 2.3: चुनिंदा परिसंपत्ति गुणवत्ता संकेतक



स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

⁴ पीसीआर (राइट-ऑफ के बिना) एनपीए से जीएनपीए के लिए धारित समायोजन अनुपात है।

चार्ट 2.4 : क्षेत्रवार परिसंपत्ति गुणवत्ता संकेतक



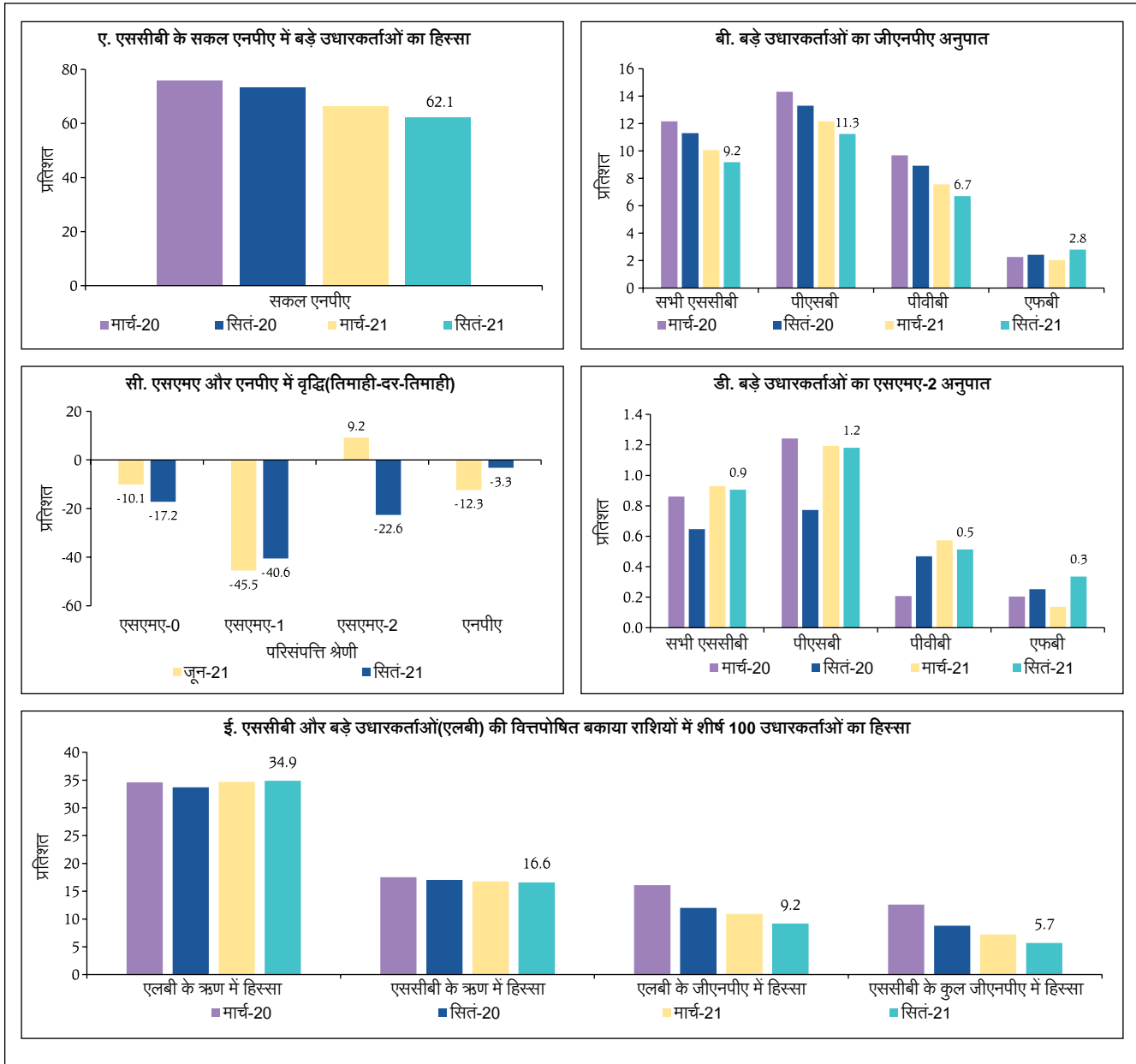
स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं

II.1.3 बड़े उधारकर्ताओं की क्रेडिट गुणवत्ता⁵

2.9 जीएनपीए में बड़े उधारकर्ताओं का हिस्सा मार्च 2020 में 75.9 प्रतिशत था जो सितंबर 2021 में घटकर 62.1 प्रतिशत हो गया था (चार्ट 2.5ए और बी)। विशेष उल्लेख खाता

(एसएमए⁶) बकेट्स में भी उनके ऋण कम हो गए थे (चार्ट 2.5 सी और डी)। कुल ऋण बही में 100 सबसे बड़े उधारकर्ताओं के हिस्से में 16.6 प्रतिशत की मामूली गिरावट रही जबकि अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के पूल में इनका हिस्सा 5.7 प्रतिशत घट गया था (चार्ट 2.5 ई)।

चार्ट 2.5 : बड़े उधारकर्ताओं के चुनिंदा परिसंपत्ति गुणवत्ता संकेतक



स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं

⁵ एक बड़े उधारकर्ता को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में परिभाषित किया गया है जिसके पास 5 करोड़ और उससे अधिक का निधि-आधारित और गैर-निधि-आधारित एक्सपोजर है। यह विश्लेषण एससीबी के वैश्विक परिचालनों पर आधारित है।

⁶ ए) आवर्ती सुविधाओं प्रकृति के ऋण यथा नकद क्रेडिट/ओवरड्राफ्ट: यदि बकाया शेष सतत तौर पर स्वीकृति सीमा अथवा आहरण शक्ति से अधिक, जोकि कम है, 31-60 दिन की अवधि- एसएमए-1; 61-90 दिन - एसएमए-2।

बी) आवर्ती सुविधाओं के ऋण के अतिरिक्त; यदि मूलधन अथवा ब्याज भुगतान अथवा अन्य राशि पूर्णतः अथवा आंशिक अतिदेय 30 दिन तक बकाया है- एसएमए-0; 31-60 दिन - एसएमए-1; 61-90 दिनों-एसएमए-2।

II.1.4 पूंजी पर्याप्तता

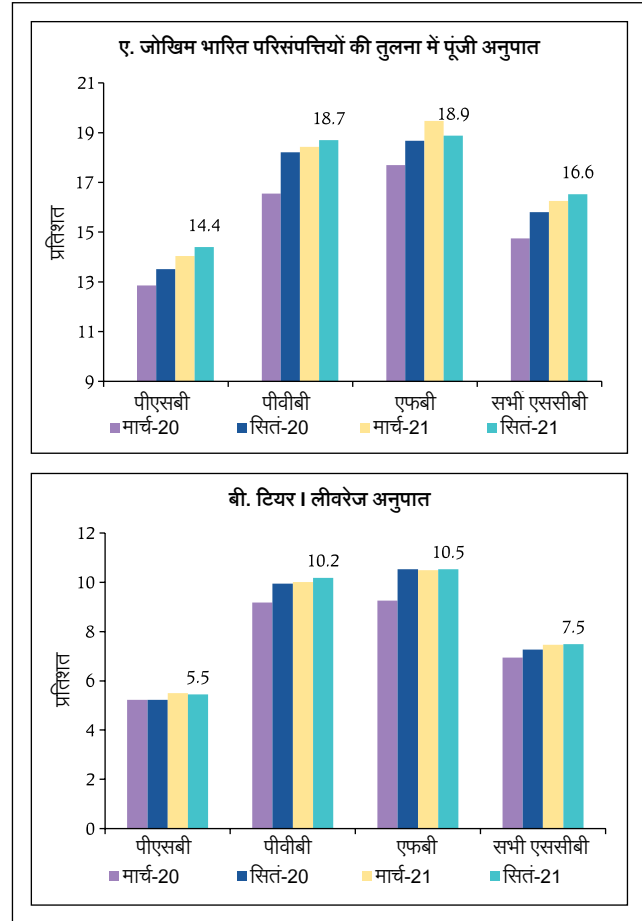
2.10 चूंकि अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक वर्ष 2020-21 में आंतरिक धन-उपचयन एवं पूंजी जुटाकर दोनों तरह से अपनी पूंजी को सहारा प्रदान कर रहे थे, इसमें टियर I एवं टियर II के बांड्स भी शामिल हैं, जिसके फलस्वरूप जोखिम भारित आस्तियों की तुलना में पूंजी का अनुपात (सीआरएआर) सितंबर 2021 में 16.6 प्रतिशत की नई ऊंचाइयों पर पहुंच गया था (चार्ट 2.6 ए)। सितंबर 2021 में प्रणालीगत स्तर टियर I लीवरेज अनुपात⁷ 7.5 प्रतिशत पर रहा (चार्ट 2.6 बी)।

II.1.5 आमदनी और लाभप्रदता

2.11 पिछले दो वर्षों में अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों का निवल ब्याज मार्जिन (एनआईएम) 3.3 प्रतिशत पर रहा (चार्ट 2.7 ए)। कर घटाने के बाद (पीएटी) उनके लाभ में 31 प्रतिशत (वर्ष-दर-वर्ष) की वृद्धि हुई है। ऐसा मुख्यतया निजी क्षेत्र के बैंकों के पीएटी में 16 प्रतिशत की वृद्धि होने तथा सरकारी क्षेत्र के बैंकों का लाभ दोगुना हो जाने से हुआ था, ऐसा अन्य परिचालनगत आय (ओओआई) में 30 प्रतिशत की वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष) तथा प्रावधानों में 24 प्रतिशत की कमी (वर्ष-दर-वर्ष) आने से हुआ था (चार्ट 2.7 बी)।

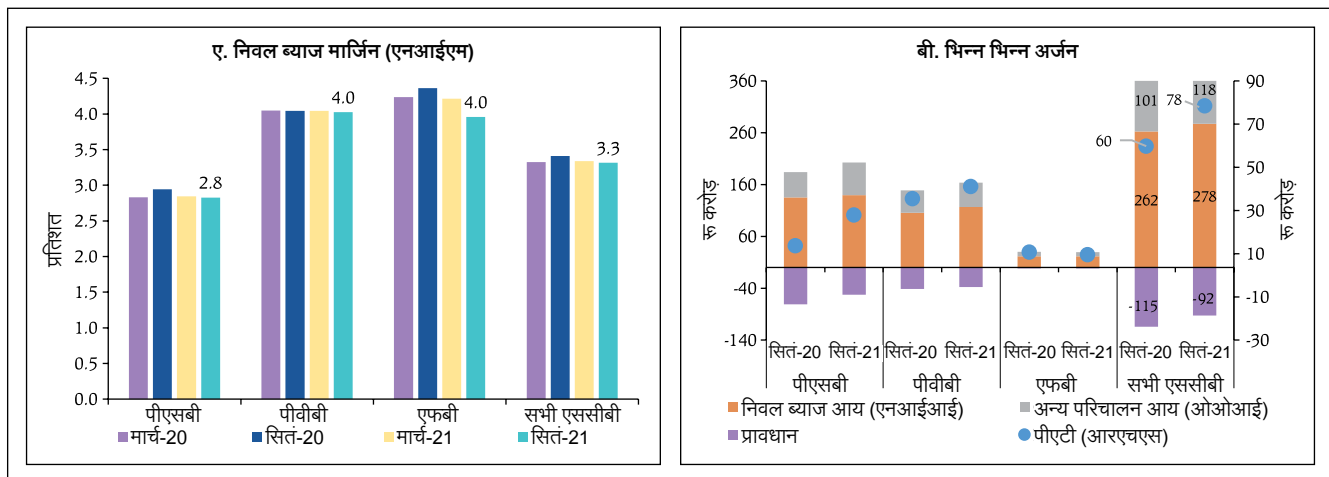
2.12 आस्तियों पर प्रतिलाभ (आरओए) तथा इक्विटी पर प्रतिलाभ (आरओई) ने अपने बढ़ते प्रोफाइल को कायम रखा है, साथ ही सरकारी क्षेत्र के बैंकों ने अनेक वर्षों की तुलना में सबसे उच्च स्तर प्राप्त किया है (चार्ट 2.7 सी और डी)। निधियों की लागतें और आस्तियों पर प्रतिफल सभी बैंक समूहों में घटी हैं जो पिछले दो दशक के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गया था (चार्ट 2.7 ई और एफ)।

चार्ट 2.6: पूंजी पर्याप्तता



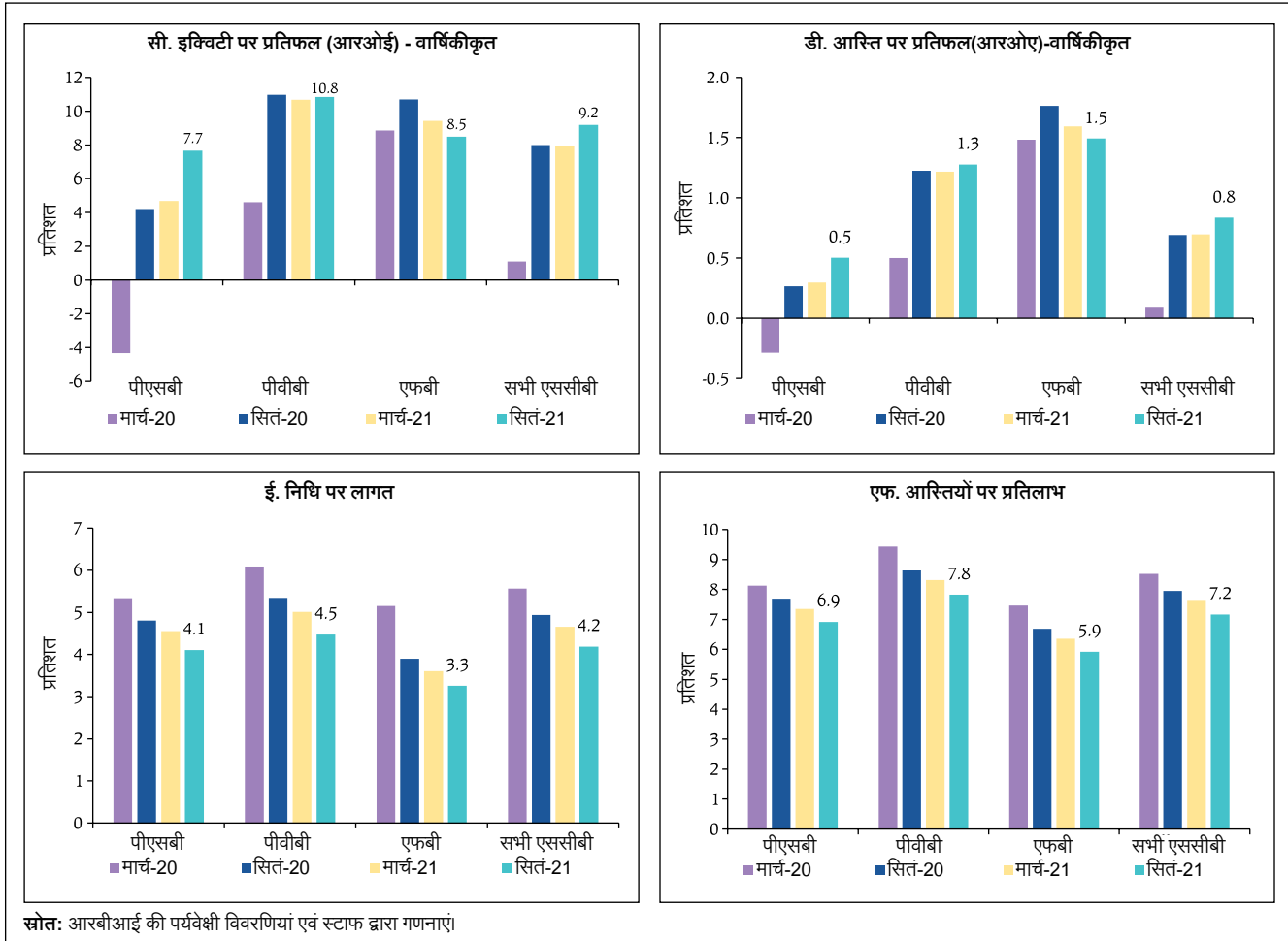
स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

चार्ट 2.7: एससीबी के चुनिंदा कार्य निष्पादन संकेतक (Contd.)



⁷ टियर 1 लीवरेज अनुपात वह अनुपात है जो कुल आस्तियों की तुलना में टियर 1 पूंजी का अनुपात होता है।

चार्ट 2.7: एससीबी के चुनिंदा कार्य निष्पादन संकेतक (Concl.)



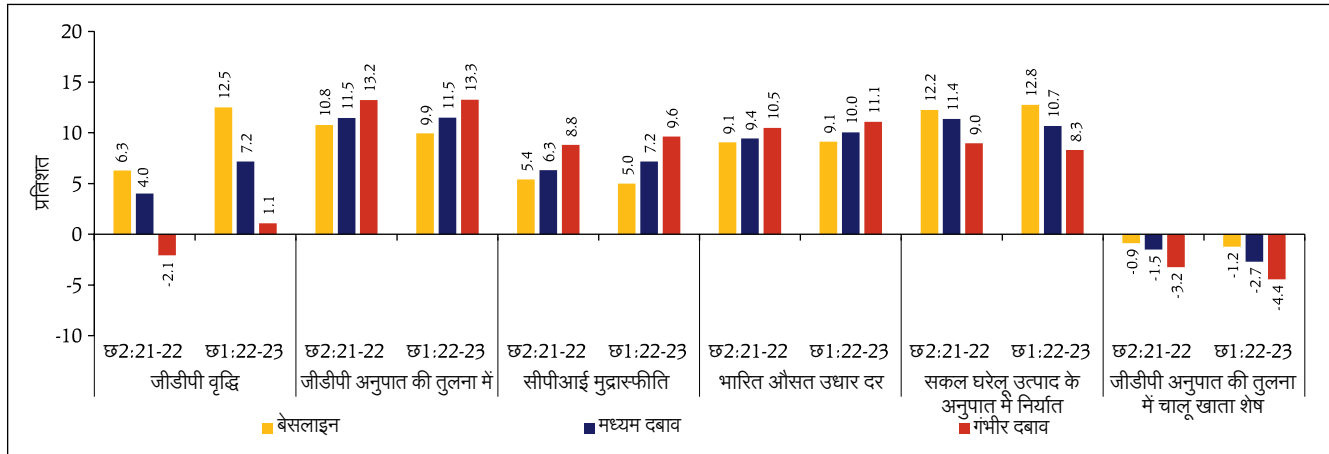
II.1.6 आघात सहनीयता- मैक्रो दबाव परीक्षण

2.13 यह जानने के लिए कि मैक्रो-इकोनॉमिक परिदृश्य से उत्पन्न अप्रत्याशित आघातों के प्रति अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के तुलनपत्रों की सुदृढ़ता कितनी है, मैक्रो-दबाव परीक्षण करते हुए मूल्यांकन किया गया, जिसके जरिये अवरुद्धता तथा पूंजी अनुपात का आकलन एक बेसलाइन एवं दो प्रतिकूल परिदृश्यों (मध्यम एवं कठोर) के तहत एक-वर्ष की अवधि के लिए किया गया था। **प्रतिकूल परिदृश्य, कल्पित विपरीत आर्थिक स्थितियों के अंतर्गत किए गए कठोर अपरिवर्तनीय**

मूल्यांकन होते हैं और इसलिए इन मॉडल्स के परिणामों को पूर्वानुमान के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए। इन बेसलाइन परिदृश्यों में मैक्रो-इकोनॉमिक चरों के पूर्वानुमानित मूल्य शामिल होते हैं⁸ मध्यम एवं जटिल स्वरूप के प्रतिकूल परिदृश्यों का निरूपण प्रत्येक मैक्रो-इकोनॉमिक चरों पर क्रमशः एक मानक विचलन (एसडी) आघात पर 0.25 तथा 2 मानक विचलन आघात पर 1.25 लागू करते हुए किया जाता है, जिसमें प्रत्येक आगामी तिमाही में आघात को 25 आधार अंक बढ़ा दिया जाता है (चार्ट-2.8)।

⁸ जीडीपी वृद्धि, जीडीपी अनुपात की तुलना में संयुक्त राजकोषीय घाटा, सीपीआई मुद्रास्फीति, भारत औसत उधार दर, जीडीपी अनुपात की तुलना में निर्यात और जीडीपी अनुपात की तुलना में चालू खाता शेष।

चार्ट 2.8: छ 2: 2021-22 और छ 1 : 2022-23 के लिए समष्टि आर्थिक परिदृश्य मूल्यांकन



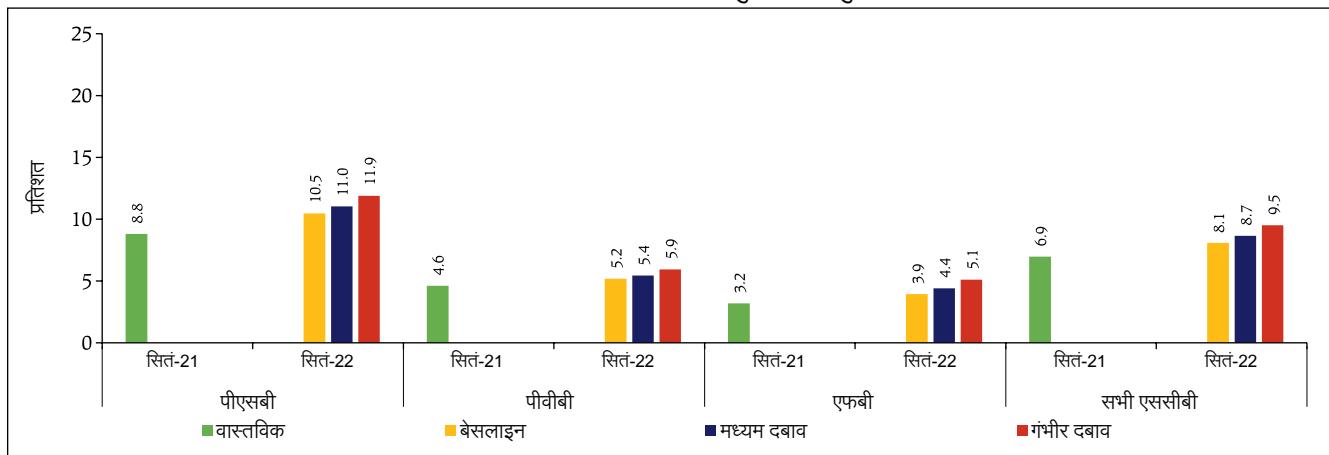
स्रोत: आरबीआई स्टाफ गणनाएं।

2.14 दबाव परीक्षणों से यह संकेत मिलता है कि समस्त अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (एससीबी)के जीएनपीए अनुपात, बेसलाइन परिदृश्य के अंतर्गत सितंबर 2022 तक बढ़कर 8.1 प्रतिशत तथा कठोर दबाव की स्थिति में और बढ़कर 9.5 प्रतिशत हो सकते हैं बैंकों के समूह के भीतर देखा जाए तो बेसलाइन परिदृश्य के अंतर्गत सरकारी क्षेत्र के बैंकों का जीएनपीए अनुपात सितंबर 2021 के 8.8 प्रतिशत से घटकर सितंबर 2022 में 10.5 प्रतिशत हो सकता है, जबकि निजी क्षेत्र के बैंकों का अशोध्य ऋण 4.6 प्रतिशत से बढ़कर 5.2 प्रतिशत हो जाने, तथा विदेशी बैंकों का इसी अवधि में 3.2 प्रतिशत से

बढ़कर 3.9 प्रतिशत हो जाने का अनुमान है (चार्ट 2.9)। वहीं दूसरी ओर, यदि दबाव की स्थिति नहीं पैदा होती है तो बेसलाइन की अपेक्षाकृत स्थिति आशावादी बन सकती है, जिससे सभी अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के जीएनपीए अनुपात कम हो सकते हैं।

2.15 दबाव परीक्षण के परिणामों से यह संकेत मिलता है कि बेसलाइन परिदृश्य के अंतर्गत प्रणाली स्तर पर सीआरएआर सितंबर 2022 तक 15.4 प्रतिशत तक घट सकता है और मध्यम एवं कठोर दबाव परिदृश्यों के अंतर्गत क्रमशः 14.7 प्रतिशत एवं 13.8 प्रतिशत तक घट सकता है (चार्ट 2.10 ए)।

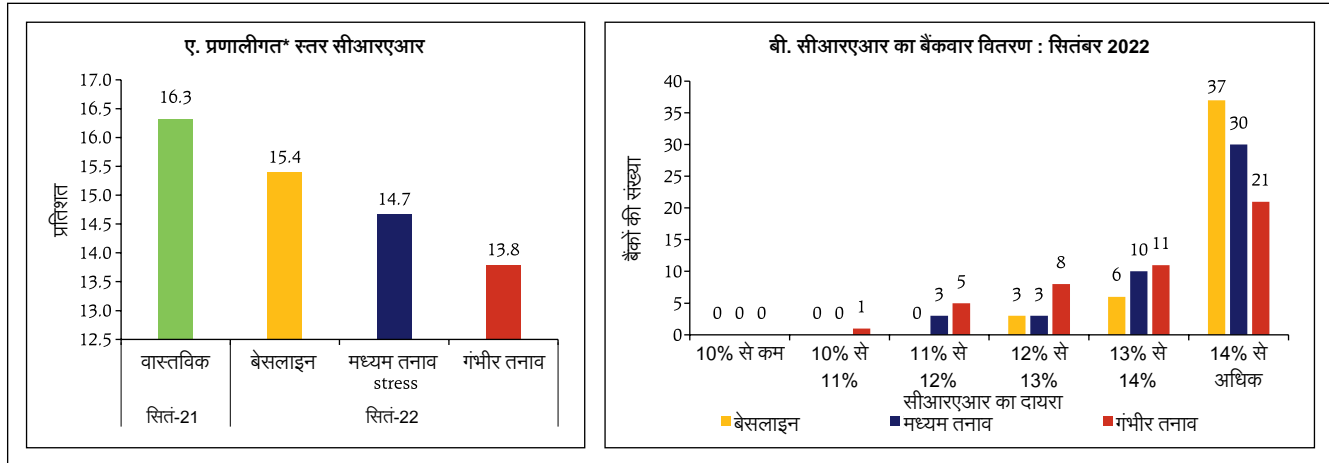
चार्ट 2.9: एससीबी के जीएनपीए अनुपातों का अनुमान



टिप्पणी: जीएनपीए को तीन संपूरक अर्थमितीय मॉडल- मल्टीवेरिएट रियेशन, वेक्टर ऑटोरियेशन (वीएआर) और क्वॉंटाइल रियेशन - का उपयोग करके; और जीएनपीए अनुपातों का औसत निकालकर अनुमानित किया जाता है।

स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणना।

चार्ट 2.10: सीआरएआर पूर्वानुमान



* 46 चुनिंदा बैंक की प्रणाली के लिए।

टिप्पणी: लाभ वाले एससीबी के लिए पूंजीगत आरक्षित निधि में न्यूनतम 25 प्रतिशत लाभ को अंतरित करने की एक रूढ़िवादी धारणा के तहत पूंजी अनुमान किया गया है। इसमें हितधारकों द्वारा किसी भी पूंजी अंतः प्रवाह को ध्यान में नहीं रखा गया है।

स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियां और स्टाफ गणना।

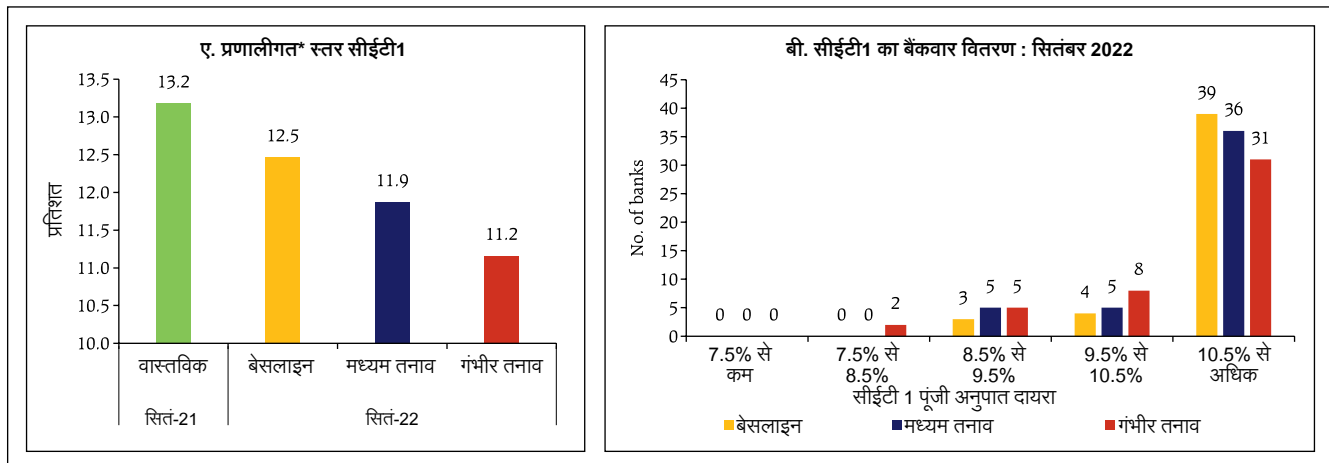
इस प्रकार सभी 46 बैंक बहुत खराब स्थिति के परिदृश्य में भी सितंबर 2022 तक सीआरएआर का स्तर निर्धारित न्यूनतम पूंजी के 9 प्रतिशत के स्तर से ऊपर बनाए रखने में समर्थ होंगे (चार्ट 2.10 बी)।

2.16 अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की संयुक्त इक्विटी टियर I (सीईटी I) पूंजी बेसलाइन परिदृश्य के अंतर्गत सितंबर 2022 तक 12.5 प्रतिशत तक पहुंच सकती है और मध्यम तथा कठोर दबाव के परिदृश्यों में क्रमशः 11.9 प्रतिशत तथा 11.2 प्रतिशत तक घट सकती है (चार्ट 2.11 ए)। यहाँ तक कि अत्यधिक विपरीत परिदृश्यों में भी किसी भी बैंक को 5.5

प्रतिशत के विनियामकीय निर्धारण से कम सीईटी I अनुपात हो जाने का सामना नहीं करना पड़ेगा (चार्ट 2.11 बी)।

2.17 जहां मैक्रो दबाव परीक्षण, बैंकिंग प्रणाली की मैक्रो-इकोनॉमिक आघातों के प्रति समुत्थानशीलता के मूल्यांकन का एक तरीका है, वहीं स्टॉक मार्केट के संकेतकों का इस्तेमाल बैंकिंग क्षेत्र में प्रणालीगत जोखिमों को मापने के लिए किया जाता है। इस पद्धति के उपयोग से यह पाया गया है कि बैंकिंग क्षेत्र में प्रणालीगत जोखिम, महामारी की पहली लहर के दौरान जिस उच्च स्तर पर पहुंच गया था, 2021 में उससे कम

चार्ट 2.11 : सीईटीI पूंजी अनुपात का अनुमान



* 46 चुनिंदा बैंक की प्रणाली के लिए।

टिप्पणी: लाभ वाले एससीबी के लिए पूंजीगत आरक्षित निधि में न्यूनतम 25 प्रतिशत लाभ को अंतरित करने की एक रूढ़िवादी धारणा के तहत पूंजी अनुमान किया गया है। इसमें हितधारकों द्वारा किसी भी पूंजी अंतः प्रवाह को ध्यान में नहीं रखा गया है।

स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियां और स्टाफ गणना।

हो गया है। साथ ही, सरकारी क्षेत्र के बैंकों में प्रणालीगत जोखिम निजी क्षेत्र के बैंकों की तुलना में अधिक था और विलय किए गए

सरकारी क्षेत्र के बैंकों में उत्पन्न जोखिम, विलय न किए गए सरकारी क्षेत्र के बैंकों की अपेक्षा अधिक था (बॉक्स 2.1)।

बॉक्स 2.1 बैंकिंग क्षेत्र में प्रणालीगत जोखिम

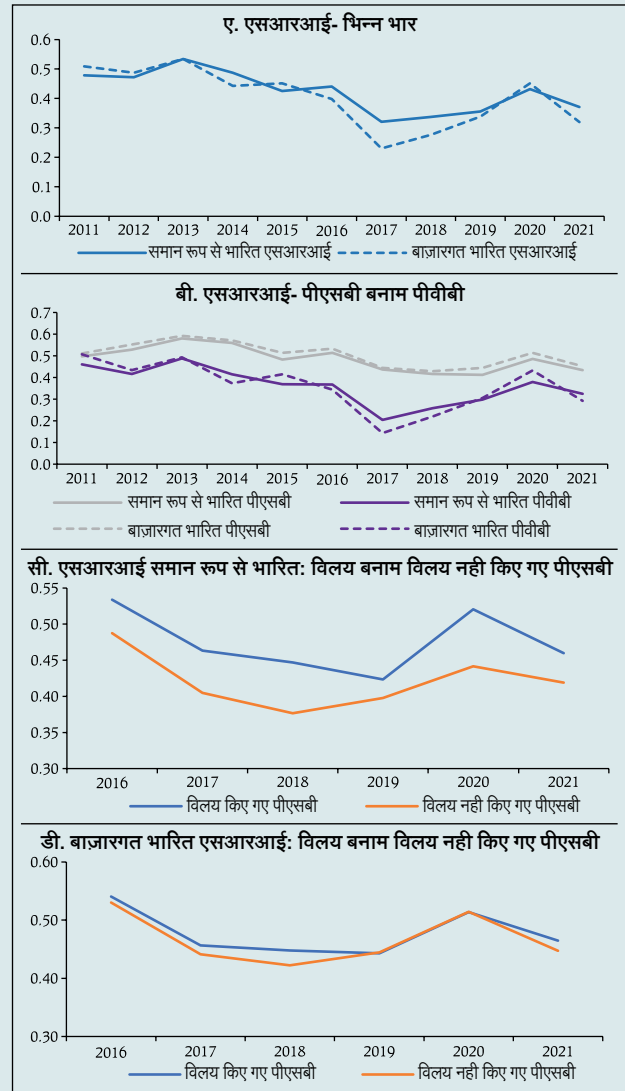
बैंकिंग क्षेत्र के प्रणालीगत जोखिम का मूल्यांकन किया जाना वित्तीय स्थिरता मूल्यांकन एवं नीति-डिजाइन का अभिन्न अंग होता है। इस संदर्भ में, बैंक के स्टॉक मूल्य, प्रणालीगत जोखिम के संबंध में आगे के मूल्यांकन के लिए महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराते हैं।

बैंक स्टॉक प्रतिफल सह-संबंध का उपयोग प्रणालीगत जोखिम के एक साधारण संकेतक के रूप में किया जा सकता है जिसमें उच्च वैल्यू प्रणालीगत विफलता(पैट्रो और अन्य, 2013) की आवश्यक शर्त हैं। इसके विपरीत जब स्टॉक प्रतिफल सह-संबंध कम होता है तो इस स्थिति में होने वाली घटनाओं से प्रणालीगत विफलता की संभावना नहीं होती है। स्टॉक प्रतिफल सह-संबंध पद्धति का एक अतिरिक्त फायदा यह है कि यह आसान, तीव्र है और मॉडल की त्रुटि या डाटा के सीमित होने के अधीन नहीं है।

32 प्रमुख बैंकों की स्टॉक के दैनिक प्रतिफल (बैंकिंग क्षेत्र की 90 प्रतिशत आस्तियों को शामिल करते हुए) को लेते हुए, प्रत्येक जोड़ी बैंक (i,j) के दैनिक स्टॉक प्रतिफल के सह-संबंध(r_{ij}) का आकलन 2011 से लेकर प्रत्येक कैलेंडर वर्ष⁹ के लिए किया गया है। किसी वर्ष के लिए ith बैंक का प्रणालीगत जोखिम उस वर्ष में शेष 31 बैंकों के साथ उसके स्टॉक प्रतिफल सह-संबंध का औसत होगा। सकल प्रणालीगत जोखिम संकेतक(एसआरआई) का आकलन बैंकवार एसआरआई का औसत निकालकर किया जाता है। जहां समान रूप से भारत एसआरआई की गणना बैंकवार प्रणालीगत जोखिम के एक साधारण औसत के रूप में की जाती है, वहीं एसआरआई की गणना प्रत्येक अवधि के प्रारंभ में बाजार पूंजीकरण पर आधारित भारों सहित भारत औसत के रूप में भी की जाती है।

एसआरआई में हुए उतार-चढ़ाव यह दर्शाते हैं कि बैंकिंग क्षेत्र में प्रणालीगत जोखिम महामारी की पहली लहर के दौरान के बढ़े हुए स्तर से 2021 में कम हो गया है (चार्ट 1ए)। सरकारी क्षेत्र के बैंकों में पाया गया प्रणालीगत जोखिम निजी क्षेत्र के बैंकों से अधिक था (चार्ट 1 बी)। इसके और गहन अध्ययन से पता चलता है कि विलय किए गए सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों¹⁰ की श्रेणी में उत्पन्न प्रणालीगत जोखिम, विलय न किए गए सरकारी क्षेत्र के बैंकों की अपेक्षा अधिक था और इन दोनों समूहों के बाजारगत उच्च सीमा भारत एसआरआई के बीच का अंतर कम बना रहा (चार्ट 1सी और डी)।

चार्ट 1: प्रणालीगत जोखिम संकेतक (एसआरआई)



संदर्भ:

पैट्रो, डी.के., क्यूआई, एम., एण्ड सन, एक्स.(2013), ए सिंपल इंडीकेटर ऑफ सिस्टमिक रिस्क, जर्नल ऑफ फाइनेंसियल स्टेबिलिटी, 9(1), 105-116

⁹ अक्टूबर 2021 के अंत तक के डाटा का इस्तेमाल वर्ष 2021 के लिए किया गया है।

¹⁰ विलय किए सरकारी क्षेत्र के बैंक वे हैं जिनका विलय 1 अप्रैल 2020 से किया गया है।

II.1.7 संवेदनशीलता विश्लेषण¹¹

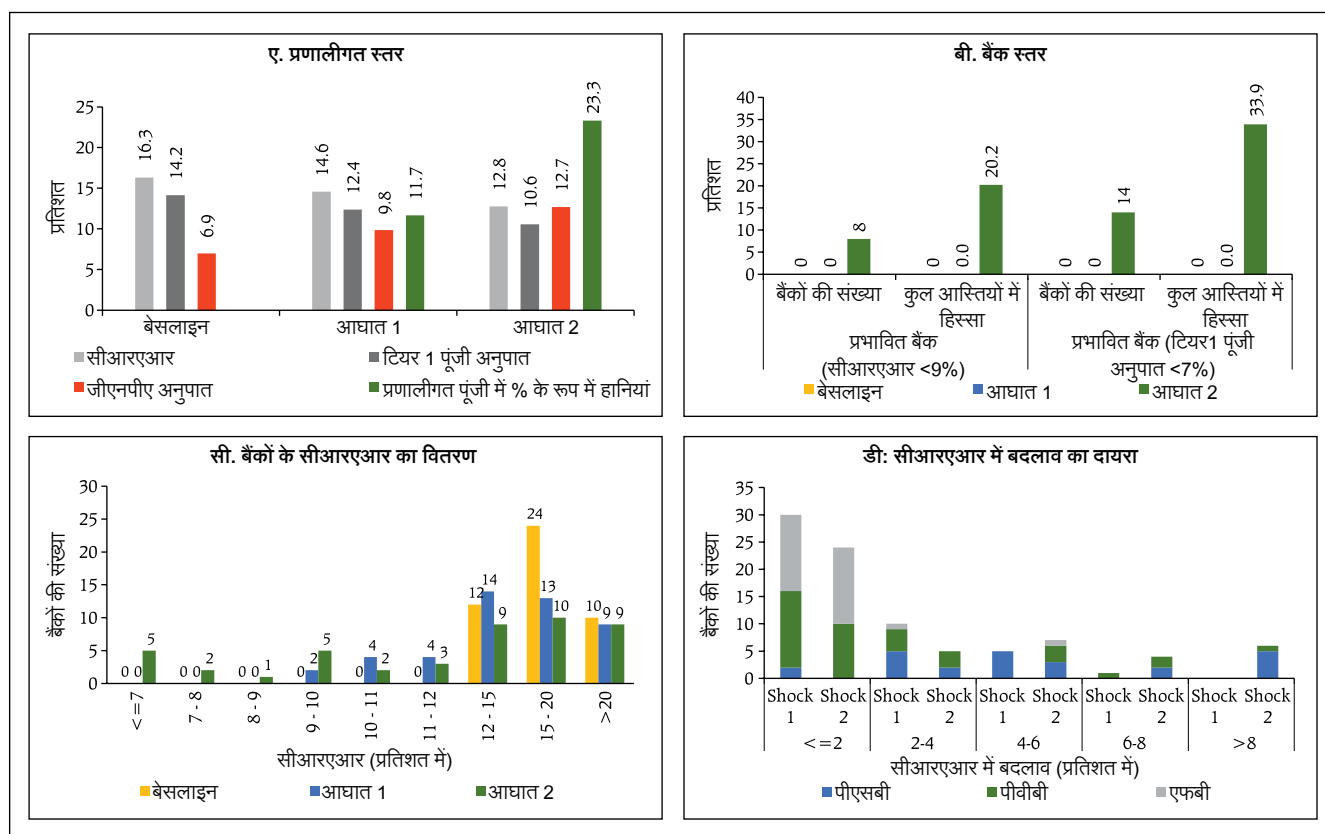
2.18 अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों का अधोमुखी (टॉप- डाउन)¹² संवेदनशीलता विश्लेषण किया जाता रहा है जिसमें अनेक एकल-कारक आघात¹³ शामिल होते हैं ताकि विभिन्न दबाव परिदृश्यों¹⁴ के अंतर्गत क्रेडिट, ब्याज दर, इक्विटी मूल्य तथा चलनिधि जोखिमों को संतुलित किया जा सके, जो सितंबर 2021 में उनकी हासिल की गई पोजीशन पर आधारित हैं।

ए. क्रेडिट जोखिम

2.19 क्रेडिट जोखिम संवेदनशीलता का मूल्यांकन करने के लिए दो परिदृश्यों का उपयोग किया गया है अर्थात एक तिमाही

में प्रणाली-स्तर जीएनपीए में इसके वर्तमान स्तर से एक एसडी¹⁵ और दो एसडी की वृद्धि कठिन आघात (दो एसडी) के मामले में देखा जाए तो चुनिंदा 46 अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों का जीएनपीए अनुपात 6.9 प्रतिशत से बढ़कर 12.7 प्रतिशत हो गया था, प्रणाली-स्तर पर सीआरएआर 16.3 प्रतिशत से घटकर 12.8 प्रतिशत तथा प्रणाली-स्तर पर पूंजी अवरुद्धता 23.3 प्रतिशत थी (चार्ट 2.12 ए)। इसके अतिरिक्त, आठ बैंक जिनके अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की कुल आस्तियों में हिस्सा 20.2 प्रतिशत है इसी परिदृश्य के अंतर्गत विनियामकीय न्यूनतम सीआरएआर स्तर को बनाए रखने में विफल हो सकते हैं (चार्ट 2.12 बी)। पांच बैंकों के सीआरएआर 7 प्रतिशत से नीचे

चार्ट 2.12: ऋण जोखिम - आघात और परिणाम



टिप्पणी: चुनिंदा 46 एससीबी की प्रणाली के लिए
 आघात 1: जीएनपीए अनुपात पर 1 एसडी आघात
 आघात 2: जीएनपीए अनुपात पर 2 एसडी आघात
स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणना

¹¹ समष्टि दबाव परीक्षणों के तहत, आघात प्रतिकूल समष्टि-आर्थिक स्थितियों के रूप में हैं, जबकि संवेदनशीलता विश्लेषण आघात में एकल कारकों जैसे, जीएनपीए, ब्याज दर, इक्विटी मूल्य, जमा राशियों और समान कारकों पर एक समय में आघात करते हैं। इसके अलावा, जीएनपीए अनुपातों के लिए समष्टि दबाव परीक्षणों को प्रणाली और प्रमुख बैंक-समूह स्तरों पर किया जाता है, जबकि संवेदनशीलता का विश्लेषण प्रणाली और वैयक्तिक बैंक स्तरों पर किया जाता है।

¹² टॉप-डाउन दबाव परीक्षण विशिष्ट परिदृश्यों और बैंक-वार समग्र डाटा पर आधारित हैं।

¹³ दबाव परीक्षणों के विवरण के लिए कृपया अनुबंध-2 देखें।

¹⁴ एकल कारक संवेदनशीलता विश्लेषण दबाव परीक्षण कुल बैंकिंग क्षेत्र की आस्तियों का 98 प्रतिशत धारित करने वाले 46 एससीबी को नमूना के रूप में मानकर किए गए। विभिन्न काल्पनिक परिदृश्यों के तहत डिजाइन किए गए आघात चरम पर होते हुए भी स्वीकार्य हैं।

¹⁵ जीएनपीए अनुपात के एसडी को मार्च 2011 से तिमाही आंकड़ों का उपयोग करके अनुमानित किया जाता है। एक एसडी आघात से जीएनपीए के स्तर में 41 प्रतिशत की वृद्धि अनुमानित है।

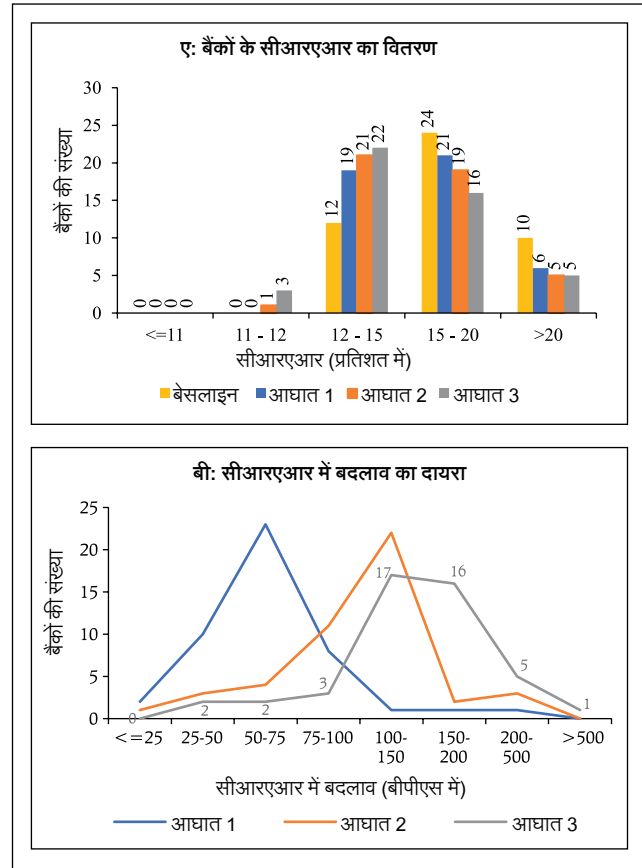
गिर सकते हैं (चार्ट 2.12 सी)। जबकि 6 बैंकों के सीआरएआर में 8 प्रतिशतता अंक की गिरावट दर्ज हो सकती है (चार्ट 2.12 डी)। दोनों परिदृश्यों के अंतर्गत निजी बैंकों तथा विदेशी बैंकों के सीआरएआर में सामान्य रूप से क्षरण सरकारी क्षेत्र के बैंकों की तुलना में कम रहेगा। रिजर्व दबाव परीक्षण से पता चलता है कि सीआरएआर को प्रणाली- स्तर पर 9 प्रतिशत तक लाने के लिए 4.8 एसडी का आघात अपेक्षित है।

बी. क्रेडिट संकेंद्रण जोखिम

2.20 बैंकों के क्रेडिट संकेंद्रण के संबंध में किया गया दबाव परीक्षण वैयक्तिक रूप से सबसे बड़े उधारकर्ताओं को उनके मानक एक्सपोजर के अनुसार विचार में लिया गया है- से ज्ञात होता है कि अतिशय परिदृश्य में संबंधित बैंकों में तीन सबसे बड़े उधारकर्ता चुकौती करने में विफल रहेंगे¹⁶, किसी भी बैंक का सीआरएआर विनियामकीय न्यूनतम 9 प्रतिशत की अपेक्षा से नीचे नहीं जाएगा (चार्ट 2.13)। हालांकि 6 बैंकों के सीआरएआर में दो प्रतिशतता अंक से अधिक की गिरावट पाई जाएगी (चार्ट 2.13 बी)।

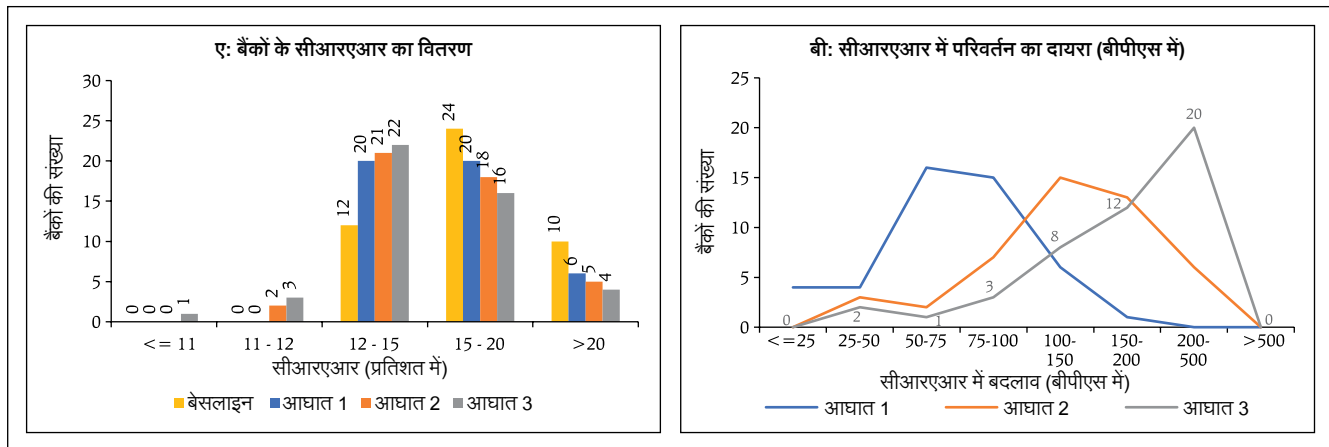
2.21 मानक श्रेणी के तीन सबसे बड़े उधारकर्ता समूह द्वारा चुकौती¹⁷ में विफल होने के अतिशय परिदृश्य में, एक बैंक का सीआरएआर 11 प्रतिशत से नीचे गिर सकता है (चार्ट 2.14 ए) और 20 बैंकों के सीआरएआर में दो प्रतिशतता अंक से अधिक की गिरावट दर्ज की जाएगी (चार्ट 2.14 बी)।

चार्ट 2.13 ऋण संकेंद्रण जोखिम: वैयक्तिक उधारकर्ता – एक्सपोजर



टिप्पणी: चुनिंदा 46 एससीबी की प्रणाली के लिए।
 आघात 1: शीर्षस्थ वैयक्तिक उधारकर्ता भुगतान करने की अपनी प्रतिबद्धता में विफल रहता है।
 आघात 2: शीर्ष 2 वैयक्तिक उधारकर्ता भुगतान करने की अपनी प्रतिबद्धता में विफल रहते हैं।
 आघात 3: शीर्ष 3 वैयक्तिक उधारकर्ता भुगतान करने की अपनी प्रतिबद्धता में विफल रहते हैं।
स्रोत: रिजर्व बैंक पर्यवेक्षी विवरणी और स्टाफ गणना।

चार्ट 2.14: ऋण संकेंद्रण जोखिम: समूह उधारकर्ता – एक्सपोजर

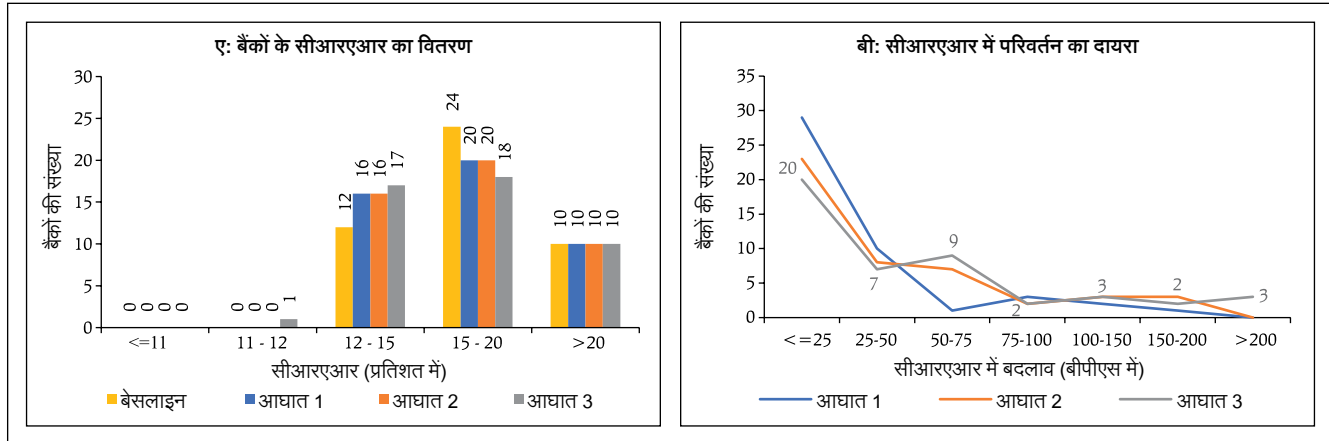


टिप्पणी: चुनिंदा 46 एससीबी की प्रणाली के लिए।
 आघात 1: शीर्षस्थ 1 समूह उधारकर्ता भुगतान करने की अपनी प्रतिबद्धता में विफल रहता है।
 आघात 2: शीर्ष 2 समूह उधारकर्ता भुगतान करने की अपनी प्रतिबद्धता में विफल रहते हैं।
 आघात 3: शीर्ष 3 समूह उधारकर्ता भुगतान करने की अपनी प्रतिबद्धता में विफल रहते हैं।
स्रोत: रिजर्व बैंक पर्यवेक्षी विवरणी और स्टाफ गणना।

¹⁶ चूक होने की स्थिति में, यह मान लिया जाता है कि उधारकर्ता मानक श्रेणी से अवमानक श्रेणी में आ गया है।

¹⁷ चूक होने की स्थिति में, यह मान लिया जाता है कि उधारकर्ता समूह मानक श्रेणी से अवमानक श्रेणी में आ गया है।

चार्ट 2.15: ऋण संकेंद्रण जोखिम: वैयक्तिक उधारकर्ता – दबावग्रस्त अग्रिम



टिप्पणी: चुनिंदा 46 एससीबी की प्रणाली के लिए।
 आघात 1: शीर्षस्थ दबावग्रस्त वैयक्तिक उधारकर्ता भुगतान करने की अपनी प्रतिबद्धता में विफल रहता है।
 आघात 2: शीर्ष 2 दबावग्रस्त वैयक्तिक उधारकर्ता भुगतान करने की अपनी प्रतिबद्धता में विफल रहते हैं।
 आघात 3: शीर्ष 3 दबावग्रस्त वैयक्तिक उधारकर्ता भुगतान करने की अपनी प्रतिबद्धता में विफल रहते हैं।
स्रोत: रिजर्व बैंक पर्यवेक्षी विवरणी और स्टाफ गणना।

2.22 संबंधित बैंकों के सबसे बड़े तीन दबावग्रस्त उधारकर्ताओं द्वारा चुकौती¹⁸ में विफल होने के परिदृश्य में, अधिकांश बैंक उनके सीआरएआर में 25 आधार अंक या उससे कम की गिरावट अनुभव करेंगे (चार्ट 2.15 ए और बी)।

सी. प्रखंडीय क्रेडिट जोखिम

2.23 उद्योग के उप-क्षेत्रवार के जीएनपीए के अनुपात पर आघात लागू करके देखा जाए तो उससे यह संकेत मिलता है कि बैंकों के जीएनपीए तथा पूंजी में भिन्न-भिन्न तरीके से वृद्धि हुई है। ऊर्जा तथा मूल धातु एवं धातु उत्पादों के खंड में दो एसडी आघात लगाने से प्रणाली-स्तर के सीआरएआर को क्रमशः 17 आधार अंक और 13 आधार अंक कम कर देगा (सारणी 2.1)।

डी. ब्याज दर जोखिम

2.24 किए गए निवेश का बाजार मूल्य यदि अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के मौजूदा सैम्पल के उचित मूल्य पर देखें तो सितंबर 2021 में वह 18.2 लाख करोड़ ₹ होता है, जो लगातार दो छमाहियों से घटता जा रहा है (चार्ट 2.16)। इन निवेशों का लगभग 93 प्रतिशत हिस्सा बिक्री के लिए उपलब्ध (एएफएस) के रूप में और शेष हिस्सा व्यापार के लिए धारित है (एचएफटी) के रूप में वर्गीकृत है।

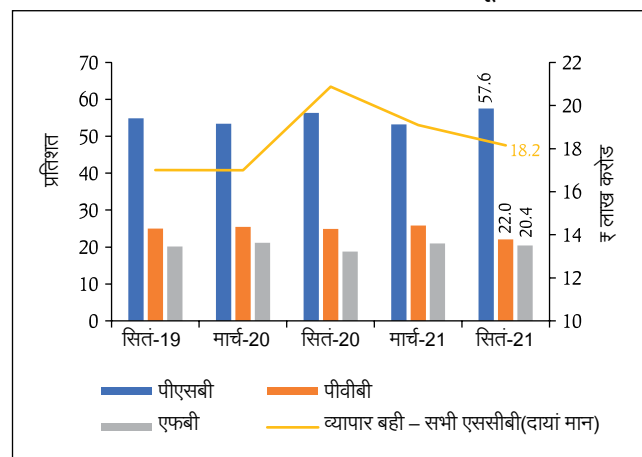
सारणी 2.1: प्रणालीगत स्तर सीआरएआर में गिरावट

(आधार अंक, शीर्ष 10 सबसे संवेदनशील क्षेत्रों के लिए घटते क्रम में)

क्षेत्र	1 एसडी	2 एसडी
इंफ्रास्ट्रक्चर – ऊर्जा (100%)	8	17
मूलभूत धातु और धातु उत्पाद (164%)	7	13
इंफ्रास्ट्रक्चर – परिवहन (36%)	3	6
समस्त इंजीनियरिंग (44%)	2	4
कपड़ा (35%)	2	4
विनिर्माण (29%)	2	3
खाद्य प्रसंस्करण (24%)	1	3
वाहन, वाहनों के पुर्जे और परिवहन उपकरण (139%)	1	2
इंफ्रास्ट्रक्चर – संचार (48%)	1	2
पेट्रोलियम(गैर-इंफ्रा), कोयला उत्पाद(गैर-खनन) और परमाणु	1	1
ईंधन (112%)		

टिप्पणी: 46 चुनिंदा बैंक की प्रणाली के लिए।
 टिप्पणी: कोष्ठकों में दिए गए आंकड़े उस उप-क्षेत्र के जीएनपीए अनुपात में 1 एसडी आघात के कारण उसके जीएनपीए में हुई वृद्धि को दर्शाते हैं।
स्रोत: रिजर्व बैंक पर्यवेक्षी विवरणी और स्टाफ गणना।

चार्ट 2.16: व्यापार बही पोर्टफोलियो: बैंक समूहवार



स्रोत: वैयक्तिक बैंक की प्रस्तुतियां और रिजर्व बैंक स्टाफ गणना।

¹⁸ विफल होने की स्थिति में यह मान लिया जाता है कि उधारकर्ता अवमानक अथवा पुनर्संचित श्रेणी से हानि श्रेणी में आ गया है।

2.25 एफएस पोर्टफोलियो की संवेदनशीलता (पीवी01¹⁹) सकल स्तर पर जून 2021 की पोजीशन की तुलना में घट गई थी। निजी क्षेत्र के बैंकों और सरकारी क्षेत्र के बैंकों ने क्रमशः 10.6 प्रतिशत और 8.4 प्रतिशत की गिरावट दर्ज करके इसमें अपना योगदान दिया है, जिससे यह पता चलता है कि उनकी निर्भरता सहनशील ब्याज दर जोखिम प्रबंधन पर बढ़ रही है। हालांकि उसी अवधि में विदेशी बैंकों ने अपने पीवी01 मूल्यों में 5.8 प्रतिशत की वृद्धि देखी है, विदेशी बैंकों की 10- वर्षीय खंड में कतिपय पोजीशनिंग में बांड्स शामिल हैं जिन्हें डेरिवेटिव्स की हेजिंग के लिए रखा गया है, जिसका पीवी01 जोखिम के लिए सक्रिय योगदान नहीं हो सकता है। पीवी01 वक्र की पोजीशनिंग को देखते हुए सरकारी क्षेत्र के बैंकों के लिए क्रमवार वितरण से पता चलता है कि 1 वर्ष से कम तथा 1-5 वर्ष के बकेट की तुलना में 5-10 वर्ष के बकेट तथा 10-वर्ष से अधिक के बकेट में समतल होता हुआ झुकाव है। निजी बैंकों ने अपने मत 1-5 वर्ष की परिपक्वता बकेट के प्रति बना लिया है, जबकि 1 वर्ष से कम के बकेट में अपने एक्सपोजर क्रमिक रूप से आधे कर दिए हैं (सारणी 2.2)।

2.26 सितंबर 2021 के अंत में प्रतिफल वक्र जो जून 2021 में अत्यधिक ऊपर चली गई थी, वह दूसरी लहर के पूर्व के स्तर तक नरम पड़ गई थी। 20 वर्ष तक के बकेट का प्रतिफल सामान्य रूप से मार्च 2021 के स्तर से नीचे गिर गया था क्योंकि सरकार द्वारा लिया गया उधार उम्मीद से कम था और मुद्रास्फीति कम होकर लक्ष्य की ओर जा रही थी। जबकि 8-10 वर्ष के बकेट में तेजी थी जिसकी वजह यह थी कि प्रतिफल वक्र के आकलन के लिए बेंचमार्क सिक्यूरिटी में परिवर्तन हो गया था (चार्ट 2.17)।

2.27 वर्ष 2021 की दूसरी तिमाही के दौरान (तिमाही-दर-तिमाही और वर्ष-दर-वर्ष दोनों) सभी बैंक समूहों में व्यापार लाभ निरपेक्ष तथा प्रतिशतता के रूप में घट गया था, जो प्रतिफल वक्र में उतार-चढ़ाव द्वारा संचालित था। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के लिए व्यापार लाभ एक सा बना रहा था। बीच-बीच की अवधि में तिमाही में तेजी आने के साथ-साथ निजी बैंकों के मामले में व्यापार लाभ आधा हो गया था और विदेशी बैंक लगातार तीन तिमाहियों तक घाटे में बने रहे। निवल अन्य परिचालनगत आय(ओओआई) के हिस्से के रूप में सरकारी क्षेत्र के बैंकों के लिए व्यापार लाभ का योगदान महत्वपूर्ण बना रहा जबकि निजी बैंकों के लिए नीचे घटकर एक अंक में आ गया था क्योंकि उनकी अन्य आय महामारी-पूर्व के स्तरों पर वापस लौट आई थी (सारणी 2.3)।

सारणी 2.2: एफएस पोर्टफोलियो का अवधि-वार पीवी01 वितरण

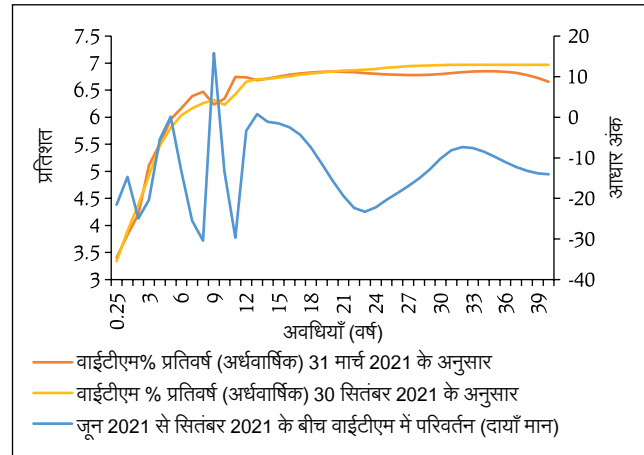
(प्रतिशत में)

क्षेत्र	कुल (₹ करोड़ में)	<1 वर्ष	1 वर्ष- 5 वर्ष	5 वर्ष – 10 वर्ष	>10 वर्ष
पीएसबी	204.2 (222.9)	8.9 (9.9)	41.6 (43.1)	38.6 (36.9)	10.9 (10.1)
पीवीबी	44.6 (49.9)	15.2 (35.7)	58.3 (49.3)	13.7 (11.7)	12.8 (3.4)
एफबी	121.4 (114.8)	4.0 (4.7)	25.8 (27.1)	9.7 (10.6)	60.5 (57.5)

टिप्पणी: कोष्ठक में दिए गए मूल्य जून 2021 के आंकड़े दर्शाते हैं।

स्रोत: वैयक्तिक बैंक प्रस्तुतियां और रिज़र्व बैंक स्टाफ गणना।

चार्ट 2.17: मार्च 2021 से प्रतिफल कर्व और सभी अवधियों के प्रतिफलों में परिवर्तन



स्रोत: फिक्स्ड इनकम मनी मार्केट एंड डेरिवेटिव्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (फिम्मडा)।

सारणी 2.3: ओओआई – प्रतिभूति कारोबार में लाभ/(हानि)

(₹ करोड़ में)

	सितं-20	दिसं-20	मार्च-21	जून-21	सितं-21
पीएसबी	6,847 (14.9%)	9,055 (18.0%)	5,104 (9.1%)	9,024 (17.7%)	6,273 (15.2%)
पीवीबी	4,523 (10.3%)	4,825 (10.3%)	2,499 (5.4%)	3,669 (7.7%)	1,996 (4.4%)
एफबी	622 (5.8%)	12 (0.2%)	-223 (-1.9%)	-417 (-4.3%)	-204 (-2.6%)

टिप्पणी: कोष्ठकों में दिए गए आंकड़े निवल परिचालन आय के प्रतिशत को ओओआई लाभ/(हानि) में दर्शाते हैं।

स्रोत: रिज़र्व बैंक पर्यवेक्षी विवरणियाँ।

¹⁹ पीवी01 ब्याज दर में एक आधार अंक परिवर्तन से पोर्टफोलियो के संपूर्ण मूल्य में संवेदनशीलता का एक माप है।

सारणी 2.4: एचएफटी पोर्टफोलियो का अवधि वार पीवी 01 वितरण

(प्रतिशत में)

	कुल (करोड़ में)	< 1 वर्ष से कम	1-5 वर्ष	5-10 वर्ष	>10 वर्ष से अधिक
पीएसबी	0.3 (0.4)	4.1 (2.9)	-35.0 (33.9)	166.0 (-21.1)	-35.1 (84.3)
पीवीबी	12.3 (9.6)	1.7 (3.8)	61.5 (76.4)	29.4 (5.1)	7.4 (14.7)
एफबी	10.6 (17.8)	-1.9 (1.4)	30.0 (63.1)	45.9 (25.4)	26.0 (10.1)

नोट: कोष्ठक में दिये गए मान जून 2021 के आंकड़े दर्शाते हैं।

स्रोत: व्यक्तिगत बैंक प्रस्तुतियां और आरबीआई स्टाफ गणना।

2.28 एससीबी में जमाराशि का प्रवाह हाल की अवधि में ऋण वृद्धि से काफी आगे निकल गया है। यद्यपि एससीबी में सक्रिय ब्याज दर जोखिम कम हो गया है किन्तु पीएसबी के लिए सक्रिय ब्याज दर बुक में पोर्टफोलियो का आकार बढ़ गया है। उनके निजी क्षेत्र के बैंकों और विदेशी बैंकों के एचएफटी पोर्टफोलियो में ब्याज दर एक्सपोजर पीएसबी की तुलना में अधिक रही। सभी एससीबी के लिए अवधिवार पीवी 01 वितरण 5-10 वर्ष बकेट की ओर शिफ्ट हो गए हैं (सारणी 2.4)। फिर भी बैंक अल्पावधि में अपनी ब्याज दर के दृष्टिकोण से हट गए और पीएसबी 1-5 वर्ष और 10 साल से अधिक की बकेट में प्रतिफल वृद्धि की संभावना देख रहे हैं और पीवीबी सभी बकेट में दीर्घकालिक स्थिति बनाते हुए परिकल्पना में लग गए। पीएसबी की पीवी 01, 5 से 10 साल के सेगमेंट में केंद्रित थी जबकि उनकी कुल पीवी01 संवेदनशीलता कम रही जबकि पीवीबी और एफबी क्रमशः 1-5 साल और 5-10 साल की बकेट पर केंद्रित थे।

2.29 ब्याज दरों में सख्ती से एफएस और एचएफटी श्रेणियों (प्रत्यक्ष प्रभाव) के तहत निवेश आय दबाव पड़ेगा। यह आकलन किया गया है कि ऊपर बढ़ते समानांतर उपज वक्र में 2.5 प्रतिशत अंकों की बदलाव से सिस्टम स्तर सीआरएआर में 77 आधार अंकों की कमी आएगी और सिस्टम लेवल प्रतिफल में 5.6 प्रतिशत की गिरावट आएगी (सारणी 2.5)।

2.30 पीएसबी और पीवीबी ने एसडीएल के माध्यम से अपने एचटीएम आबंटन को बढ़ाया और एचटीएम पोर्टफोलियो के उनके हिस्से में वर्ष-दर-वर्ष आधार (चार्ट 2.18) की वृद्धि हुई। पीएसबी के अप्राप्त लाभ असमान रूप से एसडीएल में केंद्रित थे जबकि पीवीबी के अप्राप्त ज्यादातर जी-सेक में संकेंद्रित थे जो उनकी धारिता के अनुरूप था (चार्ट 2.19)।

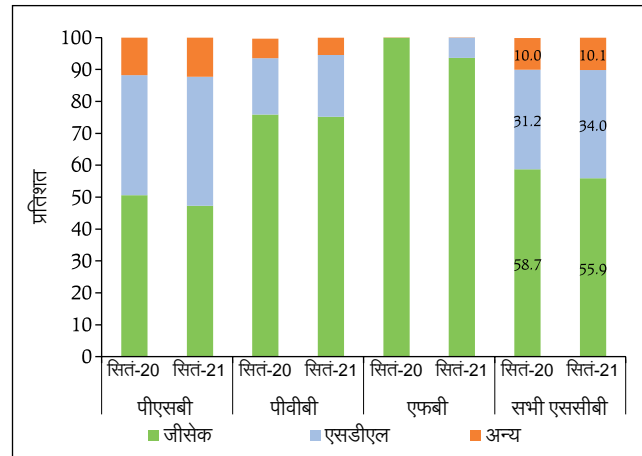
सारणी 2.5: ब्याज दर जोखिम - बैंक समूह - आघात और प्रभाव

(250 आधार अंक के आघात के तहत भारतीय रुपए में प्रतिफल वक्र के समानांतर ऊपर की ओर बदलाव)

	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक		निजी क्षेत्र के बैंक		विदेशी बैंक		सभी अनु-वाणिज्यिक बैंक	
	एफएस	एचएफटी	एफएस	एचएफटी	एफएस	एचएफटी	एफएस	एचएफटी
संशोधित अवधि	2.0	2.6	1.4	1.8	3.6	3.1	2.2	2.2
Reduction in CRAR (bps)	78		28		277		77	

स्रोत: व्यक्तिगत बैंक प्रस्तुतियां और आरबीआई स्टाफ गणना।

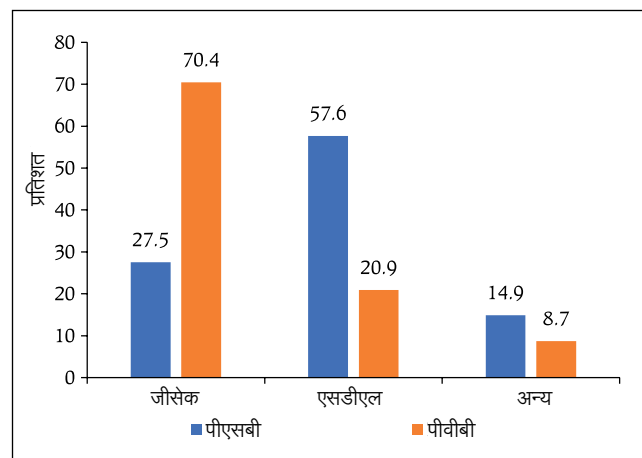
चार्ट 2.18 एचटीएम पोर्टफोलियो - संरचना



नोट: एफबी के एचटीएम पोर्टफोलियो में एसडीएल की हिस्सेदारी में वृद्धि नवंबर 2020 में डीबीएस बैंक इंडिया लिमिटेड के साथ लक्ष्मी विलास बैंक लिमिटेड के समामेलन के परिणामस्वरूप है।

स्रोत: व्यक्तिगत बैंक सबमिशन और आरबीआई स्टाफ की गणना।

चार्ट 2.19 एचटीएम पोर्टफोलियो- 30 सितंबर, 2021 को अप्राप्त लाभ



स्रोत: व्यक्तिगत बैंक सबमिशन और आरबीआई स्टाफ की गणना।

2.31 बैंकों को सितंबर 2020 और मार्च 2022 के बीच प्राप्त एसएलआर प्रतिभूतियों को एचटीएम श्रेणी के तहत वर्गीकृत करने की छूट देने वाली नियामक व्यवस्था का लाभ उठाते हुए बैंकों ने सितंबर 2021 में अपने एचटीएम पोर्टफोलियो को 20 प्रतिशत तक बढ़ा दिया था। एचटीएम में एसएलआर प्रतिभूतियों की पीएसबी और निजी क्षेत्र के बैंकों की होल्डिंग्स सितंबर 2021 में क्रमशः 20.4 प्रतिशत और उनके एनडीटीएल का 19.4 प्रतिशत थी जबकि विदेशी बैंकों के लिए यह 1.2 प्रतिशत थी।

ई. इक्विटी मूल्य जोखिम

2.32 समग्र प्रणाली के स्तर पर देखा जाए तो बैंकों के सीआरएआर पर इक्विटी कीमतों में उल्लेखनीय गिरावट का प्रभाव नियामक सीमाओं के कारण बैंकों के पूंजी बाजार एक्सपोजर के कम अनुपात को देखते हुए सीमित है। इक्विटी की कीमतों में 55 प्रतिशत की गिरावट की चरम स्थिति में प्रणाली स्तर के सीआरएआर में 49 आधारित अंक की गिरावट होगी, लेकिन किसी भी बैंक का सीआरएआर 9 प्रतिशत से नीचे नहीं गिरेगा (चार्ट 2.20)।

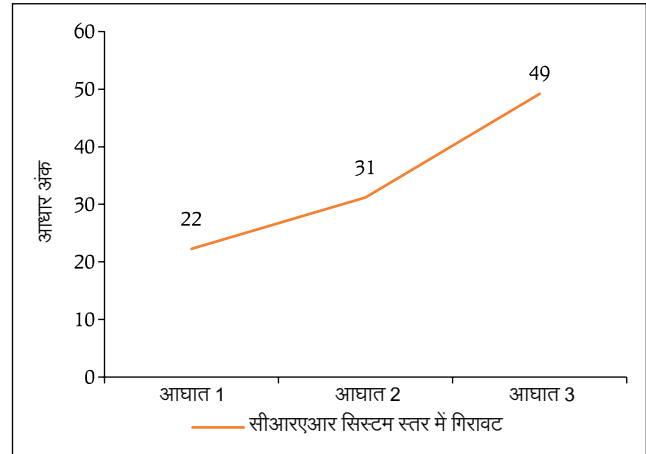
च. चलनिधि जोखिम

2.33 गैर-बीमित जमा²⁰ के लगभग 15 प्रतिशत के आहरण और स्वीकृत कार्यशील पूंजी सीमा के 75 प्रतिशत उपयोग के कल्पित परिदृश्यों के अंतर्गत नमूने में सभी बैंक दिन-प्रतिदिन चलनिधि आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपने HQLAs²¹ का उपयोग करते हुए आघात सहनीय बने रहेंगे (चार्ट 2.21)।

II.1.1 ऊर्ध्वमुखी दबाव परीक्षण (बॉटम-अप स्ट्रेस टेस्ट): व्युत्पन्नी (डेरिवेटिव्स) पोर्टफोलियो

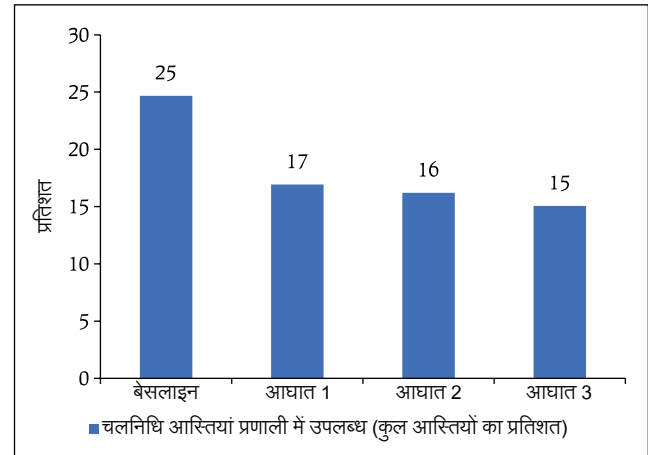
2.34 चुनिन्दा बैंकों²² के व्युत्पन्नी पोर्टफोलियो की 30 सितंबर 2021 की संदर्भित तारीख को क्रम से कई ऊर्ध्वमुखी परीक्षण (संवेदनशीलता विश्लेषण) किए गए जिसमें प्रत्येक के आधार पर ब्याज एवं विदेशी मुद्रा विनिमय दरों पर अलग-अलग चार आघात शामिल थे। जहां ब्याज दरों पर आघात दोनों तरफ

चार्ट 2.20 : इक्विटी मूल्य जोखिम



नोट: चुनिन्दा 46 एससीबी की प्रणाली के लिए
 शॉक 1: इक्विटी की कीमतों में 25 फीसदी की गिरावट
 शॉक 2: इक्विटी की कीमतों में 35 फीसदी की गिरावट
 शॉक 3: इक्विटी की कीमतों में 55 फीसदी की गिरावट
 स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी रिटर्न और कर्मचारियों की गणना

चार्ट 2.21 चलनिधि जोखिम: आघात और परिणाम



नोट: 1. एक बैंक को परीक्षण में 'विफल' माना जाता था, जब वह अपनी तरल परिसंपत्तियों की मदद से दबाव परिदृश्यों में आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ था - तरल संपत्ति का स्टॉक दबाव की स्थिति में नकारात्मक हो गया।
 2. चलनिधि आघातों में प्रतिबद्ध क्रेडिट लाइनों के 75 प्रतिशत की मांग (स्वीकृत कार्यशील पूंजी सीमाओं के साथ-साथ क्रेडिट प्रतिबद्धताओं के अप्रयुक्त हिस्से शामिल हैं) और नीचे दिए गए अनुसार गैर-बीमित जमा के एक हिस्से की निकासी भी शामिल है:

आघात	आघात 1	आघात 2	आघात 3
गैर-बीमित जमा आहरण का प्रतिशत	10	12	15

स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी रिटर्न और कर्मचारी आकलन।

²⁰ ₹5 लाख जमा बीमा सीमा (स्रोत: डीआईसीजीसी वार्षिक रिपोर्ट, 2020-21) के आधार पर गैर-बीमित जमा कुल जमाराशि का लगभग 49 प्रतिशत होने का अनुमान है।

²¹ एचक्यूएलए की गणना आवश्यक सीआरएआर से अधिक नकद भंडार के रूप में की गई थी अतिरिक्त एसएलआर निवेश, एनडीटीएल (एमएसएफ के अंतर्गत) के 3 प्रतिशत पर एसएलआर निवेश (परिपत्र डीओआर.बीसी.36/12.01.001/2020-21 दिनांक 5 फरवरी, 2021) और एनडीटीएल के 15 प्रतिशत पर अतिरिक्त एसएलआर निवेश (17 अप्रैल, 2020 के परिपत्र डीओआर.बीपी.बीसी.सं.65/21.04.098/2019-20 के बाद)।

²² प्रमुख सक्रिय अधिकृत डीलरों और ब्याज दर स्वैप का गठन करने वाले 20 बैंकों के नमूने के लिए डेरिवेटिव पोर्टफोलियो पर दबाव परीक्षण किए गए थे।

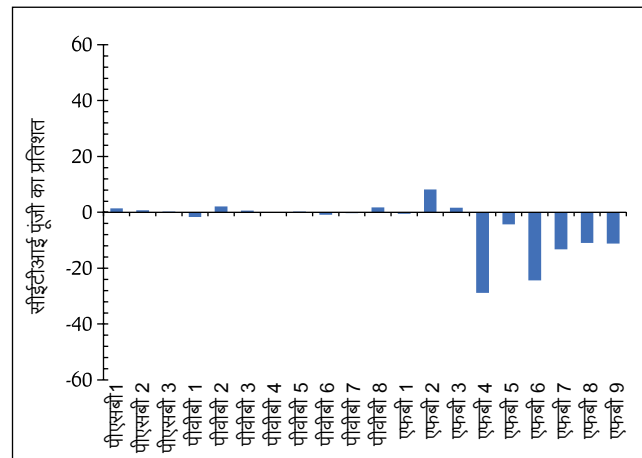
से 100 से 250 आधार अंकों के बीच लगाए गए थे, वहीं विदेशी मुद्रा विनिमय दरों पर 20 प्रतिशत मूल्यवृद्धि / मूल्यहास के आघात परिकल्पित किए गए थे।

2.35 परिणामों ने निम्नलिखित का संकेत दिया: (ए) जहां अधिकांश विदेशी बैंकों ने सीईटी1 पूंजी के अनुपात के रूप में काफी नकारात्मक निवल मार्क-टू-मार्केट (एमटीएम) स्थिति की सूचना दी, वहीं एमटीएम प्रभाव कुल मिलाकर पीएसबी और पीवीबी के लिए शांत था (चार्ट 2.22); (बी) बैंकों को ब्याज दर में वृद्धि से औसतन लाभ होगा; (सी) विदेशी मुद्रा डेरिवेटिव में पोजीशनिंग ऐसी है कि वे भारतीय रुपयों में मूल्यहास से मामूली लाभ पा रहे हैं और इसके विपरीत थी; (डी) ब्याज दरों में वृद्धि और भारतीय रुपयों के मूल्यहास दोनों से संभावित एमटीएम लाभ सितंबर 2021 में मार्च 2021 की तुलना में कम है, विशेष रूप से बाद के मामले में और (ई) ब्याज दरों में गिरावट से पिछली अवधि की तुलना में सितंबर 2021 के अंत में शुद्ध एमटीएम में अत्यधिक नुकसान होगा। 2021 (चार्ट 2.23)।

II.2 प्राथमिक (शहरी) सहकारी बैंक

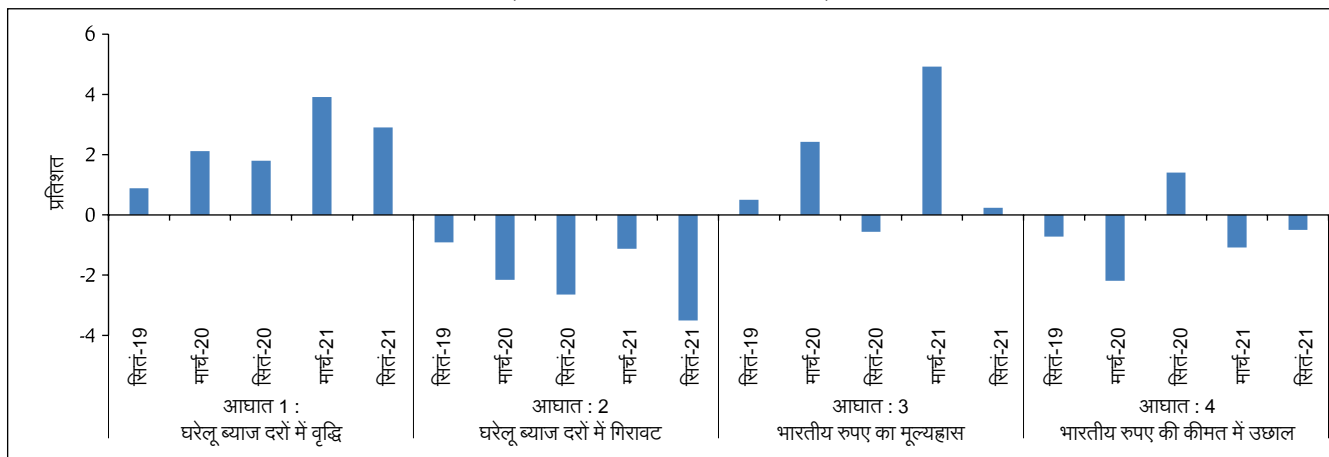
2.36 प्राथमिक (शहरी) सहकारी बैंकों (यूसीबी)²³ में सितंबर 2021 के अंत तक मामूली ऋण वृद्धि देखी गई, जिसमें गैर-अनुसूचित शहरी सहकारी बैंक (एनएसयूसीबी) प्रमुख

चार्ट 2.22 कुल डेरिवेटिव पोर्टफोलियो का एमटीएम, चुनिंदा बैंक - सितंबर 2021



नोट: पीएसबी: सरकारी क्षेत्र के बैंक, पीवीबी: निजी क्षेत्र के बैंक, एफबी: विदेशी बैंक
 स्रोत: नमूना बैंक (व्युत्पन्नी (डेरिवेटिव्स) पोर्टफोलियो पर ऊर्ध्वमुखी दबाव परीक्षण)।

चार्ट 2.23 चुनिंदा बैंकों के व्युत्पन्नी (डेरिवेटिव्स) पोर्टफोलियो पर आघात का प्रभाव (आघात लगने पर नेट एमटीएम में बदलाव)



नोट: बेसलाइन के संबंध में लागू आघात के कारण नेट एमटीएम में बदलाव है।
 स्रोत: व्युत्पन्नी (डेरिवेटिव्स) पोर्टफोलियो पर ऊर्ध्वमुखी दबाव परीक्षण के तहत कवर किए गए नमूना बैंक।

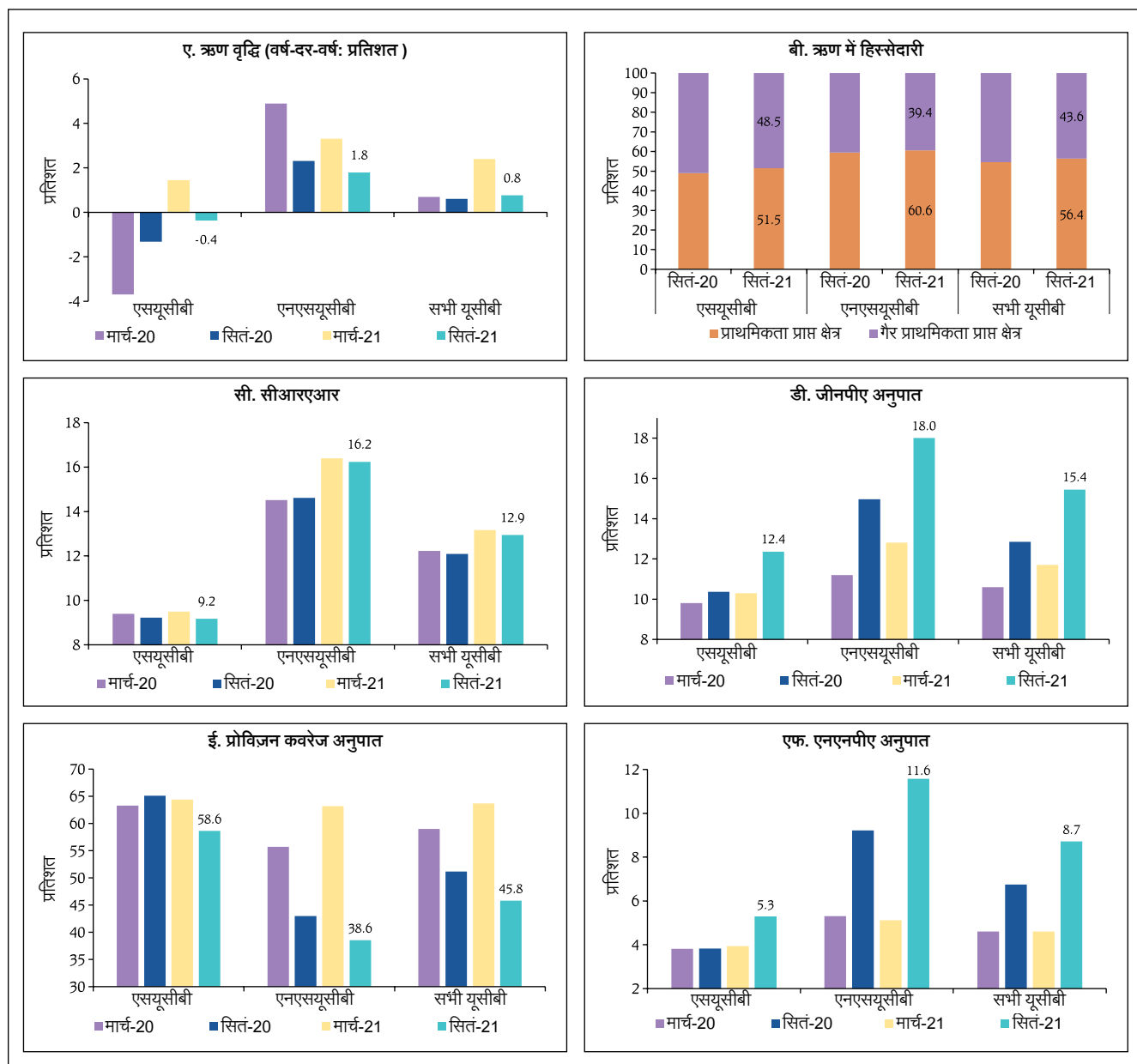
²³ डेटा अनंतिम हैं और ऑफ-साइट निगरानी (ओएसएस) रिटर्न पर आधारित हैं।

योगदानकर्ता थे (चार्ट 2.24 ए)। शहरी सहकारी बैंकों के बकाया ऋण के आधे से अधिक के लिए प्राथमिकता-प्राप्त क्षेत्र को उधार दिया गया (चार्ट 2.24 बी)। शहरी सहकारी बैंकों का सीआरएआर मार्च 2021 से थोड़ा गिरकर सितंबर 2021 में 12.9 प्रतिशत पर पहुंच गया (चार्ट 2.24 सी)।

2.37 शहरी सहकारी बैंक, विशेष रूप से कोविड-19 की दूसरी लहर से प्रभावित हुए हैं, जिनमें एसयूसीबी (सितंबर

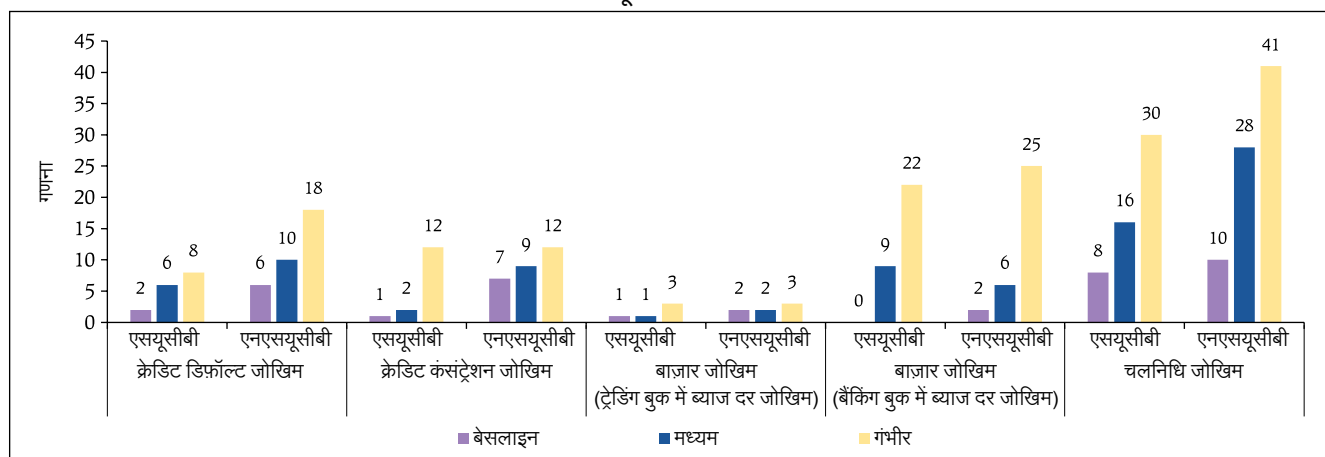
2021 के अंत में 12.4 प्रतिशत) और एनएसयूसीबी (18.0 प्रतिशत) दोनों के लिए जीएनपीए अनुपात तेजी से बढ़ रहे हैं (चार्ट 2.24 डी)। यूसीबी की दोनों श्रेणियों के लिए प्रावधान कम हो गए जिसके परिणामस्वरूप सेक्टर के लिए पीसीआर 2021-22 की दूसरी तिमाही के अंत में 45.8 प्रतिशत तक गिर गया और एनएनपीए अनुपात तेजी से बढ़कर 8.7 प्रतिशत हो गया (चार्ट 2.24 ई और एफ)।

चार्ट 2.24 शहरी सहकारी बैंकों के क्रेडिट प्रोफाइल और आरिस्त गुणवत्ता संकेतक



स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी रिटर्न और कर्मचारी आकलन।

चार्ट 2.25 यूसीबी का दबाव परीक्षण



स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी रिटर्न और कर्मचारी आकलन।

दबाव परीक्षण

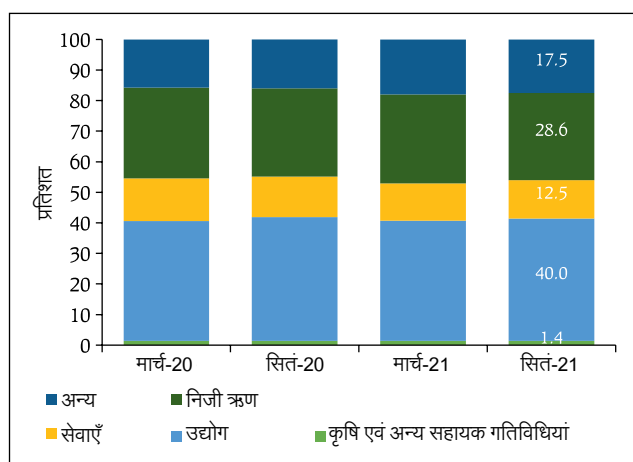
2.38 शहरी सहकारी बैंकों के कुछ चुनिंदा सेटों की 31 मार्च 2021 को उनकी रिपोर्ट की गई वित्तीय स्थिति के आधार पर क्रेडिट जोखिम (डिफॉल्ट जोखिम और कंसंट्रेशन जोखिम), बाजार जोखिम (ट्रेडिंग बुक और बैंकिंग बुक में ब्याज दर जोखिम) और चलनिधि जोखिम को शामिल करते हुए दबाव परीक्षण किए गए थे।

2.39 परिणाम दर्शाते हैं कि (ए) परीक्षण किए गए सभी पांच मानकों में कुछ बैंक आधारभूत परिदृश्य में भी विफल हो गए थे; (बी) चलनिधि आघात वाले परिदृश्यों में सबसे अधिक संख्या में शहरी सहकारी बैंक प्रभावित हुए; और (सी) सामान्य तौर पर, प्रतिकूल परिदृश्यों में विफल होने / हानिकारक रूप से प्रभावित होने वाले एनएसयूसीबी की संख्या एसयूसीबी की तुलना में अधिक है (चार्ट 2.25)।

II.3 एनबीएफसी²⁵

2.40 एनबीएफसी द्वारा सितंबर 2021 के अंत तक दिया गया कुल ऋण ₹ 27.4 लाख करोड़ था। उद्योग के लिए ऋण पोर्टफोलियो का सबसे बड़ा खंड (40.0 प्रतिशत) है, इसके बाद व्यक्तिगत ऋण (28.6 प्रतिशत), सेवाएं (12.5 प्रतिशत) और कृषि (1.4 प्रतिशत) (चार्ट 2.26) हैं। बड़े उद्योग और ऑटो ऋण

चार्ट 2.26 ऋण का क्षेत्रीय परिणियोजन



स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी रिटर्न और कर्मचारी आकलन।

²⁴ दबाव परीक्षण मार्च 2021 की वित्तीय स्थिति के संदर्भ में चुनिंदा 118 शहरी सहकारी बैंकों (49 एसयूसीबी, 69 एनएसयूसीबी) के लिए आयोजित किया जाता है जिनका परिसंपत्ति आकार ₹1,000 करोड़ से अधिक है। स्ट्रेस टेस्ट के लिए उपयोग की जाने वाली विस्तृत कार्यप्रणाली अनुबंध 2 में दी गई है।

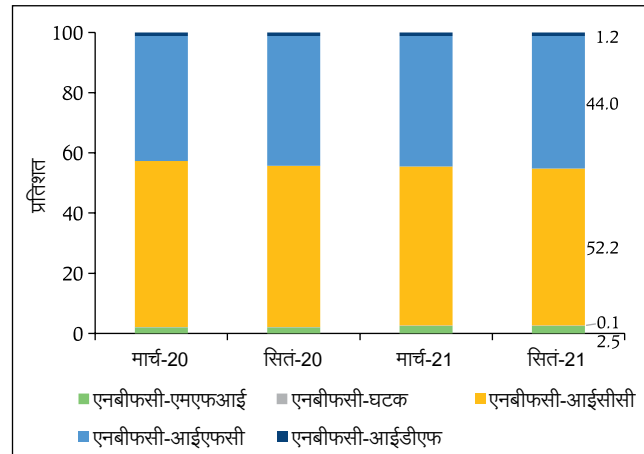
²⁵ इस खंड में किए गए विश्लेषण जमा लेने और जमा न करने वाली प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण एनबीएफसी (सीआईसी को छोड़कर) के 9, 2021 तक उपलब्ध आंकड़ों पर आधारित है जो अनंतिम हैं। मार्च 2020, सितंबर 2020, मार्च 2021 और सितंबर 2021 के डेटासेट में क्रमशः 411, 404, 409 और 421 निकाय शामिल हैं।

में एनबीएफसी के सबसे बड़े दो क्रेडिट पोर्टफोलियो के उप-क्षेत्र क्रमशः 32.4 प्रतिशत और 13.1 प्रतिशत की हिस्सेदारी के साथ शामिल थे। सरकारी स्वामित्व वाली एनबीएफसी का एनबीएफसी क्षेत्र में एक प्रमुख स्थान था जो कुल विस्तारित ऋण का 48.6 प्रतिशत और उद्योग क्षेत्र को दिए गए ऋण का 81.0 प्रतिशत था।

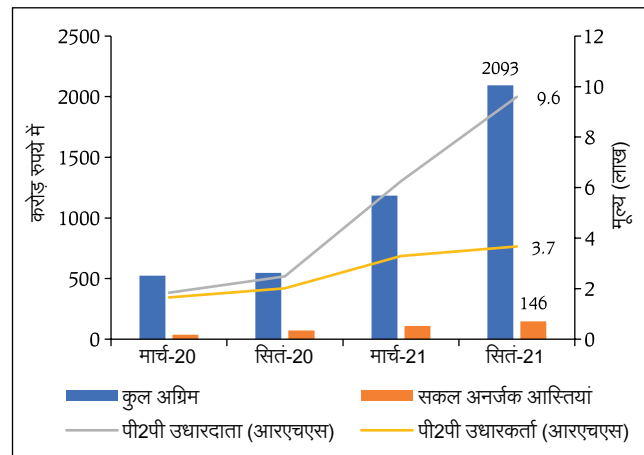
2.41 एनबीएफसी की श्रेणी द्वारा ऋण वितरण के संदर्भ में निवेश और ऋण कंपनियों और अवसंरचना वित्त कंपनियों की हिस्सेदारी के साथ 30 सितंबर 2021 को सकल अग्रिमों में हिस्सा क्रमशः 52.2 प्रतिशत और 44.0 प्रतिशत था (चार्ट 2.27)। एनबीएफसी-पी2पी खातों के माध्यम से कुल एनबीएफसी उधार के एक छोटे हिस्से के लिए उधार देना (30 सितंबर, 2021 तक ₹2,093 करोड़); यद्यपि महामारी की अवधि के दौरान गतिविधि में महत्वपूर्ण कर्षण था जिससे कम ब्याज दर के माहौल में उच्च प्रतिफल के लिए निवेशकों की तलाश के कारण क्रेडिट मध्यस्थता और उधारदाताओं की संख्या दोनों में तीन गुना वृद्धि हुई (चार्ट 2.28)।

2.42 एनबीएफसी का सीआरएआर सितंबर 2021 के अंत में 26.3 प्रतिशत था, जो मार्च 2021 की तुलना में 10 आधार अंक की मामूली वृद्धि थी। परिसंपत्तियों पर रिटर्न (आरओए) मार्च 2021 में 1.3 प्रतिशत से बढ़कर सितंबर में 1.7 प्रतिशत हो गया। 2021 (चार्ट 2.29)।

चार्ट 2.27 सकल अग्रिमों में विभिन्न एनबीएफसी श्रेणियों की हिस्सेदारी

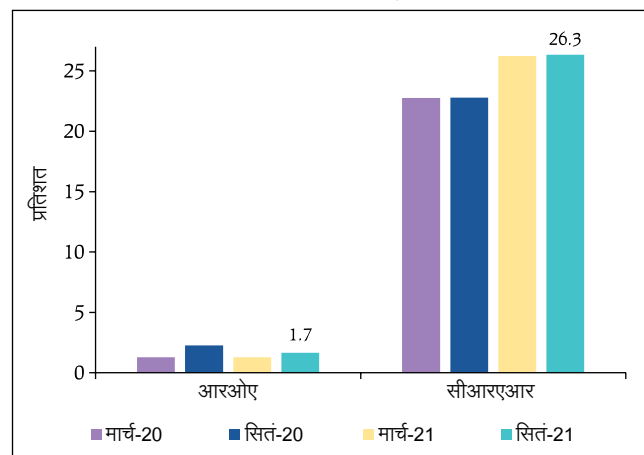


चार्ट 2.28 पी 2 पी एनबीएफसी की प्रोफाइल



स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी रिटर्न और कर्मचारी आकलन।

चार्ट 2.29 लाभप्रदता और पूंजी पर्याप्तता



स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी रिटर्न और कर्मचारी आकलन।

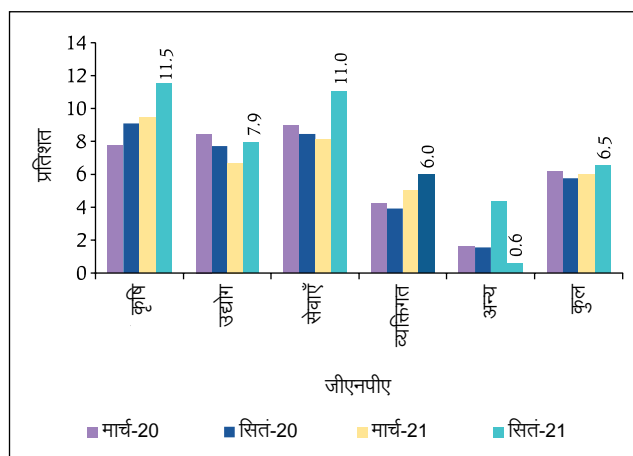
2.43 एनबीएफसी का जीएनपीए अनुपात जो सितंबर 2020 में घट गया था वह उस समय प्रचलित परिसंपत्ति वर्गीकरण पर उहराव दर्शाता था, सितंबर 2021 के अंत तक बढ़कर 6.5 प्रतिशत हो गया। उद्योग क्षेत्र में जीएनपीए जो एनबीएफसी एक्सपोजर का सबसे बड़ा हिस्सा है, मार्च 2021 के 6.7 प्रतिशत से बढ़कर सितंबर 2021 में 7.9 प्रतिशत हो गया (चार्ट 2.30)। इस क्षेत्र के जीएनपीए में सरकारी स्वामित्व वाली एनबीएफसी की हिस्सेदारी 31.6 प्रतिशत थी।

2.44 एनबीएफसी के निधियों के स्रोतों का लगभग दो-तिहाई उधारी में था (चार्ट 2.31)। ये मुख्य रूप से डिबेंचर (41.0 प्रतिशत) और बैंक उधार (31.2 प्रतिशत) के रूप में थे जिसमें एक मामूली हिस्से (चार्ट 2.32) के लिए वाणिज्यिक पत्र (3.1 प्रतिशत) था। म्यूचुअल फंड, एनबीएफसी द्वारा जारी किए गए डिबेंचर के सबसे बड़े ग्राहक थे इसके बाद बीमा कंपनियों और बैंकों का नंबर आता है।

दबाव परीक्षण²⁶ - क्रेडिट जोखिम

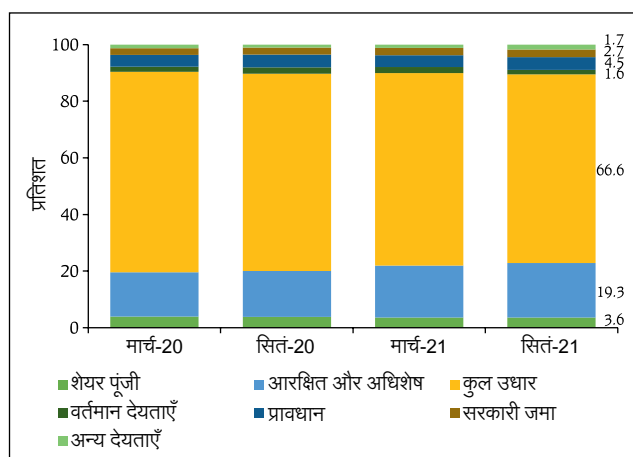
2.45 एनबीएफसी क्षेत्र के ऋण जोखिम आघातों के प्रति आघातहनीयता का आकलन करने के लिए 191 एनबीएफसी²⁷ के नमूने के लिए दो परिदृश्यों के तहत सिस्टम स्तर के दबाव परीक्षण किए गए हैं - मध्यम और उच्च जोखिम परिदृश्य जिसमें इस क्षेत्र के जीएनपीए अनुपात में क्रमशः 1 एसडी और 2 एसडी की वृद्धि शामिल है। मार्च 2021 (बेसलाइन पोजीशन) तक नमूना एनबीएफसी का जीएनपीए अनुपात 6.5 प्रतिशत और सीआरएआर 26.6 प्रतिशत था जिसमें 10 एनबीएफसी (जिनका 31 मार्च, 2021 तक इस क्षेत्र की कुल आस्तियों में

चार्ट 2.30 : एनबीएफसी का क्षेत्रीय जीएनपीए



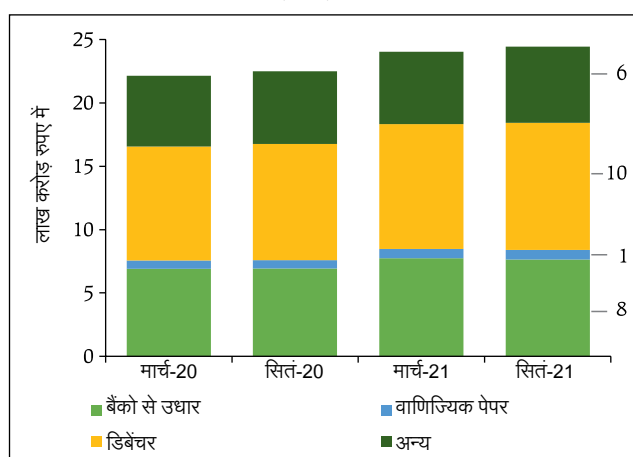
स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी रिटर्न और कर्मचारी आकलन।

चार्ट 2.31 : एनबीएफसी के निधियों के स्रोत



स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी रिटर्न और कर्मचारी आकलन।

चार्ट 2.32 एनबीएफसी द्वारा उधार



स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी रिटर्न और कर्मचारी आकलन।

²⁶ एनबीएफसी के लिए दबाव परीक्षण के लिए उपयोग की जाने वाली विस्तृत कार्यप्रणाली अनुबंध 2 में दी गई है।

²⁷ नमूने में जमा राशि स्वीकार करने वाली 10 एनबीएफसी और 181 जमाराशि स्वीकार न करने वाली प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण (एनडीएसआई) एनबीएफसी 31 मार्च, 2021 को 33.98 लाख करोड़ रुपये की कुल संपत्ति थी, जो इस क्षेत्र की कुल संपत्ति का लगभग 86.1 प्रतिशत है। जीएनपीए के स्तर में एक एसडी शॉक में 20 प्रतिशत की वृद्धि का अनुमान है।

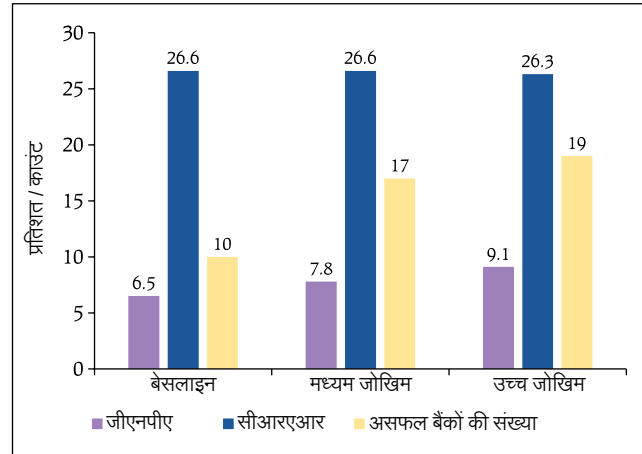
हिस्सा 4.6 प्रतिशत जो सीआरएआर को 15 प्रतिशत की न्यूनतम नियामक आवश्यकता से कम (चार्ट 2.33) रिपोर्ट करती थीं।

2.46 जीएनपीए अनुपात में 2 एसडी वृद्धि के उच्च जोखिम वाले आघात के मामले में क्षेत्र का सीआरएआर 30 आधार अंक घटकर 26.3 प्रतिशत हो जाएगा जबकि 1 एसडी आघात के मामले में कोई प्रभाव नहीं देखा गया। दोनों परिदृश्यों में इस क्षेत्र की पूंजी पर्याप्तता 15 प्रतिशत की न्यूनतम नियामक आवश्यकता से ऊपर बनी रहेगी। तथापि प्रत्येक के आधार पर आघातों के प्रभावों को देखते हुए 17 एनबीएफसी का सीआरएआर - जिसमें नमूने में ली गई परिसंपत्तियों के 7.9 प्रतिशत की परिसंपत्ति शामिल है - मध्यम जोखिम परिदृश्य के अंतर्गत न्यूनतम नियामक अपेक्षाओं से नीचे गिर जाएगा जबकि 19 एनबीएफसी का जिसमें नमूने में ली गई परिसंपत्तियों के 11.5 प्रतिशत की परिसंपत्ति शामिल है - उच्च जोखिम परिदृश्य में समान रूप से प्रभावित होगा।

दबाव परीक्षण - चलनिधि जोखिम

2.47 चलनिधि आघातों के प्रति एनबीएफसी क्षेत्र की समुत्थानशीलता का आकलन नकदी बहिर्वाह में अनुमानित वृद्धि और नकदी अंतर्वाह²⁸ में कमी के संयोजन के प्रभाव को लेकर किया जाता है। दो परिदृश्यों को लागू किया जाता है यथा- मध्यम जोखिम परिदृश्य जिसमें अंतर्वाह में 5 प्रतिशत संकुचन और बहिर्वाह में 10 प्रतिशत की वृद्धि की जाती है, और उच्च जोखिम परिदृश्य जिसमें अंतर्वाह में 10 प्रतिशत की गिरावट और बहिर्वाह में 15 प्रतिशत की वृद्धि की जाती है। परिणामों से संकेत मिलता है कि मध्यम और उच्च जोखिम परिदृश्यों में अगले एक वर्ष में चलनिधि की स्थिति में नकारात्मक संचयी बेमेल का सामना करने वाली एनबीएफसी की संख्या क्रमशः 52 में (नमूने के परिसंपत्ति आकार के 24.5 प्रतिशत को कवर करते हुए) और 67 में (34.7 प्रतिशत) तक हो सकती है (सारणी 2.6)।

चार्ट 2.33 : एनबीएफसी में ऋण जोखिम – प्रणाली स्तर



स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी रिटर्न और कर्मचारी आकलन।

सारणी 2.6 : एनबीएफसी में चलनिधि जोखिम

अगले एक वर्ष में बहिर्वाह के प्रतिशत के रूप में संचयी असंगतता	चलनिधि बेमेल रखने वाली एनबीएफसी की संख्या		
	बेसलाइन	मध्यम	उच्च
50 % से अधिक	10 (5.9%)	10 (5.9%)	11 (6.1%)
20 % से 50 % के बीच	1 (0.2%)	5 (2.8%)	22 (9.0%)
20 % से कम	7 (3.8%)	37 (15.8%)	34 (19.6%)

नोट: कोष्ठक में दिए गए आंकड़े नमूने के परिसंपत्ति आकार में हिस्सेदारी दर्शाते हैं।

स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी रिटर्न और कर्मचारी आकलन।

²⁸ चलनिधि जोखिम पर आधारित दबाव परीक्षण 209 एनबीएफसी के नमूने पर किया गया था - जिसमें 8 जमा स्वीकार करने वाली एनबीएफसी, 169 एनडीएसआई एनबीएफसी और 32 कोर निवेश कंपनियां (सीआईसी) शामिल हैं। मार्च 2021 तक नमूने की कुल संपत्ति का आकार 21.5 लाख करोड़ रुपये था, जिसमें 54.6 प्रतिशत क्षेत्र शामिल था - सरकार के स्वामित्व वाली एनबीएफसी और वर्तमान में समाधान के तहत कंपनियां नमूने में शामिल नहीं हैं।

II.4 अंतर्संबद्धता

2.48 एक वित्तीय प्रणाली नेटवर्क में, घटक वित्तीय संस्थानों के बीच आपस में दिए गए ऋण, किए गए निवेश तथा रखी गई जमा राशियों के रूप में परस्पर द्विपक्षीय संबंध होते हैं। ये सहबद्धताएं निधियन, चलनिधि, निवेश और जोखिम विविधिकरण के स्रोत के रूप में कार्य करती हैं, लेकिन वे प्रतिकूल परिस्थितियों में उन चैनलों में भी बदल सकती हैं जिनके द्वारा आघात फैल सकते हैं, परिणामस्वरूप प्रणालीगत आघात का संक्रमण और प्रवर्द्धन हो सकता है।

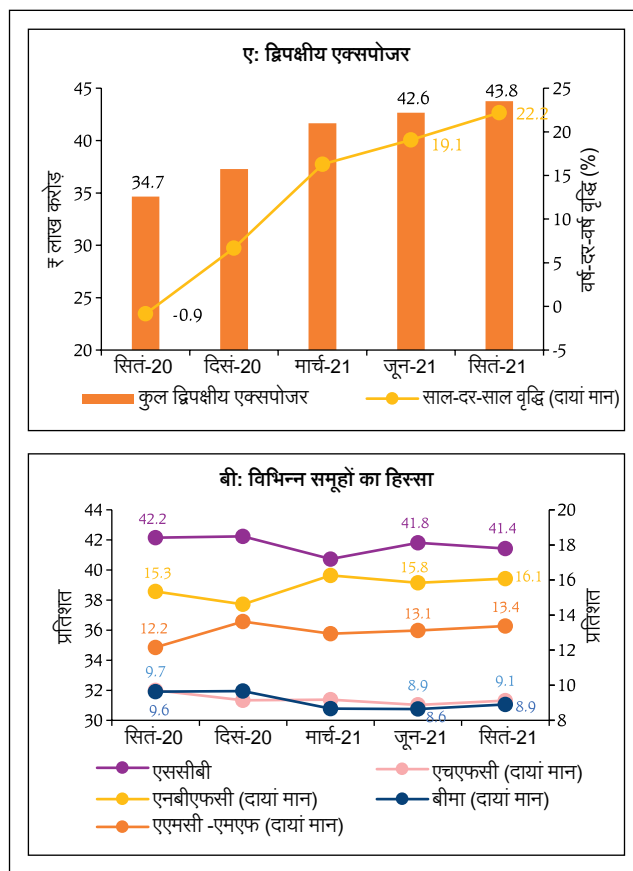
II.4.1 वित्तीय प्रणाली नेटवर्क^{29 30}

2.49 वित्तीय प्रणाली में संस्थाओं के बीच कुल बकाया द्विपक्षीय एक्सपोजर³¹ 2020-21 की पहली छमाही (चार्ट 2.34 ए) से बढ़ रहा है। यह मुख्य रूप से एससीबी के एनबीएफसी और एचएफसी के प्रति और आर्स्टि प्रबंध कंपनी-म्यूचुअल फंडों (एमसी-एमएफ) के वित्तीय प्रणाली के प्रति बढ़े³² हुए एक्सपोजर के कारण था।

2.50 एससीबी के पास द्विपक्षीय एक्सपोजर का सबसे बड़ा हिस्सा था, हालांकि यह महामारी-पूर्व के स्तर से कम रहा। एनबीएफसी और एचएफसी के हिस्से में मार्च 2021 के स्तर से मामूली रूप से कमी आ गई। इक्विटी बाजारों में भारी उछाल के कारण, द्विपक्षीय एक्सपोजर में एमसी-एमएफ के हिस्से में वृद्धि जारी रही। (चार्ट 2.34 बी)

2.51 अंतर-सेक्टरवार³³ एक्सपोजर के संदर्भ में, एमसी-एमएफ के बाद बीमा कंपनियाँ प्रणाली में निधि की सबसे बड़ी प्रदाता थीं, जबकि एनबीएफसी के बाद एचएफसी निधि के

चार्ट 2.34: वित्तीय प्रणाली में संस्थाओं के बीच द्विपक्षीय एक्सपोजर



स्रोत: विभिन्न विनियामकों की पर्यवेक्षी विवरणियाँ और आरबीआई स्टाफ की गणनाएं

²⁹ विश्लेषण में प्रयुक्त नेटवर्क मॉडल शेरी मार्केज (यूनिवर्सिटी ऑफ एसेक्स) और डॉ. सिमोन गांसॉटे (बाथ यूनिवर्सिटी) द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक की वित्तीय स्थिरता इकाई के सहयोग से विकसित किया गया है।

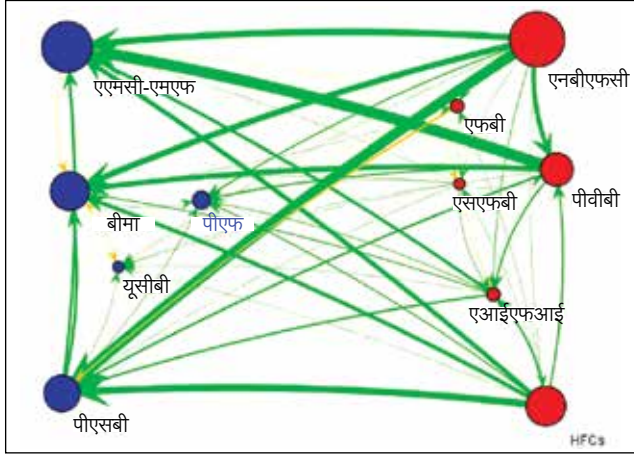
³⁰ यहाँ और बाद के भाग में प्रस्तुत विश्लेषण निम्नलिखित आठ समूहों की 224 संस्थाओं के डेटा पर आधारित है: एससीबी, अनुसूचित यूसीबी (एसयूसीबी), एमसी-एमएफ, एनबीएफसी, एचएफसी, बीमा कंपनियाँ, पेंशन निधियाँ और एआईएफआई। कवर की गई इन 224 संस्थाओं में 77 एससीबी; 11 लघु वित्त बैंक (एसएफबी); 20 एसयूसीबी; 25 एमसी-एमएफ (जो कि म्यूचुअल फंड क्षेत्र के 98 प्रतिशत से अधिक एयूएम को कवर करते हैं); 40 एनबीएफसी (जमा लेने वाली और गैर जमा लेने वाली दोनों ही प्रणालीगत महत्वपूर्ण कंपनियाँ जो कुल एनबीएफसी आस्तियों का लगभग 70 प्रतिशत प्रतिनिधित्व करती हैं); 22 बीमा कंपनियाँ (जो क्षेत्र की आस्तियों को 90 प्रतिशत से अधिक कवर करती हैं); 18 एचएफसी (जो कुल एचएफसी आस्तियों के 95 प्रतिशत से अधिक का प्रतिनिधित्व करती हैं); 7 पेंशन निधियाँ (पीएफ) और 4 एआईएफआई (नाबार्ड, एक्सिम, एनएचबी और सिडबी) शामिल हैं।

³¹ एक ही समूह की संस्थाओं के बीच एक्सपोजर शामिल हैं। एक्सपोजर 30 सितंबर 2021 को बकाया स्थितियाँ हैं और मोटे तौर पर निधि आधारित एवं गैर-निधि-आधारित एक्सपोजर में विभाजित हैं। निधि आधारित एक्सपोजर में मुद्रा बाजार लिखत, ऋण और अग्रिम, दीर्घावधि ऋण लिखत और इक्विटी निवेश शामिल हैं। गैर-निधि-आधारित एक्सपोजर में साख-पत्र, बैंक गारंटी और डेरिवेटिव लिखत (सीसी आई एल द्वारा गारंटीकृत निपटान छोड़कर) सम्मिलित हैं।

³² वित्तीय नेटवर्क विश्लेषण में 4 नई संस्थाओं के निगमन ने भी इस वृद्धि में अंशदान किया।

³³ अंतर-सेक्टरवार एक्सपोजर में वित्तीय प्रणाली में एक ही सेक्टर की संस्थाओं के बीच के लेन-देन शामिल नहीं होते हैं।

चार्ट 2.35: वित्तीय प्रणाली का नेटवर्क प्लॉट- सितंबर 2021



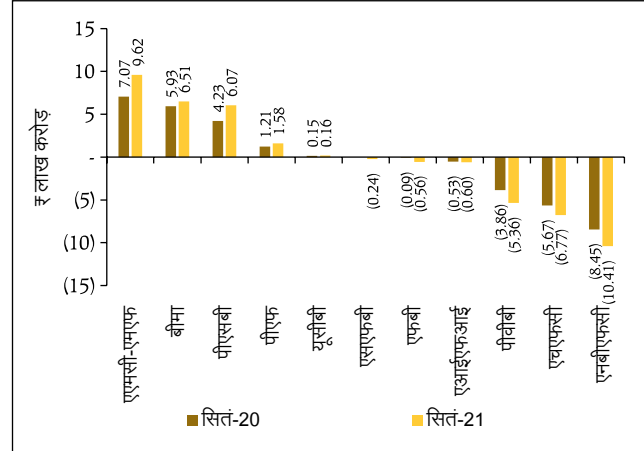
नोट: प्राप्य और देय में एक ही समूह की संस्थाओं के बीच लेन-देन को समावेशित नहीं किया जाता है। लाल रंग के गोले निवल देय संस्थाएं हैं और नीले रंग के गोले निवल प्राप्य संस्थाएं हैं।
स्रोत: विभिन्न विनियामकों की पर्यवेक्षी विवरणियां और आरबीआई स्टाफ की गणनाएं

सबसे बड़े प्राप्तकर्ता रहे। प्रमुख बैंक समूहों के बीच पीएसबी की संपूर्ण वित्तीय क्षेत्र की तुलना में निवल प्राप्य स्थिति थी जबकि पीवीबी की निवल देय स्थिति थी (चार्ट 2.35)।

2.52 सितंबर 2021 में, वित्तीय प्रणाली से पीएसबी और एमसी-एमएफ की निवल प्राप्तियाँ एक साल पहले की स्थिति की तुलना में काफी बढ़ीं। वित्तीय प्रणाली से निधि के प्राप्तकर्ताओं के बीच पीवीबी, एनबीएफसी और एचएफसी ने बड़ी वृद्धि³⁴ दर्ज की (चार्ट 2.36)।

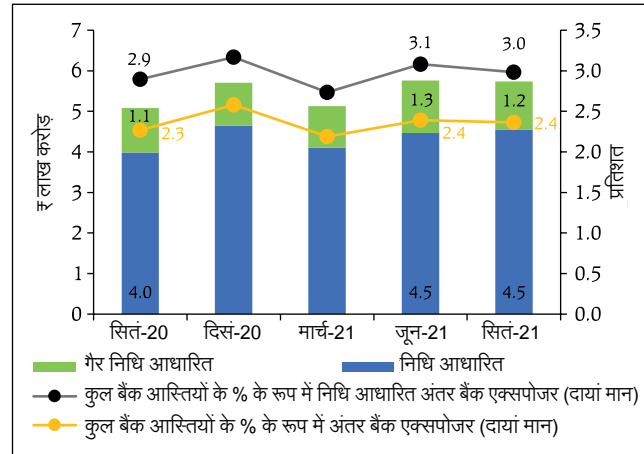
2.53 सितंबर 2021 तक अंतर-बैंक एक्सपोजर बैंकिंग प्रणाली की कुल आस्तियों का 3 प्रतिशत था। 2020-21 के दौरान बैंक विलयों और प्रणाली में प्रचुर मात्रा में चलनिधि के परिणामस्वरूप बैंकिंग प्रणाली की कुल आस्तियों में निधि आधारित³⁵ और गैर-निधि-आधारित (एनएफबी)³⁶ अंतर बैंक एक्सपोजर, दोनों के हिस्से में हास हुआ। 2021-22 में अब तक, एनएफबी एक्सपोजर (मुख्य रूप से साख-पत्रों और बैंक गारंटियों) के महामारी-पूर्व के स्तर पर वापस आने के साथ कुछ वृद्धि हुई थी (चार्ट 2.37)।

चार्ट 2.36: संस्थाओं द्वारा निवल प्राप्तियाँ (+ve) / देयताएं (-ve)



स्रोत: विभिन्न नियामकों की पर्यवेक्षी विवरणियां और आरबीआई स्टाफ की गणनाएं

चार्ट 2.37: अंतर-बैंक बाजार



स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां और स्टाफ की गणनाएं

³⁴ यह सितंबर 2020 की तुलना में अतिरिक्त संस्थाओं के समावेशन के कारण भी है।

³⁵ निधि आधारित एक्सपोजर अल्पावधि एक्सपोजर और दीर्घावधि एक्सपोजर दोनों को सम्मिलित करते हैं। अल्पावधि एक्सपोजर पर डेटा सात श्रेणियों में एकत्र किया जाता है- रेपो (गैर-केन्द्रीय तौर पर समाशोधित / नॉन सेंट्रली फ्लोयर्ड); मांग मुद्रा; वाणिज्यिक पत्र; जमा प्रमाणपत्रों; अल्पावधि ऋण; अल्पावधि जमा राशियां और अन्य अल्पावधि एक्सपोजर। दीर्घावधि एक्सपोजरों पर डेटा पाँच श्रेणियों में एकत्र किया जाता है- इक्विटी; दीर्घावधि कर्ज; दीर्घावधि ऋण; दीर्घावधि जमा राशियां और अन्य दीर्घावधि देयताएं।

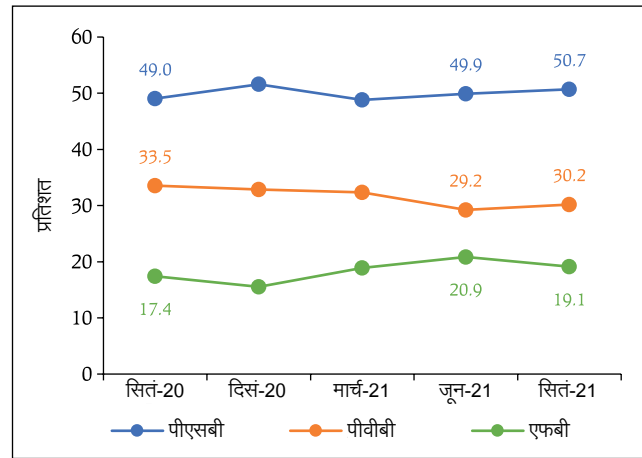
³⁶ गैर-निधि-आधारित एक्सपोजर निम्नलिखित को समावेशित करता है- बकाया बैंक गारंटियाँ, बकाया साख-पत्र, डेरिवेटिव बाजार (उन एक्सपोजरों को छोड़कर जिनके लिए सीसीआइएल द्वारा निपटान की गारंटी है) में धनात्मक बाजार मूल्य स्थितियों को बही में अंकित करना।

2.54 पीसबी ने अंतर बैंक बाजार में अपना वर्चस्व बनाए रखा और उनके हिस्से में क्रमिक वृद्धि हुई। मार्च 2021 के स्तर की तुलना पीवीबी की हिस्सेदारी में गिरावट आई, जबकि एफबी की हिस्सेदारी बढ़ी (चार्ट 2.38)।

2.55 निधि-आधारित अंतर-बैंक बाजार का लगभग 77 प्रतिशत अल्पावधि (एसटी) प्रकृति का था, जिसमें एसटी जमाराशियों का हिस्सा सर्वाधिक था, इसके बाद एसटी ऋण और मांग मुद्रा बाजार एक्सपोजर थे। दीर्घावधि (एलटी) निधि आधारित अंतर-बैंक एक्सपोजर में दीर्घावधि (एलटी) ऋणों का सर्वाधिक हिस्सा था (चार्ट 2.39)।

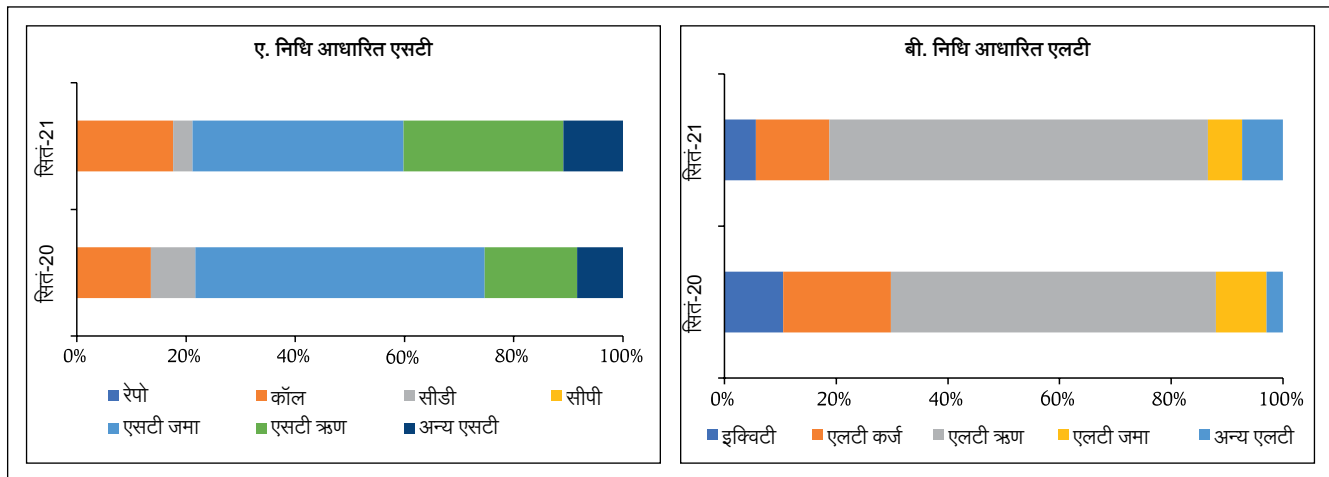
2.56 अंतर-बैंक बाजार की आम तौर पर एक कोर परिधि नेटवर्क संरचना^{37 38} होती है। सितंबर 2021 के अंत तक, सबसे आंतरिक कोर में चार बैंक थे, और मिड-कोर- सर्कल में छः बैंक थे। सबसे आंतरिक चार कोर बैंकों में बड़े सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के बैंक समावेशित थे। मध्य-कोर बैंकों में बड़े पीसबी और पीवीबी जबकि अधिकतर पुराने प्राइवेट सेक्टर

चार्ट 2.38: अंतर बैंक बाजार में विभिन्न बैंक समूह- सितंबर 2021



स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां और स्टाफ की गणनाएं

चार्ट 2.39: निधि आधारित अंतर बैंक बाजार की संरचना

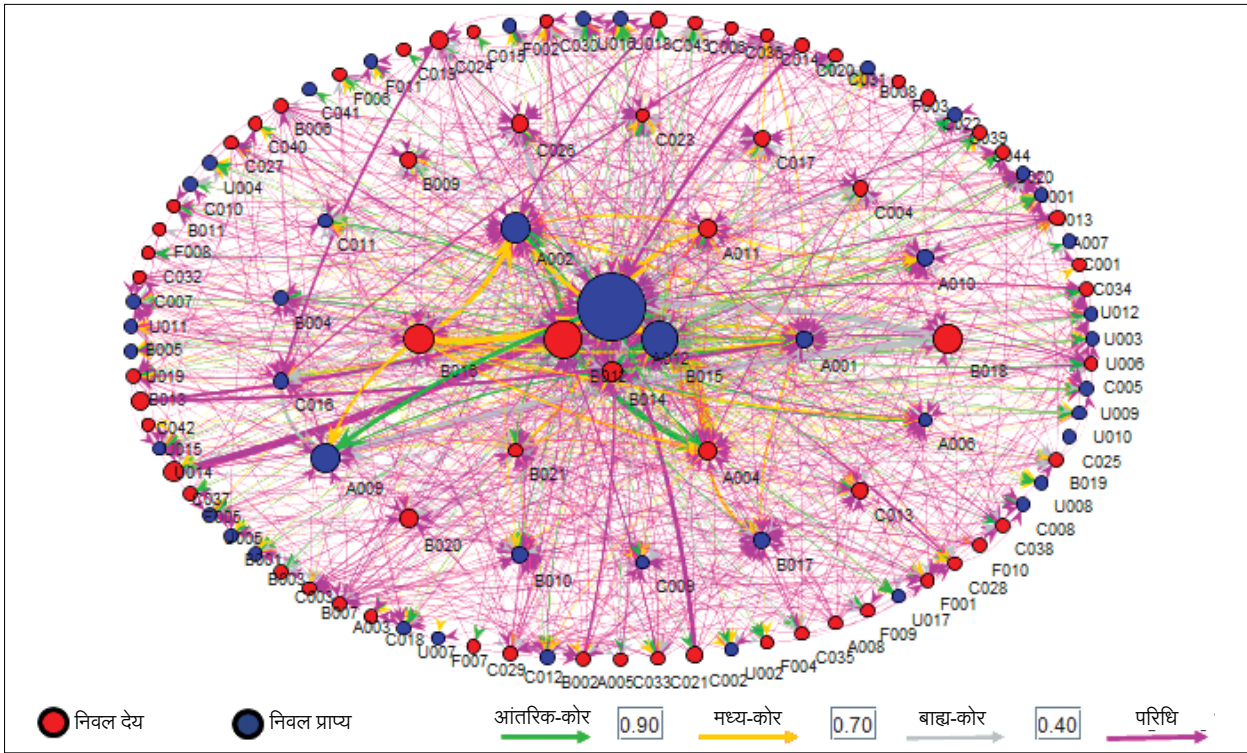


स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां और स्टाफ की गणनाएं

³⁷ बैंकिंग प्रणाली के नेटवर्क की आरेखीय प्रस्तुति एक स्तरीय संरचना की है, जिसमें नेटवर्क में एक दूसरे के साथ विभिन्न बैंकों की अलग अलग डिग्री या स्तर की संबद्धता होती है। सबसे अधिक जुड़े हुए बैंक सबसे आंतरिक कोर में (नेटवर्क आरेख के केंद्र में) होते हैं। बैंकों को फिर उनके सापेक्षिक जुड़ाव के स्तर के आधार पर (आरेख में केंद्र के चारों ओर संकेंद्रीय वृत्तों में) मध्य-कोर, बाह्य कोर और परिधि में रखा जाता है। टियर नेटवर्क आरेख में लिंक का कलर कोडिंग नेटवर्क में विभिन्न टियरों से उधार का प्रतिनिधित्व करता है (उदाहरण के लिए, हरा लिंक आंतरिक कोर में बैंकों से उधार का प्रतिनिधित्व करता है)। प्रत्येक बैंक एक बैंक का प्रतिनिधित्व करती है और प्रणाली में अन्य सभी बैंकों की तुलना में उनकी निवल स्थितियों के अनुसार उन्हें भारित किया गया है। प्रत्येक बैंक को जोड़ने वाली रेखाओं को बकाया एक्सपोजरों के आधार पर भारित किया गया है।

³⁸ इस विश्लेषण के लिए 77 एसएफबी और 20 एसयूसीबी पर विचार किया गया है।

चार्ट 2.40: भारतीय बैंकिंग प्रणाली की नेटवर्क संरचना (एससीबी + एसएफबी + एसयूसीबी) - सितंबर 2021



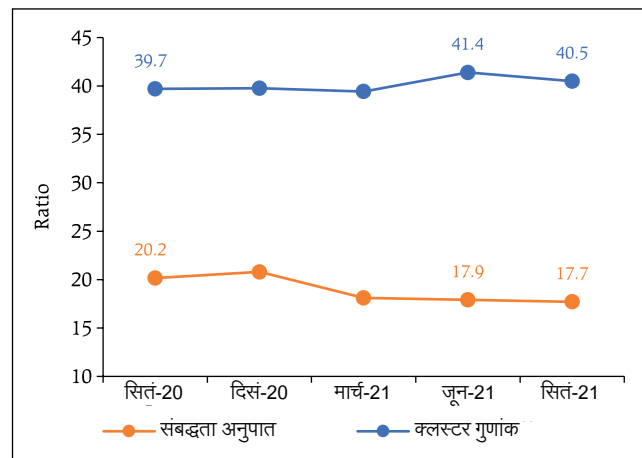
स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां और स्टाफ की गणनाएं

बैंकों, विदेशी बैंकों, एसयूसीबी और एसएफबी बाह्य कोर में थे (चार्ट 2.40)।

2.57 बैंकिंग प्रणाली (एससीबी) में अंतर-संबद्धता का स्तर, जैसा कि संबद्धता अनुपात³⁹ द्वारा मापा गया है, जो नेटवर्क में अतिरिक्त एफबी निगमित करने के कारण कुछ घटा था, अगली दो तिमाहियों में और घट गया। क्लस्टर गुणांक⁴⁰, जो स्थानीय अंतर-संबद्धता को प्रदर्शित करता है (अर्थात्, क्लस्टर अभिमुखी प्रवृत्ति), 2021-22 की पहली छमाही में मार्च 2021 की तुलना में बढ़ गया (चार्ट 2.41)।

2.58 अंतर- क्षेत्रीय एक्सपोजर के संदर्भ में, सितंबर 2021 के अंत तक एएमसी-एमएफ वित्तीय प्रणाली के लिए निधियों के सबसे बड़े निवल प्रदाता बने रहे। 2021 के सितंबर-अंत में उनकी सकल प्राप्य राशियां ₹ 10.63 लाख करोड़ (उनके

चार्ट 2.41: बैंकिंग प्रणाली (एससीबी) की संबद्धता सांख्यिकी



स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां और स्टाफ की गणनाएं

³⁹ संबद्धता अनुपात संपूर्ण नेटवर्क में सभी संभावित लिंक के सापेक्ष नोड्स के बीच लिंक की वास्तविक संख्या को मापता है।

⁴⁰ क्लस्टर गुणांक: नेटवर्क में क्लस्टरिंग यह मापता है कि प्रत्येक नोड आपस में कैसे जुड़े हैं। विशेष रूप से, इसकी बहुत अधिक संभावना होनी चाहिए कि (वित्तीय नेटवर्क के मामलों में बैंकों के प्रतिपक्ष) एक नोड के समीप दो नोड आपस में भी समीप हों। नेटवर्क के लिए एक उच्च क्लस्टर गुणांक प्रणाली में प्रचलित उच्च स्थानीय अंतर्संबद्धता के अनुरूप होता है।

औसत एयूएम का 29 प्रतिशत) थीं, जबकि उनकी सकल देय राशियां ₹ 1.01 लाख करोड़ थीं।

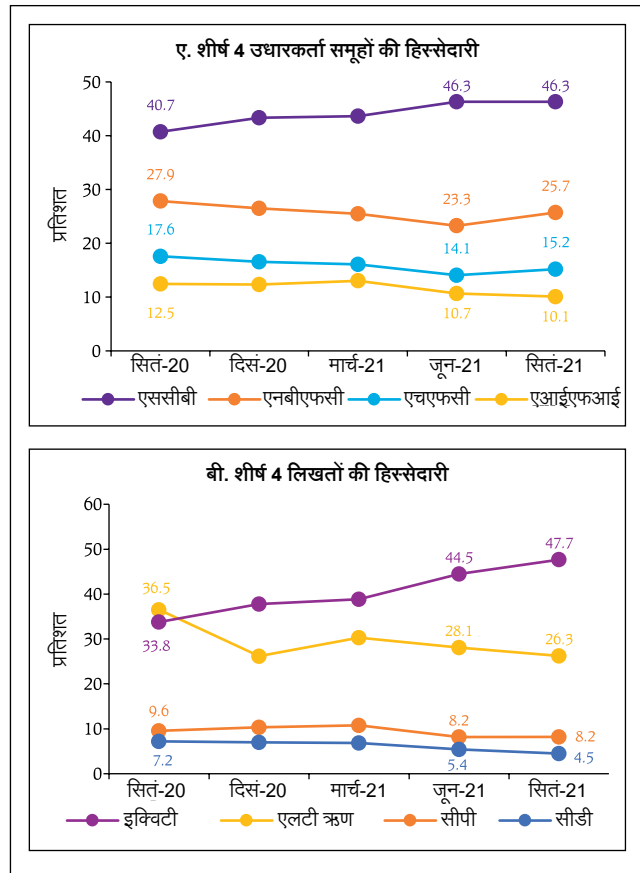
2.59 उनके निधियन के मुख्य प्राप्तकर्ता एससीबी थे जिनके बाद एनबीएफसी, एचएफसी और एआईएफआई का स्थान आता है। उनका बैंकिंग सेक्टर स्टॉक के प्रति एक्सपोजर का ऊर्ध्वमुखी संवेग सितंबर 2020 से जारी रहा और महामारी-पूर्व के स्तर तक जा पहुँचा। हालांकि, वित्तीय क्षेत्र के अन्य क्षेत्रों से प्राप्य राशियों में गिरावट आई (चार्ट 2.42 ए)।

2.60 लिखतवार, एमसी-एमएफ की प्राप्य राशियों में इक्विटी शेयर पूँजी की हिस्सेदारी का ऊर्ध्वमुखी प्रक्षेप पथ मार्च 2020 से जारी रहा क्योंकि इक्विटी बाज़ार उछाल पर रहा, जबकि दीर्घावधि (एलटी) कर्ज, सीपी और सीडी निरपेक्ष और प्रतिशत तौर पर घटे (चार्ट 2.42 बी)।

डी. बीमा कंपनियों का एक्सपोजर

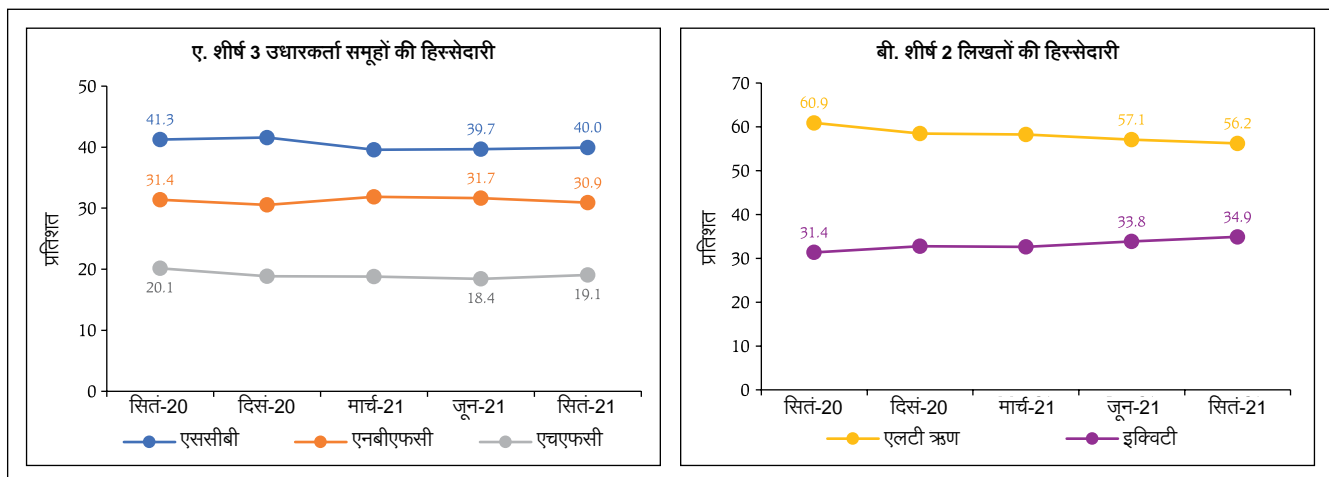
2.61 वित्तीय प्रणाली को सबसे अधिक निवल निधि प्रदाताओं में बीमा कंपनियों का दूसरा सबसे बड़ा स्थान (सितंबर 2021 में सकल प्राप्य राशि ₹ 6.95 लाख करोड़ तथा सकल देय राशि ₹ 0.45 लाख करोड़ थी) था। मुख्य रूप से एलटी ऋण और इक्विटी (चार्ट 2.43 ए और बी) के रूप में, एससीबी उनकी निधियों के सबसे बड़े प्राप्तकर्ता थे जिनके बाद एनबीएफसी और एचएफसी का स्थान आता है। एलटी कर्ज में प्रमुख रूप से एनबीएफसी और एचएफसी द्वारा जारी किए गए कर्ज में किए गए अभिदान शामिल थे।

चार्ट 2.42: वित्तीय प्रणाली से एमसी – एमएफ की सकल प्राप्तियाँ



स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां और स्टाफ की गणनाएं

चार्ट 2.43 वित्तीय प्रणाली से बीमा कंपनियों की सकल प्राप्तियाँ



स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां और स्टाफ की गणनाएं

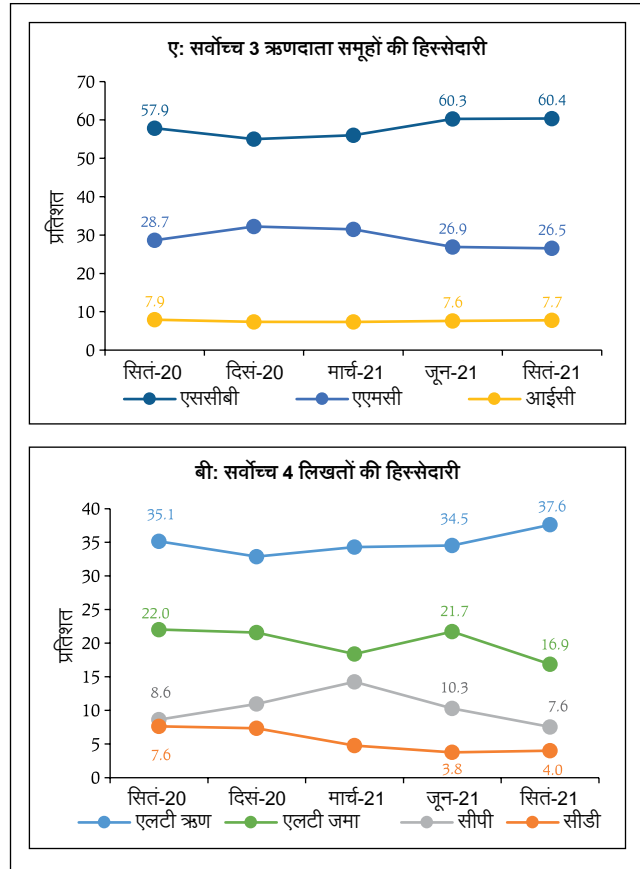
ई. एआईएफआई एक्सपोजर

2.62 एआईएफआई वित्तीय प्रणाली से निधि के शुद्ध उधारकर्ता थे, इनका सकल देय तथा सकल प्राप्य सितम्बर 2021 में क्रमशः ₹ 4.05 लाख करोड़ तथा ₹ 3.45 लाख करोड़ तक बढ़ा है। उन्होंने मुख्य रूप से एससीबी (मुख्यतया पीवीबी, तथापि पीएसबी का हिस्सा भी बढ़ा है), एएमसी-एमएफ तथा बीमा कंपनियों से धन जुटाया (चार्ट 2.44 ए)। निधि जुटाने में दीर्घावधि ऋण लिखतों की प्राथमिकता बनी रही किन्तु लंबी अवधि की जमा राशियाँ अनुक्रमिक आधार पर कम हो गयी। 2020-21 की दूसरी छमाही में एआईएफआई के निधिकरण के स्रोत के रूप में सीपी में तेज इजाफा दर्ज हुआ, वहीं 2021-22 की पहली छमाही में उसमें उतनी ही तेज गिरावट देखी गयी (चार्ट 2.44 बी)।

एफ. एनबीएफसी एक्सपोजर

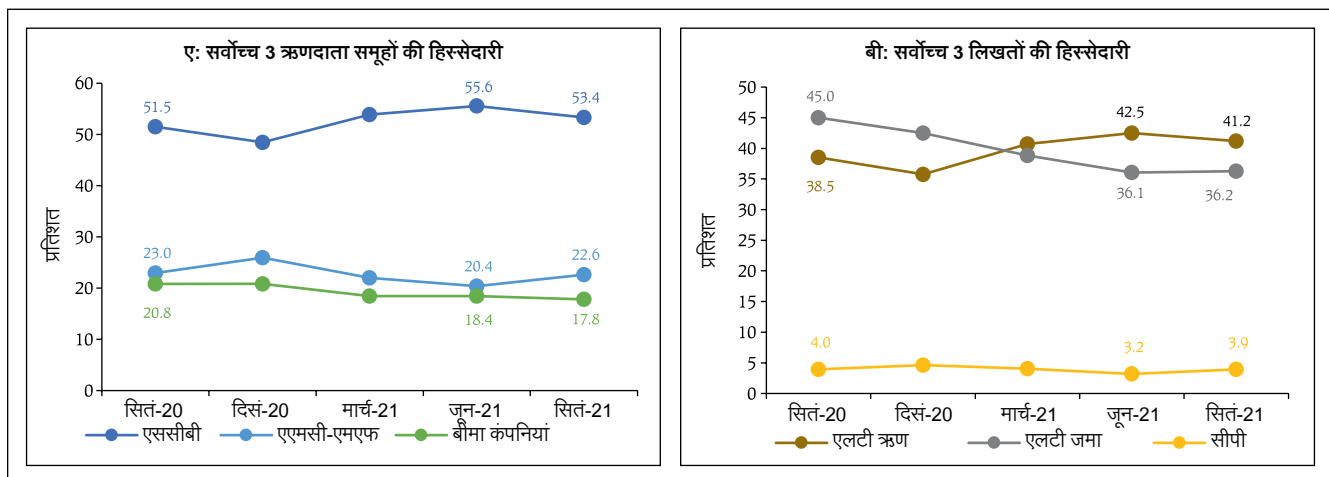
2.63 एनबीएफसी सकल देय ₹ 12.06 लाख करोड़ तथा सकल प्राप्य ₹ 1.65 लाख करोड़ के साथ सितम्बर 2021 के अंत तक वित्तीय प्रणाली से निधियों के सबसे बड़े शुद्ध उधारकर्ता थे। इनके निधिकरण में हालांकि सर्वाधिक हिस्सेदारी एससीबी की बनी रही, लेकिन 2021-22 की दूसरी तिमाही में उसमें गिरावट आई। एएमसी-एमएफ की हिस्सेदारी मार्च 2021 की तुलना में बढ़ी, जबकि बीमा कंपनियों की हिस्सेदारी कम हुई (चार्ट 2.45 ए)। एनबीएफसी के समग्र निधिकरण में दीर्घावधि कर्ज लिखतों की हिस्सेदारी में गिरावट देखी गयी, जबकि दीर्घावधि ऋण बढ़े (चार्ट 2.45 बी)।

चार्ट 2.44: एआईएफआई की वित्तीय प्रणाली को सकल देयता



स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां और स्टाफ की गणनाएं

चार्ट 2.45: एनबीएफसी की वित्तीय प्रणाली को सकल देयता



स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां और स्टाफ की गणनाएं

जी. एचएफसी एक्सपोजर

2.64 एचएफसी सकल देय ₹ 7.38 लाख करोड़ तथा सकल प्राप्य ₹ 0.61 लाख करोड़ के साथ सितम्बर 2021 के अंत में वित्तीय प्रणाली से निधियों के दूसरे सबसे बड़े शुद्ध उधारकर्ता रहे। वित्तीय वर्ष 2020-21 के अंत और 2021-22 की पहली छमाही में इनके उधारी प्रोफाइल में निधिकरण की उच्चतर हिस्सेदारी एससीबी की रही तथा एएमसी-एमएफ की हिस्सेदारी में गिरावट आई। मार्च 2021 के बाद एलटी ऋण, एलटी ऋण लिखतों तथा सीपी के माध्यम से निधि संग्रहण के अनुपात में संकुचन आया, जबकि एसटी ऋण माध्यम में बृद्धि हुई (चार्ट 2.46 ख)।

II.4.2 संक्रमण विश्लेषण

2.65 संक्रमण विश्लेषण में प्रत्येक बैंक के प्रणालीगत महत्व का आकलन करने के लिए नेटवर्क प्रोद्योगिकी का उपयोग किया जाता है। एक प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण बैंक की विफलता बैंकिंग प्रणाली को ऋण शोधन क्षमता और चलनिधि के घाटे की ओर ले जाती है, जिसका पैमाना बैंकों की पूँजी और चलनिधि क्षमता के साथ साथ बैंकिंग प्रणाली के साथ विफल हुए बैंक के

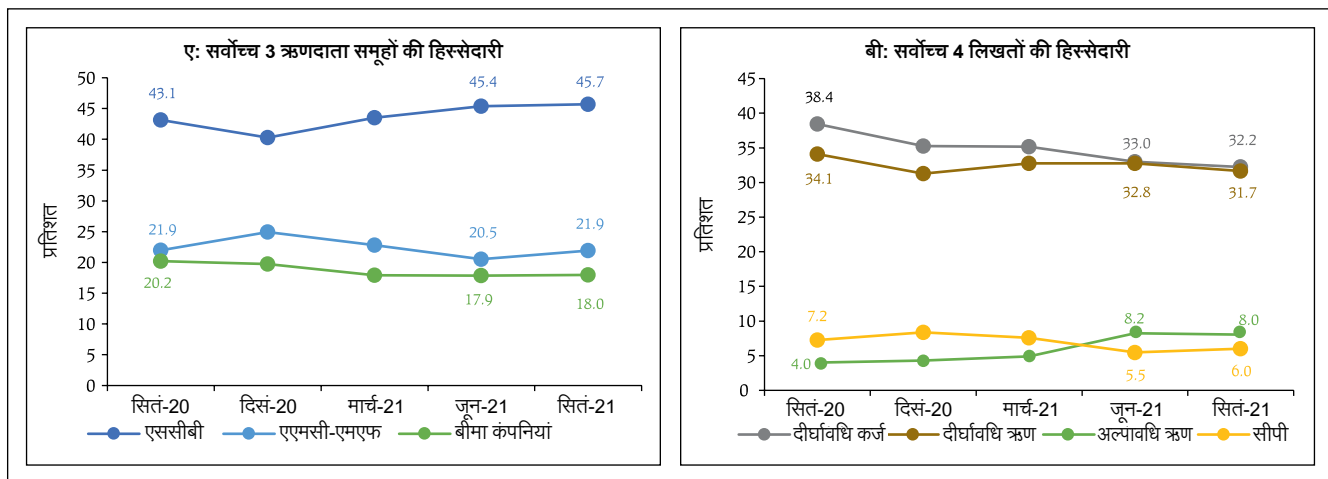
अंतरसंबंधों की संख्या, प्रकृति(चाहे वह ऋणदाता हो या उधारकर्ता) और आकार पर भी निर्भर करता है।

ए. बैंक विफलता से एससीबी को होने वाला संयुक्त शोधनक्षमता⁴¹ - चलनिधि⁴² संक्रमण घाटा

2.66 इस विश्लेषण में, बैंकिंग प्रणाली को लगने वाले अलग-अलग झटको के प्रभाव को विफल हुए बैंकों की संख्या तथा शोधन क्षमता की मात्रा और चलनिधि घाटे का अनुमान लगा कर किया जाता है।

2.67 सितम्बर 2021 के अंत की स्थिति पर आधारित बैंकिंग नेटवर्क का संक्रमण विश्लेषण यह इंगित करता है कि ऐसा बैंक जिससे अधिकतम संक्रामक घाटे हो सकते हैं (सारणी 2.7 में बैंक 1) उसे कोर परिधि नेटवर्क संरचना (चार्ट 2.40) में अंतरतम कोर में रखा गया है, और उसकी विफलता से एससीबी की कुल टियर 1 पूँजी का 2.67 प्रतिशत शोधन क्षमता घाटा तथा बैंकिंग प्रणाली के कुल एचक्यूएलए का 0.03 प्रतिशत तक चलनिधि घाटा हो सकता है। यह विश्लेषण ये भी दर्शाता है कि मार्च 2021 कि तुलना में सितम्बर 2021 में, निरपेक्ष तथा प्रतिशत दोनों ही संदर्भों में, संक्रामक घाटा करने वाले अधिकतम क्षमता के 5 बैंकों

चार्ट 2.46: एचएफसी का वित्तीय प्रणाली को सकल देय



स्रोत: विभिन्न विनियामकों की पर्यवेक्षी विवरणियां तथा रिजर्व बैंक स्टाफ गणनाएं

⁴¹ शोधन क्षमता संक्रमण विश्लेषण में, एक या अधिक उधारकर्ता बैंकों के विफल होने पर उसके दूरगामी प्रभाव से बैंकिंग प्रणाली को होने वाले सकल नुकसान का पता लगाया जाता है। संक्रमण विश्लेषण के लिए विफल होने का मापदंड टियर 1 पूँजी का 7 प्रतिशत से नीचे आना लिया गया है।

⁴² चलनिधि के संक्रमण विश्लेषण में, एक बैंक को तब विफल माना जाएगा जब उसकी चलनिधि परिसंपत्तियों, उसके सबसे बड़े ऋणदाता के विफल होने से उत्पन्न हुए चलनिधि दबाव से उबरने के लिए पर्याप्त नहीं होती है। चलनिधि परिसंपत्तियों की गणना इस तरह होगी : एनडीटीएल का 18 प्रतिशत + अतिरिक्त एसएलआर + अतिरिक्त सीआरआर

के विफल होने पर होने वाला संक्रमण घाटा बढ़ा है, लेकिन कोई अतिरिक्त बैंक विफल नहीं हुआ (सारणी 2.7)।

बी. एनबीएफसी /एचएफसी विफलता से एससीबी के लिए शोधन क्षमता संक्रामक घाटा

2.68 एनबीएफसी /एचएफसी वित्तीय प्रणाली में निधियों के सबसे बड़े उधारकर्ता हैं और बैंक उन्हें निधिकरण का एक बड़ा हिस्सा उपलब्ध कराते हैं, इसलिए, किसी एनबीएफसी या एचएफसी की विफलता उनके ऋणदाताओं की शोधन क्षमता को आघात पहुंचा सकती है। इन आघातों के कारण हुई शोधन क्षमता हानियां संक्रमण प्रभाव के द्वारा और फैल सकती हैं।

2.69 सितम्बर 2021 के अंत तक, बैंकिंग प्रणाली को शोधन क्षमता नुकसान पहुंचा सकने की अधिकतम क्षमता रखने वाले एनबीएफसी या एचएफसी की विशिष्ट विफलता ने बैंकों की कुल टियर 1 पूंजी क्रमशः 2.28 प्रतिशत और 6.43 प्रतिशत से प्रभावित होती, लेकिन कोई अन्य बैंक विफल नहीं होता (सारणी 2.8 और 2.9)।

सी. एससीबी को समष्टि आर्थिक झटके के बाद शोधन क्षमता संक्रामक प्रभाव⁴³

2.70 किसी बैंक के विफल होने का संक्रामक प्रभाव तब बहुत बढ़ जाने की संभावना रहती है, जब समष्टि आर्थिक आघातों के परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था की सामान्यकृत मंदी में बैंकिंग क्षेत्र में तनाव उत्पन्न हो जाता है। ऐसे आघातों के कारण कुछ एससीबी शोधन क्षमता संबंधी मापदंडों को पूरा करने में असफल हो सकते हैं, जो आगे जाकर शोधन क्षमता हानि को बढ़ाने में उत्प्रेरक का कार्य करते हैं।

2.71 पिछली पुनरावृत्ति में, आघात को उस इकाई पर लागू किया गया, जो शोधन क्षमता की अधिकतम संक्रामक हानियों का कारण बन सकती थी। किंतु, इस पुनरावृत्ति में, बैंक विशेष की पूंजी पर इस तरह के आघात का प्रारम्भिक प्रभाव मैक्रो-स्ट्रेस परीक्षण से लिया गया है।

2.72 समष्टि आर्थिक आघातों के कारण आरंभिक पूंजी घाटा बेसलाइन, मध्यम और गंभीर दबाव परिदृश्य में टियर 1

सारणी 2.7: बैंक विफलता से हुआ संक्रामक घाटा – सितम्बर 2021

ट्रिगर कोड	बैंकिंग प्रणाली में टियर 1 पूंजी का प्रतिशत	एचक्यूएलएम का प्रतिशत	शोधन क्षमता की वजह से चूक वाले बैंकों की संख्या	चलनिधि की वजह से चूक करने वाले बैंकों की संख्या
बैंक 1	2.67	0.03	0	0
बैंक 2	2.20	0.23	0	0
बैंक 3	1.93	0.03	0	0
बैंक 4	1.80	0.59	0	0
बैंक 5	1.73	0.04	0	0

नोट: "ट्रिगर बैंक" को बैंकिंग प्रणाली को हुई शोधन क्षमता हानि के आधार पर चुना गया है।

स्रोत: रिजर्व बैंक पर्यवेक्षी विवरणियाँ तथा स्टाफ गणनाएं

सारणी 2.8 एनबीएफसी विफलता से हुआ संक्रामक घाटा – सितम्बर 2021

ट्रिगर कोड	बैंकिंग प्रणाली की टियर 1 पूंजी के प्रतिशत के रूप में शोधन क्षमता हानियां	शोधन क्षमता की वजह से चूक करने वाले बैंकों की संख्या
एनबीएफसी 1	2.28	0
एनबीएफसी 2	1.80	0
एनबीएफसी 3	1.78	0
एनबीएफसी 4	1.25	0
एनबीएफसी 5	1.21	0

नोट: सर्वोच्च पाँच "एनबीएफसी" को बैंकिंग प्रणाली को हुई शोधन क्षमता हानि के आधार पर चुना गया है।

स्रोत: रिजर्व बैंक पर्यवेक्षी विवरणियाँ तथा स्टाफ गणनाएं

सारणी 2.9 एचएफसी विफलता से हुई संक्रामक हानियां – सितम्बर 2021

ट्रिगर कोड	बैंकिंग प्रणाली की टियर 1 पूंजी के प्रतिशत के रूप में शोधन क्षमता हानियां	शोधन क्षमता की वजह से चूक करने वाले बैंकों की संख्या
एचएफसी 1	6.43	0
एचएफसी 2	4.42	0
एचएफसी 3	1.60	0
एचएफसी 4	1.42	0
एचएफसी 5	1.33	0

नोट: सर्वोच्च पाँच "एचएफसी" को बैंकिंग प्रणाली को हुई शोधन क्षमता हानियों के आधार पर चुना गया है।

स्रोत: रिजर्व बैंक पर्यवेक्षी विवरणियाँ तथा स्टाफ गणनाएं

⁴³ पीएसबी और पीवीबी दोनों के लिए विफलता का मानदंड टियर 1 सीआरएआर का 7 प्रतिशत से नीचे आना माना गया।

⁴⁴ संक्रमण विश्लेषण में मैक्रो-स्ट्रेस परीक्षण के परिणामों का उपयोग किया गया और निम्नलिखित धारणाएं बनाई गईं:

ए) एक वृहद परिदृश्य में अनुमानित नुकसान (सितम्बर 2021 के वास्तविक मूल्य के संबंध में, सितम्बर 2022 के टियर 1 की सीआरएआर में गिरावट की गणना प्रतिशत के रूप में की गयी) सितम्बर 2021 की पूंजी स्थिति पर यह मानकर लागू किया गया है कि सितम्बर 2021 और सितम्बर 2022 की बैलेन्स शीट संरचना अनुपातिक रूप से समान होगी।

बी) वित्तीय संस्थाओं के बीच द्विपक्षीय एक्सपोजर सितम्बर 2021 और सितम्बर 2022 दोनों के लिए समान माना गया

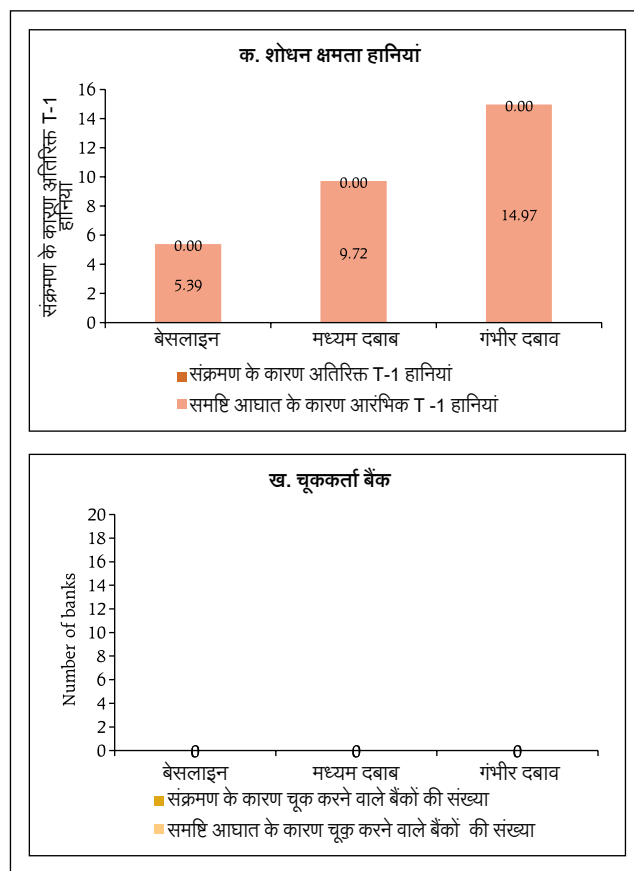
पूँजी का क्रमशः 5.39 प्रतिशत, 9.72 प्रतिशत और 14.97 प्रतिशत रहा। कोई भी बैंक किसी भी परिदृश्य में टियर 1 पूँजी पर्याप्तता अनुपात को 7 प्रतिशत तक बनाए रखने में असफल नहीं हुआ। परिणामस्वरूप, बैंकिंग प्रणाली में संक्रामक प्रभाव की वजह से अतिरिक्त शोधन क्षमता हानियां नहीं हुई (समष्टि आघातों के कारण हुए पूँजी घाटे के अतिरिक्त) (चार्ट 2.47)।

सारांश और संभावना

2.73 महामारी की दो लहरों के बाद एससीबी मजबूत होकर उभरे, जबकि यूसीबी और एनबीएफसी की परिसंपत्तियों की गुणवत्ता में गिरावट आई। दबाव परीक्षण यह इंगित करते हैं कि बैंक समान्यतया ऋण-संबंधी आघातों को सहने के लिए बेहतर स्थिति में हैं, जबकि यूसीबी और एनबीएफसी की स्थिति में काफी भिन्नता दिखाई देती है।

2.74 आगे चलकर अर्थव्यवस्था जैसे-जैसे अपनी पूर्व स्थिति में आएगी और ऋण की मांग बढ़ेगी, बैंकों को ऋण वृद्धि को बनाए रखने के लिए पर्याप्त पूँजी की उपलब्धता सुनिश्चित करनी होगी। एनबीएफसी और यूसीबी को अपने क्रेडिट पोर्टफोलियो की गुणवत्ता बढ़ाने के साथ साथ, चलनिधि के संबंध में कमियों के प्रति सतर्क रहना होगा तथा मजबूत आस्ति-देयता प्रबंधन को सुनिश्चित करना होगा। प्रणालीगत स्तर पर निधिकरण के एक बड़े हिस्से का उपयोग एनबीएफसी द्वारा किया जाता है जिसे ध्यान में रखते हुए, वित्तीय स्थिरता के हित में, इनकी वित्तीय स्थिति पर लगातार निगरानी बनाए रखना आवश्यक है।

चार्ट 2.47 : समष्टि आर्थिक आघातों का संक्रामक प्रभाव (शोधन क्षमता संक्रमण)



नोट: सितम्बर 2022 की पूँजी यह संतुलित अंदाज लगा कर अनुमानित की गयी है कि पूँजी भंडार को न्यूनतम 25 प्रतिशत लाभ अंतरण होगा। इसमें हितधारकों द्वारा जोड़ी गयी किसी भी तरह की पूँजी को गणना में नहीं लिया गया है।

स्रोत: रिजर्व बैंक पर्यवेक्षी विवरणियां तथा स्टाफ गणनाएं।

अध्याय III

वित्तीय क्षेत्र में विनियामकीय पहल

चूंकि आर्थिक गतिविधि एक असमान और हाल में बहाली के धीमे रास्ते पर बढ़ रही है, वैश्विक विनियामकीय प्रयास उन क्षेत्रों की आघात-सहनीयता को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं जो महामारी के दौरान प्रभावित हो गए थे। भारत में, नीतिगत उपायों का जोर ऋण को पुनर्जीवित करने, सरकारी प्रतिभूति और प्रतिभूतिकरण बाजारों में निवेशक आधारों को विस्तृत करने और एकाग्र पर्यवेक्षी चौकसी हेतु एनबीएफसी विनियामकीय फ्रेमवर्क को अधिक तीक्ष्ण और सुसंगत बनाने पर है। भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (सेबी) ने बाजार-आधारित तंत्र के माध्यम से ओपन-एंडेड म्यूचुअल फंड की कमजोरियों का समाधान किया। भारतीय बीमा और विनियामक विकास प्राधिकरण (आईआरडीए) की पहलों में बीमा कंपनियों का अभिशासन और साइबर तथा व्यापार ऋण बीमा शामिल हैं। पेंशन फंड विनियामक और विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) का ध्यान राष्ट्रीय पेंशन योजना (एनपीएस) के कवरेज के विस्तार पर रहा। अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण (आईएफएससीए) ने इसके अंतर्गत काम करने वाली संस्थाओं के लिए विनियामकीय फ्रेमवर्क में सुधार करना जारी रखा है। वित्तीय स्थिरता और विकास परिषद (एफएसडीसी) वित्तीय प्रणाली की मजबूती और स्थिरता बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध रहा।

प्रस्तावना

3.1 ऊर्ध्वगामी जोखिमों से घिरे मुद्रास्फीति दृष्टिकोण के कारण, असमान आर्थिक बहाली अपनी रफ्तार खो रही है। संक्रमण चुनौतियों में सरकारी प्रतिभूतियों, गैर-वित्तीय कॉरपोरेट्स और परिवारों में ऋण के ऊंचे स्तर, बाजार-आधारित वित्त संरचनाओं में संरचनात्मक कमजोरियां, नीतिगत समर्थन समाप्त हो जाने पर दिवालिया होने तथा ऋण हानि की उच्च संभावना और अधिक नीतिगत समर्थन पाने की बढ़ी हुई अपेक्षाओं से नैतिक खतरा भी शामिल हैं। इस अध्याय में वैश्विक स्तर पर और भारत में उन विनियामकीय पहल की समीक्षा की गई है जो इस महत्वपूर्ण मोड़ पर मार्गदर्शन कर रही हैं।

III.1 वैश्विक विनियामकीय प्रगति और आकलन

3.2 वैश्विक विनियामकीय संस्थाएँ तीन अलग-अलग रूपों में गतिमान हुई हैं। पहला, महामारी से सबक लेने के लिए पर्याप्त विनियामकीय ध्यान दिया जा रहा है। दूसरा, उन क्षेत्रों और बाजार खंडों की आघात-सहनीयता बढ़ाने की दिशा में प्रयास किए जा रहे हैं, जिन्हें महामारी के कारण होने वाली अव्यवस्थाओं से निपटने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। तीसरा, कोविड-19 के दौरान किए गए समर्थक उपायों और उनकी

वापसी से वित्तीय स्थिरता पर होने वाले असर पर भी ध्यान दिया जा रहा है।

III.1.1 महामारी से सबक

3.3 वित्तीय स्थिरता बोर्ड (एफएसबी) के अनुसार, वैश्विक वित्तीय प्रणाली ने आघात-सहनीयता दिखाई है और तेज नीतिगत कार्रवाइयों¹ के बूते महामारी को झेल लिया है। पूंजी और चलनिधि बफर के साथ-साथ, गैर-बैंक वित्तीय मध्यस्थता (एनबीएफआई) क्षेत्र में भी अपर्याप्तता देखी गई है। वित्तीय प्रणाली में अत्यधिक चक्रीयता को लेकर चिंताएं हैं, जो महामारी के दौरान आसित बाजार की अव्यवस्था से उजागर होती हैं। बैंकिंग पर्यवेक्षण बासल समिति (बीसीबीएस), भुगतान और बाजार अवसंरचना समिति (सीपीएमआई) और प्रतिभूति आयोगों के अंतरराष्ट्रीय संगठन (आईओएससीओ) ने, प्रारंभिक मार्जिन (आईएम) और भिन्नता मार्जिन को शामिल करते हुए, केंद्रीय प्रतिपक्षों (सीसीपी) की मार्जिन प्रथाओं का, पारदर्शिता, पूर्वानुमेयता और अस्थिरता के दृष्टिकोण से भी, विश्लेषण किया है।² सभी आसित वर्गों में, विशेष रूप से सीसीपी के संबंध में, पूरी वित्तीय प्रणाली में मार्जिन कॉल में व्यापक-आधार वाली और तीव्र वृद्धि नोट की गई है, जबकि गैर-केंद्रीय रूप से समाशोधित डेरिवेटिव्स के लिए मार्जिन आवश्यकताएं इस अवधि के दौरान स्थिर रहीं। एफएसबी एक व्यापक कार्रवाई

¹ एफएसबी (2021), "वित्तीय स्थिरता के दृष्टिकोण से कोविड-19 महामारी से सीखे गए सबक: अंतिम रिपोर्ट", अक्टूबर।

² आईओएससीओ (2021), "मार्जिन प्रथाओं की समीक्षा", अक्टूबर।

कार्यक्रम को लेकर आगे बढ़ रहा है ताकि अंतरराष्ट्रीय वित्तीय मानकों की कार्यक्षमता में सुधार हो सके, वैश्विक वित्तीय स्थिरता की रक्षा के लिए भेद्यता और अग्र-चक्रीयता कम की जा सके और महामारी से न्यायसंगत बहाली का समर्थन किया जा सके।

3.4 केंद्रीय प्रतिपक्ष, वित्तीय संस्थाओं और बाजारों के साथ अत्यधिक जुड़े हुए हैं और इसलिए, वे इतने महत्वपूर्ण हैं कि वे विफल नहीं हो सकते। सीसीपी के माध्यम से व्यापार की बढ़ी हुई मात्रा और उनकी बढ़ी हुई वैश्विक संबद्धता, विवेकपूर्ण प्रबंधन की आवश्यकता को रेखांकित करती है। इस संबंध में, सीसीपी चलनिधि बफर का आकार एवं संरचना और किसी समाशोधन सदस्य के चूक करने पर सीसीपी के भुगतान दायित्व इस बात के संकेतक हैं कि इस तरह की अव्यवस्था की संभावना के प्रति सीसीपी के अपने अनुमान हैं और भुगतान दायित्वों को पूरा करने के लिए सीसीपी को बाजार उपलब्ध हैं।

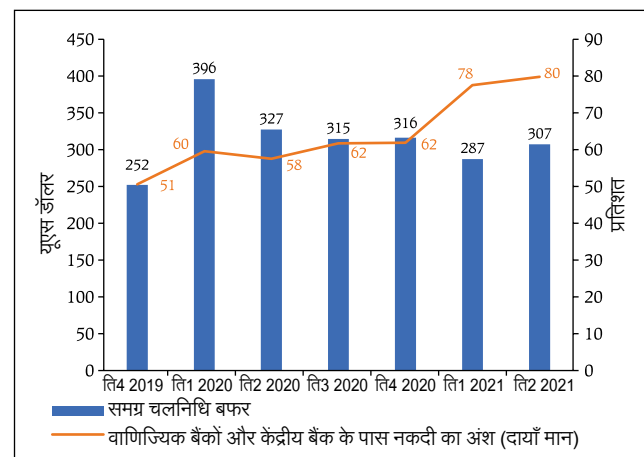
3.5 सीपीएमआई और आईओएससीओ द्वारा एक साथ रखे गए सार्वजनिक प्रकटीकरण टेम्प्लेट में, सीसीपी को तिमाही आधार पर अपने अर्हक चलनिधि संसाधनों के आकार और बनावट की रिपोर्ट करनी होती है। यह सीसीपी के लिए चलनिधि के आठ स्रोतों को परिभाषित करता है: केंद्रीय बैंक नकदी; वाणिज्यिक बैंकों में प्रत्याभूत नकदी; वाणिज्यिक बैंकों में अप्रत्याभूत नकदी; प्रत्याभूत क्रेडिट लाइनें; अप्रत्याभूत क्रेडिट लाइनें; अत्यधिक बिक्री योग्य संपार्श्विक; अनुपूरक चलनिधि; और अन्य संसाधन। तीन बड़े वैश्विक सीसीपी (नामत: शिकागो मर्केटाइल एक्सचेंज (सीएमई), यूरेक्स एक्सचेंज और लंदन विलयर्सिंग हाउस (एलसीएच)) द्वारा रखे गए सकल चलनिधि बफर में, महामारी के दौरान तेज वृद्धि के बाद, गिरावट आई है (चार्ट 3.1)। हालांकि चलनिधि बफर का सकल पूल, भले ही प्रतिचक्रीयता को प्रतिबिंबित नहीं कर रहा हो, लेकिन ऐसे बफर की संरचना के विश्लेषण से केंद्रीय बैंकों में नकदी जमाराशियों के अनुपात में वृद्धि परिलक्षित होती है। वाणिज्यिक और केंद्रीय बैंकों के पास रखी नकदी जमाराशियों का कुल अनुपात चलनिधि पूल के 80 प्रतिशत तक बढ़ गया। यह अभिरक्षा में रखे गए अत्यधिक विपणन योग्य संपार्श्विक की कीमत पर हुआ, जिसका

कुल चलनिधि पूल में हिस्सा 2019 की चौथी तिमाही में रहे 46 प्रतिशत से गिरकर 2021 की दूसरी तिमाही में 17 प्रतिशत हो गया।

III.1.2 मुद्रा बाजार निधि (एमएमएफ) की प्रणालीगत आघात-सहनीयता

3.6 मार्च 2020 में बाजार में हुई उथल-पुथल से मुद्रा बाजार निधि (एमएमएफ) की कमजोरियां उजागर हो गईं। एफएसबी ने एमएमएफ की आघात-सहनीयता बढ़ाने के लिए नीतिगत प्रस्तावों की संभावना तलाशी है ताकि इनके प्रणालीगत जोखिमों को दूर करने में मदद मिल सके और इस क्षेत्र को समर्थन देने के लिए भविष्य में केंद्रीय बैंक द्वारा असाधारण हस्तक्षेप करने की आवश्यकता को कम किया जा सके।³ एमएमएफ की कमजोरियों को दूर करने के लिए नीतिगत विकल्पों के दायरे में रिडीमिंग फंड निवेशकों पर लगाए गए स्विंग मूल्य निर्धारण, ऋण हानियों को अवशोषित करने के लिए पूंजी बफर; क्लिफ-प्रभाव की संभावना पैदा करने वाले विनियामकीय श्रेणहोल्ड के समाधान के लिए तंत्र; और चलनिधि परिवर्तन को कम करने के लिए पात्र आस्तियों और अतिरिक्त चलनिधि आवश्यकताओं की सीमाएं शामिल हैं।

चार्ट 3.1: तीन वैश्विक केंद्रीय प्रतिपक्षों द्वारा अनुरक्षित समग्र चलनिधि बफर का विश्लेषण



स्रोत: आईओएससीओ और सीपीएमआई

³ एफएसबी (2021), "एमएमएफ आघात-सहनीयता बढ़ाने के लिए नीतिगत प्रस्ताव", अक्टूबर।

III.1.3 महामारी के दौरान किए गए उपाय: वित्तीय स्थिरता प्रभाव

3.7 यूरोपीय प्रणालीगत जोखिम बोर्ड (ईएसआरबी) ने सकल यूरोपीय बैंक ऋण में उल्लेखनीय वृद्धि देखी है। यह आंशिक रूप से उन गारंटीकृत ऋणों के कारण है जिसने चलनिधि जोखिमों को कम किया है और फर्म की चूक और प्रावधान को कम किया है।⁴ हालांकि, अगर सार्वजनिक गारंटी वाले ऋण परिपक्व होते हैं और सार्वजनिक गारंटी के बिना नवीनीकृत किए जाते हैं, तो जोखिम भार बढ़ जाएंगे, और प्रावधान का स्तर, आवश्यकता से कम रह सकता है।

III.1.4 अन्य अंतरराष्ट्रीय विनियामकीय प्रगति

ए. बैंक

3.8 एफएसबी ने साइबर घटना रिपोर्टिंग⁵ को सुसंगत बनाने के लिए सुझाव दिए हैं ताकि (ए) सभी क्षेत्रों और क्षेत्राधिकारों में विखंडन (बी) इसकी गंभीरता को मापने के तरीकों में विविधता; और (सी) घटनाओं की रिपोर्टिंग और घटना की जानकारी के उपयोग के लिए समय-सीमा में बदलाव को(-) रोका जा सके। सर्वोत्तम वैश्विक प्रथाओं को विकसित करके, अधिकार क्षेत्र में सामान्य प्रकार की जानकारी साझा करने में हो रही कठिनाइयों को पहचान तथा समझ करके और 'साइबर घटना' के लिए एक सामान्य परिभाषा के साथ साइबर घटना रिपोर्टिंग के लिए एक वर्गीकरण विकसित करके, रिपोर्टिंग में वृहत्तर अभिसरण प्राप्त किया जा सकता है।

3.9 लंदन अंतर-बैंक प्रस्तावित दर (लिबोर) के खत्म होने पर, एफएसबी ने बाजार सहभागियों को, यह सुनिश्चित करने के लिए तत्काल कार्य करने की आवश्यकता पर बल दिया है कि वे इस साल के अंत तक परिवर्तन के लिए पूरी तरह तैयार हैं। साथ ही, 1 जनवरी, 2022 से पहले निष्पादित किए गए लीगेसी अनुबंधों की समाप्ति का समर्थन करने के लिए जून 2023 के अंत तक कुछ प्रमुख यूएसडी सेटिंग्स जारी हैं।⁶ वैश्विक वित्तीय बाजारों की लिबोर पर निरंतर निर्भरता वैश्विक वित्तीय स्थिरता के लिए जोखिम पैदा करता है। फिर से लिबोर की कमजोरियों की वापसी

से बचने के लिए, परिवर्तन प्राथमिक रूप से एकदिवसीय जोखिम-मुक्त दरों (आरएफआर) में होना चाहिए, जो सबसे मजबूत बेंचमार्क है। पर्याप्त मात्रा में लेनदेन के आधार पर विश्वसनीय अंतर्निहित बाजारों को प्रतिबिंबित करने के लिए, एफएसबी संभावित वैकल्पिक दरों की आवश्यकता को भी रेखांकित करता है।

बी. आरिस्त बाजार

3.10 जलवायु परिवर्तन एवं अन्य ईएसजी चिंताओं से संभाव्य वित्तीय जोखिमों के प्रति निवेशकों की बढ़ी हुई संवेदनशीलता के अनुरूप सक्रिय हुए वित्तीय बाजारों में पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन (ईएसजी) रेटिंग और डेटा उत्पाद प्रदाताओं की बढ़ती भूमिका और प्रभाव को देखते हुए, आईओएससीओ ने सिफारिश की है कि विनियामकों को ईएसजी रेटिंग और डेटा उत्पादों के उपयोग और ऐसे उत्पादों और सेवाओं के प्रदाताओं की गतिविधियों पर अधिक ध्यान केंद्रित करना चाहिए।⁷ इसने यह भी सिफारिश की है कि रेटिंग और डेटा उत्पाद प्रदाताओं को उच्च गुणवत्ता रेटिंग और डेटा उत्पाद जारी करने से संबंधित कारकों पर विचार करना चाहिए। इनमें सार्वजनिक रूप से प्रकट किए गए डेटा स्रोत, परिभाषित कार्यप्रणाली, हितों के टकराव का प्रबंधन, उच्च स्तर की पारदर्शिता और गोपनीय जानकारी का प्रबंधन शामिल हैं। ईएसजी रेटिंग और डेटा उत्पादों के उपयोगकर्ता, अपनी आंतरिक प्रक्रियाओं में उनके उपयोग पर उचित सावधानी बरतने पर विचार कर सकते हैं। मूल्यांकन के अधीन, प्रदाताओं और संस्थाओं के बीच सूचना एकत्र करने की प्रक्रियाओं, प्रकटीकरण और संचार में सुधार करने की भी सिफारिश की गई है।

3.11 आईओएससीओ ने बाजार मध्यस्थों और आरिस्त प्रबंधकों द्वारा कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और मशीन लर्निंग (एमएल) के उपयोग का विनियमन और पर्यवेक्षण करने में अपने सदस्यों का समर्थन करने के लिए मार्गदर्शन प्रदान किया है, क्योंकि इनमें जोखिमों को पैदा करने या बढ़ाने की क्षमता है जो वित्तीय बाजार दक्षता और उपभोक्ता संरक्षण को कमजोर कर

⁴ ईएसआरबी (2021), "कोविड-19 के दौरान समर्थक उपायों के वित्तीय स्थिरता के निहितार्थ की निगरानी", फरवरी

⁵ एफएसबी (2021), "साइबर घटना रिपोर्टिंग: मौजूदा दृष्टिकोण और व्यापक अभिसरण के लिए अगले कदम", अक्टूबर

⁶ एफएसबी (2021), "लिबोर समाप्ति के लिए तैयारियों का समर्थन करने के लिए एफएसबी वक्तव्य", नवंबर

⁷ आईओएससीओ (2021), "पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन (ईएसजी) रेटिंग और डेटा उत्पाद प्रदाता", जुलाई

सकते हैं⁸ विनियामकों को (ए) यह निर्धारित करने पर विचार करना चाहिए कि नामित वरिष्ठ प्रबंधन को एआई और एमएल विकास, परीक्षण, तैनाती, निगरानी और नियंत्रण की निगरानी के लिए जिम्मेदार बनाया जाए; (बी) जरूरत के अनुसार एआई और एमएल विकसित करने और नियंत्रण की निगरानी के लिए फर्मों को पर्याप्त कौशल रखने की आवश्यकता है; (सी) तीसरे पक्ष के सेवा प्रदाताओं के प्रदर्शन की चौकसी और निगरानी निर्धारित की जाए; और (डी) फर्मों को उन एआई और एमएल के उपयोग के बारे में ग्राहकों को सार्थक जानकारी का खुलासा करने की आवश्यकता है, जो ग्राहक परिणामों को प्रभावित करते हैं।

सी. क्रिप्टो करेंसी – स्थिरमुद्रा (स्टेबलकॉइन्स)

3.12 यूएस ट्रेजरी द्वारा स्थापित वित्तीय बाजारों पर राष्ट्रपति के कार्य समूह (पीडब्ल्यूजी)⁹ ने स्थिरमुद्राओं (स्टेबलकॉइन्स) के बाजार पूंजीकरण में वृद्धि को स्वीकार किया है और विवेकपूर्ण जोखिमों से बचाने के लिए सिफारिशों की रूपरेखा तैयार की है। स्थिरमुद्राएं (स्टेबलकॉइन्स) ऐसी डिजिटल आस्तियां हैं जिन्हें राष्ट्रीय मुद्रा या अन्य संदर्भ आस्तियों के सापेक्ष स्थिर मूल्य बनाए रखने के लिए डिज़ाइन किया गया है। वे मुख्य रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका में अन्य डिजिटल आस्तियों के व्यापार, उधार देने और उधार लेने की सुविधा के लिए उपयोग की जाती हैं। सबसे बड़े स्थिरमुद्रा-जारीकर्ताओं द्वारा जारी की गई स्थिरमुद्राओं का बाजार पूंजीकरण अक्टूबर 2021 तक 127 बिलियन डॉलर से अधिक हो गया, जो पिछले बारह महीनों में लगभग 500 प्रतिशत की वृद्धि है। रिपोर्ट में कहा गया है कि इन्हें यदि अच्छी तरह से डिज़ाइन और उचित रूप से विनियमित किया जाए, तो स्थिरमुद्राएं अधिक तेज़, अधिक कुशल और अधिक समावेशी भुगतान विकल्पों का समर्थन कर सकती हैं। हालांकि, रिपोर्ट में, भुगतान प्रक्रिया को अस्थिर करने की क्षमता, भुगतान प्रणाली में व्यवधान और आर्थिक शक्ति के संकेंद्रण से संबंधित चिंताओं को भी उजागर किया गया है। इसमें इस बात पर भी प्रकाश डाला गया है कि स्थिरमुद्राएं धनशोधन निवारण (एएमएल) /

आतंकवाद वित्तपोषण जोखिम (सीएफटी) भी पैदा करती हैं, जिससे बाजार की अखंडता और निवेशक संरक्षण संबंधी चिंताएं बढ़ रही हैं। इस रिपोर्ट में, इन जोखिमों को कम करने के लिए विनियामकों के प्राधिकारों में अंतर को दूर करने के लिए विधायी परिवर्तनों की सिफारिश की गई है।

डी. जलवायु जोखिम

3.13 इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ इंश्योरेंस सुपरवाइजर्स (आईएआईएस) ने, वैश्विक बीमा बाजार के 75 प्रतिशत को कवर करने वाले डेटा के आधार पर, बीमा क्षेत्र के आस्ति पक्ष एक्सपोजर पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव का विश्लेषण किया।¹⁰ यह पाया गया कि इक्विटी और कॉर्पोरेट ऋण, ऋण और बंधक, राष्ट्रिक बॉन्ड और स्थावर सम्पदा सहित बीमाकर्ताओं की निवेश आस्तियों का 35 प्रतिशत से अधिक हिस्सा जलवायु जोखिमों के संपर्क में आ सकता है, जिसमें आवास और ऊर्जा-गहन क्षेत्रों का प्रमुख हिस्सा होगा। बीमाकर्ताओं के लिए सिफारिशों में शामिल हैं- (ए) बीमाकर्ताओं के स्वयं के जोखिम और शोधन क्षमता मूल्यांकन में जलवायु संबंधी जोखिम को शामिल करना; (बी) उनके निवेश पोर्टफोलियो और आस्ति देयता प्रबंधन पर भौतिक और संक्रमण जोखिम के प्रभाव का आकलन; और (सी) भौतिक जोखिमों का प्रकटीकरण।

3.14 वित्तीय प्रणाली कायाकल्प नेटवर्क (एनजीएफएस) ने इस बात पर प्रकाश डाला है कि केंद्रीय बैंकों और पर्यवेक्षकों को प्रचुर वित्तीय निहितार्थों से जुड़े जलवायु संबंधी मुकदमेबाजी के जोखिम का सामना करना पड़ सकता है।¹¹ वित्तीय संस्थाओं को हरित वित्तीय उत्पादों के प्रकटीकरण से संबंधित दावों और ऐसे उत्पादों से संबंधित अनुबंध के संभावित उल्लंघन के साथ-साथ, प्रत्ययी कर्तव्यों का उल्लंघन दावों का सामना भी करना पड़ सकता है यदि वे, उदाहरण के लिए, प्रदूषणकारी परियोजनाओं को वित्त देना जारी रखने का निर्णय लेते हैं। तदनुसार, पर्यवेक्षकों को यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि उनकी पर्यवेक्षित संस्थाएं, उन वित्तीय और परिचालन जोखिमों का पर्याप्त रूप से प्रबंधन करती हैं, जो उनके विरुद्ध

⁸ आईओएससीओ (2021), "बाजार मध्यस्थों और आस्ति प्रबंधकों द्वारा कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग का उपयोग (iosco.org)", सितंबर।

⁹ यूएस ट्रेजरी (2021), "स्टेबलकॉइन्स पर रिपोर्ट", नवंबर।

¹⁰ आईएआईएस (2021), "बीमाकर्ताओं के निवेश पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव का अध्ययन", सितंबर।

¹¹ एनजीएफएस (2021), "जलवायु संबंधी मुकदमेबाजी: जोखिम के बढ़ते स्रोत के बारे में जागरूकता बढ़ाना", नवंबर।

और उनके एकसोजार वाले संस्थानों के विरुद्ध भी संभावित जलवायु-संबंधी मुकदमों के कारण पैदा हुए हैं।

III.2 घरेलू विनियामकीय प्रगति

3.15 जुलाई 2021 के बाद की अवधि के दौरान, 3 सितंबर, 2021 को केंद्रीय वित्तमंत्री की अध्यक्षता में वित्तीय स्थिरता और विकास परिषद (एफएसडीसी) की एक बार बैठक हुई। बैठक में एफएसडीसी के विभिन्न मुद्दों पर चर्चा हुई, नामतः वित्तीय स्थिरता, वित्तीय क्षेत्र की प्रगति, अंतर-विनियामकीय समन्वय, वित्तीय साक्षरता, वित्तीय समावेशन, बड़े वित्तीय समूहों के कामकाज सहित अर्थव्यवस्था का समष्टि-विवेकपूर्ण पर्यवेक्षण। परिषद द्वारा, इन बातों के साथ-साथ, दबावग्रस्त आस्तियों के प्रबंधन, वित्तीय स्थिरता विश्लेषण हेतु संस्थागत प्रणालियों को सुदृढ़ करने, वित्तीय समावेशन, वित्तीय संस्थाओं के समाधान हेतु फ्रेमवर्क, आईबीसी प्रक्रिया, विभिन्न क्षेत्रों में बैंकों के एक्सपोजर, सरकारी प्राधिकरणों की डेटा शेयरिंग प्रणाली, भारतीय रुपया के अंतरराष्ट्रीयकरण और पेंशन क्षेत्र से संबन्धित मुद्दों पर भी चर्चा की गई। परिषद ने रिजर्व बैंक के उप गवर्नर की अध्यक्षता में एफएसडीसी उप-समिति द्वारा किए गए कार्यों और एफएसडीसी के पिछले निर्णयों पर सदस्यों द्वारा की गई कार्रवाई को भी नोट किया।

III.3 विनियामकों/प्राधिकरणों द्वारा पहल

3.16 वित्तीय प्रणाली के विकास और इसकी सुदृढ़ता एवं आघात-सहनियता बढ़ाने के लिए, वित्तीय क्षेत्र के विनियामकों ने कई पहलें आरंभ की हैं (परिशिष्ट 3)।

III.3.1 ऋण एक्सपोजरों का हस्तांतरण

3.17 रिजर्व बैंक ने सितंबर, 2021 में दबावग्रस्त एवं चूक नहीं किए गए ऋण एक्सपोजरों के हस्तांतरण को अभिशासित करने वाले निदेश जारी किए थे और दबावग्रस्त आस्तियों के समाधान संबंधी वर्तमान निदर्शन के अनुरूप बनाकर, ऐसे

हस्तांतरणों संबंधी मौजूदा दिशानिर्देशों को सुसंगत बना दिया था।

3.18 चूक करने वाले ऋणों के मामले में निदेशों के अनुसार, सिर्फ समनुदेशन (असाइनमेंट) या नवस्थापन (नोवेशन) के माध्यम से ही हस्तांतरण किया जा सकता है। जहां वाणिज्यिक बैंकों, गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थाओं (एनबीएफसी) और आस्ति-पुनर्रचना कंपनियों (एआरसी) को हस्तांतरिती (ट्रांसफरी) बनने की अनुमति दी गई है, वहीं विधायी प्रावधान के अनुसार या किसी वित्तीय विनियामक द्वारा जारी विनियमनों के अंतर्गत ऋण एक्सपोजर रखने हेतु अनुमति दी गई इकाइयों¹², कॉर्पोरेट्स समेत, में हस्तांतरण के लिए विशेष अनुमति दी गई है। स्विस चैलेंज पद्धति को मूल्य की खोज के लिए अनिवार्य बना दिया गया है, जहां सभी उधारदाताओं का कुल एक्सपोजर 100 करोड़ रुपये से कम नहीं है और साथ ही विवेकपूर्ण फ्रेमवर्क के तहत एक समाधान योजना के रूप में किए गए ऋण एक्सपोजर के हस्तांतरण के मामलों में भी ऐसा किया गया है। एआरसी को बैंकों और एनबीएफसी की तर्ज पर, वहाँ ऋण अधिग्रहण करने की अनुमति दी गई है, जहां धोखाधड़ी का पता चला है ताकि उन्हें एक समान अवसर प्रदान किया जा सके। यह उन्हें हस्तांतरित सभी धोखाधड़ियों से संबंधित सभी परिचालनगत जिम्मेदारियों के अधीन होगा।

3.19 जहां तक ऋणों में चूक न होने का संबंध है, निदेशानुसार रिजर्व बैंक द्वारा विनियमित ऋण संस्थाओं द्वारा ऋण का हस्तांतरण अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (एससीबी), एनबीएफसी और एआईएफआई तक ही सीमित है और यह असाइनमेंट, नोवेशन या ऋण भागीदारी के अनुमत मार्ग के जरिये होगा। ऋण सिंडिकेशन के तहत स्थानांतरण को भी निदेशों के दायरे में लाया गया है। ऋणों के हस्तांतरण के लिए न्यूनतम धारण अवधि (एमएचपी) की आवश्यकता को सरल बनाया गया है।

III.3.2 मानक आस्तियों का प्रतिभूतिकरण

3.20 विनियामकीय फ्रेमवर्क को बासल-III दिशानिर्देशों के अनुरूप बनाने और सरल प्रतिभूतिकरण संरचनाओं को प्रोत्साहित करते हुए एक मजबूत प्रतिभूति बाजार विकसित करने के उद्देश्य से, रिजर्व बैंक ने सितंबर 2021 में मानक आस्तियों के प्रतिभूतिकरण पर संशोधित दिशानिर्देश जारी किए

¹² पात्र संस्थाओं की सूची भारतीय रिजर्व बैंक के 24 सितंबर, 2021 के परिपत्र डीओआर.एसटीआर.आरईसी.51/21.04.048/2021-22 में प्रदान की गई है।

हैं। ये निदेश केवल उन प्रतिभूतिकरण लेनदेन की अनुमति देते हैं जो पारंपरिक प्रतिभूतिकरण हैं यानी जो वैसी विशेष प्रयोजन इकाई (एसपीई) द्वारा जारी प्रतिभूतियां हैं जहां नकदी प्रवाह एक ऋणदाता से प्राप्त अंतर्निहित ऋणों के एक निर्दिष्ट पूल से होता है। ऋण एक्सपोजर के हस्तांतरण पर मास्टर निदेश के अनुरूप, न्यूनतम धारण अवधि (एमएचपी) और न्यूनतम प्रतिधारण आवश्यकता (एमआरआर) शर्तों को सरल बनाया गया है। संशोधनों में (-) एकल आस्ति प्रतिभूतिकरण की अनुमति, क्रेडिट एन्हांसमेंट के रीसेट को नियंत्रित करने वाले सरल निदेश; सरल, पारदर्शी और तुलनीय (एसटीसी) प्रतिभूतिकरण के मामले में रियायती पूंजी व्यवस्था और बेसल-III मानदंडों के अनुरूप पूंजी फ्रेमवर्क शामिल हैं।

III.3.3 विदेशी बैंक शाखाओं के व्युत्पन्न लेनदेन के लिए ऋण जोखिम न्यूनीकरण (सीआरएम)

3.21 सितंबर 2021 में जारी दिशा-निर्देशों के माध्यम से एक ऋण जोखिम न्यूनीकरण (सीआरएम) तंत्र स्थापित किया गया था जिसके द्वारा, लार्ज एक्सपोजर फ्रेमवर्क (एलईएफ) सीमाओं की गणना करते समय, अपने प्रधान कार्यालय (एचओ) [विदेशी शाखाओं सहित] की तुलना में भारत में विदेशी बैंक शाखाओं के सकल एक्सपोजर को सीआरएम द्वारा ऑफसेट किया जा सकता है। सीआरएम में नकद/भाररहित अनुमोदित प्रतिभूतियां शामिल होंगी, जिनके स्रोत एचओ से ब्याज मुक्त निधियां या रिजर्व बैंक के पास रखी भारतीय बहियों (रिजर्व) में रखे गए विप्रेषणीय अधिशेष होने चाहिए।¹³ ग्रैंडफादरिंग व्यवस्था के अंग के तहत, एचओ/विदेशी शाखाओं पर डेरिवेटिव एक्सपोजर की गणना करते समय, विदेशी बैंक शाखाओं को 1 अप्रैल 2019 से पहले निष्पादित सभी डेरिवेटिव अनुबंधों को बाहर रखने की अनुमति है।

III.3.4 गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों के लिए पैमाना-आधारित विनियमन

3.22 पैमाना-आधारित विनियमन शुरू करने के लिए, एनबीएफसी के लिए विनियामकीय फ्रेमवर्क को अक्टूबर 2021 में संशोधित किया गया था। नए फ्रेमवर्क के तहत, एनबीएफसी को उनके आकार, गतिविधि और कथित जोखिम के आधार पर, चार स्तरों में रखा गया है- आधार स्तर (बीएल), मध्य स्तर

(एमएल), ऊपरी स्तर (यूएल) और एक संभावित शीर्ष स्तर (टीएल)। उच्च स्तरों के लिए नियम उत्तरोत्तर सख्त हुए हैं। आधार स्तर (एनबीएफसी-बीएल) में एनबीएफसी के लिए, अभिशासन और विवेकपूर्ण दिशानिर्देशों में बदलाव को छोड़कर, विनियमन मोटे तौर पर जमा न लेने वाली एनबीएफसी (एनबीएफसी-एनडी) के लिए मौजूदा विनियमों के अनुरूप हैं। मध्य स्तर में एनबीएफसी (एनबीएफसी-एमएल) को (-) पूंजी, विवेकपूर्ण और अभिशासन संबंधी दिशानिर्देशों में बदलाव को छोड़कर (-) प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण जमा न लेने वाली एनबीएफसी (एनबीएफसी-एनडी-एसआई), जमा स्वीकार करने वाली एनबीएफसी (एनबीएफसी-डी), कोर निवेश कंपनियों (सीआईसी), स्टैंडअलोन प्राइमरी डीलरों (एसपीडी) और हाउसिंग फाइनेंस कंपनियों (एचएफसी), जैसा भी मामला हो, की तर्ज पर विनियमित किया जाएगा। ऊपरी स्तर (एनबीएफसी-यूएल) में एनबीएफसी, मध्य स्तर (एनबीएफसी-एमएल) में एनबीएफसी पर लागू विनियमों के अधीन हैं, साथ ही इसमें सामान्य इक्विटी टियर 1 और लीवरेज आवश्यकताओं की शुरुआत, अनिवार्य लिस्टिंग, बोर्ड के सदस्यों की योग्यता और ऐसे ही कुछ और विनियमन जोड़े गए हैं। शीर्ष स्तर (आदर्शतः रिक्त) में आने वाली एनबीएफसी के लिए, हालांकि कोई विशिष्ट विनियमन प्रदान नहीं किया गया है, लेकिन अन्य बातों के साथ-साथ, वे उच्च पूंजी प्रभार और बढ़ी हुई पर्यवेक्षी भागीदारी के अधीन होंगी।

III.3.5 बैंकों द्वारा चालू खाते खोलना

3.23 क्रेडिट अनुशासन स्थापित करने और निधियों के विपथन को रोकने के लिए, रिजर्व बैंक ने अगस्त 2020 में संशोधित निर्देश जारी किए थे, जिसमें बैंकों द्वारा चालू खाते और कैश क्रेडिट (सीसी) / ओवरड्राफ्ट (ओडी) सुविधाओं को खोलने पर प्रतिबंध लगाया गया था। विनियमों की मूल भावना के साथ गैर-व्यवधानिक अनुपालन सुनिश्चित करने की दृष्टि से, दिशा-निर्देशों को 29 अक्टूबर, 2021 को संशोधित करते हुए, अनुमति दी गई थी कि (ए) जहां बैंकिंग प्रणाली का कुल एक्सपोजर ₹5 करोड़ से कम है, वैसे उधारकर्ता बिना किसी प्रतिबंध के चालू खाते और सीसी/ओडी खाते खोल सकते हैं और (बी) सीसी/ओडी की सुविधा उठाने वाले उधारकर्ता उस बैंक में चालू खाता रख सकते हैं, जिनसे वे सीसी/ओडी सुविधा

¹³ 09 सितंबर, 2021 के परिपत्र डीओआर.सीआरई.आरईसी.47/21.01.003/2021-22 में विवरण है।

ले रहे हैं, बशर्ते उस बैंक का उस उधारकर्ता में बैंकिंग प्रणाली का कम से कम 10 प्रतिशत एक्सपोजर हो; और उधारकर्ता अन्य उधार देने वाले बैंकों में संग्रह खाते रख सकते हैं। विनिर्दिष्ट चालू खातों को निर्देशों के दायरे से छूट दी गई है।

III.3.6 खुदरा प्रत्यक्ष योजना

3.24 रिजर्व बैंक ने नवंबर 2021 में आरबीआई रिटेल डायरेक्ट स्कीम (आरबीआई-आरडी) आरंभ की, जिसके अंतर्गत व्यक्तिगत निवेशकों को, प्राथमिक और द्वितीयक बाजार में सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश की सुविधा के लिए, एक ऑनलाइन पोर्टल का उपयोग करके रिजर्व बैंक के साथ रिटेल डायरेक्ट गिल्ट (आरडीजी) खाता खोलने की अनुमति दी गई है। इस योजना का उद्देश्य एक सुरक्षित, सरल, प्रत्यक्ष और सुरक्षित मंच प्रदान करके खुदरा निवेशकों के लिए जी-सेक बाजार की पहुंच को आसान बनाना है।

III.3.7 ग्राहक सुरक्षा

3.25 महामारी को देखते हुए और ऑनलाइन लेनदेन की बढ़ती सुविधा के मद्देनजर, डिजिटल मोड के माध्यम से वित्तीय लेनदेन कई गुना बढ़ गए। साथ ही, इलेक्ट्रॉनिक और डिजिटल बैंकिंग लेनदेन यथा- एटीएम/डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड और मोबाइल/इलेक्ट्रॉनिक बैंकिंग से संबंधित शिकायतों में सामूहिक रूप से तेजी देखी गई और लोकपाल कार्यालयों में प्राप्त कुल शिकायतों में 40 प्रतिशत से अधिक शिकायतें इनसे ही संबंधित थीं (चार्ट 3.2)। हालांकि, केवल एटीएम/डेबिट कार्ड से संबंधित शिकायतों में पिछले दो वर्षों की तुलना में गिरावट आई है, जो रिजर्व बैंक और सेवा प्रदाताओं द्वारा किए गए अग्रसक्रिय उपायों को दर्शाता है।

III.3.8 एकीकृत लोकपाल योजना, 2021

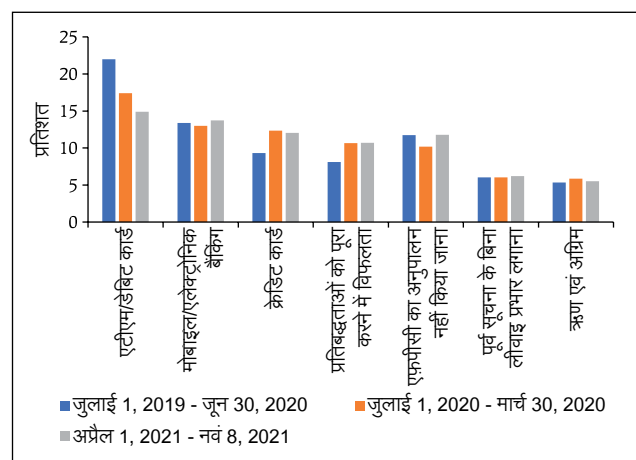
3.26 रिजर्व बैंक द्वारा विनियमित संस्थाओं द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं में कमी से संबंधित ग्राहक-शिकायतों का निःशुल्क निवारण करने के लिए, नवंबर 2021 में रिजर्व बैंक - एकीकृत लोकपाल योजना (आरबीआई-ओएस) आरंभ की गई थी। इस नई योजना में बैंकिंग लोकपाल योजना (2006 में शुरू

की गई), गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों के लिए लोकपाल योजना (2018 में शुरू की गई) और सिस्टम पार्टिसिपेंट्स संबंधी योजना¹⁴ (2019 में अधिसूचित), तीनों को एकीकृत कर दिया गया है। इस योजना का विस्तार उन गैर-अनुसूचित प्राथमिक शहरी सहकारी बैंकों तक भी कर दिया गया है, जिनका जमा आकार 50 करोड़ रुपये और उससे अधिक है। इस योजना में निवारण तंत्र को तटस्थ बनाकर, 'एक राष्ट्र, एक लोकपाल' दृष्टिकोण अपनाया गया है।

III.3.9 सीसीआईएल की चूक निधि (डीएफ)

3.27 भारतीय समाशोधन निगम लिमिटेड (सीसीआईएल), अपनी प्रत्येक समाशोधन सेवा के लिए, एक सीसीपी के रूप में पूर्व-निधिकृत डिफॉल्ट प्रबंधन संसाधन रखता है। यदि चूककर्ता सदस्य के पोर्टफोलियो की हानि, उसके द्वारा उपलब्ध कराए गए संसाधनों से अधिक होती है तो इस निधि का उपयोग किया जा सकता है। इन संसाधनों को कवर-1 और कवर-2 दबाव हानि¹⁵ की अधिकता में बनाए रखा जाता है। उन्हें सदस्यों के योगदान के साथ-साथ, सीसीआईएल के स्वयं के फंड द्वारा वित्त पोषित किया जाता है जिसे स्किकन-इन-द-गेम (एसआईटीजी) कहा जाता है, जो इसके सेटलमेंट रिजर्व फंड (एसआरएफ) से आबंटित होता है। प्रत्येक क्लियरिंग सर्विस डिफॉल्ट वॉटरफॉल के अनुरूप सीसीआईएल की एसआईटीजी

चार्ट 3.2 : बैंकिंग लोकपाल कार्यालयों में शिकायतों की श्रेणी



स्रोत: भारतीय रिजर्व बैंक

¹⁴ सिस्टम पार्टिसिपेंट का अर्थ है- बैंक को छोड़कर कोई भी व्यक्ति, जो भुगतान और निपटान प्रणाली अधिनियम, 2007 की धारा 2 के तहत परिभाषित भुगतान प्रणाली में भाग लेता है। इसमें 'सिस्टम प्रदाता' शामिल नहीं है।

¹⁵ कवर 1 दबाव हानि - पिछले छह महीनों में किसी सदस्य और उसके सहयोगियों के कारण सबसे ज्यादा दबाव हानि।

कवर 2 दबाव हानि - एक सदस्य और उसके सहयोगियों के कारण उच्चतम दबाव हानि का योग, और प्रत्येक दबाव परिदृश्य के लिए एक सदस्य और उसके सहयोगियों के कारण दूसरा सबसे बड़ा दबाव नुकसान निर्धारित किया जाता है। चूक निधि (डिफॉल्ट फंड) की मात्रा पिछले छह महीनों में इस तरह की उच्चतम राशि के बराबर निर्धारित की गई है।

की गणना संबंधित सदस्य के डिफॉल्ट फंड के 25 प्रतिशत से अधिक या एसआरएफ में संसाधनों की उपलब्धता के अधीन एकल सदस्य से उच्चतम योगदान के रूप में की जाती है। प्रत्येक समाशोधन सेवा के लिए कुल डिफॉल्ट फंड, जिसमें सदस्य योगदान और संबंधित एसआईटीजी शामिल हैं, आम तौर पर कवर-1/कवर-2 दबाव हानि (पांच कमजोर संस्थाओं के दबाव हानि के साथ) का 125 प्रतिशत होता है। दबाव हानि (सेगमेंट के कवर के अनुसार) एक विशिष्ट सीमा से अधिक हो जाने की स्थिति में, डिफॉल्ट फंड को आंतर-माह (इंट्रा-मंथ) आधार पर संशोधित किया जाता है।

3.28 अक्टूबर 2021 से पहले, सीसीआईएल द्वारा आंतर-माह संशोधन के लिए उपयोग की जाने वाली पद्धति के परिणामस्वरूप, कुल पूर्व-निधिकृत संसाधन कवर-1 / कवर-2 दबाव हानि के 125 प्रतिशत से कम हो सकते थे। अक्टूबर 2021 से, रिजर्व बैंक की सलाह के अनुसार, सीसीआईएल ने यह सुनिश्चित करने के लिए पद्धति में संशोधन किया है कि यदि एसआरएफ में कमी के कारण, सीसीआईएल का एसआईटीजी कवर-1/कवर-2 दबाव हानि के 25 प्रतिशत से कम हो जाता है, तो आवश्यकता पड़ने पर सदस्यों के योगदान को 100 प्रतिशत से भी अधिक बढ़ाकर, कुल पूर्व-निधिकृत संसाधन को कवर-1/कवर-2 दबाव हानि का 125 प्रतिशत बनाए रखा जा सके। सीसीआईएल अपने आवश्यक संसाधनों के अनुमान के आधार पर एसआरएफ में वार्षिक वृद्धि करता है। 31 मार्च, 2021 को एसआरएफ की शेष राशि 1,750 करोड़ रुपये थी। सदस्यों के डिफॉल्ट फंड योगदान के अनुपात के रूप में सीसीआईएल का एसआईटीजी, अधिकांश अन्य वैश्विक सीसीपी की तुलना में बहुत अधिक है (सारणी 3.1)।

3.29 संशोधित फ्रेमवर्क से वित्तीय स्थिरता में वृद्धि होने की उम्मीद है और सीसीआईएल जैसे वित्तीय बाजार के बुनियादी ढांचे के प्रणालीगत महत्व को देखते हुए, इससे वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र की आघात-सहनैयता में सुधार होगा।

III.3.10 फिनटेक

3.30 फिनटेक ने वित्तीय क्षेत्र में तेजी से परिवर्तन किया है। वित्तीय स्थिरता बोर्ड (एफएसबी) फिनटेक को "तकनीकी रूप से सक्षम वित्तीय नवाचार के रूप में परिभाषित करता है जिसके

परिणामस्वरूप ऐसे नए व्यापार मॉडल, एप्लिकेशन, प्रक्रियाएं या उत्पाद उत्पन्न हो सकते हैं जो वित्तीय बाजारों और संस्थानों और वित्तीय सेवाओं के प्रावधान पर ठोस प्रभाव डाल सकते हैं"। भारत दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ते फिनटेक बाजारों में से एक है। हाल के एक सर्वेक्षण से संकेत मिलता है कि डिजिटल रूप से सक्रिय आबादी के 87 प्रतिशत ने फिनटेक को अपनाया है, जिससे यह दुनिया में एक अग्रणी के रूप में स्थापित हो गया है।¹⁶ भारत में फिनटेक के शानदार विकास में कई कारकों ने योगदान दिया है। इसमें उद्यम पूंजी, निजी इक्विटी और नवाचार वाले संस्थागत निवेशकों द्वारा प्रचुर मात्रा में वित्त पोषण से लेकर; दूरसंचार, इंटरनेट और स्मार्टफोन की बढ़ती पहुंच; अनुकूल जनसांख्यिकी; और इंडियास्टैक का उदय शामिल है।¹⁷ इंडियास्टैक, ओपन एपीआई [ई-केवाईसी, ई-साइन, डिजिलॉकर, और यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई)] का एक सेट है जो सरकारों, व्यवसायों, स्टार्टअप्स और डेवलपर्स को डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर का उपयोग करने की अनुमति देता है। रिजर्व बैंक के सुविचारित विनियामकीय दृष्टिकोण ने फिनटेक स्पेस में तेजी से विकास के साथ तालमेल बिठा लिया है (बॉक्स 3.1)।

III.3.11 प्रवर्तन

3.31 जुलाई-नवंबर 2021 की अवधि के दौरान, रिजर्व बैंक ने 90 विनियमित संस्थाओं (सात सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, दस निजी क्षेत्र के बैंक, 64 सहकारी बैंक, तीन विदेशी बैंक, एक लघु वित्त बैंक और पांच गैर-बैंक वित्त कंपनियां) के खिलाफ प्रवर्तन कार्रवाई की और, समय-समय पर रिजर्व बैंक द्वारा जारी किए गए वैधानिक प्रावधानों और निर्देशों के गैर-अनुपालन/उल्लंघन के लिए कुल मिलाकर ₹35.63 करोड़ का जुर्माना लगाया।

सारणी 3.1 : चुनिन्दा सीसीपी के एसआईटीजी अनुपात

क्रम सं.	सीसीपी का नाम	एसआईटीजी/डीएफ अनुपात* (प्रतिशत)
1	एलसीएच एसए	0.65
2	एलसीएच	1.01
3	ओसीसी	1.36
4	यूरेक्स क्लियरिंग	2.61
5	सीएमई	3.33
6	नेस्टेक	10.87
7	शंघाई क्लियरिंग हाउस	28.59
8	एसजीएक्स डीसी	41.75

* ऐसे मामलों में जहां संसाधनों को सीसीपी द्वारा समाशोधन सेवा स्तर पर या मुद्रा द्वारा अलग किया जाता है, वहाँ अनुपात निर्धारित करने के लिए संसाधनों को समेकित किया जाता है।

स्रोत: सीसीआईएल, सीसीपी के सार्वजनिक मात्रात्मक प्रकटीकरण

¹⁶ ईवाई ग्लोबल फिनटेक एडॉप्शन इंडेक्स। डिजिटल रूप से सक्रिय जनसंख्या उन व्यक्तियों के संदर्भ में है जो ऑनलाइन सक्रिय हैं।

¹⁷ भारतीय जनसंख्या में 65 प्रतिशत से अधिक लोग 35 वर्ष से कम आयु के हैं।

बॉक्स 3.1: भारत में फिनटेक विनियमन - विकासमान परिदृश्य

रिज़र्व बैंक ने फिनटेक क्षेत्र के व्यवस्थित विकास को सुनिश्चित करने के लिए और वित्तीय स्थिरता, ग्राहक सुरक्षा, साइबर सुरक्षा और डेटा सुरक्षा जैसे संबंधित मुद्दों का समाधान करने के लिए, एक सक्षम विनियामकीय और पर्यवेक्षी फ्रेमवर्क की आवश्यकता को 2018 की शुरुआत में ही पहचान लिया था, जब फिनटेक क्षेत्र में विकास का लाभ उठाने के लिए, फिनटेक और डिजिटल बैंकिंग पर कार्य समूह की रिपोर्ट में एक व्यापक रोडमैप निर्धारित कर लिया गया था।

2. फिनटेक के लिए अब तक की नीतिगत कार्रवाइयों में निम्नलिखित दृष्टिकोण शामिल हैं, नामतः (i) इकाई के बजाय उसके अंतर्निहित आर्थिक कार्य पर ध्यान केंद्रित करते हुए, नए नवाचारों और उनके व्यापार मॉडल के लिए मौजूदा विनियामक ढांचे को लागू करना, (ii) नए प्रवेशकों को समायोजित करने के लिए मौजूदा विनियामक ढांचे को समायोजित करना और नई प्रौद्योगिकी को अपनाने की अनुमति देने के लिए मौजूदा प्रक्रियाओं की पुनः इंजीनियरिंग करना; और (iii) फिनटेक गतिविधियों को शामिल करने (या प्रतिबंधित) करने के लिए नए विनियामक ढांचे या विनियमन बनाना।

3. देश में जैसे-जैसे फिनटेक अपनाने में तेजी आई, रिज़र्व बैंक ने उभरते क्षेत्रों जैसे भुगतान बैंक (2014), अकाउंट एग्रीगेटर्स (2016), मोबाइल वॉलेट (2017), प्री-पेड इंस्ट्रुमेंट्स (2017), पीयर-टू-पीयर (P2P) लेंडिंग (2017) और इनवॉइस आधारित लेंडिंग (ट्रेड रिसीवेबल एंड डिस्काउंटिंग सिस्टम- ट्रेड्स) (2018) के लिए विनियम/दिशानिर्देश जारी किए। विनियमों में कानूनी रूप, स्वामित्व और समूह संरचना, प्रारंभिक पूंजी, निदेशकों और वरिष्ठ प्रबंधन के लिए उपयुक्त और उचित मानदंड, पूंजी, चलनिधि, लीवरेज, अभिशासन और जोखिम प्रबंधन संबंधी विवेकपूर्ण आवश्यकताएं, साइबर सुरक्षा और प्रकटीकरण, बाजार आचरण और डेटा संरक्षण, शिकायत निवारण तंत्र और एएमएल/सीएफटी शामिल हैं। वर्तमान में टेक दिग्गजों को भी गतिविधि आधारित सिद्धांत के तहत विनियमित किया जा रहा है।

4. रिज़र्व बैंक ने वित्तीय सेवाओं में जिम्मेदार नवाचार को बढ़ावा देने, दक्षता को बढ़ावा देने और उपभोक्ताओं तक लाभ का विस्तार करने के

लिए, 2019 में एक विनियामक सैंडबॉक्स (आरएस) आरंभ किया। 'खुदरा भुगतान' विषय पर पहले समूह (कोहोर्ट) ने उन उत्पादों का सफलतापूर्वक परीक्षण किया जो फीचर फोन और ऑफलाइन भुगतान का उपयोग करके डिजिटल भुगतान परिदृश्य में संभावित रूप से क्रांति ला सकते हैं। 'सीमा पार से भुगतान' पर दूसरा समूह प्रगति पर है और इसका उद्देश्य सीमा पार से भुगतान में उच्च लागत, कम गति, सीमित पहुंच और अपर्याप्त पारदर्शिता की चुनौतियों का समाधान करना है। 'एमएसएमई लेंडिंग' पर तीसरे समूह में सूक्ष्म, लघु और मध्यम आकार के उद्यमों के लिए वित्त की बेहतर पहुंच की परिकल्पना की गई है। रिज़र्व बैंक ने आरबीआई इनोवेशन हब (आरबीआईएच) भी स्थापित किया है, जो वित्तीय बाजारों और वित्तीय समावेशन तक पहुंच को बढ़ावा देने के लिए तकनीकी नवप्रवर्तनकर्ताओं और शिक्षाविदों के सहयोग से विचार निर्माण और विकास के लिए एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाने की दिशा में काम कर रहा है। यह हब फिनटेक अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए आंतरिक बुनियादी ढांचे का भी विकास करेगा।

5. वित्तीय सेवाओं के डिजिटलीकरण से विभिन्न प्रकार के जोखिम भी हो सकते हैं, जैसे- तीसरे पक्ष के सेवा प्रदाताओं पर अधिक निर्भरता, वित्तीय उत्पादों की गलत बिक्री, डेटा गोपनीयता का उल्लंघन, अनैतिक व्यापार आचरण और अवैध परिचालन। ऐसे जोखिमों को दूर करने के लिए, फिनटेक संबंधी विनियामक परिदृश्य विकसित हो रहा है। डिजिटल लेंडिंग पर वर्किंग ग्रुप की हाल ही में जारी रिपोर्ट इस दिशा में एक संकेतक है, जो ग्राहकों की सुरक्षा बढ़ाने और नवाचार को प्रोत्साहित करते हुए, डिजिटल लेंडिंग इकोसिस्टम को सुरक्षित और मजबूत बनाने पर जोर देती है।

6. मौजूदा जोखिमों का प्रबंधन करते हुए और संस्थाओं, उत्पादों और सेवाओं के प्रभावी विनियमन और पर्यवेक्षण को सुनिश्चित करते हुए, फिनटेक में देश की क्षमता को और आगे बढ़ाने की दृष्टि से, रिज़र्व बैंक वर्तमान में सभी फिनटेक संबंधित कार्यों को एक छतरी के नीचे समेकित करने की प्रक्रिया में है। नए सेटअप में, विनियामक और पर्यवेक्षी विभागों के समन्वय में फिनटेक गतिविधियों के पूरे दायरे का प्रबंधन किया जाएगा।

III.3.12 म्यूचुअल फंड योजनाओं के लिए स्विंग मूल्य निर्धारण फ्रेमवर्क

3.32 म्यूचुअल फंड योजनाओं में आने वाले, मौजूदा और बाहर जाने वाले निवेशकों के साथ व्यवहार में निष्पक्षता

सुनिश्चित करने के लिए, विशेष रूप से बाजार की अव्यवस्था के दौरान, सेबी ने एक स्विंग मूल्य निर्धारण फ्रेमवर्क आरंभ किया है, जो ओपन-एंडेड म्यूचुअल फंड योजनाओं (विनिर्दिष्ट अपवादों के साथ) के लिए, योजनाओं से शुद्ध बहिर्वाह से संबंधित परिदृश्यों के लिए, 1 मार्च, 2022 से प्रभावी होगा। उच्च जोखिम

वाली ओपन-एंडेड ऋण योजनाओं के लिए, यह सामान्य समय के दौरान एक वैकल्पिक आंशिक स्विंग और बाजार की अव्यवस्था की अवधि के दौरान एक अनिवार्य पूर्ण स्विंग प्रदान करता है। जब स्विंग प्राइसिंग ट्रिगर होती है, तो आने और जाने वाले निवेशकों के लिए निवल आस्ति मूल्य (एनएवी) को स्विंग फैक्टर के लिए समायोजित (एडजस्ट) किया जाता है।

III.4 अन्य प्रगति

III.4.1 निक्षेप बीमा

3.33 निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंटी निगम (डीआईसीजीसी) अधिनियम, 1961 को अगस्त 2021 में संशोधित किया गया था ताकि जमाकर्ताओं को जमा राशि के समयबद्ध भुगतान (अंतरिम) का प्रावधान किया जा सके, जो रिजर्व बैंक द्वारा जमा की निकासी पर लगाए गए प्रतिबंध वाले बैंक के मामले में बीमित राशि के बराबर होगा। 1 सितंबर, 2021 से लागू हुए संशोधन के अनुसार, बीमित बैंक को इस तरह के प्रतिबंध लगाने के 45 दिनों के भीतर अपना दावा प्रस्तुत करना होगा और निगम को 30 दिनों के भीतर ऐसे दावों का सत्यापन करवाना होगा और अगले 15 दिन के भीतर जमाकर्ताओं को भुगतान करना होगा। यह संशोधन डीआईसीजीसी को संकटग्रस्त बैंकों को अंतरिम जमा बीमा भुगतान करने का अधिकार देता है, भले ही वे रिजर्व बैंक के सभी समावेशी निदेशों (एआईडी) के तहत हों और ऐसे निदेश लागू होने के 90 दिनों के भीतर यह भुगतान किया जा सकेगा। यदि रिजर्व बैंक, उक्त बैंक को समामेलन/समझौता या व्यवस्था/पुनर्निर्माण की योजना के अंतर्गत लाना समीचीन पाता है, तो निगम की देयता 90 दिनों की अवधि के लिए और बढ़ा दी जाएगी। अन्य संशोधनों में, भारतीय रिजर्व बैंक की मंजूरी से, बीमा प्रीमियम पर जमा राशि पर प्रति 100 रुपये 15 पैसे की सीमा बढ़ाना शामिल है। इसके अलावा, डीआईसीजीसी, अपने बोर्ड के अनुमोदन से, डीआईसीजीसी के प्रति अपनी देयता का निर्वहन करने के लिए बीमित बैंक की चुकौती अवधि को स्थगित या बदल सकता है और देरी के मामले में रेपो दर से 2 प्रतिशत अधिक दर पर दंडात्मक ब्याज वसूल सकता है। इन संशोधनों के परिणामस्वरूप, दावों के निपटान से संबंधित प्रक्रिया और बीमाकृत बैंकों को दावों की वसूली के लिए समय देने से संबंधित नियमों में भी संशोधन किया गया है। 20 दिसंबर, 2021 तक, डीआईसीजीसी ने 21 संकटग्रस्त बैंकों में से 16 बैंकों के 1.09 लाख जमाकर्ताओं के मामलों में 1,374 करोड़ का भुगतान

किया है जो इस तरह के भुगतान (पे-आउट) प्राप्त करने के लिए पात्र थे।

3.34 30 सितंबर, 2021 तक, पंजीकृत बीमित बैंकों की संख्या 2,049 थी जिसमें 140 वाणिज्यिक बैंक (43 आरआरबी, दो एलएबी, छह भुगतान बैंक और 11 छोटे वित्त बैंक शामिल) और 1,909 सहकारी बैंक शामिल थे। जमा बीमा की वर्तमान सीमा ₹5 लाख होने के साथ, कुल जमा खातों का 98.1 प्रतिशत, जो 267.2 करोड़ है और निर्धारणीय जमाराशियों का 49.0 प्रतिशत, जो कुल ₹78.02 लाख करोड़ है, पूरी तरह से संरक्षित हैं।

3.35 2021-22 की पहली छमाही के दौरान, ₹9,561 करोड़ का जमा बीमा प्रीमियम संग्रहीत किया गया था, जिसमें से 93.5 प्रतिशत का योगदान वाणिज्यिक बैंकों और शेष सहकारी बैंकों द्वारा किया गया था। 2021-22 की पहली छमाही में, बैंकों से दावों का निपटान और वसूली एक साल पहले की तुलना में काफी अधिक थी। बीमाकृत बैंकों द्वारा भुगतान किए गए प्रीमियम और सरकारी प्रतिभूतियों में इनके निवेश पर प्राप्त कूपन आय से निर्मित निक्षेप बीमा निधि (डीआईएफ) में 1.41 लाख करोड़ रुपये की राशि है, जो आरक्षित अनुपात (बीमाकृत जमाओं पर डीआईएफ का अनुपात) का 1.81 प्रतिशत है। प्रतिशत (सारणी 3.2 से 3.4)।

सारणी 3.2: निपटाए गए दावे और दावों की वसूली

(करोड़ रुपये में)

अवधि	निपटाए गए दावे	दावों की वसूली
2021-22 (छ1)	393	267
2020-21 (छ1)	27.4	33.7

स्रोत: निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंटी निगम (डीआईसीजीसी)

सारणी 3.3: निक्षेप बीमा प्रीमियम

(करोड़ रुपये में)

अवधि	वाणिज्यिक बैंक	सहकारी बैंक
2021-22 (छ1)	8,939.1	621.6

स्रोत: निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंटी निगम (डीआईसीजीसी)

सारणी 3.4: निक्षेप बीमा निधि (डीआईएफ)

(करोड़ रुपये में)

अवधि	तक निक्षेप बीमा	निधि रिजर्व अनुपात (प्रतिशत)
30 सितंबर, 2021	1,40,831	1.81
31 मार्च, 2021	1,29,904	1.70

स्रोत: निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंटी निगम (डीआईसीजीसी)

III.4.2 कॉर्पोरेट दिवाला समाधान प्रक्रिया

3.36 दिसंबर 2016 में दिवाला और शोधन अक्षमता संहिता आने के बाद से, 4708 सीआईआरपी (30 सितंबर, 2021 तक) शुरू हो गए हैं, जिनमें से 65 प्रतिशत बंद कर दिए गए हैं। इनमें से 23 प्रतिशत अपील या समीक्षा या निपटान के बाद बंद कर दिए गए, 17 प्रतिशत वापस ले लिए गए, 46 प्रतिशत परिसमापन आदेश के साथ समाप्त हो गए और 14 प्रतिशत

समाधान योजनाओं के अनुमोदन के साथ समाप्त हो गए (सारणी 3.5)।

3.37 421 सीआईआरपी के मामले में, जो समाधान में फलित हुए, वित्तीय लेनदारों (एफसी) ने अपने दावों का 36 प्रतिशत और परिसमापन मूल्य का 167 प्रतिशत वसूल कर लिया है (सारणी 3.6)।

सारणी 3.5 : कॉर्पोरेट दिवाला समाधान प्रक्रिया

(संख्या)

वर्ष/तिमाही	अवधि के आरंभ में सीआईआरपी	स्वीकृत	समाप्ति				अवधि के अंत में सीआईआरपी
			अपील/समीक्षा/निपटारा	धारा 12ए के तहत वापसी	समाधान योजना	अनुमोदित पारिसमापन का आरंभ	
2016-17	0	37	1	0	0	0	36
2017-18	36	706	94	0	20	91	537
2018-19	537	1157	153	97	79	306	1059
2019-20	1059	1986	343	216	139	542	1805
2020-21	1805	537	83	157	122	349	1631
अप्रैल-जून, 2021	1631	141	9	33	45	74	1611
जुला-सितं, 2021	1611	144	18	24	16	57	1640
कुल	NA	4708	701	527	421	1419	1640

नोट: 1. ये सीआईआरपी 4593 सीडी के संबंध में हैं।

2. इसमें 1 सीडी शामिल नहीं है जो सीधे बीआईएफआर से समाधान में चली गई है।

3. इसमें दीवान हाउसिंग फाइनेंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड डेटा शामिल है। रिजर्व बैंक द्वारा दायर आवेदन को कोड के वित्तीय सेवा प्रदाता नियमों के साथ पठित धारा 227 के तहत स्वीकार किया गया था।

स्रोत: एनसीएलटी की वेबसाइट से संकलन और आईपी द्वारा फाइलिंग।

सारणी 3.6: 30 सितंबर, 2021 की स्थिति के अनुसार, हितधारक-वार शुरू की गई सीआईआरपी के परिणाम

परिणाम	ब्योरा	इनके द्वारा सीआईआरपी शुरू की गई			
		वित्तीय ऋणदाता	परिचालन ऋणदाता	कॉर्पोरेट देनदार	कुल
सीआईआरपी की स्थिति	अपील/समीक्षा के बाद समाप्ति/निपटारा गया	189	507	5	701
	12ए के तहत वापसी द्वारा समाप्ति	152	368	7	527
	समाधान योजना के अनुमोदन के साथ समाप्ति#	241	135	44	420
	पारिसमापन के आरंभ के साथ समाप्ति जारी हैं	628	628	163	1419
	कुल	809	759	72	1640
समाधान योजना के रूप में परिणत सीआईआरपी	पारिसमापन मूल्य के प्रतिशत के रूप में एफसी द्वारा वसूली	181.5	115.2	140.8	166.6
	अपने दावों के प्रतिशत के रूप में एफसी द्वारा वसूली	38.5	17.2	25.5	35.9
	सीआरआईपी बंद करने में लगा औसत समय	499	484	503	495
पारिसमापन के रूप में परिणत सीआईआरपी	दावों के प्रतिशत के रूप में पारिसमापन मूल्य	6.3	8.7	9.7	7.1
	सीआरआईपी बंद करने में लगा औसत समय	395	364	341	375

नोट: # - इसमें दीवान हाउसिंग फाइनेंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड डेटा शामिल नहीं है। रिजर्व बैंक द्वारा दायर आवेदन को संहिता के एफएसपी नियमों के साथ पठित धारा 227 के तहत स्वीकार किया गया था।

स्रोत: एनसीएलटी की वेबसाइट से संकलन और दिवाला पेशेवरों द्वारा फाइलिंग।

सारणी 3.7: एसआईपी में वृद्धि (वित्तीय वर्ष: 2021-22)

विवरण	वर्ष 2021-22 के आरंभ में विद्यमान (एसटीपी को छोड़कर)	वर्ष 2021-22 के दौरान पंजीकृत	वर्ष 2021-22 के दौरान परिपक्व होने वाली	वर्ष 2021-22 के दौरान परिपक्वता-पूर्व निरस्त	31 अक्टूबर 2021 के अंत में एसआईपी की समाप्ति	वर्ष 2021-22 के आरंभ में एयूएम	31 अक्टूबर 2021 के अंत में एयूएम
	(₹ लाख में)				(₹ करोड़ में)		
एसआईपी	368	137	13	33	458	4,24,817	5,49,518

स्रोत: भारतीय प्रतिभूति और विनियमन बोर्ड (सेबी)

III.4.3 म्यूचुअल फंड

3.38 एमएफ उद्योग के आरिष्ठ आधार ने पिछली पाँच लगातार तिमाहियों में मजबूत अनुक्रमिक विकास प्रदर्शित किया और अक्टूबर 2021 के अंत में ₹37,33,204 करोड़ पर रहा जो की साल दर साल आधार पर 32 प्रतिशत की वृद्धि है।

3.39 सुनियोजित निवेश योजनाओं (एसआईपी) के माध्यम से एमएफ में निवेश में अप्रैल-अक्टूबर 2021 की अवधि के दौरान एसआईपी की संख्या और एयूएम दोनों के संदर्भ में एक उल्लेखनीय वृद्धि देखी गयी (सारणी 3.7)

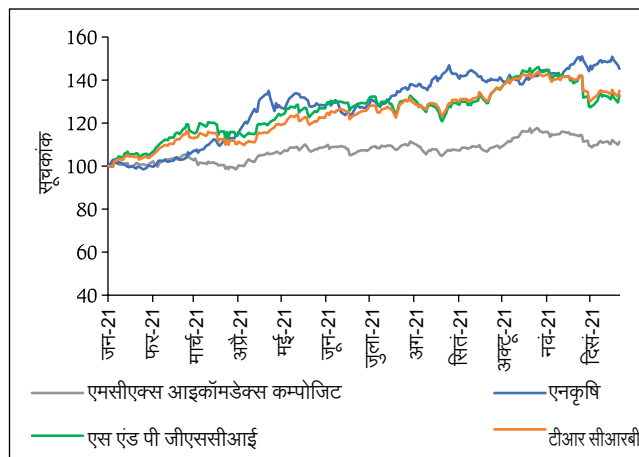
III.4.4 पण्य डेरिवेटिव

3.40 21 दिसम्बर, 2021 तक बेंचमार्क घरेलू पण्य डेरिवेटिव सूचकांक, एमसीएक्स आईकामडेक्स कम्पोजिट और एनकृषि सूचकांक, मार्च 2021 के अंत की तुलना में क्रमशः 12.5 प्रतिशत और 27.3 प्रतिशत बढ़े, जो मजबूत मांग को दर्शाता है (चार्ट 3.3)।

3.41 कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस की कीमतों में वृद्धि से प्रेरित, आईकामडेक्स ऊर्जा सूचकांक इस अवधि के दौरान 27.0 प्रतिशत बढ़ा, जबकि आईकामडेक्स बेस मेटल इंडेक्स मार्च 2021 की तुलना में 23.8 प्रतिशत बढ़ा। इसकी तुलना में ब्याज दरों में वृद्धि और अमेरिकी डॉलर की मजबूती के मद्देनजर आईकामडेक्स बुलियन सूचकांक में कम वृद्धि दिखाई दी जो कि निवेशकों की धारणा में गिरावट को दर्शाता है (चार्ट 3.4)।

3.42 पण्य डेरिवेटिव (सभी एक्सचेंज) के कुल टर्नओवर में

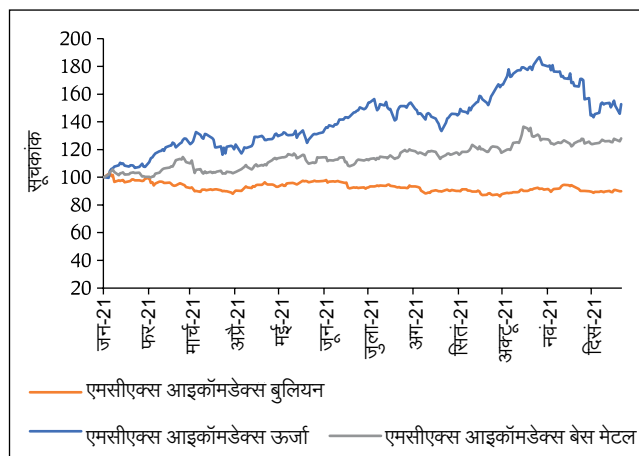
चार्ट 3.3: घरेलू और अंतरराष्ट्रीय पण्य फ्यूचर्स सूचकांक



नोट: जनवरी 2020 के लिए सूचकांक मूल्य 100 माना गया है।

स्रोत: मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज ऑफ इंडिया लिमिटेड (एमसीएक्स), नेशनल कमोडिटी एंड एक्सचेंज डेरिवेटिव एक्सचेंज लिमिटेड (एनसीडीएक्स), एस&पी ग्लोबल एंड रेफिनिटिव

चार्ट 3.4 : पण्य डेरिवेटिव में चयनित खंडवार सूचकांकों में गतिविधियां



नोट: जनवरी 2020 के लिए सूचकांक मूल्य 100 माना गया है।

स्रोत: एमसीएक्स

सारणी 3.8: खंडवार सकाल टर्नओवर (फ्यूचर्स + ऑप्शन्स) (₹ करोड़)

(₹ करोड़)

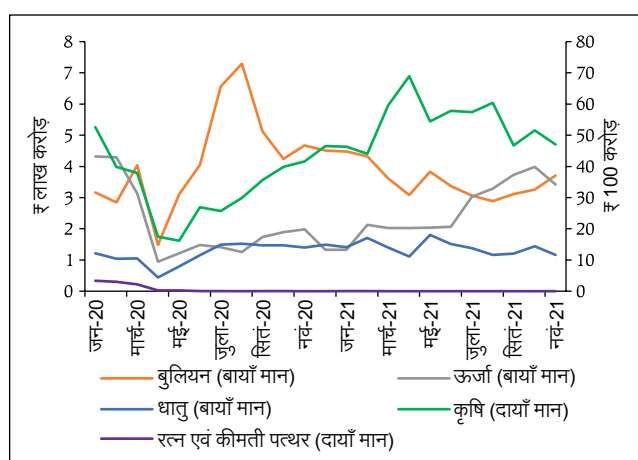
वित्तीय वर्ष /टर्नओवर	कृषि	बुलियन	ऊर्जा	धातु	रत्न एवं कीमती पत्थर	कुल टर्नओवर
2020-21 (अप्रैल-नवंबर)	2.33.199	36.51.498	11.92.105	9.74.567	554	60.51.924
2021-22 (अप्रैल-नवंबर)	4.44.235	26.31.306	23.56.489	10.77.780	0	65.09.810
परिवर्तन (प्रतिशत)	90.5	-27.9	97.7	10.6	-100.0	7.6
2021-22 में हिस्सेदारी (प्रतिशत में)	6.8	40.4	36.2	16.6	0.0	-

नोट: टर्नओवर में फ्यूचर्स + ऑप्शन टर्नओवर शामिल है जिसमें ऑप्शन टर्नओवर काल्पनिक मूल्य पर आधारित है।

एमसीएक्स और एनसीडीईएक्स पर इंडेक्स फ्यूचर्स के टर्नओवर को संबन्धित क्षेत्र में जोड़ दिया गया है।

स्रोत: एमसीएक्स, एनसीडीईएक्स, बीएसई, एनएसई, इंडियन कमोडिटी एक्सचेंज लिमिटेड (आइसीईएक्स)

चार्ट 3.5: विनियम बाजार में पण्य डेरिवेटिव का टर्नओवर



नोट: टर्नओवर में फ्यूचर्स + ऑप्शन टर्नओवर शामिल है जिसमें ऑप्शन टर्नओवर काल्पनिक मूल्य पर आधारित है।

एमसीएक्स और एनसीडीईएक्स पर इंडेक्स फ्यूचर्स के टर्नओवर को संबन्धित क्षेत्र में जोड़ा गया है।

स्रोत: एमसीएक्स, एनसीडीईएक्स, बीएसई, एनएसई, आइसीईएक्स

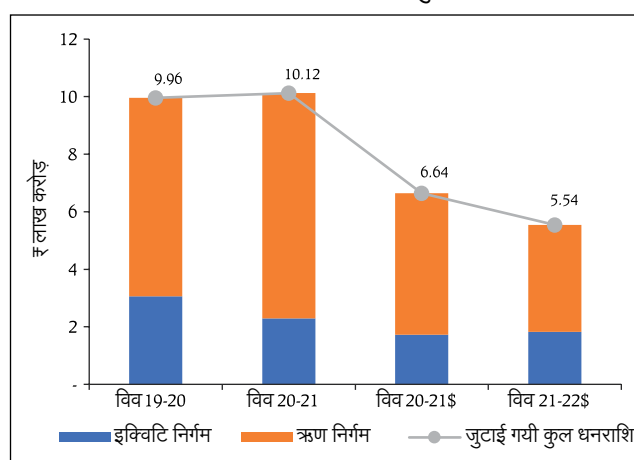
पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 7.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जिसमें ऊर्जा डेरिवेटिव ड्राइविंग कारक है (सारणी 3.8 और चार्ट 3.5)।

III.4.5 कॉर्पोरेट बॉन्ड बाजार

3.43 अप्रैल-नवम्बर 2021 की अवधि के दौरान इक्विटी [मुख्य रूप से अर्हक संस्थागत प्लेसमेंट (क्यूआईपी) और राइट्स इश्यू] और ऋण निर्गमों के माध्यम से प्राथमिक बाजारों में कुल ₹5.5 लाख करोड़ रुपए जुटाये गए (चार्ट 3.6)।

3.44 सूचीबद्ध एनसीडी में लगभग ₹3.5 लाख करोड़ के निर्गम पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 22 प्रतिशत कम थे। इसके विपरीत, इसी अवधि में कॉर्पोरेट द्वारा सीपी(CP) जारी करने में 39 प्रतिशत की वृद्धि हुई। उच्च श्रेणी के लिखत निर्गमों पर हावी रहे (चार्ट 3.7 और 3.8)।

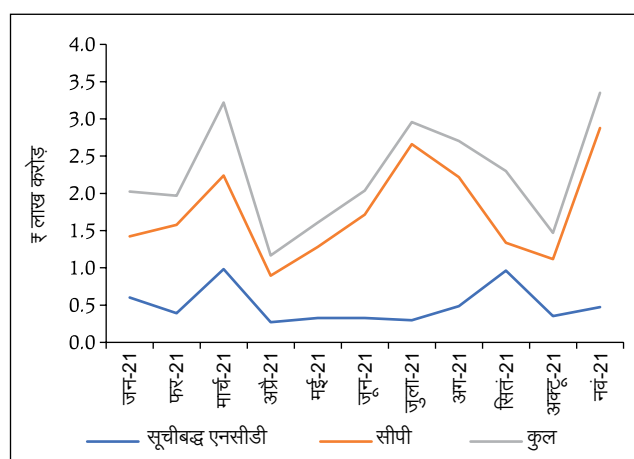
चार्ट 3.6: प्राथमिक बाजार के माध्यम से जुटाई गयी निधियाँ



नोट: \$ संबन्धित वित्तीय वर्ष के नवम्बर अंत तक दर्शाता है।

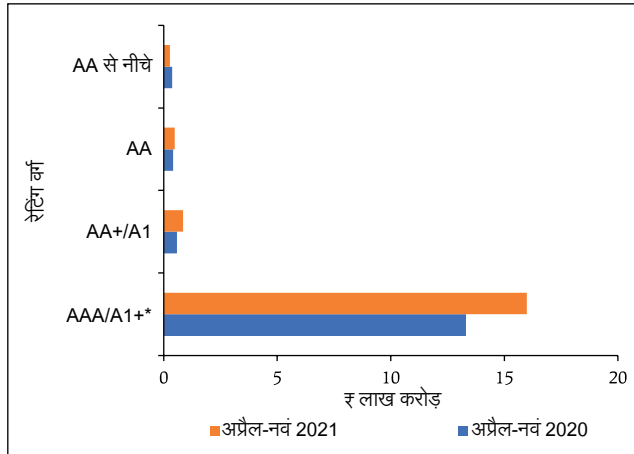
स्रोत: भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (सेबी)

चार्ट 3.7: सीपी और एनसीडी के निर्गमन



स्रोत: सीडीएसएल, एनएसडीएल

चार्ट 3.8: सीपी और एनसीडी का रेटिंग वार निर्गमन



* 97 प्रतिशत सीपी निर्गमन को A1+ रेटेड माना जाता है।

स्रोत: भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (सेबी)

3.45 कॉर्पोरेट बॉन्ड के प्रमुख जारीकर्ता एनबीएफसी और पीएसयू थे, जिन का 30 सितंबर 2021 (चार्ट 3.9a) को बकाया कॉर्पोरेट बॉन्ड का 59 प्रतिशत हिस्सा था, जबकि अर्हताप्राप्त संस्थागत खरीददार (क्यूआईबी), बॉडी कॉर्पोरेट और म्यूचुअल फंड उनके प्रमुख अभिदाता थे (चार्ट 3.9b)।

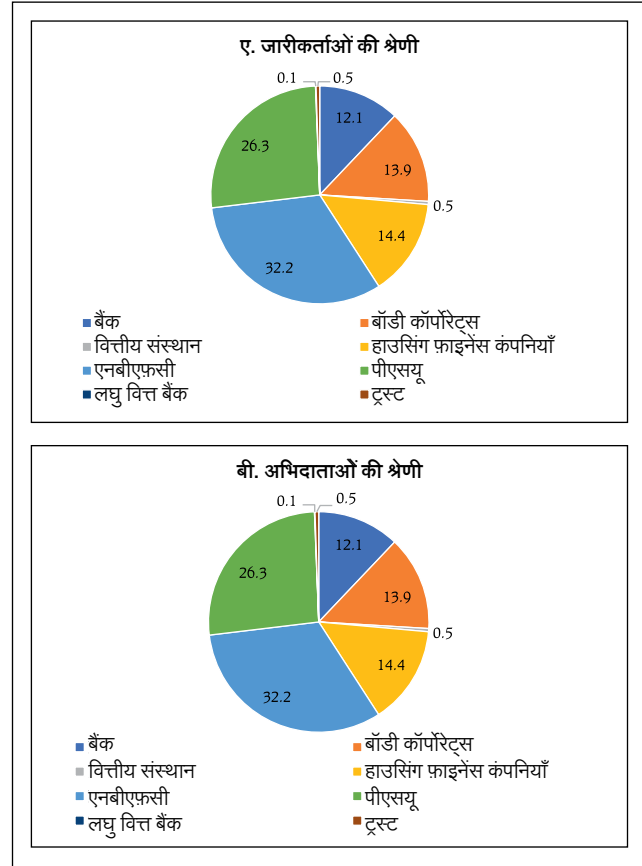
III.4.6 क्रेडिट रेटिंग

3.46 2019-20 की चौथी तिमाही और 2021-22 की दूसरी तिमाही के बीच प्रमुख क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों (सीआरए) द्वारा सूचीबद्ध कंपनियों के ऋण निर्गमों की क्रेडिट रेटिंग का त्रैमासिक विश्लेषण दर्शाता है कि समग्र आधार पर, सामान्यतः डाउनग्रेड किए गए निर्गमों की हिस्सेदारी में गिरावट आई है (चार्ट 3.10)।

3.47 अप्रैल-सितंबर 2021 की अवधि के दौरान सभी क्षेत्रों में (23 जारीकर्ताओं) रेटिंग में गिरावट देखी गई जो 2021-22

चार्ट 3.9: कॉर्पोरेट बॉन्ड के श्रेणीवार जारीकर्ता और अभिदाताओं

(प्रतिशत हिस्सा)

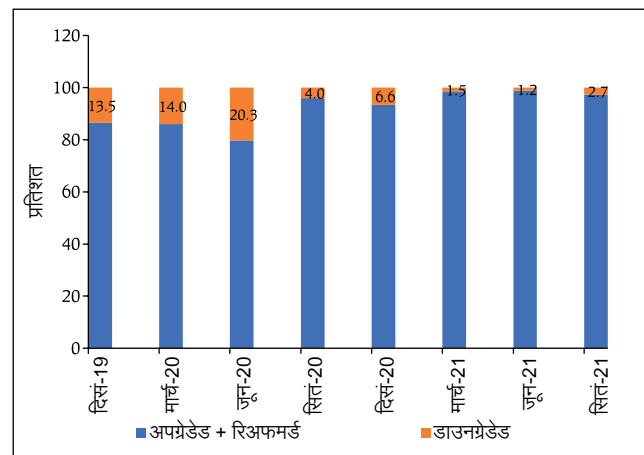


नोट: सितंबर 2021 तक

नोट: एआईएफ, सीएम, एफआई, एफआईआई, विदेशी नागरिक, एफपीआई (व्यक्ति), एचयूएफ, आईईपीएफ, एनआरआई निवासी और अन्य भी शामिल हैं।

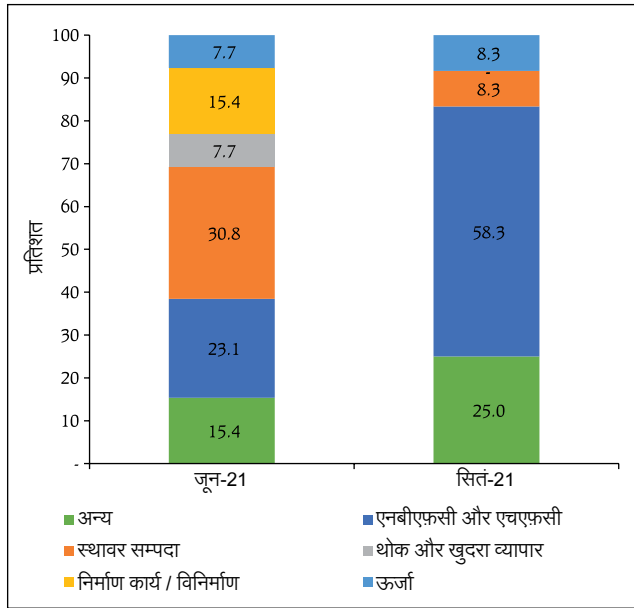
स्रोत: भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (सेबी)

चार्ट 3.10: रेटिंग एक्शन के अनुसार सूचीबद्ध कंपनियों के ऋण निर्गम



स्रोत: व्यक्तिगत क्रेडिट रेटिंग संस्थाएं (सीआरए) – सीआरआईएसआईएल, आईसीआरए, सीएआरई

चार्ट 3.11: रेटिंग डाउनग्रेड का वितरण – क्षेत्रवार



स्रोत: व्यक्तिगत क्रेडिट रेटिंग संस्थाएं (सीआरए) – सीआरआईएसआईएल, आईसीआरए, सीएआरआई

की दूसरी तिमाही के दौरान एनबीएफसी और एचएफसी की प्रमुख हिस्सेदारी थी (चार्ट 3.11)।

III.4.7 बीमा

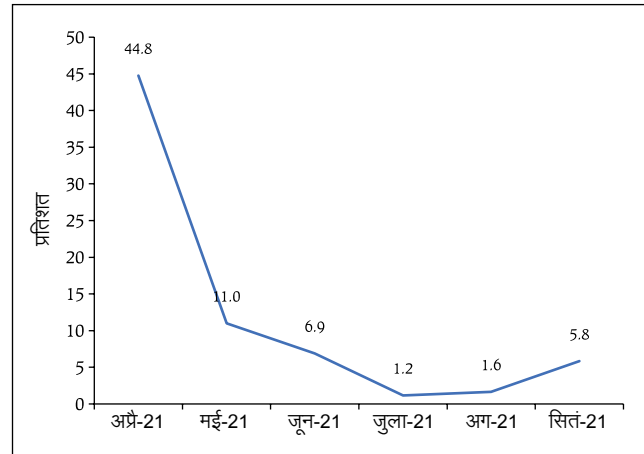
3.48 सितंबर 2021 तक, जीवन बीमा उद्योग ने नए व्यापार प्रीमियम में 5.82 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की (चार्ट 3.12)। कुल प्रीमियम की बहाली भी गिरावट के बाद हुई, जिस में नवीनीकरण प्रीमियम भी शामिल है (चार्ट 3.13)।

3.49 अप्रैल 2020-सितंबर 2021 की अवधि के दौरान जीवन बीमा उद्योग को कोविड से संबंधित मौतों के लिए कुल मिलाकर ₹13,347 करोड़ के 1.38 लाख दावे प्राप्त हुए। इन में से 1.29 लाख मृत्यु दावों में से ₹11,059 करोड़ की राशि का भुगतान किया गया। उपरोक्त मामलों में दावा भुगतान अनुपात संख्या में 94.7 प्रतिशत और राशि में 84.7 प्रतिशत रहा।

III.4.8 पेंशन निधि

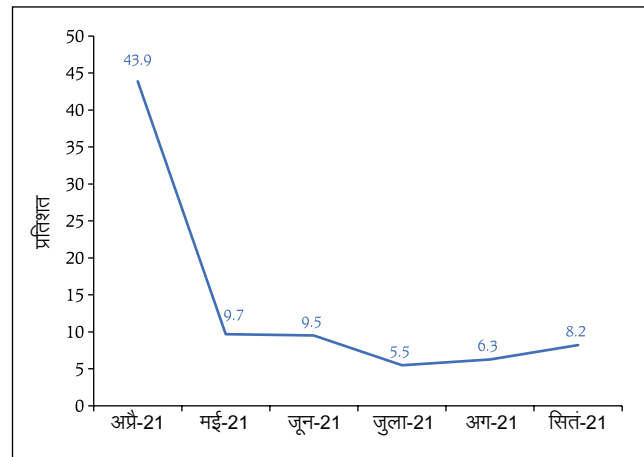
3.50 30 नवम्बर 2021 तक, राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एनपीएस) और अटल पेंशन योजना (एपीवाई) में अभिदाताओं की संख्या में वर्ष दर वर्ष आधार पर 22.5 प्रतिशत और कॉर्पस में 29.1 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी है (चार्ट 3.14 और 3.15)।

चार्ट: 3.12 जीवन बीमा- पहले वर्ष प्रीमियम में वृद्धि



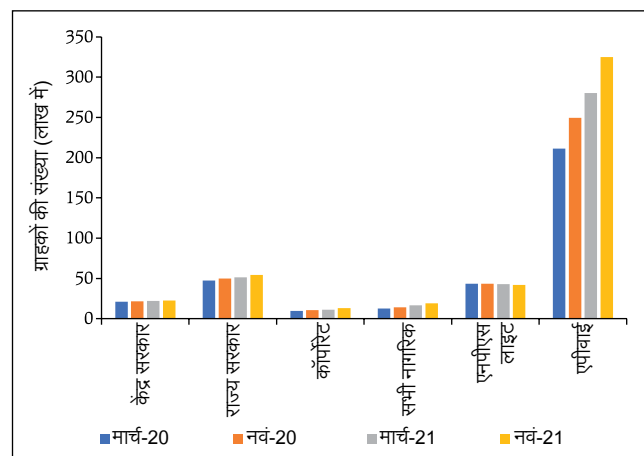
स्रोत: भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (आईआरडीएआई)

चार्ट 3.13: जीवन बीमा- कुल प्रीमियम में वृद्धि



स्रोत: भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (आईआरडीएआई)

चार्ट 3.14: क्षेत्रवार एनपीएस और एपीवाई अभिदाता



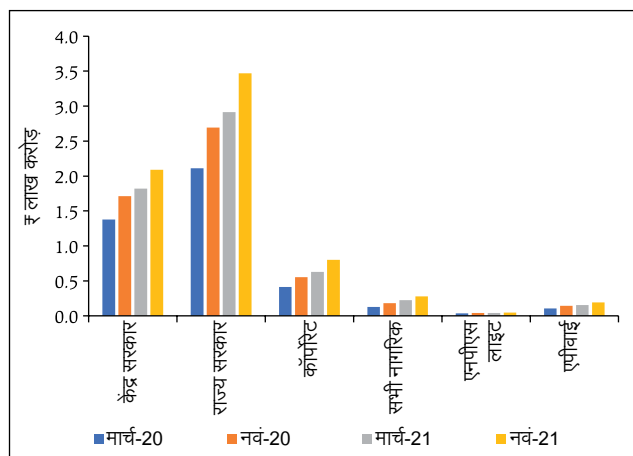
स्रोत: भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (आईआरडीएआई)

सारांश और दृष्टिकोण

3.51 महामारी ने अद्वितीय तरीकों से वित्तीय क्षेत्र की आघात-सहनीयता का परीक्षण किया। हालांकि, वैश्विक वित्तीय संकट के बाद की स्थिति की तुलना में वित्तीय प्रणाली स्वस्थ हो कर उभरी है। आर्थिक दृष्टिकोण के धुंधले बने रहते हुए वैश्विक विनियामक व्यवस्था की प्रक्रिया वापस पटरी पर लाई जा रही है जो कि अधिक मजबूत संरचना को लाने के संबंध में विराम मोड पर थी। अर्थव्यवस्था और वित्तीय क्षेत्र पर जलवायु परिवर्तन के स्तरित प्रभाव को समझने के लिए उसकी ओर महत्वपूर्ण विनियामक और पर्यवेक्षी ध्यान देना भी एक सतत प्रयास है।

3.52 घरेलू स्तर पर, वित्तीय क्षेत्र की आघात-सहनीयता को बढ़ाने के लिए विनियामक संरचना विकसित करने के प्रयास तेजी से जारी हैं। असीमित अवधि वाले म्यूचुअल फंडों की आघात-सहनीयता, गैर-वित्तीय कॉर्पोरेट क्षेत्र में प्रलंबित ऋण का प्रबंधन और दबावग्रस्त संपत्तियों का प्रबंधन आगे से नीतिगत प्राथमिकताएं बनी रहेंगी। स्थायी वित्त के नए क्षेत्र को भी उचित महत्व दिया जा रहा है।

चार्ट 3.15: क्षेत्रवार एनपीएस और एपीवाई एयूएम



स्रोत: पेंशन निधि विनियामकीय और विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए)

अनुबंध 1

प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण

प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण के 21वें दौर के उत्तरदाताओं ने भारतीय वित्तीय प्रणाली के लिए जोखिमों के सभी व्यापक समूहों (अर्थात्, वैश्विक स्पिलओवर; समष्टि-आर्थिक अनिश्चितता; वित्तीय बाजार में अस्थिरता; संस्थागत भेद्यता; और सामान्य जोखिम) को 'मध्यम' के रूप में माना। उनके अनुमान से वित्तीय स्थिरता के लिए जोखिमों में (क) महामारी की नई लहर और कोरोनावायरस के नए म्यूटेशन; (ख) असमान रूप से हो रही आर्थिक बहाली में व्यवधान; (ग) वैश्विक ऊर्जा संकट और आपूर्ति-पक्ष व्यवधानों से प्रेरित मुद्रास्फीति में वृद्धि; और (घ) अनियमित मौद्रिक निकास आदि शामिल हैं। उनमें से अधिकांश को अगले एक साल में घरेलू बैंकिंग क्षेत्र के लिए बेहतर संभावनाओं की उम्मीद थी।

भारतीय वित्तीय प्रणाली को जिन प्रमुख जोखिमों का सामना करना पड़ सकता है उसके बारे में अनुमानित धारणाओं का आकलन करने के लिए भारतीय रिज़र्व बैंक के प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण (एसआरएस) का इक्कीसवां दौर नवंबर 2021 के दौरान आयोजित किया गया था। पहली बार पैनलिस्टों से (i) भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्रों / उप-क्षेत्रों, जिनके बारे में संभावना है कि वे कोविड -19 महामारी के प्रभाव के कारण धीमी गति से बहाली प्रदर्शित करेंगे; (ii) वित्तीय बाजारों के खंड जिसके बारे में उम्मीद है कि उसे अगले छह महीनों से एक वर्ष में उच्च अस्थिरता का अनुभव करना पड़ सकता है; और (iii) वह समय सीमा जिसके भीतर वे उम्मीद करते हैं कि भारतीय अर्थव्यवस्था महामारी के नतीजों से पूरी तरह से उबर जाएगी आदि पर उनके विचार भी आमंत्रित किए गए थे। सर्वेक्षण के परिणाम का सारांश, जो 37 उत्तरदाताओं के फीडबैक पर आधारित है, नीचे प्रस्तुत है:

- उत्तरदाताओं ने वित्तीय प्रणाली के लिए सभी व्यापक श्रेणियों - वैश्विक स्पिलओवर; समष्टि-आर्थिक अनिश्चितता; वित्तीय बाजार की अस्थिरता; संस्थागत भेद्यता; और सामान्य जोखिम के बारे में उनके मात्रात्मक रूप से 'मध्यम' दर्जे के जोखिम के रूप में घटित होने का अनुमान लगाया, लेकिन उन्होंने अन्य मापदंडों के संदर्भ में वैश्विक और वित्तीय बाजार जोखिम को उच्च का दर्जा दिया (चित्र 1)।
- पण्य की कीमतें, घरेलू मुद्रास्फीति, इक्विटी मूल्य अस्थिरता, साइबर जोखिम, ऋण वृद्धि और आस्ति गुणवत्ता आदि को प्रमुख जोखिम चालकों के रूप में माना गया (चित्र 2)।

चित्र 1: प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण में चिह्नित किए गए प्रमुख जोखिम समूह

प्रमुख जोखिम समूह	नव-21	अप्रैल-21	जोखिम धारणा में परिवर्तन
ए. वैश्विक जोखिम			कोई परिवर्तन नहीं
बी. समष्टिआर्थिक जोखिम			कमी
सी. वित्तीय बाजार जोखिम			वृद्धि
डी. संस्थागत जोखिम			कमी
ई. सामान्य जोखिम			वृद्धि

स्रोत: भा.रि.बैं., प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण (अप्रैल 2021 और नवंबर 2021)।

टिप्पणी :
जोखिम श्रेणी

बहुत अधिक	अधिक	मध्यम	कम	बहुत कम
-----------	------	-------	----	---------

* जोखिम की धारणा, जैसा कि यह अर्ध-वार्षिक प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण से प्रकट होती है, एक जोखिम श्रेणी से दूसरी श्रेणी में स्थानांतरित (वृद्धि/कमी) हो सकती है, जो रंग में परिवर्तन से परिलक्षित होता है। जोखिम की धारणा भी बदल सकती है अथवा उसी जोखिम श्रेणी में अपरिवर्तित बनी रह सकती है (यानी, चित्र 1 और 2 में समान रंग वाले बॉक्स)।

चित्र 2. : प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण में चिह्नित किए गए विभिन्न जोखिम

जोखिम		नव-21	अप्रैल-21	जोखिम धारणा में परिवर्तन *
अ. वैश्विक जोखिम	वैश्विक वृद्धि			वृद्धि
	राष्ट्रियक जोखिम/संक्रमण			कमी
	फंडिंग जोखिम (बाह्य उधार)			कमी
	पण्य मूल्य जोखिम			वृद्धि
आ. समाधि/आधिक जोखिम	घरेलू वृद्धि			कमी
	घरेलू मुद्रास्फीति			वृद्धि
	चालू खाता घाटा			वृद्धि
	पूँजीगत अंतर्वाह/बहिर्वाह (एफआईआई का लौटना, एफडीआई में कमी)			कमी
	राष्ट्रियक रेटिंग में कमी			कमी
	राजकोषीय घाटा			कमी
	कॉर्पोरेट क्षेत्र का जोखिम			कमी
	आधारभूत संरचना के विकास की गति			कमी
	रियल एस्टेट कीमतें			कमी
	पारिवारिक इकाइयों की बचत			कमी
	राजनैतिक अनिश्चितता/शासन/नीति का कार्यान्वयन			कमी
	इ. वित्तीय बाजार संबंधी जोखिम	विदेशी मुद्रा दर का जोखिम		
इक्विटी मूल्य में उतार-चढ़ाव				वृद्धि
ब्याज दर जोखिम				वृद्धि
चलनिधि जोखिम				वृद्धि
ई. संस्थागत जोखिम	विनियामक जोखिम			कमी
	आस्ति-गुणवत्ता में कमी			कमी
	बैंकों की अतिरिक्त पूँजी संबंधी आवश्यकता			कमी
	फंडिंग तक बैंकों की पहुंच			कमी
	क्रेडिट वृद्धि का स्तर			कमी
	साइबर जोखिम			वृद्धि
	परिचालन जोखिम			परिवर्तन नहीं
उ. सामान्य जोखिम	आतंकवाद			वृद्धि
	प्रकृति से संबंधित जोखिम			वृद्धि
	सामाजिक अशांति (बढ़ती असमानता)			कमी

टिप्पणी : जोखिम श्रेणी

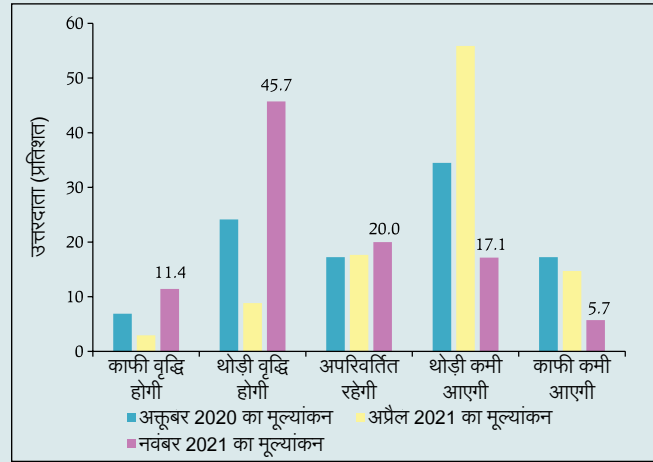
बहुत अधिक	अधिक	मध्यम	कम	बहुत कम

* चित्र -1 में फुटनोट देखें।

- वैश्विक विकास, चालू खाता घाटा, ब्याज दरों, चलनिधि, आतंकवाद और जलवायु परिवर्तन के बारे में जोखिम अनुमान में वृद्धि हुई, लेकिन वह मध्यम जोखिम की श्रेणी में बना रहा।
- घरेलू संवृद्धि, बैंकों की पूँजी आवश्यकताओं, राजकोषीय घाटा और कॉर्पोरेट क्षेत्र की भेद्यता आदि से संबंधित जोखिमों में कमी आई है।

- आधे से अधिक उत्तरदाताओं ने अगले एक वर्ष में भारतीय बैंकिंग क्षेत्र के लिए बेहतर संभावनाओं की अपेक्षा की (चार्ट 1)।
- अधिकांश उत्तरदाताओं ने वैश्विक और घरेलू वित्तीय प्रणालियों में अगले एक से तीन साल तक एक उच्च प्रभाव वाली घटना घटित होने की संभावना को मध्यम दर्जे में रखा जबकि पैनलिस्टों ने यह माना कि घरेलू वित्तीय प्रणाली में इस तरह की घटना घटित होने की संभावना कम है। (चार्ट 2ग, 2घ, 2ड और 2च)।

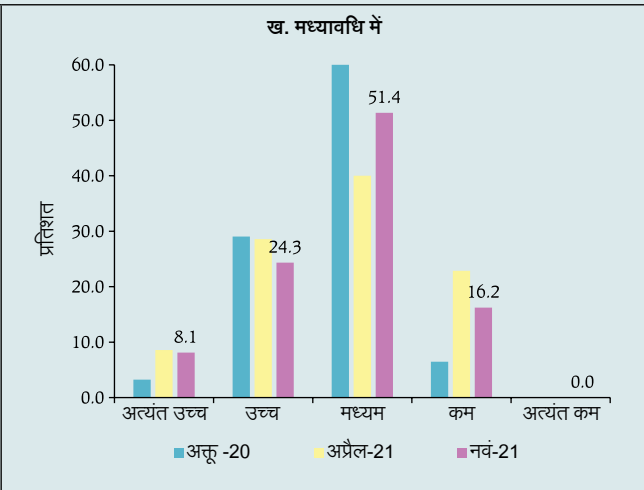
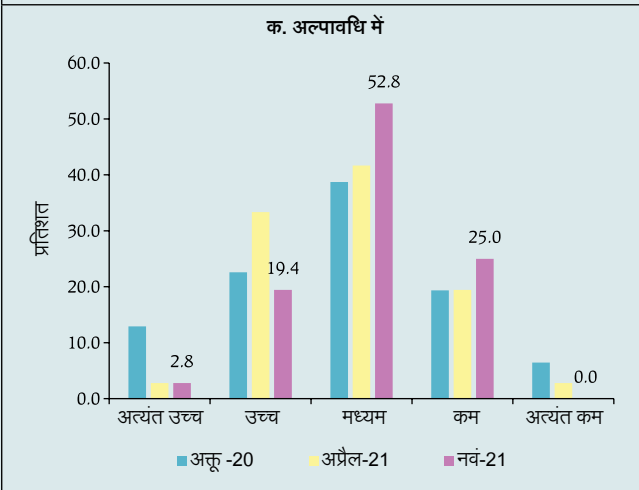
चार्ट 1: अगले एक वर्ष में भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में संभावनाएं



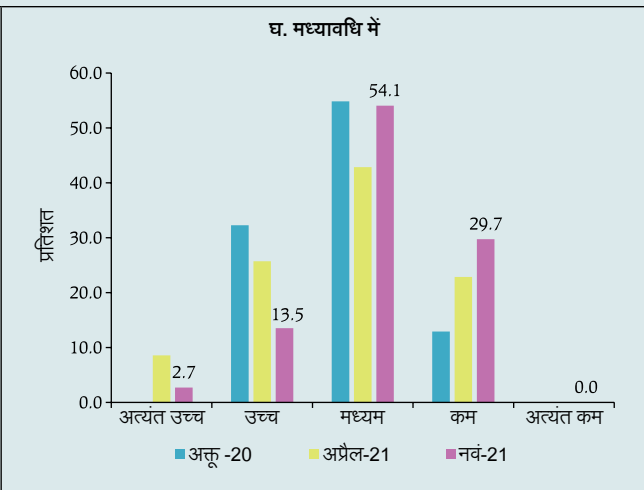
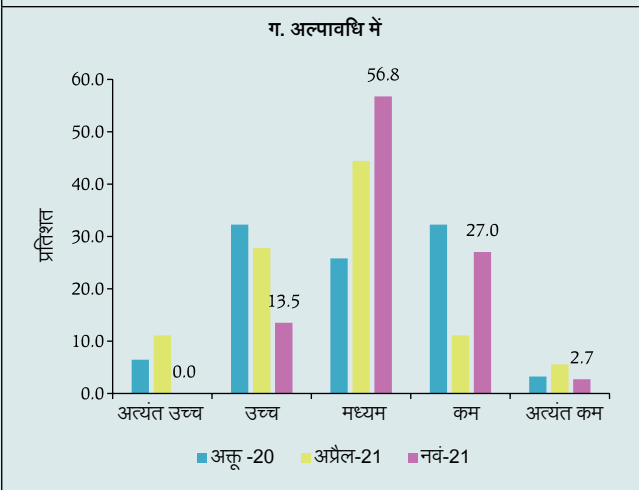
चार्ट 2: उच्च प्रभाव वाली घटनाओं के घटित होने का बोध एवं वित्तीय प्रणाली में विश्वास

उत्तरदाताओं का हिस्सा (प्रतिशत)

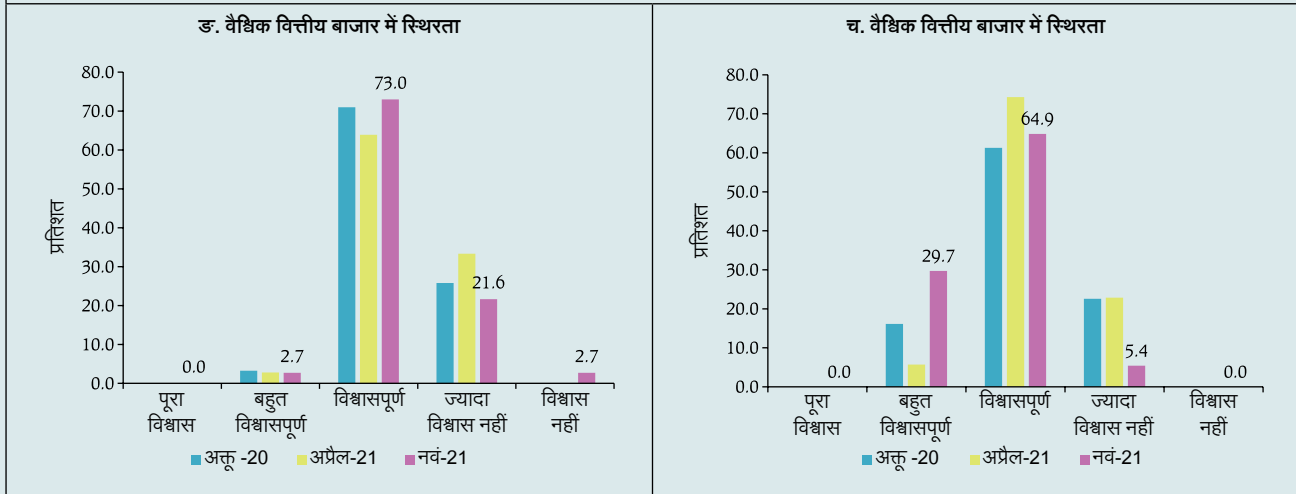
क. वैश्विक वित्तीय प्रणाली में उच्च प्रभाव वाली घटनाओं के घटित होने की संभावना



ख. घरेलू वित्तीय प्रणाली में उच्च प्रभाव वाली घटनाओं के घटित होने की संभावना

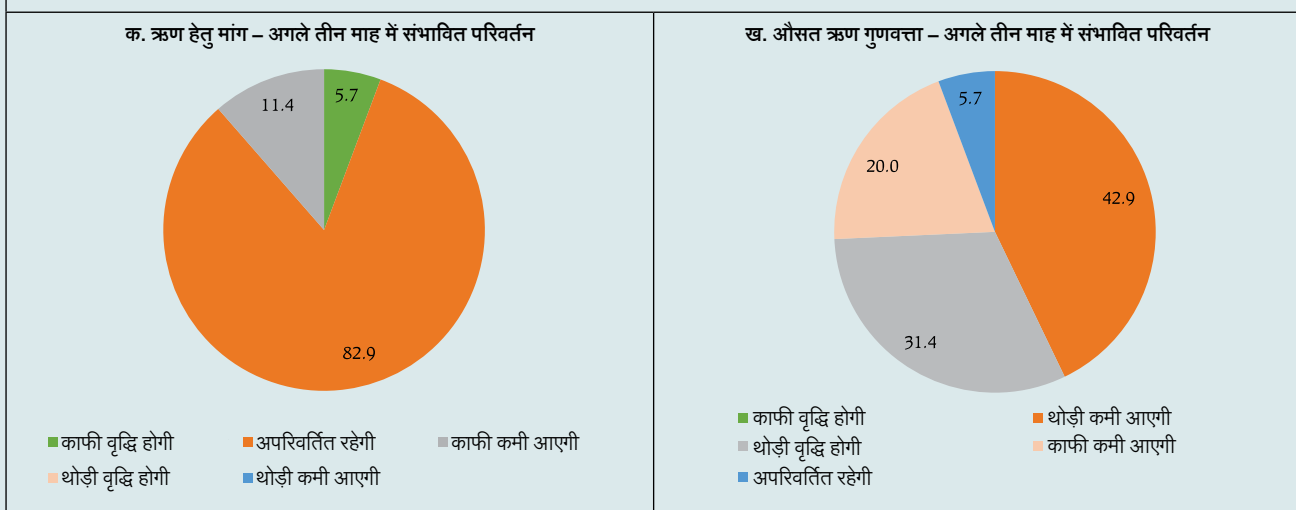


ग. वित्तीय प्रणाली में विश्वास

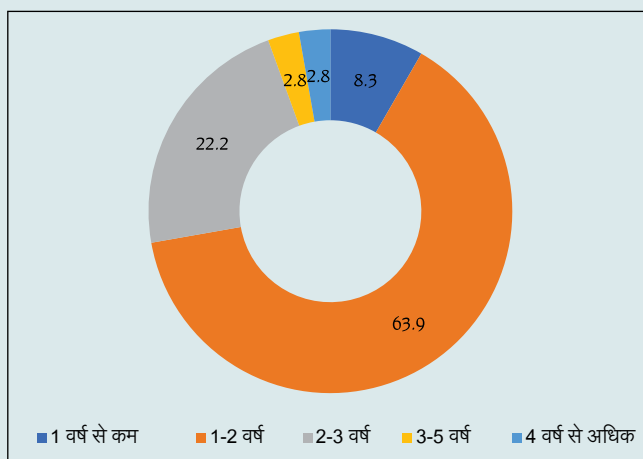


- 80 प्रतिशत से अधिक उत्तरदाताओं ने अगले तीन महीनों में ऋण मांग में वृद्धि की उम्मीद की, जिनमें से 43 प्रतिशत ने भी बेहतर समष्टि-आर्थिक संभावनाओं, उधारकर्ताओं के वित्तीय स्वास्थ्य में सुधार, एनएआरसीएल की स्थापना और आस्तियों की पुनर्संरचना के कारण बैंकों की आस्ति की गुणवत्ता में सुधार की उम्मीद की है (चार्ट 3 क और 3 ख)।
- अधिकांश उत्तरदाताओं ने भारतीय अर्थव्यवस्था को 1-2 वर्षों की अवधि में कोविड-19 महामारी के नतीजों से पूरी तरह से उबरने की उम्मीद की (चार्ट 4), लेकिन संपर्क गहन क्षेत्र (पर्यटन और आतिथ्य; विमानन; ऑटोमोबाइल; एमएसएमई; खुदरा, अचल संपत्ति और मनोरंजन) आने वाले वर्ष में पिछड़ सकते हैं।

चार्ट 3: भारतीय बैंकिंग क्षेत्र – परिदृश्य (प्रतिशत में हिस्सेदारी)



चार्ट 4 : भारतीय अर्थव्यवस्था की पूरी बहाली हेतु समय-सीमा (प्रतिशत में हिस्सेदारी)



वित्तीय स्थिरता के लिए जोखिम

भारतीय रिज़र्व बैंक के प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण के 21वें दौर में पैनलिस्टों ने वित्तीय स्थिरता के लिए निम्नलिखित प्रमुख जोखिम कारकों की पहचान की:

- महामारी की नई लहर और कोरोनावायरस के नए म्यूटेशन;
- वैश्विक और घरेलू स्तर पर असमान रूप से होने वाली बहाली में व्यवधान;
- उत्सर्जन नियंत्रण के कारणों सहित आपूर्ति-पक्ष व्यवधानों और वैश्विक ऊर्जा संकट से प्रेरित मुद्रास्फीति -वृद्धि और उसका उच्च स्तर पर बने रहना; और
- अनियमित मौद्रिक नीति निकास

अनुबंध 2

कार्यप्रणालियां

2.1 अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक

बैंकिंग स्थिरता मानचित्र और संकेतक

बैंकिंग स्थिरता मानचित्र और संकेतक किसी दी गई अवधि के दौरान बैंकिंग क्षेत्र की स्थिरता पर प्रभाव डालने वाली प्रमुख स्थितियों और जोखिम घटकों में होने वाले परिवर्तनों का समग्र अनुमान प्रदर्शित करते हैं। बैंकिंग स्थिरता मानचित्र और संकेतक में पांच संयुक्त सूचकांकों का प्रयोग किया गया है जो सुदृढ़ता, आस्ति गुणवत्ता, लाभप्रदता, चलनिधि और कार्यकुशलता के पांच आयामों को प्रदर्शित करते हैं। प्रत्येक संयुक्त सूचकांक इसके निर्माण के लिए प्रयुक्त नमूना अवधिके दौरान एक सापेक्ष पैमाना होता है जिसमें उच्च मान का अर्थ होता है कि उस आयाम में जोखिम अधिक है।

प्रत्येक संयुक्त सूचकांक निर्मित करने में जिन अनुपातों का प्रयोग किया गया है उन्हें सारणी 1 में दिया गया है। नमूना अवधि के लिए पहले प्रत्येक सूचकांक का सामान्यीकरण निम्नलिखित सूत्र के आधार पर किया गया है:

$$\frac{X_t - \min(X_t)}{\max(X_t) - \min(X_t)}$$

जिसमें X_t अनुपात के मान को t समय पर प्रदर्शित करता है। तत्पश्चात, प्रत्येक आयाम के संयुक्त सूचकांक की गणना, उस आयाम के लिए प्रयुक्त सामान्यीकृत अनुपातों के भारित औसत के रूप में की जाती है जहां भार, सीएएमईएलएस रेटिंग के आकलन हेतु निर्धारित अंकों पर आधारित होते हैं (अपवाद: दक्षता आयाम के लिए उपयोग किए जाने वाले समान भार)। अतः प्रत्येक संयुक्त सूचकांक का मूल्य शून्य और एक के बीच होता है। अंत में, बैंकिंग स्थिरता संकेतक का निर्माण इन पांच संयुक्त सूचकांकों के सामान्य औसत के रूप में किया जाता है।

सारणी 1: बैंकिंग स्थिरता मानचित्र और संकेतक बनाने के लिए प्रयुक्त अनुपात

आयाम	अनुपात			
सुदृढ़ता	सीआरएआर #	टियर 1 पूंजी की तुलना में टिअर 2 पूंजी #	कुल आस्ति के रूप में लीवरेज अनुपात की तुलना में पूंजी और आरक्षित निधि	
आस्ति- गुणवत्ता	कुल अग्रिम की तुलना में निवल एनपीए	कुल अग्रिम की तुलना में सकल एनपीए	सकल एनपीए की तुलना में अवमानक अग्रिम #	मानक अग्रिमों की तुलना में पुनःसंचित- मानक- अग्रिम
लाभप्रदता	आस्तियों पर प्रतिफल #	निवल ब्याज मार्जिन #	लाभ में वृद्धि #	
चलनिधि	कुल आस्तियों की तुलना में चलनिधि आस्तियां #	कुल आस्तियों की तुलना में ग्राहक जमा राशियां #	ग्राहक की जमा राशियों की तुलना में गैर-बैंक अग्रिम	कुल जमा राशियों की तुलना में 1 वर्ष की अवधि के भीतर परिपक्व होने वाली जमा राशियां
कार्यकुशलता	आय की तुलना में लागत	स्टाफ खर्च की तुलना में कारोबार (क्रेडिट + जमा राशि) #		कुल खर्च की तुलना में स्टाफ व्यय

नोट: # जोखिम से प्रतिलोम संबंध है।

समष्टि-दबाव परीक्षण

ऋण जोखिम के लिए समष्टि दबाव परीक्षण करने से समष्टि-आर्थिक आघातों के प्रति बैंकों की आघात-सहनीयता का पता लगाया जाता है। इसमें, बैंकों (प्रणाली के स्तर पर एवं बड़े बैंक समूह स्तर पर) के जीएनपीए अनुपात पर एवं अंततः उनकी पूंजी पर्याप्तता (क्रम से प्रत्येक बैंक एवं प्रणाली स्तर पर 46 बैंकों के नमूनों के लिए) पर समष्टि आर्थिक आघातों के प्रभाव का आकलन किया जाता है।

जीएनपीए अनुपात का प्रभाव

यहाँ, गिरावट अनुपात (एसआर)¹ को समष्टि-आर्थिक चरों के एक फंक्शन के रूप में बतौर एक मॉडल लिया गया है जिसमें विविध अर्थमितीय मॉडल का प्रयोग किया गया है जो चुनिंदा बैंकिंग प्रणालियों के स्तर पर समग्रतः समष्टि-आर्थिक चरों से संबंधित है। सिस्टम स्तरीय तथा बैंक समूह- स्तरीय गिरावट अनुपात मॉडल के लिए इनका उपयोग किया गया है - (i) मल्टीवेरिएट रीग्रेशन; (ii) वीएआर तथा (iii) क्वान्टाइल रीग्रेशन। बैंकिंग प्रणाली एग्रीगेट में गिरावट अनुपात के मौजूदा और पिछले मान शामिल होते हैं जबकि समष्टि-आर्थिक चरों में आधार कीमत पर सकल देशी उत्पाद (जीडीपी), भारत औसत उधार दर (डब्ल्यूएलआर), सीपीआई (संयुक्त) मुद्रास्फीति, जीडीपी अनुपात की तुलना में निर्यात, जीडीपी अनुपात की तुलना में वार्षिक चालू खाता शेष, और जीडीपी अनुपात की तुलना में वार्षिक सकल राजकोषीय घाटा शामिल होते हैं।

जहाँ मल्टीवेरिएट रीग्रेशन, बैंकिंग प्रणाली की जीएनपीए पर चुनिंदा समष्टि-आर्थिक चरों के प्रभाव का मूल्यांकन करता है, वहीं वीएआर मॉडल फीडबैक प्रभाव को भी संज्ञान में लेता है। इन पद्धतियों में, गिरावट अनुपात के सशर्त मध्यमान का अनुमान लगाया जाता है जबकि यह माना जाता है कि क्रेडिट गुणवत्ता का स्तर चाहे जो हो उसका क्रेडिट गुणवत्ता पर समष्टि-चरों का प्रभाव समान रहेगा, जो कि हमेशा सच नहीं हो सकता है। इस अनुमान को शिथिल करने के लिहाज से क्रेडिट गुणवत्ता का अनुमान लगाने के लिए क्वान्टाइल रीग्रेशन को अपनाया गया, जिसमें सशर्त मध्यमान के स्थान पर सशर्त क्वान्टाइल का अनुमान लगाया जाता है ताकि इस प्रकार वह टेल जोखिमों का आकलन कर सके और समष्टि-आर्थिक आघातों के गैर-रैखिक प्रभावों का भी मूल्यांकन कर सके।

गिरावट अनुपात (एसआर) पर समष्टि-आर्थिक आघातों के प्रभावों का अनुमान लगाने के लिए निम्नलिखित अर्थमितीय मॉडलों का प्रयोग किया जाता है।

प्रणाली स्तरीय मॉडल

प्रणाली स्तरीय जीएनपीए का अनुमान लगाने के लिए तीन भिन्न परंतु आपस में सम्पूरक अर्थमितीय मॉडल यथा – मल्टीवेरिएट रीग्रेशन, वीएआर और क्वान्टाइल रीग्रेशन का उपयोग किया गया। अंतिम अनुमान इन तीन मॉडलों पर आधारित अनुमानों के औसत से निकाला जाता है।

- **मल्टीवेरिएट रीग्रेशन**

निम्नलिखित मल्टीवेरिएट रीग्रेशन मॉडल का प्रयोग समग्र एससीबी के गिरावट अनुपात अनुमान के लिए किया गया।

$$SR_t = \alpha_1 + \beta_1 SR_{t-1} - \beta_2 \Delta NGDP_{t-2} + \beta_3 RWALR_{t-2} - \beta_4 \left(\frac{CAB}{GDP}\right)_{t-3} + \beta_5 \left(\frac{GFD}{GDP}\right)_{t-1} + \beta_6 \text{ Dummy}$$

जहाँ, $\alpha_1, \beta_1, \beta_2, \beta_3, \beta_4, \beta_5$ and $\beta_6 > 0$

- **वीएआर मॉडल**

नोशनल रूप में, ऑर्डर पी मध्यमान-समायोजित वीएआर को इस प्रकार लिखा जा सकता है:

$$y_t = A_1 y_{t-1} + \dots + A_p y_{t-p} + u_t; t=0,1,2,3,\dots$$

जहाँ, $y_t = (y_{1t}, \dots, y_{kt})'$ समय t पर चरों का एक (K×1) वेक्टर है, t, $A_i (i=1,2,\dots,p)$ निर्धारित (K×K) गुणांक मैट्रिक्स है और $u_t = (u_{1t}, \dots, u_{kt})'$ एक K-आयामी व्हाइट न्वाइज़ या नवोन्मेषी प्रक्रिया है।

वीएआर मॉडल का अनुमान लगाने के लिए, गिरावट अनुपात, वास्तविक डब्ल्यूएलआर, सांकेतिक जीडीपी संवृद्धि, जीडीपी अनुपात के की तुलना में वार्षिक खाता संतुलन, जीडीपी अनुपात की तुलना में वार्षिक सकल राजकोषीय घाटे का उपयोग किया गया। न्यूनतम सूचना दृष्टिकोण आधार पर और अन्य उपचारों के साथ ही वीएआर के उपयुक्त क्रम का चुनाव किया गया और इसके लिए क्रमांक दो को उचित पाया गया। चुने गए वीएआर के संवेग अनुक्रिया प्रणाली का उपयोग करते हुए विभिन्न प्रकार के समष्टि आर्थिक आघातों के प्रभावों का निर्धारण किया गया।

¹ एक अवधि के दौरान एनपीए में हुई अभिवृद्धि स्लिपेज कहलाती है। स्लिपेज अनुपात= नए एनपीए / अवधि के आरंभ में मानक अग्रिम।

- **क्वान्टाइल रीग्रेशन**

निम्नलिखित क्वान्टाइल रीग्रेशन मॉडल का प्रयोग 0.8 पर गिरावट अनुपात के सशर्त क्वान्टाइल का अनुमान लगाने के लिए किया जाता है :

$$SR_t = \alpha_1 + \beta_1 SR_{t-1} - \beta_2 \Delta NGDP_{t-2} + \beta_3 RWALR_{t-2} - \beta_4 \left(\frac{CAB}{GDP}\right)_{t-3} + \beta_5 \left(\frac{GFD}{GDP}\right)_{t-1} + \beta_6 \text{ Dummy}$$

- **बैंक समूह स्तरीय मॉडल**

बैंक समूह-वार गिरावट अनुपात का अनुमान तीन भिन्न परंतु आपस में सम्पूरक अर्थमितीय मॉडलों: मल्टीवेरिएट रीग्रेशन, वीएआर और क्वान्टाइल रीग्रेशन का प्रयोग करके लगाया गया। इन तीन मॉडलों पर आधारित अनुमानों के औसत से अंतिम अनुमान निकाला जाता है।

- **मल्टीवेरिएट रीग्रेशन**

विभिन्न बैंक समूहों के गिरावट अनुपात का मॉडल बनाने के लिए निम्नलिखित मल्टीवेरिएट रीग्रेशन का उपयोग किया गया:

सरकारी क्षेत्र के बैंक (पीएसबी)

$$SR_t = \alpha_1 + \beta_1 SR_{t-1} + \beta_2 RWALR_{t-2} - \beta_3 \Delta NGDP_{t-2} + \beta_4 \left(\frac{GFD}{GDP}\right)_{t-3} - \beta_5 \left(\frac{CAB}{GDP}\right)_{t-3} + \beta_6 \text{ Dummy}$$

निजी क्षेत्र के बैंक (पीवीबी) :

$$SR_t = \alpha_1 + \beta_1 SR_{t-1} + \beta_2 RWALR_{t-3} - \beta_3 \Delta NGDP_{t-1} - \beta_4 \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-1} + \beta_5 \text{ Dummy}$$

विदेशी बैंक (एफबी):

$$SR_t = \alpha_1 + \beta_1 SR_{t-1} + \beta_2 \Delta^2 CPI_{t-4} + \beta_3 \Delta \left(\frac{GFD}{GDP}\right)_{t-3} - \beta_4 \Delta \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-1} + \beta_5 \text{ Dummy}$$

- **वीएआर मॉडल**

विभिन्न बैंक समूहों के गिरावट अनुपात का मॉडल बनाने के लिए, विभिन्न वीएआर नमूनों के अनुसार अनुमान लगाया गया जो निम्नलिखित समष्टि चरों पर आधारित थे:

सरकारी क्षेत्र के बैंक: एनजीडीपी, आरडब्ल्यूएलआर, जीडीपी अनुपात की तुलना में सीएबी और क्रम 1 के जीडीपी अनुपात की तुलना में जीएफडी ।

निजी क्षेत्र के बैंक: एनजीडीपी, आरडब्ल्यूएलआर और क्रम 1 के जीडीपी अनुपात की तुलना में निर्यात।

विदेशी बैंक: जीडीपी, सीपीआई, जीडीपी अनुपात की तुलना में निर्यात और क्रम 1 के जीडीपी अनुपात की तुलना में जीएफडी ।

- **क्वान्टाइल रीग्रेशन**

निम्नलिखित क्वान्टाइल रीग्रेशन मॉडल का प्रयोग 0.8 पर गिरावट अनुपात के सशर्त क्वान्टाइल का अनुमान लगाने के लिए किया जाता है :

सरकारी क्षेत्र के बैंक (पीएसबी):

$$SR_t = \alpha_1 + \beta_1 SR_{t-1} + \beta_2 RWALR_{t-2} - \beta_3 \Delta NGDP_{t-1} + \beta_4 \left(\frac{GFD}{GDP}\right)_{t-3} - \beta_5 \left(\frac{CAB}{GDP}\right)_{t-3} + \beta_6 \text{ Dummy}$$

निजी क्षेत्र के बैंक (पीवीबी) :

$$SR_t = \alpha_1 + \beta_1 SR_{t-1} + \beta_2 RWALR_{t-4} - \beta_3 \Delta NGDP_{t-1} - \beta_4 \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-1} - \beta_5 \left(\frac{CAB}{GDP}\right)_{t-3} + \beta_6 \text{ Dummy}$$

विदेशी बैंक (एफबी):

$$SR_t = \alpha_1 + \beta_1 SR_{t-1} + \beta_2 \Delta^2 CPI_{t-1} + \beta_3 \Delta \left(\frac{GFD}{GDP} \right)_{t-3} - \beta_4 \Delta \left(\frac{EXP}{GDP} \right)_{t-1} + \beta_5 \text{Dummy}$$

गिरावट से जीएनपीए का अनुमान

ऊपर उल्लिखित नमूनों के माध्यम से जब एक बार गिरावट अनुपात का अनुमान लगा लिया जाता है उसके बाद निम्नलिखित सर्वसमिका (आईडेंटिटी) के आधार पर जीएनपीए का अनुमान लगाया जाता है:

$$GNPA_{t+1} = GNPA_t + Slippage_{(t,t+1)} - Recovery_{(t,t+1)} - Write-off_{(t,t+1)} - Upgradation_{(t,t+1)}$$

गिरावट अनुपातों से निकाले गए जीएनपीए, जिन्हें ऊपर उल्लिखित क्रेडिट जोखिम अर्थमितीय मॉडलों द्वारा प्रक्षेपित किया गया है, निम्नलिखित अनुमानों पर आधारित हैं: दिसंबर 2021, मार्च 2022, जून 2021 और सितंबर 2022 को समाप्त तिमाहियों के दौरान ऋण संवृद्धि क्रमशः 6.9 प्रतिशत, 7.5 प्रतिशत, 7.7 प्रतिशत और 7.8 प्रतिशत; बट्टे खाते में डालने संबंधी दर क्रमशः 5.7 प्रतिशत, 7.3 प्रतिशत, 5.3 प्रतिशत और 5.1 प्रतिशत; उन्नयन (अप-ग्रेडेशन) दर क्रमशः 1.0 प्रतिशत, 1.2 प्रतिशत, 2.3 प्रतिशत और 2.3 प्रतिशत रही।

पूंजी पर्याप्तता पर प्रभाव

बैंकों में पूंजी पर्याप्तता पर समष्टि आघातों का प्रभाव निम्नलिखित चरणों के जरिए निकाला गया:

- भावी पूंजी संचयन पर प्रभाव को कल्पित समष्टि परिदृश्य के तहत लाभ का अनुमान कर किया गया, यह मानकर कि केवल 25 प्रतिशत कर पश्चात लाभ (पीएटी) (जो कि न्यूनतम विनियामक अपेक्षा है) बैंक की पूंजी में जाता है।
- भविष्य में अतिरिक्त पूंजी की आवश्यकता का अनुमान आंतरिक मूल्यांकन आधारित (आईआरबी) सूत्र का उपयोग कर जोखिम-भारित आस्तियों (आरडबल्यूए) का आकलन कर किया गया। निम्नलिखित सूत्र का उपयोग किया गया:

$$CRAR_{t+1} = \frac{Capital_t + 0.25 * PAT_{t+1}}{RWAs(credit\ risk)_{t+1} + RWAs(others)_{t+1}}$$

$$\text{Common Equity Tier 1 Capital Ratio}_{t+1} = \frac{CET1_t + 0.25 * PAT_{t+1}}{RWAs(credit\ risk)_{t+1} + RWAs(others)_{t+1}}$$

जहां पीएटी का पूर्वानुमान सेटलाइट नमूनों का उपयोग कर किया गया है जिसपर आगे के खंडों में प्रकाश डाला गया है। कुल आरडबल्यूए में से क्रेडिट जोखिम आरडबल्यूए को घटाकर मिले आरडबल्यूए (अन्य) का अनुमान पिछले एक वर्ष के दौरान देखी गई औसत वृद्धि दर पर आधारित है। नीचे दिए गए आईआरबी सूत्र का उपयोग करते हुए आरडबल्यूए (क्रेडिट जोखिम) का आकलन किया गया है:

आईआरबी सूत्र: क्रेडिट जोखिम के लिए बैंकवार आरडबल्यूए आकलन निम्नलिखित आईआरबी सूत्र के आधार पर किया गया।

$$RWAs(credit\ risk) = 12.5 \times \left(\sum_{i=1}^n EAD_i \times K_i \right)$$

जहां EAD_i बैंक के सेक्टर i (i=1,2,...n) का डिफॉल्ट जोखिम है।

K_i क्षेत्र i के लिए न्यूनतम पूंजी आवश्यकता है जिसकी गणना निम्नलिखित सूत्र का उपयोग करते हुए की गई है:

$$= \left[LGD_i \times N \left[(1 - R_i)^{-0.5} \times G(PD_i) + \left(\frac{R_i}{1 - R_i} \right)^{0.5} \times G(0.999) \right] - PD_i \times LGD_i \right] \\ \times (1 - 1.5 \times b(PD_i))^{-1} \times (1 + (M_i - 2.5) \times b(PD_i))$$

जहां LGD_i क्षेत्र i की दी गई डिफॉल्ट हानि है, PD_i क्षेत्र i के डिफॉल्ट की संभाव्यता है, $N (...)$ मानक सामान्य वितरण का संचयी वितरण फंक्शन है, $G (...)$ मानक सामान्य वितरण के संचयी वितरण फंक्शन का व्युत्क्रम है, M_i क्षेत्र (इस मामले में सभी क्षेत्र के लिए 2.5 ली गई है) के ऋण की औसत परिपक्वता है, $b(PD_i)$ सुस्पष्ट परिपक्वता समायोजन है और R_i अर्थव्यवस्था की सामान्य स्थिति के साथ क्षेत्र i का सह-संबंध है। $b(PD)$ और R दोनों की गणना PD पर निर्भर है।

इस आईआरबी सूत्र के लिए तीन प्रमुख इनपुट की आवश्यकता होती है, यथा क्षेत्र की PD , EAD और LGD । यहाँ बैंक डाटा का उपयोग कर संबंधित क्षेत्र की वार्षिक गिरावट से क्षेत्र की PD ली गई है। PD क्षेत्र विशेष में प्रत्येक के लिए चयनित 46 बैंकों के समान (अर्थात् प्रणालीगत आघात) नमूने से लिए गए हैं, जबकि, क्षेत्र विशेष EAD के लिए बैंक का उस क्षेत्र विशेष में कुल बकाया ऋण (एनपीए का निवल) था। इसके अतिरिक्त, LGD पर पूर्वानुमान इस प्रकार लिया गया था: आधाररेखा परिदृश्य के अंतर्गत, $LGD = 60$ प्रतिशत (मोटे तौर पर पूंजी पर्याप्तता पर आरबीआई दिशा निर्देशों के अनुसार - ऋण जोखिम के लिए पूंजी की आवश्यकता की गणना के लिए आईआरबी पद्धति) जो मध्यम समष्टि आर्थिक जोखिम परिदृश्य में बढ़कर 65 प्रतिशत और गंभीर समष्टि अर्थशास्त्र जोखिम परिदृश्य में 70 प्रतिशत हो जाता है।

चयनित क्षेत्र : निम्नलिखित 17 क्षेत्रों/उपक्षेत्रों (और अन्य) को दबाब परीक्षण के लिए चुना गया।

सारणी 2 : चयनित क्षेत्रों/उपक्षेत्रों की सूची

क्र.सं.	क्षेत्र/ उपक्षेत्र	क्र.सं.	क्षेत्र/ उपक्षेत्र
1	इंजीनियरिंग	10	मूलभूत धातु और धातु उत्पाद
2	ऑटो	11	खनन
3	सीमेंट	12	कागज
4	रसायन	13	पेट्रोलियम
5	विनिर्माण	14	कृषि
6	कपड़ा	15	रिटेल – हाउसिंग
7	खाद्य प्रसंस्करण	16	रिटेल – अन्य
8	रत्न और आभूषण	17	सेवाएँ
9	बुनियादी संरचना	18	अन्य

क्षेत्रगत वार्षिक गिरावट अनुपात (अर्थात् क्षेत्रगत पीडी) का समष्टि चरों के साथ यादृच्छिक एवं अनिश्चित (स्टोकेस्टिक) संबंध का अनुमान लगाने के लिए प्रत्येक क्षेत्र के लिए मल्टीवेरिएट रिग्रेशन का उपयोग किया गया। इन अनुमानित रिग्रेशन का उपयोग कर प्रत्येक क्षेत्र के क्षेत्रगत पीडी की गणना कल्पित आधार-रेखा के साथ-साथ दो प्रतिकूल परिदृश्यों, यथा, मध्यम दबाव और गंभीर दबाव के अंतर्गत अगली चार तिमाहियों के लिए की गई। क्षेत्रगत रिग्रेशन के नमूने आगे के खंडों में प्रस्तुत किए गए हैं।

निम्नलिखित चरणों का उपयोग कर बैंकवार कर पश्चात लाभ (पीएटी) की गणना की गई:

- प्रत्येक बैंक-समूह के लिए पीएटी के घटकों (अर्थात् निवल ब्याज आय(एनआईआई), अन्य परिचालनगत आय(ओओआई), परिचालनगत व्यय (ओई) और प्रावधान तथा बड़े खाते डालना) की गणना आधार रेखा और प्रतिकूल परिदृश्यों के अंतर्गत आगे के खंडों में वर्णित विधि द्वारा की गई।
- प्रत्येक बैंक के पीएटी के घटकों के अंश (आयकर को छोड़कर) की गणना उनके संबंधित बैंक-समूह में की गई।
- संबंधित बैंक-समूह के पीएटी के घटक के अनुमानित मूल्य और पीएटीके घटक विशेष में उस बैंक के अंश की गणना कर प्रत्येक बैंक के पीएटी (आयकर को छोड़कर) के प्रत्येक घटक का अनुमान लगाया गया।

- अंत में, बैंकवार पीएटी का पूर्वानुमान पिछले चरण में अनुमानित उनके घटकों को उपयुक्त रूप से जोड़ते अथवा घटाते हुए लगाया गया और आयकर का दर 35 प्रतिशत प्रयोग में लिया गया।

उपर्युक्त सूत्रों, कल्पनाओं और सूचनाओं का प्रयोग करते हुए, बैंक स्तर पर पूंजी पर्याप्तता पर कल्पित समष्टि परिदृश्यों के प्रभाव का अनुमान लगाया गया और अंतिम वास्तविक तथ्यात्मक आंकड़े से बेसलाइन के अंतर्गत भविष्य में पूंजी पर्याप्तता में बदलाव तथा बेसलाइन से प्रतिकूल समष्टि दबाव तक बैंक की पूंजी पर्याप्तता में बदलाव की गणना की गई। अंत में, इन बदलावों को समुचित रूप से अंतिम तथ्यात्मक पूंजी पर्याप्तता (मानकीकृत दृष्टिकोण) पर लागू किया गया।

क्षेत्रगत पीडी का अनुमान

1. इंजीनियरिंग

$$\Delta PD_t = \alpha + \beta_1 \Delta PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-2} - \beta_3 \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-2} - \beta_4 \Delta GVA(Industry)_{t-3} + \beta_5 Dummy$$

2. ऑटो

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} - \beta_2 \Delta GDP_{t-1} + \beta_3 WALR_{t-1} - \beta_4 \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-2} + \beta_5 \Delta CPI_{t-2} + \beta_6 Dummy$$

3. सीमेंट

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} - \beta_2 \Delta GDP_{t-2} + \beta_3 \Delta WALR_{t-1} - \beta_4 \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-2} + \beta_5 Dummy$$

4. रसायन और रासायनिक उत्पाद

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-1} - \beta_3 \Delta GDP_{t-1} + \beta_4 Dummy_t$$

5. विनिर्माण

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-1} - \beta_3 \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-1} - \beta_4 \Delta GDP_{t-1} + \beta_5 Dummy_t$$

6. कपड़ा

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} - \beta_2 \Delta GDP_{t-1} + \beta_3 \Delta WALR_{t-1} - \beta_4 \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-2} + \beta_5 \Delta CPI_{t-3} + \beta_6 Dummy$$

7. खाद्य प्रसंस्करण

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-3} - \beta_3 \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-1} - \beta_4 \Delta GDP_{t-2} + \beta_5 Dummy_t$$

8. रत्न और आभूषण

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-1} - \beta_3 \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-3} - \beta_4 \Delta GDP_{t-2} + \beta_5 Dummy_t$$

9. बुनियादी संरचना

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} - \beta_2 \Delta GDP_{t-2} + \beta_3 WALR_{t-1} + \beta_4 \Delta CPI_{t-1} + \beta_5 Dummy_t$$

10. मूलभूत धातु और धातु उत्पाद

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} - \beta_2 \Delta GDP_{t-3} + \beta_3 WALR_{t-1} - \beta_4 \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-1} + \beta_5 Dummy_t$$

11. खनन और उत्खनन

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} - \beta_2 \Delta GDP_{t-2} + \beta_3 \Delta CPI_{t-1} - \beta_4 \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-2} + \beta_5 Dummy_t$$

12. कागज और कागज उत्पाद

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-4} - \beta_3 \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-2} - \beta_4 \Delta GDP_{t-1} + \beta_5 Dummy_t$$

13. पेट्रोलियम और पेट्रोलियम उत्पाद

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-2} - \beta_3 \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-2} - \beta_4 \Delta GDP_{t-2} + \beta_5 Dummy_t$$

14. कृषि

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-1} - \beta_3 \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-2} - \beta_4 \Delta GDP_{t-1} + \beta_5 Dummy_t$$

15. सेवाएँ

$$\Delta PD_t = \alpha + \beta_1 \Delta PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-1} - \beta_3 \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-2} - \beta_4 \Delta GDP_{t-2} + \beta_5 \Delta CPI_{t-1}$$

16. रिटेल - आवास

$$\Delta PD_t = \alpha + \beta_1 \Delta PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-2} - \beta_3 \Delta GDP_{t-1}$$

17. रिटेल - अन्य

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-2} - \beta_3 \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-1} + \beta_4 Dummy_t$$

18. अन्य

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-2} - \beta_3 \Delta GDP_{t-1} + \beta_4 Dummy_t$$

बैंक-समूहवार पैट का अनुमान

प्रमुख बैंकों-समूहों (यथा पीएसबी, पीवीबी, एफबी) के पैट के कई घटक होते हैं, जैसे कि एनआईआई, ओओआई, ओई और प्रावधान तथा बट्टे खाते। इन घटकों का विभिन्न समय श्रृंखलाओं पर आधारित अर्थमितीय नमूनों (जैसा कि नीचे दिया गया है) के आधार पर अनुमान लगाया जाता है। अंत में निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग करते हुए पैट का अनुमान लगाया जाता है।

$$PAT = NII + OOI - OE - Provisions \& writeoff - Income Tax$$

जहां, एनआईआई- निवल ब्याज आय, ओओआई- अन्य परिचालनगत आय और ओई- परिचालनगत खर्च है।

निवल ब्याज आय (एनआईआई): ब्याज से आय और ब्याज पर खर्च के बीच का अंतर एनआईआई होता है, उसे निम्नलिखित रीग्रेशन मॉडल का प्रयोग कर निकाला जाता है:

$$LNII_t = -\alpha_1 + \beta_1 LNII_{t-1} + \beta_2 LNGDP_SA_{t-1} + \beta_3 Adv_Gr_{t-1} + \beta_4 Spread_t$$

एलएनआईआई, एनआईआई का लॉग है। एलएनजीवीए_एसए सांकेतिक जीवीए का मौसमी रूप से समायोजित लॉग है। एडीवी जीआर अग्रिमों में वर्ष-दर-वर्ष होने वाली संवृद्धि दर है। स्प्रेड, ब्याज कमाने वाली आस्तियों पर कमाए गए औसत ब्याज दर और ब्याज देने वाली देयताओं पर दिए गए औसत ब्याज के बीच का अंतर है।

अन्य परिचालनगत आय (ओओआई): अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की ओओआई को निम्नलिखित रीग्रेशन मॉडल का प्रयोग करते हुए अनुमानित किया गया:

$$LOOI_t = -\alpha_1 + \beta_1 LOOI_{t-1} + \beta_2 LNGDP_SA_t$$

परिचालनगत खर्च (ओई): अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के ओई को स्वतःपरावर्तित संचरित औसत (एआरएमए) मॉडल का प्रयोग कर अनुमानित किया गया।

प्रावधान (बट्टे खाते को शामिल करके): अपेक्षित प्रावधानों का अनुमान निम्नलिखित रीग्रेशन का उपयोग कर दिया गया:

$$P_Adv_t = \alpha_1 + \beta_1 P_Adv_{t-1} - \beta_2 \Delta GDP_{t-2} + \beta_3 GNPA_{t-1} - \beta_4 Dummy$$

P_Adv कुल अग्रिमों के अनुपात की तुलना में किया गया प्रावधान है। ΔGDP जीडीपी वास्तविक जीवीए की वर्ष-दर-वर्ष संवृद्धि दर है। जीएनपीए कुल अग्रिमों के अनुपात की तुलना में सकल गैर-निष्पादन आस्तियां हैं।

आयकर: लागू आयकर को कर पूर्व आय का 35 प्रतिशत माना गया है, जो कर पूर्व लाभ की तुलना में आयकर के पिछले रुझानों पर आधारित है।

एकल घटक संवेदनशीलता विश्लेषण - दबाव परीक्षण

तिमाही निगरानी के रूप में, क्रेडिट जोखिम, ब्याज दर जोखिम, चलनिधि जोखिम आदि को शामिल करते हुए दबाव परीक्षण किए जाते हैं और इन आघातों की प्रतिक्रिया में वाणिज्यिक बैंकों की समुत्थानशीलता का अध्ययन किया जाता है। यह विश्लेषण एकल अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक के स्तर पर और प्रणाली के स्तर पर भी किया गया।

क्रेडिट जोखिम (संकेंद्रण जोखिम शामिल)

बैंकों की समुत्थानशीलता का पता लगाने के लिए सभी प्रकार के पोर्टफोलियो और कुछेक चुनिंदा सेंक्टरों में जीएनपीए के स्तरों में बढ़ोतरी करके आघात दिया जाता है। क्रेडिट संकेंद्रण जोखिम की जांच करने के लिए शीर्ष व्यक्तिगत उधारकर्ता (कर्ताओं) और उधारकर्ता(कर्ताओं) के सबसे बड़े समूह को चूककर्ता के रूप में मान लिया गया। यह विश्लेषण समग्र स्तर पर और व्यक्तिगत बैंक दोनों ही स्तरों पर किया गया। जीएनपीए में मानी गई वृद्धि को मानक से कम, संदेहास्पद और हानि की श्रेणियों में उसी अनुपात में बांट दिया गया जिस अनुपात में एनपीए का मौजूदा स्टाक उपलब्ध था। तथापि, क्रेडिट संकेंद्रण जोखिम (जोखिम पर आधारित) के लिए संभावित आघातों के तहत अतिरिक्त जीएनपीए पर विचार किया गया ताकि उसे केवल अवमानक श्रेणी में रखा जा सके तथा क्रेडिट संकेंद्रण जोखिम (तनावग्रस्त ग्रस्त अग्रिमों पर आधारित) के लिए संभावित आघातों के तहत तनावग्रस्त अग्रिमों पर विचार किया गया ताकि उस के लिए संभावित आघातों के तहत अतिरिक्त जीएनपीए पर विचार किया गया ताकि उसे केवल अवमानक श्रेणी में रखा जा सके हानि श्रेणी में रखा जा सके। विभिन्न आस्ति श्रेणियों के लिए लागू मौजूदा औसत मानदंडों के आधार पर इन दबाव जांचों के लिए प्रावधानीकरण मानदंडों का उपयोग किया गया। अवमानक, संदेहास्पद और हानि अग्रिमों के लिए क्रमशः 25 प्रतिशत, 75 प्रतिशत और 100 प्रतिशत की प्रावधानीकरण आवश्यकताओं को संज्ञान में लिया गया। दबाव की परिस्थितियों के तहत गणना में लिए गए अतिरिक्त जीएनपीए पर इन मानदंडों को ही लागू किया गया। जीएनपीए में मानी गई वृद्धि के परिणामस्वरूप, अतिरिक्त जीएनपीए पर हुई आय की हानि को एक तिमाही के लिए प्रावधानीकरण की अतिरिक्त आवश्यकताओं के अलावा कुल हानियों में भी शामिल किया गया। इस प्रकार प्राप्त की गई अनुमानित प्रावधानीकरण संबंधी अपेक्षाओं को बैंकों की पूंजी में से घटा दिया गया और दबावग्रस्त पूंजी पर्याप्तता अनुपातों की गणना की गई।

क्षेत्रगत जोखिम

एक बैंक के क्षेत्रगत ऋण जोखिम का पता लगाने के लिए क्षेत्र विशेष के जीएनपीए अनुपात को बढ़ा कर उस क्षेत्र के ऋण पोर्टफोलियो को आघात पहुंचाया गया। यह विश्लेषण समग्र स्तर पर और व्यक्तिगत बैंक दोनों ही स्तरों पर किया गया। एक क्षेत्र के जीएनपीए अनुपातों के मानक विचलन पर आधारित क्षेत्र विशेष आघात का प्रयोग व्यक्तिगत बैंक पर हुए प्रभाव का अध्ययन करने के लिए किया जाता है। यह माना गया कि कल्पित आघातों के तहत अतिरिक्त जीएनपीए अवमानक श्रेणी में ही आएंगे। जीएनपीए में कल्पित वृद्धि के परिणामस्वरूप, एक तिमाही में अतिरिक्त जीएनपीए पर हुई आय में हानि को भी कुल हानियों में शामिल किया गया। इसके अलावा प्रावधानीकरण आवश्यकता में भी वृद्धि की गई। इस प्रकार प्राप्त की गई अनुमानित प्रावधानीकरण संबंधी अपेक्षाओं को बैंकों की पूंजी में से घटा दिया गया और दबावग्रस्त पूंजी पर्याप्तता अनुपातों की गणना की गई।

ब्याज दर जोखिम

भारतीय रुपए के प्रतिफल वक्र में आने वाले अंतर के कारण माने गए आघात के तहत, पोर्टफोलियो की कीमत में होने वाली कमी या आय में होने वाली गिरावट के कारण होने वाली हानियों को संज्ञान में लिया गया। बैंकों की पूंजी में से इन अनुमानित हानियों को कम कर दिया गया ताकि दबावग्रस्त सीआरएआर को प्राप्त किया जा सके।

ट्रेडिंग पोर्टफोलियो (एचएफटी+एएफएस) में ब्याज दर जोखिम के लिए मुद्दत विश्लेषण पद्धति पर विचार किया गया ताकि, कीमत के प्रभाव (पोर्टफोलियो हानियों) की गणना की जा सके। दिए गए आघातों के आधार पर प्रत्येक कालावधि के लिए इन निवेशों पर पोर्टफोलियो हानियों की गणना की गई। इसके परिणामस्वरूप प्राप्त हानियों/लाभों का प्रयोग इससे प्रभावित सीआरएआर पर निकालने के लिए किया गया।

इक्विटी मूल्य जोखिम

इक्विटी मूल्य जोखिम के अंतर्गत इक्विटी मूल्य सूचकांक में निश्चित दशमलव अंकों की गिरावट के आघात का बैंक की पूंजी और लाभ पर प्रभाव का परीक्षण किया गया। पोर्टफोलियो के मूल्य में गिरावट या इक्विटी मूल्य में बदलाव के कारण आय की हानि को कल्पित आघात के कारण बैंक की कुल हानि के लिए लेखाबद्ध किया गया। इस प्रकार निकली हुई कुल हानि को बैंक की पूंजी में से कम किया गया।

चलनिधि जोखिम

चलनिधि दबाव जांच का उद्देश्य यह है कि चलनिधि के अप्रत्याशितरूप से बाहर चले जाने पर, बाहर से चलनिधि की कोई मदद लिए बगैर, बैंक की उसे वहन करने की क्षमता का पता लगाया जा सके। जमाकर्ताओं के अचानक विश्वास खो देने के कारण विभिन्न प्रकार की परिस्थितियां जमाराशि निकासी की विविध प्रकार की संभावनाएं (जमाराशि की प्रकृति के अनुसार) सामने लाती हैं और साथ ही स्वीकृत/प्रतिबद्ध/गारंटीशुदा क्रेडिट (कार्यशील पूंजी की स्वीकृत अप्रयुक्त सीमा, प्रतिबद्ध क्रेडिट और क्रेडिट पत्रों तथा गारंटियों की अप्रयुक्त सीमा को ध्यान में रखते हुए) सीमाओं के अप्रयुक्त हिस्से के लिए मांग उत्पन्न करती है। दबाव परीक्षण इस बात को ध्यान में रखते हुए किया गया कि क्रेडिट के लिए अतिरिक्त और अप्रत्याशित मांग को बैंकों की केवल चलनिधि युक्त आस्तियों की सहायता से पूरा करने की उनकी क्षमता का पता लगाया जा सके।

चलनिधि दबाव परीक्षण की मान्यताएं इस प्रकार हैं:

- यह माना गया कि बैंक केवल चलनिधियुक्त आस्तियों की बिक्री के जरिए जमाराशियों की दबावग्रस्त निकासी या क्रेडिट की अतिरिक्त मांग को पूरा कर लेगा।
- किए गए निवेशों की बिक्री उनके बाजार मूल्य में दस प्रतिशत के हेयरकट पर कर ली जाएगी।
- दबाव परीक्षण "स्टैटिक मोड" के अंतर्गत किया गया।

चुनिंदा बैंकों का बॉटम-अप दबाव परीक्षण

18 चुनिंदा अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों द्वारा बॉटम-अप संवेदनशीलता विश्लेषण किया गया। चुनिंदा बैंकों को एक सामान्य परिदृश्य और सामान्य आघात का एक सेट प्रदान किया गया था। मार्च 2021 के डेटा का उपयोग करके परीक्षण किए गए थे। बैंकों ने प्रत्येक मामले में हानि की गणना के लिए अपनी-अपनी पद्धतियों का इस्तेमाल किया।

चुनिंदा बैंकों के व्युत्पन्नी (डेरिवेटिव) पोर्टफोलियो का बॉटम-अप दबाव परीक्षण

दबाव परीक्षण को शीर्ष 20 बैंकों के प्रतिनिधि प्रतिदर्श समूह के व्युत्पन्नी पोर्टफोलियो के संबंध में केंद्रित किया गया और इसके लिए व्युत्पन्नी पोर्टफोलियो की अनुमानित कीमत ली गई। प्रतिदर्श में शामिल प्रत्येक बैंक से कहा गया कि वे अपने संबंधित व्युत्पन्नी पोर्टफोलियो के संबंध में दबाव परिस्थितियों के प्रभाव का अनुमान लगाएं।

घरेलू बैंकों के मामले में, घरेलू और विदेशी दोनों प्रकार के व्युत्पन्नी पोर्टफोलियो को शामिल किया गया। विदेशी बैंकों के मामले में, इस प्रक्रिया में केवल घरेलू (भारतीय) स्थिति पर विचार किया गया। व्युत्पन्नी व्यापार के लिए जहां हेजिंग की सुविधा उपलब्ध कराई गई थी, उन्हें दबाव परीक्षण से छूट प्रदान की गई, जबकि अन्य सभी प्रकार के व्यापार को इसमें शामिल किया गया।

दबाव परिस्थितियों में चार संवेदनशीलता परीक्षणों को शामिल किया गया जिसमें स्पॉट यूएस डालर/ भारतीय रुपया की दर और घरेलू ब्याज दरों को मापदंड बनाया गया।

सारणी 3: डेरिवेटिव पोर्टफोलियो के तनाव परीक्षण के संबंध में आघात

घरेलू ब्याज दरें		
आघात 1	एक दिवसीय	+2.5 प्रतिशतता अंक
	1 वर्ष तक	+1.5 प्रतिशतता अंक
	1 वर्ष से अधिक	+1.0 प्रतिशतता अंक

घरेलू ब्याज दरें		
आघात 2	एक दिवसीय	-2.5 प्रतिशतता अंक
	1 वर्ष तक	-1.5 प्रतिशतता अंक
	1 वर्ष से अधिक	-1.0 प्रतिशतता अंक

विनिमय दरें		
आघात 3	यूएस डालर/ भारतीय रुपया	+20 प्रतिशत

विनिमय दरें		
आघात 4	यूएस डालर/ भारतीय रुपया	-20 प्रतिशत

2.2 अनुसूचित प्राथमिक (शहरी) सहकारी बैंक

31 मार्च, 2021 को रिपोर्ट की गई स्थिति के अनुसार शहरी सहकारी बैंकों का दबाव परीक्षण किया गया था। बैंकों के ऋण जोखिम, बाजार जोखिम और चलनिधि जोखिम के क्षेत्रों में आधारभूत, मध्यम और गंभीर दबाव परिदृश्यों के अधीन रखकर यह परीक्षण किया गया था।

ए. ऋण चूक जोखिम

- ऋण चूक जोखिम के तहत, मॉडल का उद्देश्य किसी बैंक के सीआरएआर पर दबावग्रस्त क्रेडिट पोर्टफोलियो के प्रभाव का आकलन करना है।
- वर्ष 2009 और 2020 के बीच समग्र रूप से यूसीबी क्षेत्र के लिए रिपोर्ट किए गए एनपीए के आंकड़ों के आधार पर वार्षिक वृद्धि दर के अंकगणितीय माध्य की गणना की गई थी।
- वार्षिक वृद्धि दर की गणना प्रत्येक एनपीए वर्ग (उप-मानक, डी1, डी2, डी3 और आस्ति हानि) के लिए अलग से की गई। इस वार्षिक वृद्धि दर ने आधारभूत दबाव परिदृश्य का निर्माण किया, जिसे प्रत्येक श्रेणी के लिए अलग-अलग मध्यम और गंभीर दबाव परिदृश्य उत्पन्न करने के लिए 1.5 मानक विचलन (एसडी) और 2.5 एसडी के आघातों का प्रयोग करके उस पर और अधिक दबाव आरोपित किया गया था।
- उपरोक्त कार्यप्रणालियों के आधार पर, तीन दबाव परिदृश्यों के तहत प्राप्त वार्षिक एनपीए वृद्धि दर मैट्रिक्स को नीचे दिया गया था। इन्हें उनके एनपीए विचलन स्तर के आधार पर बैंकवार समायोजित किया गया था।

(प्रतिशत)

	अवमानक आस्तियों में वृद्धि	डी1 आस्तियों में वृद्धि	डी2 आस्तियों में वृद्धि	डी3 आस्तियों में वृद्धि	हानि आस्तियों में वृद्धि
आधारभूत दबाव	22.06	18.08	16.53	13.88	4.81
मध्यम दबाव	61.93	47.00	41.24	51.32	16.51
भयंकर दबाव	88.52	66.27	57.71	76.27	24.31

बी. क्रेडिट संकेन्द्रण जोखिम

- यह माना गया कि तीन दबाव परिदृश्यों के तहत शीर्ष 1, 2 और 3 एकल उधारकर्ता एक्सपोजर क्रमशः 'मानक अग्रिम' श्रेणी से 'हानि अग्रिम' श्रेणी में चले जाते हैं जिसके कारण 100 प्रतिशत प्रावधानीकरण करना पड़ता और परिणामस्वरूप सीआरएआर प्रभावित होता है।

सी. व्यापार बही में ब्याज दर जोखिम

- शहरी सहकारी बैंकों के एएफएस और एचएफटी पोर्टफोलियो की ब्याज दरों में वृद्धि का विश्लेषण करने के लिए कालावधि विश्लेषण दृष्टिकोण अपनाया गया।
- यूसीबी के लिए संशोधित अवधि (एमडी) के संबंध में डेटा की अनुपलब्धता के कारण, इस मॉडल के तहत छोटे वित्त बैंकों (एसएफबी) के भारित औसत संशोधित अवधि एमडी का इस्तेमाल किया, और एसएफबी और यूसीबी के बीच संरचनात्मक समानता को देखते हुए, रूढ़िवादी दृष्टिकोण से 50 आधार अंकों की वृद्धि को शामिल किया गया।
- तीन दबाव परिदृश्यों के तहत ब्याज दरों में 50 बीपीएस, 150 बीपीएस और 250 बीपीएस की वृद्धि का अनुमान लगाया गया और सीआरएआर पर प्रावधानीकरण के प्रभाव का आकलन किया गया।

डी. बैंकिंग बही में ब्याज दर जोखिम

- शहरी सहकारी बैंकों की बैंकिंग बही को तीन दबाव परिदृश्यों के तहत 50 बीपीएस, 150 बीपीएस और 250 बीपीएस के ब्याज दर के आघातों के अधीन टक्कर परीक्षण किया गया और शुद्ध ब्याज आय पर प्रभाव का पता लगाया गया।

चलनिधि जोखिम

1 – 28 दिवसीय कालावधि में संचयी नकदी के प्रवाह के आधार पर एक दबाव परीक्षण किया गया। बेसलाइन, मध्यम और गंभीर परिदृश्यों के तहत नकदी अंतर्वाह और बहिर्वाह पर निम्नानुसार दबाव दिया गया:

(प्रतिशत)

दबाव परिदृश्य	अंतर्वाहों में कमी	बहिर्वाहों में बढ़ोत्तरी
बेसलाइन	5	25
माध्यम	5	50
गंभीर	5	100

परिपत्र संख्या आरबीआई/2008-09/174 यूबीडी पीसीबी.परि. सं.12/12.05.001/2008-09 दिनांक 17 सितंबर 2008 के आधार पर ऐसे बैंक जिसमें बहिर्वाह के 20 प्रतिशत से अधिक नकारात्मक संचयी असंतुलन (नकदी बहिर्वाह घटाकर नकदी अंतर्वाह) था उनको दबावग्रस्त माना गया जो यह निर्धारित करता है कि सामान्य स्थिति में 1-14 दिवसीय तथा 15-28 दिवसीय कालावधि के दौरान असंतुलन (नकदी अंतर्वाह और बहिर्वाह के बीच नकारात्मक अंतर) प्रत्येक समय सीमा में नकदी बहिर्वाह के 20 प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिए।

2.3 गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों का दबाव परीक्षण - एकल घटक संवेदनशीलता विश्लेषण

ऋण जोखिम

व्यक्तिगत स्तर और प्रणाली स्तर पर एनबीएफसी के क्रेडिट पोर्टफोलियो को मध्यम और उच्च जोखिम वाले परिदृश्यों के तहत जीएनपीए अनुपात में 1 एसडी और 2 जीबी की वृद्धि करके एक आघात लगाया गया था। क्रेडिट जोखिम और आरडब्ल्यूए को पिछले तीन वर्षों में वार्षिक वृद्धि दर को संयुक्त करते हुए चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) के 75 प्रतिशत तक बढ़ने का अनुमान लगाया गया था। क्रेडिट जोखिम में आघातों के कारण अतिरिक्त एनपीए को अवमानक अग्रिमों में जोड़ दिया गया था और

मौजूदा जीएनपीए को प्रावधानीकरण अपेक्षाओं पर मौजूदा विनियमों के अनुसार उनकी प्रौढ़ता प्रभाव के आधार पर वितरित किया गया था। विनियामकीय अपेक्षाओं के अनुसार मार्च 2021 तक प्रावधानीकरण अपेक्षाओं के अनुसार मौजूदा अनुपात में अवमानक अग्रिमों के लिए संदिग्ध अग्रिमों का 10% और हानि अग्रिमों के लिए 100% का प्रावधान किया गया। जीएनपीए में वृद्धि के कारण अतिरिक्त प्रावधान आवश्यकताओं और आय हानि को कर पूर्व नए लाभ की गणना करने के लिए वित्त वर्ष 2020-21 के लिए प्रावधान एवं कर पूर्व आय (ईबीपीटी) से घटा दिया गया था। कर के बाद लाभ की गणना करने के लिए 22 प्रतिशत की कर दर लागू की गई थी और संपूर्ण पीएटी को मौजूदा पूंजी के लिए उपचित किया गया था जिसके साथ यह पूर्व धारणा थी कि कोई लाभांश भुगतान नहीं किया जाएगा। नई पूंजी और आरडब्ल्यूए के आधार पर, पूरे क्षेत्र नई पूंजी और जोखिम भारित आस्तियों के अनुपात की गणना (सीआरएआर) अलग-अलग एनबीएफसी के लिए मान्य परिदृश्यों के संदर्भ में की गई।

चलनिधि जोखिम

दबावग्रस्त नकदी प्रवाह और चलनिधि की स्थिति में असंतुलन की गणना अगले एक वर्ष के दौरान विभिन्न समयावधियों में समग्र नकदी अंतर्वाहों और बहिर्वाहों को पूर्वनिर्धारित दबाव प्रतिशत निर्दिष्ट करके की गई थी। बेसलाइन परिदृश्य के तहत चलनिधि असंतुलन की गणना के लिए अगले एक वर्ष में मार्च 2021 की स्थिति के अनुसार अनुमानित बहिर्वाह और अंतर्वाह पर विचार किया गया। मध्यम और उच्च जोखिम परिदृश्यों के लिए अगले एक वर्ष की समयावधि के लिए लगाए गए आघात क्रमशः 5 प्रतिशत और 10 प्रतिशत अंतर्वाह में कमी और 10 प्रतिशत और 15 प्रतिशत बहिर्वाह में वृद्धि के रूप में लगाए गए थे। ऐसे आघातों के कारण संचयी चलनिधि असंतुलन की गणना संचयी बहिर्वाह के प्रतिशत के रूप में की गई और नकारात्मक संचयी असंतुलन प्रदर्शित करने वाली एनबीएफसी की पहचान की गई।

2.4 अंतर-संबद्धता- नेटवर्क विश्लेषण

मैट्रिक्स अल्जेब्रा नेटवर्क विश्लेषण के केन्द्र में है, जिसमें वित्तीय क्षेत्र में संस्थाओं के बीच द्विपक्षीय एक्सपोजरों का उपयोग किया जाता है। वित्तीय प्रणाली में एक संस्था की सभी अन्य संस्थाओं को दी गई उधारियों अथवा ली गई उधारियों को वर्ग (स्कवायर) मैट्रिक्स में रखा जाता है और तब उन्हें एक नेटवर्क ग्राफ में चिह्नित किया जाता है। प्रणाली में अंतर-संबद्धता के स्तर को मापने के लिए नेटवर्क मॉडल में विभिन्न सांख्यिकीय तरीकों का प्रयोग किया जाता है। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण तरीके निम्नलिखित हैं :

संबद्धता अनुपात : यह एक सांख्यिकी होती है जो एक पूर्ण ग्राफ में सभी संभव शृंखलाओं से संबंधित नोड्स के बीच शृंखलाओं की सीमा को मापती है। एक निर्देशित ग्राफ में $K = \sum k_i$ के बराबर बाहरी अंशों की कुल संख्या दर्शाती है और N नोड्स की कुल संख्या के रूप में है, ग्राफ की संबद्धता $\frac{K}{N(N-1)}$ के रूप में दी गई है।

क्लस्टर गुणांक : नेटवर्क में क्लस्टरिंग यह माप करती है कि प्रत्येक नोड आपस में किस प्रकार अंतर-संबद्ध है। विशेष रूप से, इस बात की प्रबल संभावना होती है कि किसी नोड के दो पड़ोसी (वित्तीय नेटवर्क के मामले में बैंक के प्रतिपक्षी) आपस में भी पड़ोसी होंगे। किसी नेटवर्क के लिए उच्च क्लस्टरिंग गुणांक का अर्थ यह होता है कि प्रणाली में उच्च स्थानिक अंतर-संबद्धता मौजूद है। k_i , निकटवर्ती/पड़ोसियों वाले प्रत्येक बैंक हेतु उनके बीच सभी प्रकार के संभावित जुड़ावों की कुल संख्या $k_i(k_i-1)$ द्वारा दर्शायी जाती है। मान लेते हैं कि E_i एजेंट i 's बैंक के k_i निकटवर्तियों के बीच वास्तविक संबद्धता को प्रदर्शित करता है अर्थात् जो i 's के k_i निकटवर्ती हैं वो आपस में भी निकटवर्ती हैं। i बैंक के लिए क्लस्टरिंग गुणांक C_i को इस सर्वसमिका (सूत्र) द्वारा व्यक्त गया है:-

$$C_i = \frac{E_i}{k_i(k_i - 1)}$$

समग्र रूप में नेटवर्क का क्लस्टरिंग गुणांक (सी) सभी C_i 's का औसत निम्नलिखित है:

$$C = \frac{\sum_{i=1}^N C_i}{N}$$

परतदार नेटवर्क संरचना : सामान्यतः वित्तीय नेटवर्क में परतदार संरचना की प्रवृत्ति देखी जाती है। परतदार संरचना एक ऐसी व्यवस्था होती है जिसमें विभिन्न संस्थाओं की अन्य नेटवर्क के साथ विविध अंशों पर या स्तरों पर संबद्धता होती है। मौजूदा विश्लेषण में सर्वाधिक संबद्ध बैंक सबसे भीतरी केंद्र में होते हैं। इसके बाद बैंकों को मध्य-केंद्र, बाहरी केंद्र और परिधि में (चित्र में केंद्र के चारों ओर संबंधित सेंट्रिक चक्रों में) उनकी संगत संबद्धता के आधार पर रखा जाता है। बैंकों की संबद्धता की रेंज को प्रत्येक बैंक के आंतरिक डिग्री तथा बाह्य डिग्री अनुपात के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसे सर्वाधिक संबद्ध बैंक के अनुपात से विभाजित किया जाता है। इस अनुपात के शीर्ष 10 प्रतिशत में आने वाले बैंक भीतरी केंद्र का निर्माण करते हैं। 90 और 70 प्रतिशत के बीच आने वाले बैंक मध्य-केंद्र में आते हैं और 40 तथा 70 प्रतिशत के बीच वाले बैंकों की एक तीसरी सतह/परत होती है। 40 प्रतिशत से कम संबद्धता प्राप्त करने वाले बैंकों को परिधि के रूप में श्रेणीकृत/वर्गीकृत किया जाता है।

नेटवर्क चार्ट में रंग संकेत: नेटवर्क चार्ट में नीली और लाल गेदें क्रमशः निवल उधारदाता और निवल उधारकर्ता को निरूपित करती हैं। परतदार नेटवर्क चित्र में श्रृंखलाओं के रंग संकेत नेटवर्क में मौजूद विभिन्न कतारों/परतों से ली गई उधारियों को निरूपित करती हैं (उदाहरण के लिए हरे रंग की श्रृंखलाएं मूल कोर में स्थिति बैंकों से ली गई उधारियों को निरूपित करती हैं)।

ऋण-शोधन क्षमता संक्रामकता का विश्लेषण

संक्रामकता विश्लेषण दबाव परीक्षण प्रकृति का होता है जिसमें एक या अधिक बैंकों के असफल हो जाने के कारण उत्पन्न दूरगामी प्रभावों के चलते बैंकिंग प्रणाली को होने वाले सकल घाटे का पता लगाया जाता है। इसके लिए हम राउंड बाई राउंड या अनुक्रमिक (सीक्वेंशियल) अल्गोरिथम का उपयोग करते हैं ताकि अनुरूपता संक्रामकता, जिसे अब फरफाइन (2003) के नाम से जाना जाता है, का पता लगाया जा सके। यदि एक ट्रिगर बैंक i से प्रारंभ करें जो 0 समय पर असफल होता है तो प्रत्येक चक्र या पुनरावृत्ति में जो बैंक दबाव में आते हैं उन्हें Dq , $q = 1, 2, \dots$ के रूप में निरूपित किया जा सकता है। इस विश्लेषण के लिए, किसी बैंक को दबावग्रस्त तब माना जाता है जब इसका टियर-1 सीआरएआर 7 प्रतिशत से नीचे चला जाए। प्राप्तकर्ता बैंक के लिए निवल प्राप्तियों को घाटे के रूप में माना जाता है।

चलनिधि संक्रामकता विश्लेषण

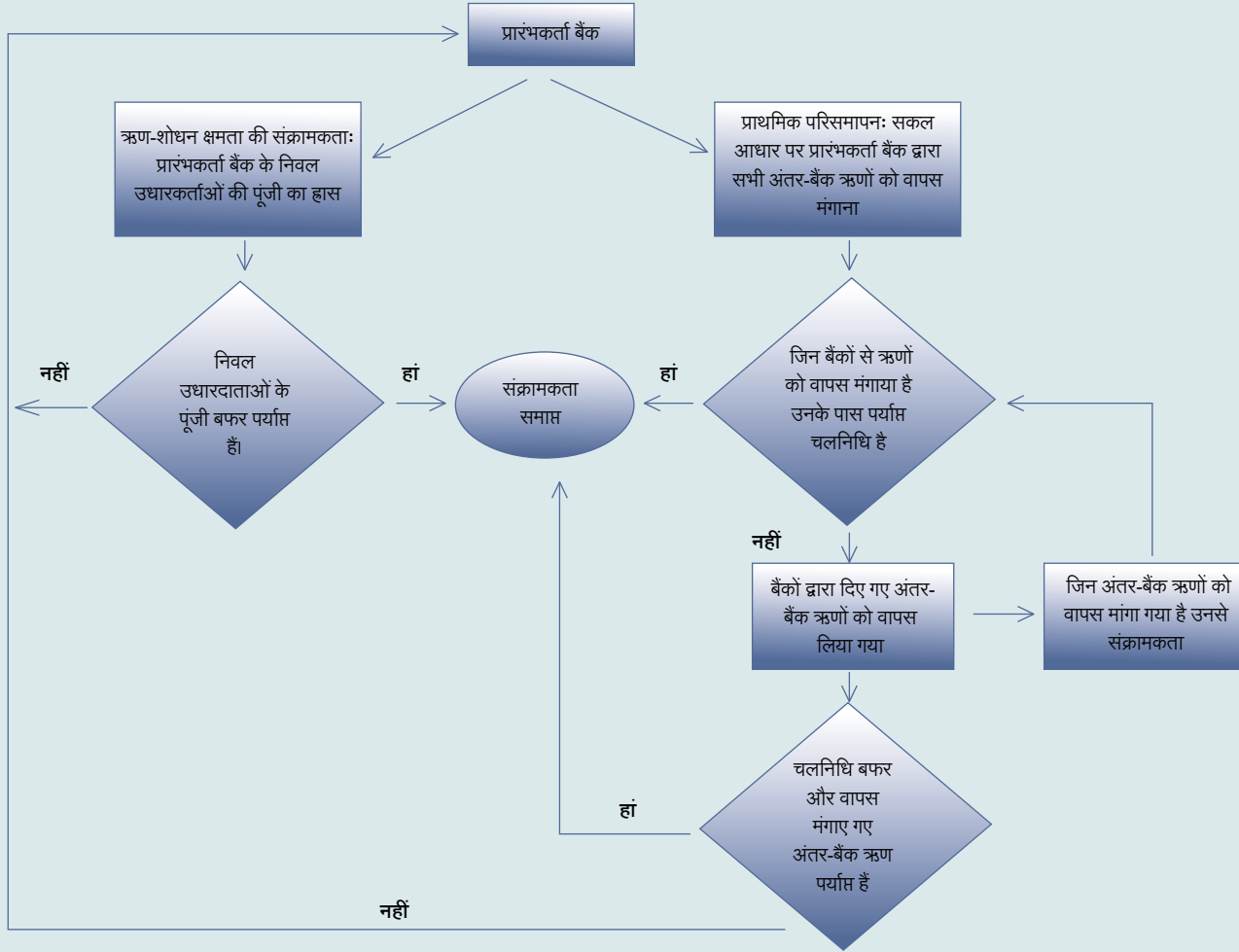
जहां ऋण शोधनक्षमता संक्रामकता विश्लेषण किसी निवल उधारकर्ता के विफल हो जाने की स्थिति में वित्तीय प्रणाली को होने वाली संभावित हानि का आकलन करता है वहीं चलनिधि संक्रामकता विश्लेषण किसी निवल उधारदाता के विफल हो जाने की स्थिति में इस प्रणाली को होने वाली संभावित हानि का अनुमान व्यक्त करता है। यह विश्लेषण बैंकों के बीच होने वाले सकल एक्सपोजर के संबंध में किया जाता है। एक्सपोजर में निधि आधारित और व्युत्पन्नी दोनों प्रकार के एक्सपोजर शामिल होते हैं। इस विश्लेषण का मूलभूत आकलन यह होता है कि किसी बड़े उधारदाता के विफल होने की स्थिति से उत्पन्न होने वाले चलनिधि दबाव से निपटने के लिए (किसी) बैंक की चलनिधि आरक्षित निधि या बफर में पहले तो गिरावट आएगी। चलनिधि आरक्षित निधियों के तहत विचारणीय मदें इस प्रकार हैं : (क) सीआरआर का अतिरिक्त अधिशेष; (ख) एसएलआर का अतिरिक्त अधिशेष और (ग) निवल मांग और मीयादी देयताओं का 18 प्रतिशत। यदि बैंक केवल चलनिधि बफर की मदद से ही दबाव से निपटने में सक्षम होता है तो ऐसी स्थिति में इसमें आगे कोई और संक्रमण नहीं होता है।

तथापि, यदि केवल चलनिधि बफर पर्याप्त नहीं होते हैं तो बैंक को उन सभी ऋणों को वापस लेना होगा जो 'वापस लिए जाने योग्य' हैं, जिसके परिणामस्वरूप संक्रामकता होती है। यदि विश्लेषण करने के लिए देखा जाए तो केवल अल्पावधि की आस्तियां जैसे कि कॉल मार्केट में उधार दी गई राशि और अन्य बहुत ही अल्पावधि के लिए दिए गए ऋणों को ही वापसी योग्य कहा जा सकता है। इसके पश्चात किसी बैंक का अस्तित्व या तो बना रह सकता है अथवा उसका परिसमापन किया जाना होगा। इस मामले में इस प्रकार के उदाहरण हो सकते हैं कि जहां ऋणों की वापसी होने से बैंक का अस्तित्व बच गया हो परंतु इसके परिणामस्वरूप इससे आगे संक्रामकता हो सकती है जिससे अन्य बैंक दबाव में आ सकते हैं। दूसरा आकलन यह किया गया है कि जब किसी बैंक का परिसमापन किया जाता है तो उस बैंक द्वारा उधार दिए गए ऋणों को सकल गणना के आधार पर वापस मांगा जाता है, जबकि परिसमापन किए बगैर जब बैंक द्वारा दिए गए अल्पावधि ऋणों को वापस मांगा जाता है तो ऋण को निवल आधार पर वापस मांगा जाता है (इस अनुमान के अनुसार, प्रतिपक्षी अपने उसी प्रतिपक्षी के प्रति पहले अपनी अल्पावधि देयताओं को कम करना चाहेगा। इसे द्वितीयक परिसमापन के रूप में जाना जाता है)।

संयुक्त ऋणशोधन-चलनिधि संक्रामकता का विश्लेषण

औसतन किसी बैंक की कुछ बैंकों के प्रति सकारात्मक निवल ऋण प्रदान करने की स्थितियां और कुछ अन्य बैंकों के प्रति ऋणात्मक निवल उधार की स्थितियां दोनों ही होती हैं। इस प्रकार ऐसे किसी बैंक के विफल हो जाने पर ऋणशोधन तथा चलनिधि संक्रामकता दोनों साथ-साथ उत्पन्न हो जाएंगी। इस प्रक्रिया को निम्नलिखित फ्लोचार्ट द्वारा बताया गया है:

किसी बैंक के दबाव में आने के कारण संयुक्त ऋणशोधन-चलनिधि संक्रामकता संबंधी फ्लोचार्ट



यह माना गया कि प्रारंभकर्ता बैंक कुछ अंतर्जात कारण से विफल हुआ अर्थात् यह निश्चित रूप से दिवालिया हो जाता है और इस प्रकार सभी उधारकर्ता बैंकों को प्रभावित करता है। उसी समय, यह अपनी आस्तियों को भी बेचना प्रारंभ करता है ताकि जहां तक संभव हो यह अपने दायित्वों को पूरा कर सके। परिसमापन प्रक्रिया एक चलनिधि संकट उत्पन्न करती है क्योंकि प्रारंभकर्ता बैंक अपने दिए गए ऋणों को वापस मंगाना प्रारंभ कर देता है।

चूंकि इक्विटी और लंबी अवधि के ऋण विफल संस्थाओं के प्रतिपक्षकारों के लिए चलनिधि बहिर्वाह के रूप में परिलक्षित नहीं हो सकते हैं, इसलिए उन्हें प्राथमिक परिसमापन के मामले में प्रतिदेय नहीं माना जाता है। साथ ही, जैसा कि 30 मार्च, 2021 का आरबीआई दिशानिर्देश प्रतिपक्ष स्तर पर डेरिवेटिव के मामले में एमटीएम मूल्यों के द्विपक्षीय नेटिंग की अनुमति देता है, प्राथमिक

परिसमापन के मामले में डेरिवेटिव बाजारों से संबंधित एक्सपोजर को निवल आधार पर कॉल करने योग्य माना जाता है। उधारदाता/उधारकर्ता बैंक जो कि भली प्रकार पूंजीकृत होते हैं, वे आघात सहन कर लेते हैं और वे दूसरों को संक्रमित नहीं करते हैं। दूसरी तरफ, वे उधारदाता बैंक जिनकी पूंजी एक न्यूनतम सीमा से कम हो जाती है वो एक नई संक्रामकता प्रारंभ कर देते हैं। इसी प्रकार ऐसे उधारकर्ता जिनकी चलनिधि बफर पर्याप्त होती है वे भी आगे कोई संक्रामकता फैलाए बिना दबाव सहन कर लेते हैं। परंतु कुछ बैंक ऐसे होते हैं जो चलनिधि दबाव का सामना करने में तभी सक्षम हो पाते हैं जब वो अपनी अल्पावधि आस्तियों को वापस ले लेते हैं। अल्पावधि आस्तियों को वापस लेने की प्रक्रिया से वे पुनः एक नई संक्रामकता प्रारंभ कर देते हैं। ऋणशोधन और चलनिधि दोनों कारणों से उत्पन्न संक्रामकता तभी रुक पाएगी/स्थिर हो पाएगी जब, प्रणाली हानि/आघातों को पूर्णतः अवशोषित कर सके और भविष्य में विफलताएं न हों।

अनुबंध 3

महत्वपूर्ण विनियामकीय उपाय

1) भारतीय रिज़र्व बैंक

तारीख	विनियामकीय उपाय	औचित्य
28 जुलाई 2021	केंद्रीकृत भुगतान प्रणाली तक गैर-बैंकों की पहुँच : केंद्रीकृत भुगतान प्रणाली में गैर बैंक भुगतान प्रणाली प्रदाताओं को प्रत्यक्ष सदस्यों के रूप में जैसे कि - प्रीपेड भुगतान लिखत जारीकर्ता, कार्ड नेटवर्क और व्हाइट लेबल एटीएम ऑपरेटरों को शामिल करते हुए भागीदारी बढ़ाई गई।	गैर बैंकों की सहभागिता को बढ़ाना और रिज़र्व बैंक द्वारा संचालित भुगतान प्रणाली में कुल जोखिम को कम करना।
3 अगस्त 2021	भुगतान प्रणाली संचालकों (पीएसओ) द्वारा भुगतान और निपटान संबंधी गतिविधियों को आउटसोर्स करने संबंधी रूपरेखा: यह रूपरेखा गैर बैंक भुगतान प्रणाली संचालको पर लागू होती है, जिसमें भुगतान और/ या निपटान संबंधी गतिविधियों को आउटसोर्स करने से संबंधित जोखिमों के प्रबंध के लिए न्यूनतम मानकों को निर्धारित किया गया है।	ऐसी गतिविधियों की आउटसोर्सिंग में निहित जोखिमों के प्रबंधन को प्रभावी बनाना।
17 अगस्त 2021	वित्तीय समावेशी सूचकांक : एक व्यापक वित्तीय समावेशन सूचकांक(एफ.आई) लाया गया है, जिसमें तीन व्यापक मापदंड शामिल हैं, (भार कोष्ठक में दर्शाए गए हैं) अर्थात्, पहुँच (35%), उपयोग (45%) और गुणवत्ता (20%) जिनमें से प्रत्येक में विभिन्न आयाम शामिल हैं, जिसकी गणना कुछ संकेतकों के आधार पर की जाती है। मार्च 2021 को समाप्त अवधि के लिए वार्षिक एफआई-सूचकांक 53.9 है, जबकि मार्च 2017 को समाप्त अवधि के लिए यह 43.4 था। एफआई-सूचकांक को वार्षिक आधार पर प्रति वर्ष जुलाई में प्रकाशित किया जाएगा।	देश में वित्तीय समावेशन की पहुँच को मापना।
25 अगस्त 2021	टोकनाइजेशन - कार्ड लेनदेन: अनुमत उपकरणों की व्याप्ति का विस्तार: टोकनाइज्ड कार्ड लेनदेन सुविधा, जो कि पहले केवल मोबाइल फोन और टैबलेट के लिए ही उपलब्ध थी, को अब अन्य उपभोक्ता उपकरणों -लैपटॉप, डेस्कटॉप, धारणीय वस्तुओं (कलाई घड़ी, बैंड, आदि), इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी) उपकरणों आदि के लिए उपलब्ध करा दिया गया है। उपकरण-आधारित टोकनाइजेशन फ्रेमवर्क में, 07 सितंबर 2021 के परिपत्र के माध्यम से, कार्ड-ऑन-फाइल टोकनाइजेशन (सीओएफटी) सेवाओं को भी शामिल किया गया।	धोखाधड़ी को कम करने के लिए टोकनाइजेशन सुविधा में अधिक उपकरणों को शामिल करना।

तारीख	विनियामकीय उपाय	औचित्य
26 अगस्त 2021	भुगतान अवसंरचना विकास कोष योजना में स्ट्रीट वेंडर्स को शामिल करना: टियर-1 और टियर-2 केंद्रों में पीएम स्ट्रीट वेंडर की आत्मनिर्भर निधि (पीएम स्वनिधि योजना) के हिस्से के रूप में पहचाने गए स्ट्रीट वेंडर्स को भुगतान अवसंरचना विकास कोष (पीआईडीएफ) योजना के तहत लाभार्थियों के रूप में शामिल करने का निर्णय लिया गया, जिसका उद्देश्य टियर-3 से टियर-6 केंद्रों और उत्तर-पूर्वी राज्यों में बिक्री केंद्र (पीओएस) की अवसंरचना (भौतिक और डिजिटल दोनों मोड) के नियोजन को प्रोत्साहित करना है। यह टियर-3 से टियर-6 केंद्रों के स्ट्रीट वेंडर वालों को योजना के अंतर्गत शामिल करने के अतिरिक्त होगा जो कि पहले से ही इस योजना में सम्मिलित थे।	समाज के सामान्य स्तर पर डिजिटल लेन-देनों को बढ़ावा देने के लिए रिजर्व बैंक के प्रयासों को प्रोत्साहन देना
24 सितंबर 2021	मानक आस्तियों का प्रतिभूतिकरण: मास्टर निदेश – भारतीय रिजर्व बैंक (मानक आस्तियों का प्रतिभूतिकरण) निदेश, 2021 जारी किया गया। ¹	विवेकपूर्ण वैश्विक श्रेष्ठ प्रथाओं के साथ समरूप होने और एक सुदृढ़ प्रतिभूतिकरण बाजार के विकास के लिए
24 सितंबर 2021	ऋण एक्सपोजर का अंतरण: मास्टर निदेश - भारतीय रिजर्व बैंक (ऋण एक्सपोजर का अंतरण) निदेश, 2021 जारी किया गया। ²	उधारदाताओं को उनके जोखिम प्रबंधन और चलनिधि संबंधी ऋण एक्सपोजर में अधिक लचीलापन देने के लिए
28 सितंबर 2021	निर्यात/आयात लेनदेन के संबंध में देय ब्याज के लिए लिबोर के स्थान पर किसी वैकल्पिक संदर्भ दर का उपयोग: निर्यात/आयात लेनदेन के संबंध में एडी बैंकों को संबंधित मुद्रा में लिबोर से सम्बद्ध ब्याज दर की जगह किसी अन्य व्यापक रूप से स्वीकृत/वैकल्पिक संदर्भ दर का उपयोग करने की अनुमति दी गई।	लिबोर की बेंचमार्क दर के रूप में आसन्न समाप्ति को देखते हुए।
08 अक्टूबर 2021	चौथा विनियामक सैंडबॉक्स कोहार्ट: भारतीय रिजर्व बैंक ने घोषणा की कि विनियामक सैंडबॉक्स के तहत 'वित्तीय धोखाधड़ियों की रोकथाम और न्यूनीकरण' चौथे कोहार्ट का विषय रहेगा।	धोखाधड़ी प्रबंधन के लिए फिनटेक पारिस्थितिकी तंत्र तैयार करने के लिए
22 अक्टूबर 2021	एनबीएफसी के लिए पैमाना आधारित विनियमन: एनबीएफसी को विनियमित करने के लिए चार स्तरों का पैमाना आधारित दृष्टिकोण 1 अक्टूबर 2022 से शुरू किया गया। ³	एनबीएफसी के परिवर्तनशील जोखिम प्रोफाइल और प्रणालीगत महत्व को ध्यान में रखते हुए उनके नियामक ढांचे को संरक्षित करना।

¹ निदेशन के प्रमुख पहलुओं को अध्याय III: 'वित्तीय क्षेत्र में विनियामक पहलें' के पैरा 3.20 में दर्शाया गया है।

² निदेशन के प्रमुख पहलुओं को अध्याय III: 'वित्तीय क्षेत्र में विनियामक पहलें' के पैरा 3.17 से 3.19 में दर्शाया गया है।

³ फ्रेम वर्क के प्रमुख पहलुओं को अध्याय III: 'वित्तीय क्षेत्र में विनियामक पहलें' के पैरा 3.22 में दर्शाया गया है।

तारीख	विनियामकीय उपाय	औचित्य
2 नवम्बर 2021	अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के लिए त्वरित सुधारात्मक कार्रवाई(पीसीए) फ्रेमवर्क: बैंकों के लिए पीसीए फ्रेमवर्क को संशोधित किया गया। इस फ्रेमवर्क में किसी बैंक को पीसीए के अंतर्गत रखने के लिए विचार करते समय पूंजी, आस्ति गुणवत्ता और लिवरेज तथा की जा सकने सकने वाली अनिवार्य और विवेकाधीन कार्रवाई के लिए मानक निर्धारित किए गए हैं। इसके अलावा इस संशोधित फ्रेमवर्क में पीसीए से बाहर निकलने के लिए बैंक द्वारा पूरी की जाने वाली शर्तों को भी निर्धारित किया गया है।	उचित समय पर पर्यवेक्षी हस्तक्षेप को सक्षम बनाना और पर्यवेक्षित संस्था द्वारा उपचारात्मक उपाय समय पर आरंभ करना और कार्यान्वित करना, ताकि उसकी वित्तीय स्थिति को पुनःस्थापित किया जा सके।
12 नवम्बर 2021	आय निर्धारण, आस्ति वर्गीकरण और अग्रिमों से संबंधित प्रावधानीकरण (आईआरएसीपी) पर विवेकपूर्ण मानदंड – स्पष्टीकरण: मौजूदा आईआरएसीपी मानदंडों पर स्पष्टीकरण अन्य बातों के साथ-साथ पुनर्भुगतान तिथि विनिर्देश, ऋणों का एसएमए/एनपीए के रूप में वर्गीकरण, अनर्जक आस्ति खातों का उन्नयन, अधिस्थगन के अधीन वाले ऋण और उपभोक्ता शिक्षा से संबंधित हैं।	ऋण देने वाली सभी संस्थाओं में आईआरएसीपी मानदंडों के कार्यान्वयन में एकरूपता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से।
12 नवम्बर 2021	खुदरा प्रत्यक्ष योजना : खुदरा प्रत्यक्ष योजना सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश के लिए निवेशकों को भारतीय रिजर्व बैंक के साथ रीटेल डायरेक्ट गिल्ट(आरडीजी) खाता खोलने की सुविधा देने के लिए शुरू की गई।	खुदरा निवेशकों को सरकारी प्रतिभूति बाजार तक आसान पहुँच प्रदान करने के लिए।
12 नवम्बर 2021	रिजर्व बैंक - एकीकृत लोकपाल योजना, 2021 शिकायत निवारण के लिए 'एक राष्ट्र, एक लोकपाल' दृष्टिकोण अपनाते हुए बैंकों, एनबीएफसी और प्रणाली प्रतिभागियों ⁴ के लिए तीन मौजूदा लोकपाल योजनाओं को एक योजना अर्थात् रिजर्व बैंक – एकीकृत लोकपाल योजना, 2021 के रूप में विलय कर दिया गया।	विनियमित संस्थाओं की शिकायत निवारण प्रक्रिया को ग्राहकों के लिए सरल और अधिक उत्तरदायी बनाना।
15 नवम्बर 2021	गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों द्वारा आंतरिक लोकपाल की नियुक्ति: 10 या अधिक शाखाओं वाली जमा स्वीकारने वाली एनबीएफसी (एनबीएफसी-डी) तथा जमाराशि स्वीकार नहीं करने वाली 500 करोड़ और उससे अधिक की परिसंपत्ति वाली एनबीएफसी (एनबीएफसीएनडी), जिनका सामान्य ग्राहकों के साथ लेन-देन है, को उक्त निदेश जारी करने की तारीख से छह महीने की अवधि के भीतर आंतरिक लोकपाल नियुक्त करने का निदेश दिया गया।	एनबीएफसी की आंतरिक शिकायत समाधान प्रणाली को मजबूत बनाना।

⁴ प्रणाली प्रतिभागी का अर्थ है 'प्रणाली प्रदाता' को छोड़कर भुगतान और निपटान प्रणाली अधिनियम, 2007 की धारा 2 के तहत परिभाषित भुगतान प्रणाली में भाग लेने वाले बैंक के अलावा कोई भी व्यक्ति।

2) भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड

तारीख	विनियामकीय उपाय	औचित्य
15 जुलाई 2021	व्यापार और डीमैट खातों को ऑनलाइन बंद करने के लिए दिशानिर्देश जारी किए गए।	ऐसे खातों को बंद करने की प्रक्रिया में तेजी लाना और व्यापार को अधिक सरल बनाना।
16 जुलाई 2021	क्रेडिट रेटिंग एजेन्सियों (सीआरए) के लिए नए संभावित हानि आधारित रेटिंग स्केल और इन एजेन्सियों द्वारा उपयोग में लाये जाने वाली रेटिंग स्केल के मानकीकरण के संबंध में नए दिशा निर्देश	सीआरए द्वारा उपयोग में लिए जाने वाले रेटिंग प्रतीकों को सुदृढ़ बनाना और मानकीकृत करना तथा नए रेटिंग प्रतीकों को लागू करना।
20 जुलाई 2021	ग्राहक स्तर पर संपार्श्विक का पृथक्करण और निगरानी	व्यापारिक/ समाशोधन सदस्य द्वारा चूक की दशा में ग्राहक संपार्श्विक के दुरुपयोग के जोखिम को कम करने और ग्राहक के दावों के शीघ्र निपटान के लिए।
30 जुलाई 2021	सार्वजनिक रूप से जारी किए गए स्थावर संपदा निवेश न्यास (आरईआईटीएस) और बुनियादी संरचना निवेश न्यास(आईएनवीआईटीएस) के लिए न्यूनतम अभिदान और ट्रेडिंग लॉट में संशोधन	निवेशकों के एक व्यापक वर्ग की सहभागिता को सक्षम बनाना।
9 अगस्त 2021	एकीकृत और पुनर्निर्मित, सेबी (अपरिवर्तनीय प्रतिभूतियों का निर्गम और सूचीकरण) विनियम, 2021	सूचना का स्तर बढ़ाना, अनावश्यक बातों को हटाना और प्रकटीकरण आवश्यकताओं को सुव्यवस्थित करना।
9 अगस्त 2021	कमोडिटी वायदा अनुबंधों में कैलेंडर स्प्रेड मार्जिन लाभ	फार मंथ कॉन्ट्रैक्ट्स में चलनिधि को बढ़ाना, मूल्य श्रेणी सहभागियों से हेजिंग को सुलभ बनाना और व्यापार की लागत को कम करना।
13 अगस्त 2021	डिस्ट्रीब्यूटेड लेजर प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए प्रतिभूति और प्रसंविदा निगरानी पर दिशानिर्देश	डिबेंचर न्यासी द्वारा ब्लॉक चैन प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए सुरक्षा निर्माण की प्रक्रिया, सुरक्षा निगरानी, आस्ति बीमा और गैर-परिवर्तनीय प्रतिभूतियां प्रसंविदाओं की निगरानी को सुदृढ़ बनाना।
17 अगस्त 2021	बार-बार सुपुर्दगी चूक के लिए दंड	सुपुर्दगी व्यवस्था को सुदृढ़ बनाना और बाजार की अखंडता को सुनिश्चित करना।
7 सितंबर 2021	वैकल्पिक आधार पर टी1 रोलिंग सेटलमेंट को लागू करना।	व्यापारिक लेनदेन में वृद्धि और कम निपटान जोखिम को सुलभ बनाना।

तारीख	विनियामकीय उपाय	औचित्य
7 सितंबर 2021	उच्च मूल्य वाली ऋण सूचीबद्ध संस्थाओं के लिए कॉर्पोरेट अभिशासन मानदंडों और अन्य प्रकटीकरण लागू करना।	कॉर्पोरेट बांड बाजार की मजबूती बढ़ाने के लिए।
29 सितंबर 2021	म्यूचुअल फंड योजनाओं के लिए स्विंग प्राइसिंग फ्रेमवर्क।	मोचन की लागत का भार उन निवेशकों पर डालने के लिए जो म्यूचुअल फंड योजना इकाइयों को निवल आरिस्त मूल्य के माध्यम से स्विंग फैक्टर के लिए समायोजित करके बेचते हैं।
4 अक्टूबर 2021	इकाइयों के मोचन को अधिप्रमाणित करने के लिए द्वि-कारकीय अधिप्रमाणन (ऑनलाइन संव्यवहार हेतु) और हस्ताक्षर विधि (ऑफलाइन संव्यवहार हेतु)	इकाई धारकों के खातों में धोखाधड़ी को रोकने के लिए।
13 अक्टूबर 2021	ग्राहक निधियों से शेयर दलालों द्वारा सावधि जमा के सृजन/चल निधि में निवेश पर प्रतिबंध	शेयर दलालों के पास रखी ग्राहक निधि के दुरुपयोग को रोकना।
24 नवंबर 2021	सिल्वर एक्सचेंज ट्रेडेड फंड (सिल्वर ईटीएफ) की शुरुआत	ईटीएफ जैसे एक वित्तीय लिखत के माध्यम से चाँदी में निवेश की शुरुआत, चूंकि चाँदी ने सोने के साथ मुद्रास्फीति अवरोधक के रूप में लोकप्रियता हासिल की है।

3) भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण

तारीख	विनियामकीय उपाय	औचित्य
9 जुलाई 2021	भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (भारतीय बीमा कंपनियों) (संशोधन) विनियम, 2021	बीमा कम्पनियों के अभिशासन ढांचे पर स्पष्टता लाना।
8 सितम्बर 2021	व्यापारिक उधार बीमा पर दिशा निर्देश संशोधित किए गए।	विभिन्न क्षेत्रों में उभरती बीमा जोखिम आवश्यकताओं और बदलती बाजार स्थितियों को ध्यान में रखते हुए कार्रवाई।
8 सितम्बर 2021	साइबर बीमा के लिए उत्पाद संरचना पर मार्गदर्शन दस्तावेज़ जारी किया गया।	व्यक्तिगत साइबर बीमा की संरचना के लिए बीमाकर्ताओं को दिशानिर्देश देना और कमियों की पहचान कर उन्हें पूरा करना।
8 सितम्बर 2021	स्वत्व बीमा उत्पादों (टाइटल इंश्योरेंस प्रोडक्ट्स) पर परिपत्र जारी किया गया।	परियोजना के विकास के प्रारम्भिक चरण में विधिक संरक्षण और भौतिक रूप से संपत्ति का कब्जा लेने के बाद व्यक्तिगत खरीददारों के हितों की सुरक्षा के लिए।

तारीख	विनियामकीय उपाय	औचित्य
13 सितंबर 2021	सभी बीमाकर्ताओं द्वारा बेची और नवीनीकरण की जाने वाली अल्पकालिक कोविड विशिष्ट स्वास्थ्य बीमा योजनाओं की बिक्री और नवीनीकरण की समय सीमा को 31.03.2022 तक बढ़ाए जाने संबंधी परिपत्र जारी किया गया जिसमें कोविड मानक क्षतिपूर्ति उत्पाद 'कोरोना कवच' कोविड मानक लाभ पॉलिसी 'कोरोना रक्षक' को भी शामिल किया गया।	कोरोना महामारी की दूसरी लहर के खतरे की स्थिति को मटोनजर रखते हुए।
14 सितंबर 2021	31.03.2022 तक समय-सीमा के विस्तार के लिए इन बातों के लिए परिपत्र जारी किया गया - (क) इलेक्ट्रॉनिक रूप में पॉलिसी जारी करना और (ख) स्वास्थ्य बीमा नीतियों के संबंध में भौतिक दस्तावेजों और प्रस्ताव पत्र पर प्रत्यक्ष हस्ताक्षर की आवश्यकता को समाप्त करना।	बीमा प्रक्रिया सेवाओं में डिजिटलीकरण को प्रोत्साहित करना।

4) पेंशन निधि विनियामक और विकास प्राधिकरण

तारीख	विनियामकीय उपाय	औचित्य
02 जुलाई 2021	पॉइंट ऑफ प्रेजेन्स (पीओपी) द्वारा निर्गम आवेदनों के प्रसंस्करण की छूट।	ग्राहकों द्वारा निर्गम/निकासी के लिए प्रस्तुत भौतिक आवेदनों में सामना की जा रही कोरोना जनित कठिनाइयों को कम करना।
20 जुलाई 2021	एनपीएस योजनाओं के लिए निवेश संबंधी दिशानिर्देश (दो अलग-अलग योजनाओं के समुच्चय के लिए लागू दो समुच्चय दिशानिर्देश।	विनियामक ढांचे को मजबूत करना।
20 जुलाई 2021	पेंशन निधियों में एक विदेशी कम्पनी द्वारा इक्विटी शेयरों की सकल धारिता पर दिशा-निर्देशों में परिवर्तन।	पेंशन निधियों में विदेशी धारिता सीमा को चुकता पूँजी का 74% तक बढ़ाना, जैसा कि बीमा कंपनियों के मामले में अनुमेय है।
27 जुलाई 2021	पेंशन निधियों द्वारा राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एनपीएस) के तहत प्रारंभिक सार्वजनिक प्रस्ताव (आईपीओ), फॉलो-ऑन सार्वजनिक प्रस्ताव (एफपीओ) और बिक्री के लिए प्रस्ताव (ओएफएस) में निवेश और प्राधिकरण द्वारा विनियमित/प्रशासित अन्य पेंशन योजनाओं पर दिशा-निर्देश।	ऐसे निवेशों के लिए मानकों को निर्धारित करना।
09 अगस्त 2021	पेंशन योजनाओं के वितरण के लिए व्यापार प्रतिनिधि (बीसी) या एजेंटों से सेवाएं लेने के लिए दिशा-निर्देश।	पेंशन योजनाओं के वितरण को सुगम बनाना।
23 अगस्त 2021	सरकारी क्षेत्र के ग्राहकों के लिए ई-एनपीएस की शुरुआत।	सरकारी क्षेत्र के ग्राहकों के लिए सुविधाजनक और कागज रहित ऑन-बोर्डिंग सुविधा प्रदान करना।

तारीख	विनियामकीय उपाय	औचित्य
26 अगस्त 2021	एनपीएस के तहत प्रवेश आयु में 70 वर्ष तक की वृद्धि।	मौजूदा एनपीएस ग्राहकों को उनकी 60 वर्ष उम्र / सेवानिवृत्ति के बाद भी निवेश में बने रहने की अनुमति देना और 65 वर्ष से अधिक उम्र के नागरिकों को एनपीएस खाते खोलने में सक्षम बनाना।
21 सितंबर 2021	निर्गम पर एकमुश्त निकासी सीमा में वृद्धि।	ग्राहकों को लाभ पहुँचाना।
07 अक्टूबर 2021	दलालों का पैनल बनाने पर दिशा-निर्देशों में संशोधन।	दलालों का पैनल बनाने पर अभिशासन ढाँचे को मजबूत बनाना।
27 अक्टूबर 2021	आधार ई-केवाईसी के माध्यम से ऑनलाइन एपीवाई सदस्यता की सुविधा।	सदस्यता प्रक्रिया को सरल बनाना और व्यापकता बढ़ाना।

5) भारतीय दिवाला और शोधन अक्षमता बोर्ड

तारीख	विनियामकीय उपाय	औचित्य
14 जुलाई 2021	आईबीबीआई (कॉर्पोरेट व्यक्तियों के लिए दिवाला समाधान प्रक्रिया) विनियम, 2016 (सीआईआरपी विनियम) में संशोधन	कॉर्पोरेट इंसोल्वेंसी कार्यवाही में अनुशासन, पारदर्शिता और जवाबदेहिता बढ़ाना।
22 जुलाई 2021	आईबीबीआई (दिवाला पेशेवर एजेंसियों के मॉडल-उपनियम और शासी बोर्ड) विनियम, 2016 में संशोधन (मॉडल उपनियम विनियम)	दिवाला पेशेवर एजेंसियों (आईपीए) द्वारा मौद्रिक दंड की शीघ्र वसूली प्रक्रिया उपलब्ध करना।
22 जुलाई 2021	आईबीबीआई (दिवाला पेशेवर) विनियम, 2016 में संशोधन	दिवाला पेशेवरों (आईपी) के रूप में पंजीकरण के लिए पात्रता मानदंडों को स्पष्ट करना, आईपी द्वारा हैंडल किए जाने वाले असाइनमेंटों की संख्या पर सीमा निर्धारित करना और दिवाला पेशेवर संस्था (आईपीई) को मान्यता प्रदान करने की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करना।
30 सितंबर 2021	आईबीबीआई (कॉर्पोरेट व्यक्तियों के लिए दिवाला समाधान प्रक्रिया) विनियम, 2016 में संशोधन	कॉर्पोरेट दिवाला कार्यवाही आयोजनों को बढ़ाना, समय सीमा में सुधार और मूल्य को अधिकतम करना।
30 सितंबर 2021	आईबीबीआई (परिसमापन प्रक्रिया) विनियम, 2016 में संशोधन	परिसमापन प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करना और प्रक्रिया की पारदर्शिता तथा परिसमापक की जवाबदेही बढ़ाना।

6) अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण

तारीख	विनियामकीय उपाय	औचित्य
6 जुलाई 2021	आईएफएससीए (बैंकिंग) (द्वितीय संशोधन) विनियम, 2021	आईएफएससीए के अंतर्गत संचालित बैंकिंग इकाइयों के लिए विनियामक ढांचे में सुधार करना।
7 जुलाई 2021	अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केन्द्रों (आईएफएससीए) पर व्यापार वित्त सेवा प्रदान करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय व्यापार वित्तपोषण सेवा मंच (आईटीएफएस) की स्थापना के लिए ढांचा।	निर्यातकों और आयातकों को एक समर्पित इलेक्ट्रॉनिक प्लेटफॉर्म, अर्थात् आईटीएफएस के माध्यम से अपने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार लेनदेन के लिए प्रतिस्पर्धी शर्तों पर विभिन्न प्रकार की व्यापार वित्त सुविधाओं का लाभ उठाने में सक्षम बनाना।
16 जुलाई 2021	आईएफएससीए (प्रतिभूतियों को जारी करना और सूचीबद्ध करना) विनियम, 2021	विभिन्न प्रकार की प्रतिभूतियों को जारी करना और सूचीबद्ध करना तथा प्रारम्भिक और निरंतर प्रकटीकरण के लिए आवश्यकताओं को निर्दिष्ट करने वाला एक एकीकृत नियामक ढांचा लागू करना।
13 अगस्त 2021	बैंकिंग हैंडबुक जिसमें शामिल है (क) सामान्य निर्देश (ख) व्यापार संचालन निर्देश और (ग) विवेकपूर्ण निर्देश जो 1 जनवरी, 2022 से प्रभावी होंगे।	प्राधिकरण की विनियामकीय अपेक्षाओं को संप्रेषित करना और गिफ्ट-सिटी आईएफएससीए में बैंकिंग व्यवसाय में सुगमता बढ़ाना।
17 अगस्त 2021	प्राप्यों की फैक्टरिंग और फोरफेटिंग पर दिशा-निर्देश	फैक्टरिंग और फोरफेटिंग गतिविधि को नियंत्रित करना।
26 अगस्त 2021	बूलियन एक्सचेंज, बूलियन क्लियरिंग कार्पोरेशन, बूलियन डिपॉजिटरी और वॉल्ट मैनेजर पर परिचालन दिशा-निर्देशों पर परिपत्र।	अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण (आईएफएससीए) में बूलियन एक्सचेंज, बूलियन समाशोधन निगम, बूलियन डिपॉजिटरी और वॉल्ट मैनेजर को आईएफएससीए (बूलियन एक्सचेंज) विनियम, 2020 के अनुसार अपनी गतिविधियों को संचालित करने में सक्षम बनाना।
15 सितंबर 2021	गैर-बैंक अभिरक्षकों के लिए सदस्यता समाशोधन पर परिपत्र।	शाखा संरचना के माध्यम से आईएफएससीए द्वारा आस्तियों/प्रतिभूतियों के संरक्षक के रूप में मान्यता प्राप्त किसी गैर-बैंक संस्था को गिफ्ट-सिटी में समाशोधन निगम का समाशोधन सदस्य बनने की अनुमति देना।

तारीख	विनियामकीय उपाय	औचित्य
17 सितंबर 2021	जीआईएफटी-आईएफएससी में सराफ़ा व्यापार सदस्यों और समाशोधन सदस्यों पर परिपत्र।	जीआईएफटी-आईएफएससी में शेयर बाजारों और समाशोधन निगमों के सभी सदस्यों को सराफ़ा व्यापार/समाशोधन सदस्यों के रूप में अनुमति देना।
20 अक्टूबर 2021	अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण (पूँजी बाजार मध्यस्थ संस्थाएं) विनियम, 2021	विभिन्न प्रकार के पूँजी बाजार मध्यस्थों के संबंध में पंजीकरण, बाध्यताओं, और उत्तरदायित्वों, निरीक्षण और प्रवर्तन पर विनियामकीय जरूरतों को पूरा करना।
21 अक्टूबर 2021	अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण (बीमा मध्यस्थ) विनियम, 2021	आईएफएससी में बीमा मध्यस्थों के पंजीकरण और संचालन लिए एक व्यापक विनियामकीय ढांचा प्रदान करना।
21 अक्टूबर 2021	अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण (बीमा व्यापार पंजीकरण) विनियम, 2021	आईएफएससी में बीमाकर्ताओं और पुनर्बीमाकर्ताओं के पंजीकरण और संचालन की प्रक्रिया तैयार करना।
21 अक्टूबर 2021	अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण (अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र बीमा कार्यालयों का संचालन) दिशा-निर्देश, 2021	ऐसी संस्थाओं के संचालन संबंधी मुद्दों के समाधान के लिए एक ढांचा तैयार करना।